पुणेकर

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

म.प्र. राज्य पात्रता परीक्षा

MPSET

सॉल्व्ड पेपर्स

हिन्दी

2022-2025

आपकी सफलता का सहयोगी . . .
पुणेकर पब्लिकेशन्स
खजूरी बाजार–इन्दौर

© **सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन**

- इस पुस्तक मे दिये गये किसी भी भाग के लिये प्रकाशक /विक्रेता/मुद्रक/लेखक इस बात को कतई सुनिश्चित नही करता है कि इस पुस्तक के दी गई जानकारी अंतिम रुप से पूर्ण है। पाठको को यदि इस पुस्तक के किसी भी अंश या प्रश्न पर कोई संशय है तो वह अपन स्त्रोत के आधार पर उसका आकलन करे एवं यदि इस पुस्तक मे कोई विसंगति पाता है निम्न पते पर इस विसंगति को बताये जिससे कि आगामी संस्करण मे इस पुस्तक मे सुधार किया जा सके।
  इस पुस्तक को प्रकाशित करने में प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई हैं फिर भी किसी त्रुटि के लिए , परीक्षार्थी को होने वाले किसी भी संताप या नुकसान के लिये प्रकाशक/विक्रेता/ लेखक जिम्मेदार नहीं होगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी या विधि से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो प्रतिलिपि, रिकार्डिंग प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

- इस पुस्तक का प्रकाशन प्रतियोगी परीक्षाओ मे तैयारी की दृष्टि से किया गया है। इस पुस्तक के लेखक/प्रकाशक/विक्रेता का किसी भी समुदाय/व्यक्ति/संस्था/धर्म को किसी भी प्रकार से ठेस पहुँचाने का उद्देश्य नही है फिर भी यदि कहीं कोई त्रुटि हुई हो तो क्षमा करे।
- किसी भी विवाद के लिए न्यायक्षेत्र इन्दौर होगा।

- **प्रकाशक : पुणेकर पब्लिकेशन्स, इन्दौर**
  राजगुरु काम्पलेक्स, खजूरी बाजार इन्दौर

- **www.punekarpublications.in**
- **punekerpublication@gmail.com**

विषय-सूची

म.प्र.राज्य पात्रता परीक्षा

- शिक्षण एवं शोध अभिवृति (प्रथम प्रश्नपत्र) 2022 01
- हिन्दी (द्वितीय प्रश्नपत्र) 2022 11
- शिक्षण एवं शोध अभिवृति (प्रथम प्रश्नपत्र) 2024 30
- हिन्दी (द्वितीय प्रश्नपत्र) 2024 39
- शिक्षण एवं शोध अभिवृति (प्रथम प्रश्नपत्र) 2025 58
- हिन्दी (द्वितीय प्रश्नपत्र) 2025 68

पुणेकर

NOTES

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित

म.प्र.राज्य पात्रता परीक्षा-2022

शिक्षण एवं शोध अभिवृति (प्रथम प्रश्नपत्र)

1. जिनके पास इंटरनेट की पहुँच नहीं है, उन लोगों के लिए निम्नलिखित में से कौन डी.टी.एच. (DTH) चैनल सहायक सिद्ध होते हैं?

(अ) दीक्षा (ब) स्वयं प्रभा
(स) निष्ठा (द) स्वयं

Which of the following DTH channels are meant to support and reach who do not have access to the internet?

(A) Diksha (B) Swayam Prabha
(C) Nishtha (D) Swayam

उत्तर-(ब) स्वयं प्रभा (SWAYAM PRABHA)

स्वयं प्रभा भारत सरकार की शैक्षिक DTH चैनलों की पहल है। इसके माध्यम से टीवी पर DTH के माध्यम से शैक्षिक कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। इसके लिए इंटरनेट कनेक्शन अनिवार्य नहीं है।

- **दीक्षा (DIKSHA)**: डिजिटल शिक्षण सामग्री और शिक्षकों के संसाधनों का मंच।
- **स्वयं प्रभाः** DTH के माध्यम से शैक्षिक कार्यक्रम।
- **निष्ठा (NISHTHA)**: शिक्षकों के प्रशिक्षण से संबंधित पहल।
- **स्वयं (SWAYAM):** ऑनलाइन पाठ्यक्रमों का मंच।

2. निम्नलिखित में से कौनसा च्वॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम का सर्वोत्तम लाभ है ?

(अ) शिक्षक-केन्द्रित से सामग्री-केन्द्रित शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करना
(ब) शिक्षकों के लिए लचीलापन प्रदान करना
(स) छात्रों की विश्वसनीयता में सुधार करना
(द) शिक्षक-केन्द्रित से विद्यार्थी-केन्द्रित शिक्षा पर ध्यान आकर्षित करना

Which of the following is the best advantage of choice based credit system?

(A) Shift in focus from teacher-centric to content-centric education
(B) Providing flexibility for teacher
(C) Improving credibility of students
(D) Shift in focus from teacher-centric to student-centric education

उत्तर-(द) शिक्षक-केन्द्रित से विद्यार्थी-केन्द्रित शिक्षा पर ध्यान आकर्षित करना।

चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम में विद्यार्थियों को निर्धारित नियमों के अंतर्गत अपनी रुचि के अनुसार पाठ्यक्रम या विषय चुनने की सुविधा मिलती है। इससे विद्यार्थी अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार सीखने में अधिक सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

- शिक्षक-केन्द्रित शिक्षा से विद्यार्थी-केन्द्रित शिक्षा में विद्यार्थी की रुचि, आवश्यकता और सीखने की गति पर ध्यान दिया जाता है।

3. शिक्षण एक ..... प्रक्रिया है ।

(अ) त्रिध्रुवीय (ब) द्विध्रुवीय
(स) एकध्रुवीय (द) बहुध्रुवीय

Teaching is a ..... process.

(A) Tri-polar (B) Bipolar
(C) Unipolar (D) Multipolar

उत्तर-(अ) त्रिध्रुवीय (Tri-polar)

शिक्षण को पारंपरिक रूप से त्रिध्रुवीय प्रक्रिया माना जाता है। इसमें तीन प्रमुख तत्व होते हैं:

1. **शिक्षक-** ज्ञान देने और मार्गदर्शन करने वाला
2. **विद्यार्थी-** सीखने वाला
3. **सामाजिक वातावरण-** समाज और वातावरण के अनुसार सीखना

4. निम्नलिखित में से शिक्षण-स्तर कौनसे हैं?

(अ) प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर और उच्च स्तर
(ब) राज्य स्तर, राष्ट्रीय स्तर और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर
(स) स्मृति स्तर, समझ स्तर और चिन्तन स्तर
(द) अध्यापक स्तर, विद्यार्थी स्तर, अभिभावक स्तर

Which of the following are the levels of teaching?

(A) Primary level, Secondary level and Higher level
(B) State level, National level and International level
(C) Memory level, Understanding level and Reflective level
(D) Teacher level, Student level and Parent level

उत्तर-(स) स्मृति स्तर, समझ स्तर और चिंतन स्तर।

शिक्षण के तीन प्रमुख स्तर हैं:

1. **स्मृति स्तर (Memory Level)-** इसमें तथ्यों, परिभाषाओं और सूचनाओं को याद करने पर जोर दिया जाता है। उदाहरणः किसी नदी का नाम याद करना।
2. **समझ स्तर (Understanding Level)-** इसमें विद्यार्थी विषय का अर्थ समझता है और अपने शब्दों में समझा सकता है। उदाहरणः नदी के जल के उपयोग समझाना।
3. **चिंतन स्तर (Reflective Level)-** इसमें विद्यार्थी तर्क करता है, समस्या का विश्लेषण करता है और समाधान खोजता है। उदाहरणः नदी प्रदूषण की समस्या के समाधान खोजना।

5. शिक्षण की कौनसी विधि विद्यार्थियों में पूछताछ की भावना विकसित करती है ?'

(अ) परियोजना विधि (ब) अन्वेषण विधि
(स) समस्या समाधान विधि (द) प्रयोगशाला विधि

Which method of teaching develops spirit of inquiry in students ?

(A) Project Method (B) Heuristic Method
(C) Problem-Solving Method (D) Laboratory Method

उत्तर-(ब) अन्वेषण विधि (Inquiry Method)

अन्वेषण विधि में विद्यार्थी प्रश्न पूछते हैं, जानकारी जुटाते हैं, प्रमाणों की जाँच करते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं। इससे जिज्ञासा, तार्किक सोच और खोजने की प्रवृत्ति विकसित होती है।

उदाहरणः शिक्षक पूछता है, 'पौधों की वृद्धि पर सूर्य के प्रकाश का क्या प्रभाव पड़ता है?' विद्यार्थी निरीक्षण और जाँच करके उत्तर खोजते हैं।

अन्य विकल्प

- **परियोजना विधिः** किसी परियोजना या व्यावहारिक कार्य को पूरा करना।
- **समस्या समाधान विधिः** किसी निर्धारित समस्या का समाधान खोजना।
- **प्रयोगशाला विधिः** प्रयोगों के माध्यम से सीखना।

6. **निम्नलिखित में से शोध प्रक्रिया का पहला चरण कौनसा है ?**

(अ) सूचना के स्रोतों की खोज
(ब) संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण
(स) अनुसंधान के व्यापक क्षेत्र की पहचान
(द) समस्या के समाधान की खोज

Which of the following is the first step in the research process ?

(A) Searching sources of information
(B) Survey of related literature
(C) Identification of a broad area of research
(D) Searching for solution to problem

उत्तर-(स) अनुसंधान के व्यापक क्षेत्र की पहचान।

शोध प्रक्रिया की शुरुआत सबसे पहले एक व्यापक विषय या शोध क्षेत्र की पहचान (चयन) से होती है इसके बाद संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण, सूचना स्रोतों की खोज और समस्या का समाधान करना है।

7. **निम्नलिखित में से कौनसा गैर-पैरामीट्रिक परीक्षण है?**

(अ) सहप्रसरण का विश्लेषण (ब) माध्यिका परीक्षण
(स) प्रसरण का विश्लेषण (द) जटिल अनुपात

Which of the following is a non-parametric test ?

(A) Analysis of covariance (B) Median Test
(C) Analysis of variance (D) Critical Ratio

उत्तर-(ब) माध्यिका परीक्षण

गैर-पैरामीट्रिक परीक्षणों में सामान्यतः यह आवश्यक नहीं होता कि आँकड़े किसी विशिष्ट सांख्यिकीय वितरण, जैसे सामान्य वितरण, का पालन करें।

- **माध्यिका परीक्षणः** समूहों की माध्यिकाओं में अंतर का परीक्षण करने के लिए उपयोग किया जाता है।
- **सहप्रसरण का विश्लेषण :** सामान्यतः पैरामीट्रिक विधि।
- **प्रसरण का विश्लेषण :** सामान्यतः पैरामीट्रिक विधि।
- **जटिल अनुपातः** यह विकल्प स्पष्ट रूप से किसी मानक परीक्षण का नाम नहीं बताता।

8. **निम्नलिखित में से कौनसा अनुक्रम शोध करने में सबसे तार्किक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?**

(अ) अनुसंधान समस्या की पहचान करना और उसे परिभाषित करना, परिकल्पना निर्मित करना, परिकल्पना का परीक्षण करना और परिणामों का प्रतिवेदन देना
(ब) अनुसंधान की समस्या की पहचान करना, जनसंख्या और न्यादर्श को परिभाषित करना, प्रदत्तों को एकत्रित करना और प्रदत्तों का विश्लेषण करना
(स) अनुसंधान का सर्वे करना, अनुसंधान समस्या को परिभाषित करना, प्रदत्तों का संकलन करना और परिणामों को प्रस्तुत करना
(द) अनुसंधान चरों को परिभाषित करना, अनुसंधान की परिकल्पना, का परीक्षण और अनुसंधान परिणामों का प्रतिवेदन देना

Which of the following sequence represent the most logical sequence in doing research ?

(A) Identifying and defining a research problem, formulating a hypothesis, testing of hypothesis and reporting the result
(B) Identifying a research problem, defining the population and sample, collecting data and analysis of data
(C) Survey of research, defining the research problem, collecting data and presenting the outcomes
(D) Defining research variables, hypothesizing testing of research and reporting of research outcomes.

उत्तर-(अ) अनुसंधान समस्या की पहचान करना और उसे परिभाषित करना, परिकल्पना निर्मित करना, परिकल्पना का परीक्षण करना और परिणामों का प्रतिवेदन देना

शोध एक व्यवस्थित प्रक्रिया है। सामान्यतः शोधकर्ता पहले समस्या पहचानता है, फिर संभावित उत्तर के रूप में परिकल्पना बनाता है, आँकड़ों और उपयुक्त विधियों से उसकी जाँच करता है तथा अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत करता है।

1. शोध समस्या की पहचान 2. परिकल्पना का निर्माण
3. परिकल्पना का परीक्षण 4. परिणामों का प्रतिवेदन

9. **'औपचारिक शिक्षा के बारे में जनजातीय लोगों की धारणा' शीर्षक का अध्ययन किस प्रकार के शोध के अंतर्गत आता है ?**

(अ) ऐतिहासिक (ब) प्रायोगिक
(स) कार्योत्तर विधि (द) नृवंशविज्ञान

A study on the topic "Perception of tribal people about formal education" comes under which of the type of research?

(A) Historical (B). Experimental
(C) Expost facto (D) Ethnographic

उत्तर-(द) नृवंशविज्ञान (Ethnography)।

नृवंशविज्ञान में किसी समुदाय की संस्कृति, मान्यताओं, व्यवहारों, जीवनशैली और दृष्टिकोण का अध्ययन किया जाता है।

यहाँ जनजातीय समुदाय के लोगों की औपचारिक शिक्षा के प्रति धारणा का अध्ययन किया जा रहा है, इसलिए नृवंशविज्ञान सबसे उपयुक्त विकल्प है।

अन्य विकल्प-

- **ऐतिहासिक शोधः** अतीत की घटनाओं और अभिलेखों का अध्ययन।
- **प्रायोगिक शोधः** चरों में नियंत्रित परिवर्तन करके प्रभाव की जाँच।
- **कार्य-उत्तर शोधः** पहले से घटित परिस्थितियों या घटनाओं के आधार पर संभावित संबंधों का अध्ययन।

10. एस.पी.एस.एस. से आशय हैः

(अ) सामाजिक अध्ययन के लिए सांख्यिकीय पैकेज
(ब) न्यादर्श अध्ययन के लिए सांख्यिकीय पैकेज
(स) सामाजिक विज्ञानों के लिए सांख्यिकीय पैकेज
(द) सामाजिक सेवा के लिए सांख्यिकीय पैकेज

SPSS stands for:

(A) Statistical Package for Social Studies
(B) Statistical Package for Sampling Studies
(C) Statistical Package for Social Sciences
(D) Statistical Package for Social Service

उत्तर-(स) सामाजिक विज्ञानों के लिए सांख्यिकीय पैकेज।

SPSS का पूरा नामः Statistical Package for the Social Sciences. SPSS एक सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर है, जिसका उपयोग आँकड़ों को व्यवस्थित करने, विश्लेषण करने और परिणाम निकालने के लिए किया जाता है।

इसके प्रमुख उपयोगः

- औसत और मानक विचलन निकालना।
- सहसंबंध और प्रतिगमन का विश्लेषण।
- t-test और ANOVA करना।
- शोध के आँकड़ों की सारणी और रिपोर्ट बनाना।

निम्नलिखित पैराग्राफ को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा प्रश्न संख्या 11 से 15 के उत्तर दीजिएः

1863 में कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ द्वारा गठित शान्ति निकेतन आश्रम से विश्व-भारती का विकास हुआ। आश्रम का तात्पर्य रिट्रीट होना था जहाँ सत्य के बाद साधक आकर शान्ति और एकान्त में ध्यान लगा सकते थे । 1901 में शान्ति निकेतन में रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा एक ऐसी शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से एक प्रायोगिक स्कूल प्रारंभ किया गया था जो प्रकृति से विमुख नहीं होगी, जहाँ विद्यार्थी स्वयं को एक बड़े समुदाय का सदस्य महसूस कर सकें और जहाँ से स्वतंत्रता, आपसी विश्वास और आनंद के वातावरण में सीख सकें और विकसित हो सकें। 1921 से शान्ति-निकेतन विश्व-भारती, जो कि एक अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय है, के रूप में एक आधार विकसित करने का प्रयास कर रहा है जहाँ पर भारत और पाश्चात्य देशों (पूर्व और पश्चिम) की संस्कृतियाँ एक स्थान पर मिल सकती हैं ।

Read the following paragraph carefully and answer question nos. 11 to 15:

The Visva-Bharti grew out of Shantiniketan Ashrama formed by Maharshi Devendranath, the father of poet Rabindranath Tagore, in 1863. The Ashram was meant to be a retreat where seekers after truth might come and meditate in peace and seclusion. In 1901 an experimental school was started at Shantiniketan by Rabindranath Tagore with the object of providing for an education which would not be divorced from nature, where the pupils could feel themselves to be members of a large community and where they could learn and grow in an atmosphere of freedom, mutual trust and joy. Since 1921, Shantiniketan has been the seat of Visva-Bharati, an international university, seeking to develop a basis on which the cultures of the East and the West may meet in common followship.

11. शान्ति निकेतन आश्रम किसके द्वारा स्थापित किया गया था ?

(अ) महर्षि हेमेन्द्रनाथ (ब) सविन्द्रनाथ टैगोर
(स) महर्षि देवेन्द्रनाथ (द) रविन्द्रनाथ टैगोर

Shantiniketan Ashram was formed by whom?

(A) Maharshi Hemendranath (B) Savindranath Tagore
(C) Maharshi Devendranath (D) Rabindranath Tagore

उत्तर-(स) महर्षि देवेन्द्रनाथ

गद्यांश के अनुसार, 1863 में कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ने शान्ति निकेतन आश्रम का गठन किया था।

12. आश्रम का उद्देश्य क्या था ?

(अ) शान्ति और भ्रम में मध्यस्थता करना
(ब) शान्ति और भ्रम में ध्यान लगाना
(स) शान्ति और एकान्त में मध्यस्थता करना
(द) शान्ति और एकान्त में ध्यान करना

What was the purpose of the Ashram?

(A) Mediate in peace and delusion
(B) Meditate in peace and delusion
(C) Mediate in peace and seclusion
(D) Meditate in peace and seclusion

उत्तर-(द) शान्ति और एकान्त में ध्यान करना।

आश्रम ऐसा स्थान था जहाँ सत्य के साधक शान्ति और एकान्त में ध्यान लगा सकें।

- शान्ति = मन की स्थिरता।
- एकान्त = शोर और व्यवधान से दूर रहना।
- ध्यान = मन को एकाग्र करना।

13. प्रयोगात्मक विद्यालय किस उद्देश्य से प्रारम्भ किया गया था ?

(अ) ऐसी शिक्षा देना जो भविष्य से अलग न हो
(ब) ऐसी शिक्षा देना जो प्रकृति से अलग न हो
(स) ऐसी शिक्षा देना जो प्राणियों से अलग न हो
(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

With what objective was the experimental school started?

(A) To provide education which is not divorced from future
(B) To provide education which is not divorced from nature
(C) To provide education which is not divorce from creatures
(D) None of the above

उत्तर-(ब) ऐसी शिक्षा देना जो प्रकृति से अलग न हो।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 1901 में ऐसा विद्यालय शुरू किया जहाँ विद्यार्थी प्रकृति के निकट रहकर सीख सकें और स्वतंत्रता, आपसी विश्वास तथा आनंद के वातावरण में विकसित हों।

14. **विश्व-भारती है:**
(अ) एक अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय (ब) एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय
(स) एक डीम्ड विश्वविद्यालय (द) एक निजी विश्वविद्यालय

Visva Bharti is:
(A) an international university (B) a national university
(C) a deemed university (D) a private university

उत्तर-(अ) एक अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय
गद्यांश में बताया गया है कि 1921 से विश्व-भारती को ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में विकसित करने का प्रयास किया गया जहाँ भारतीय और पाश्चात्य संस्कृतियाँ एक साथ मिल सकें।

15. **'प्रकृति से विमुख' से आप क्या समझते हैं?**
(अ) प्रकृति से जुड़ा हुआ (ब) प्रकृति से अलग
(स) प्रकृति के प्रति सम्मान (द) प्रकृति को स्वीकारना

What do you understand by "divorced from nature"?
(A) Connected to nature (B) Separated to nature
(C) Respect to nature (D) Accept to nature

उत्तर-(ब) प्रकृति से अलग
विमुख' का अर्थ है किसी चीज़ से दूर होना या उससे अलग होना।
उदाहरण: प्रकृति से विमुख = प्रकृति से अलग।
- **प्रकृति के प्रति सम्मान** = प्रकृति का आदर करना।

16. **संचार नेटवर्क में सर्कल नेटवर्क अनुमति देता है :**
(अ) प्रत्येक सदस्य की समूह में प्रत्येक अन्य सदस्य तक आसान पहुँच होती है
(ब) प्रत्येक सदस्य को अपने बायें या दायें बैठे व्यक्ति से बात करनी है और आगे नहीं
(स) ऊपर या नीचे जाने के लिए संचार, लेकिन बाद में नहीं
(द) उपर्युक्त सभी

In communication networks, the circle network allows:
(A) Every member has easy access to every other member in the group
(B) Each member to converse with the person on either left or right and no further.
(C) Communication to move up or down, but not laterally
(D) All of the above

उत्तर-(ब) प्रत्येक सदस्य को अपने बाएँ या दाएँ बैठे व्यक्ति से बात करनी है और आगे नहीं।
सर्कल नेटवर्क (Circle Network) में प्रत्येक सदस्य सामान्यतः अपने दोनों पड़ोसी सदस्यों से सीधे संवाद करता है। संदेश आगे के सदस्यों तक क्रमशः पहुँच सकता है, लेकिन प्रत्येक सदस्य सभी सदस्यों से सीधे संवाद नहीं करता।

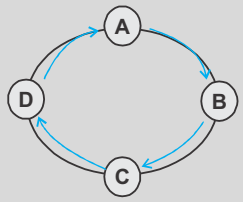

A → B → C → D → A : सदस्य क्रम से संदेश आगे पहुँचा सकते हैं।

17. **ग्रेपवाइन संचार में शामिल नहीं है :**
(अ) श्रृंखला प्रणाली (ब) क्लस्टर प्रणाली
(स) गॉसिप प्रणाली (द) मेटा संचार

Grapevine communication does not include:
(A) Chain system
(B) Cluster system
(C) Gossip system
(D) Meta Communication

उत्तर-(द) मेटा संचार (Meta Communication)।
ग्रेपवाइन संचार (Grapevine Communication) संगठन में होने वाला अनौपचारिक संचार है। इसमें सूचनाएँ और चर्चाएँ अनौपचारिक रूप से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचती हैं।
ग्रेपवाइन संचार के प्रमुख स्वरूप:
- **श्रृंखला प्रणाली (Single Strand):** एक व्यक्ति दूसरे को, फिर वह तीसरे को सूचना देता है।
- **क्लस्टर प्रणाली (Cluster):** कोई व्यक्ति अपने चुने हुए कुछ लोगों को सूचना देता है।
- **गॉसिप प्रणाली (Gossip):** एक व्यक्ति कई लोगों को सूचना बताता है।
- **मेटा संचार -** यह अनौपचारिक संचार का हिस्सा नहीं है क्योंकि इसमें, इशारे, अंतर्निहित भावों आदि को शामिल किया जाता है।

18. **किसी व्यक्ति के चेहरे के भावों और अन्य अवाचिक व्यवहार की नकल करके किसी दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को पकड़ने या साझा करने की स्वचालित प्रक्रिया को जाना जाता है :**
(अ) ग्रेपवाइन (ब) भावनात्मक संक्रमण
(स) अनुनयन (द) सूचना अधिभार

The automatic process of catching or sharing another person's emotions by mimicking that person's facial expressions and other non-verbal behaviour is known as:
(A) Grapevine (B) Emotional contagion
(C) Persuasion (D) Information overload

उत्तर-(ब) भावनात्मक संक्रमण (Emotional Contagion)।
भावनात्मक संक्रमण वह प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति की भावनाएँ दूसरे व्यक्ति तक अनजाने में पहुँच सकती हैं। इसमें चेहरे के भाव, आवाज़ का लहजा और शारीरिक हाव-भाव भूमिका निभाते हैं।
उदाहरण: किसी समूह में एक व्यक्ति का उत्साह देखकर दूसरे लोग भी उत्साहित हो जाते हैं।
अन्य विकल्प:
- **ग्रेपवाइन:** अनौपचारिक सूचना का प्रसार।
- **अनुनयन (Persuasion):** तर्क या प्रभाव के माध्यम से किसी की राय या व्यवहार बदलने का प्रयास।
- **सूचना अधिभार (Information Overload):** उपलब्ध जानकारी इतनी अधिक होना कि उसे प्रभावी ढंग से समझना कठिन हो जाए।

19. **निम्नलिखित में से किसे अधोमुखी संचार की विकृति माना जाता है?**
(अ) लिखित प्रसार विधियों पर निर्भरता
(ब) संदेश अधिभार
(स) छानना
(द) उपर्युक्त सभी

Which one of the following is considered as a distortion of downward communication ?
(A) Reliance upon written diffusion methods
(B) Message Overload
(C) Filtering
(D) All of the above

उत्तर-(द) उपर्युक्त सभी
अधोमुखी संचार (Downward Communication) में सूचना उच्च अधिकारी से अधीनस्थ कर्मचारियों तक पहुँचती है। इस प्रक्रिया में संदेश की प्रभावशीलता कम हो सकती है।
(अ) लिखित प्रसार विधियों पर निर्भरता: केवल लिखित माध्यम पर अधिक निर्भर रहने से संदेश की स्पष्टता या त्वरित प्रतिक्रिया प्रभावित हो सकती है।
(ब) संदेश अधिभार: कर्मचारियों को आवश्यकता से अधिक संदेश मिलने पर महत्वपूर्ण जानकारी छूट सकती है।
(स) छानना (Filtering): संदेश को बदलकर, कुछ जानकारी हटाकर या चुनिंदा जानकारी देकर आगे पहुँचाना।

20. **भेल, भोपाल में एक विशेष तंत्र विकसित किया गया है जिसका संक्षिप्त नाम MECOM है। इसका अभिप्राय है:**
(अ) मध्य कर्मचारी संचार
(ब) पारस्परिक आर्थिक संचार
(स) प्रबंधन और कर्मचारी संचार
(द) प्रबंधन और बाहरी संचार
In BHEL, Bhopal a special mechanism has been developed with an acronym MECOM. It stands for:
(A) Middle Employee Communication
(B) Mutual Economic Communication
(C) Management and Employee Communication
(D) Management and External Communication

उत्तर-(स) प्रबंधन और कर्मचारी संचार (Management and Employee Communication)।
MECOM को प्रबंधन और कर्मचारियों के बीच संचार से संबंधित है। इसका उद्देश्य संगठन में प्रबंधन और कर्मचारियों के बीच सूचना तथा संवाद को बेहतर बनाना है।

21. **एक कक्षा में 15 छात्रों और 1 शिक्षक की औसत आयु 18 वर्ष है। यदि शिक्षक की आयु हटायी जाती है तो छात्रों की औसत आयु 1 वर्ष कम हो जाती है। फिर शिक्षक की आयु कितनी है ?**
(अ) 35 वर्ष (ब) 32 वर्ष
(स) 33 वर्ष (द) 28 वर्ष
In a class, average age of 15 students and a teacher is 18 years. If teacher's age is eliminated then the average age of students is reduced by one year. Then how much is the age of the teacher ?
(A) 35 years (B) 32 years
(C) 33 years (D) 28 years

उत्तर-(स) 33 वर्ष
(Equation Method) समीकरण विधि -
कुल व्यक्ति = 15 + 1 = 16
सभी व्यक्तियों की कुल आयु = 16 × 18 = 288 वर्ष
छात्रों की औसत आयु = 18 – 1 = 17 वर्ष
15 छात्रों की कुल आयु = 15 × 17 = 255 वर्ष
शिक्षक की आयु = 288 – 255 = 33 वर्ष

22. **एक गाँव में 250 किसानों में से 28% किसानों ने गन्ने की फसल ली है। इन गन्ना उत्पादक किसानों में से 40% किसान सहकारी चीनी कारखाने के सदस्य हैं, तो कितने किसान सहकारी चीनी कारखाने के सदस्य हैं ?**
In a village out of 250 farmers, 28% of them have taken a crop of sugarcane. Out of these sugarcane growing farmers, 40% are the members of cooperative sugar factory. Then how many farmers. are the members of the sugar factory?
(अ) 28 (ब) 60
(स) 42 (द) 38

उत्तर-(अ) 28 किसान
कुल किसान = 250
गन्ने की फसल लेने वाले किसान = 28%
गन्ना उत्पादक किसानों की संख्या $= 250 \times \frac{28}{100} = 70$
इनमें से 40% किसान कारखाने के सदस्य हैं $= 70 \times \frac{40}{100} = 28$

23. **किसी सांकेतिक भाषा में यदि 'BINA' शब्द को 310152 के रूप में लिखा जाता है तो उसी भाषा में 'DELHI' शब्द किस प्रकार लिखा जायेगा ?**
In a code language, if 'BINA' is coded as 310152, then how is 'DELHI' coded in the same language?
(अ) 4513910 (ब) 5613890
(स) 4612910 (द) 5613910

उत्तर-(द) 5613910
वर्णमाला के क्रमानुसार,

A	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K	L	M
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13

N	O	P	Q	R	S	T	U	V	W	X	Y	Z
14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	23	25	26

जिस प्रकार,

B	I	N	A
+1 ↓	+1 ↓	+1 ↓	+1 ↓
3	10	15	2

उसी प्रकार,

D	E	L	H	I
+1 ↓	+1 ↓	+1 ↓	+1 ↓	+1 ↓
5	6	13	9	10

DELHI को 5613910 लिखा जायेगा।

24. एक शहर में कार्यरत और बेरोजगार लोगों का अनुपात 3:2 है। अगर शहर में 750 व्यक्ति हैं तो फिर शहर में कितने बेरोजगार हैं ?
In a town the ratio of employed and unemployed persons is 3: 2. If there are 750 persons in the town, how many persons are unemployed ?
(अ) 350 (ब) 300
(स) 450 (द) 250

उत्तर-(ब) 300
रोजगार युक्त और बेरोजगार व्यक्तियों का अनुपात = 3 : 2
⇒ कुल अनुपाती योग = 3 + 2 = 5
⇒ कस्बे में कुल व्यक्तियों की संख्या = 750

$$\Rightarrow \text{बेरोजगार व्यक्तियों की संख्या} = \frac{\text{बेरोजगार का अनुपात}}{\text{कुल अनुपाती योग}} \times \text{कुल व्यक्ति}$$

$$\Rightarrow \text{बेरोजगार व्यक्तियों की संख्या} = \frac{2}{5} \times 750$$

⇒ बेरोजगार व्यक्तियों की संख्या = 2 × 150 = 300
अतः कस्बे में 300 व्यक्ति बेरोजगार है।

25. निम्नलिखित में से कौनसा नीचे दी गयी अक्षर श्रृंखला को पूरा करेगा ?
Which of the following will complete the letter series given below:
GEF, KIJ, ..., SQR
(अ) LNM (ब) OMN
(स) PNO (द) NOM

उत्तर-(ब) OMN
जिस प्रकार,

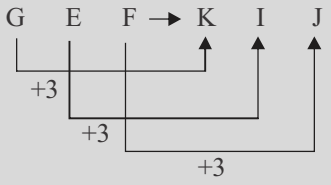

उस प्रकार,

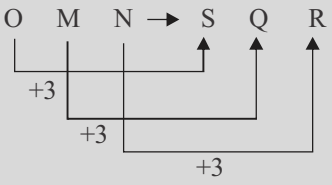

अतः रिक्त स्थान पर OMN आएगा।

26. आगमनात्मक तार्किकता आधारित हैः
(अ) प्रकृति की समरूपता पर (ब) ईश्वर की बनाई दुनिया पर
(स) प्रकृति की एकता पर (द) प्रकृति के नियम पर
Inductive reasoning is based on:
(A) Uniformity of nature (B) God-created world
(C) Unity of nature (D) Law of nature

उत्तर-(अ) प्रकृति की समरूपता पर।
आगमनात्मक तर्क (Inductive Reasoning) में विशेष उदाहरणों और अनुभवों के आधार पर सामान्य निष्कर्ष निकाला जाता है। यह इस धारणा पर आधारित होता है कि प्रकृति में समान परिस्थितियों में कुछ समानताएँ और नियमितताएँ देखने को मिलती हैं।
उदाहरणः
• लोहे को गर्म करने पर फैलते देखा।
• ताँबे को गर्म करने पर फैलते देखा।
• अन्य धातुओं में भी ऐसा पाया।
निष्कर्षः धातुएँ गर्म करने पर सामान्यतः फैलती हैं।

27. निम्नलिखित में से कौनसे कथन एक-दूसरे के प्रतिवादी हैं?
(a) सभी पुरुष अच्छे है। (b) कोई आदमी अच्छा नहीं है
(c) कुछ पुरुष अच्छे हैं। (d) कुछ पुरुष अच्छे नहीं हैं।
(अ) (a) तथा (b) (ब) (b) तथा (c)
(स) (c) तथा (d) (द) (a) तथा (d)
Which of the following are contraviety to each other?
(a) All men are good. (b) No men are good.
(c) Some men are good.
(d) Some men are not good.
(A) (a) and (b) (B) (b) and (c)
(C) (c) and (d) (D) (a) and (d)

उत्तर-(अ) (a) तथा (b)
पारंपरिक तर्कशास्त्र में (a) और (b) परस्पर विरोधी कथन हैं।
(a) सभी पुरुष अच्छे हैं – सार्वभौमिक सकारात्मक कथन।
(b) कोई पुरुष अच्छा नहीं है – सार्वभौमिक नकारात्मक कथन।
दोनों कथन एक साथ सत्य नहीं हो सकते, लेकिन दोनों असत्य हो सकते हैं।

28. न्याय न्यायवाक्य (न्याययुक्ति) एक औपचारिक पाँच-स्तंभ तर्कवाक्यों को नियोजित करता है। सूची-I के पदों को सूची-II के पदों से सुमेलित कीजिए :

सूची I	सूची II
(a) पहाड़ पर आग (लगी) है	(i) प्रतिज्ञा
(b) क्योंकि पहाड़ पर धुँआ है	(ii) हेतु
(c) जहाँ भी धुँआ होता है, वहाँ आग होती है	(iii) उदाहरण
(d) पहाड़ पर धुँआ है	(iv) उपनय
(e) इसलिए पहाड़ पर आग है	(v) निगमन

(अ) a-i, b-ii, c-iii, d-v, e-iv (ब) a-ii, b-i, c-iii, d-iv, e-v
(स) a-i, b-ii, c-iii, d-iv, e-v (द) a-i, b-iii, c-ii, d-iv, e-v
Nyaya syllogism employs a formal five-step argument. Match the items in the List-I with those in List-II:

List I	List II
(a) There is fire on the hill	(i) Pratijna
(b) Because there is smoke on the hill	(ii) Hetu
(c) Whether there is smoke there is fire	(iii) Udaharana
(d) There is smoke on the hill	(iv) Upanaya
(e) Thus, there is fire on the hill	(v) Nigamana

(A) a-i, b-ii, c-iii, d-v, e-iv (B) a-ii, b-i, c-iii, d-iv, e-v
(C) a-i, b-ii, c-iii, d-iv, e-v (D) a-i, b-iii, c-ii, d-iv, e-v

उत्तर-(स) a-i, b-ii, c-iii, d-iv, e-v

न्याय दर्शन में पाँच अवयवों वाला तर्क प्रस्तुत किया जाता है।

सूची I–कथन	सूची II–पद
(a) पहाड़ पर आग है।	(i) प्रतिज्ञा
(b) क्योंकि पहाड़ पर धुआँ है।	(ii) हेतु
(c) जहाँ भी धुआँ होता है, वहाँ आग होती है।	(iii) उदाहरण
(d) पहाड़ पर धुआँ है।	(iv) उपनय
(e) इसलिए पहाड़ पर आग है।	(v) निगमन

29. निम्नलिखित में से कौनसा हेत्वाभास एक अनियमित मध्य पद का भ्रम है ?

(अ) सव्यभिचार (ब) बाधिता

(स) सत्प्रतिपक्ष (द) सध्यसमा

In which of the following types of Hetvabhasa is the fallacy of an irregular middle term ?

(A) Savyabhichara (B) Badhita

(C) Satpratipaksha (D) Sadhyasama

उत्तर-(अ) सव्यभिचार

सव्यभिचार हेत्वाभास को अनियमित मध्य पद(Irregular Middle) का दोष कहा जाता है। इसमें दिया गया हेतु साध्य को निश्चित रूप से सिद्ध नहीं करता।

उदाहरणः • जहाँ धुआँ है, वहाँ आग है। • पहाड़ पर धुआँ है।
• इसलिए पहाड़ पर आग है।

यह उचित तर्क है। लेकिन यदि कहा जाए, 'यह वस्तु ज्ञेय है क्योंकि यह नाम वाली है,' तो दिया गया हेतु निष्कर्ष को निश्चित रूप से सिद्ध नहीं करता।

30. (a) सभी पक्षी अंडे देते हैं । (b) कौवे पक्षी हैं । (c) कौवे अंडे देते हैं।

उपर्युक्त कथनों में किस प्रकार का तर्क है ?

(अ) आगमनात्मक (विवेचनात्मक) तर्क (ब) निगमनात्मक तर्क

(स) दोनों (अ) तथा (ब) (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(a) All birds lay eggs. (b) Crows are birds.

(c) Crows lay eggs.

What is the type of reasoning in the above statements ?

(A) Inductive Reasoning (B) Deductive Reasoning

(C) Both (A) and (B) (D) None of the above

उत्तर-(ब) निगमनात्मक तर्क

निगमनात्मक तर्क (Deductive Reasoning) में सामान्य नियम से विशेष निष्कर्ष निकाला जाता है।

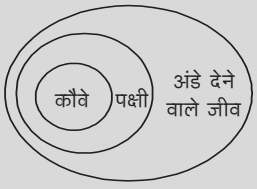

यहाँः • सामान्य नियमः सभी पक्षी अंडे देते हैं।
• **विशेष तथ्यः** कौवे पक्षी हैं।
• **निष्कर्षः** कौवे अंडे देते हैं।

इसलिए यह सामान्य से विशेष की ओर जाने वाला निगमनात्मक तर्क है।

31. निम्नलिखित में से कौनसा द्वितीयक समंकों का स्रोत नहीं है ?

(अ) अप्रत्यक्ष मौखिक साक्षात्कार

(ब) समितियों व आयोगों के प्रतिवेदन

(स) अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रकाशन

(द) अनुसंधान संस्थाओं के प्रकाशन

Which of the following is not a source of secondary data ?

(A) Indirect oral interview

(B) Reports of committees and commissions

(C) Publications of International Institutions

(D) Publications of Research Institutions

उत्तर-(अ) अप्रत्यक्ष मौखिक साक्षात्कार।

समंक (Data) दो प्रकार के होते हैं-

- **प्राथमिक समंकः** शोधकर्ता द्वारा पहली बार स्वयं एकत्र किए जाते हैं।
- **द्वितीयक समंकः** पहले से किसी अन्य व्यक्ति या संस्था द्वारा एकत्र और प्रकाशित किए गए आँकड़े।

अप्रत्यक्ष मौखिक साक्षात्कार में शोधकर्ता संबंधित व्यक्तियों से जानकारी लेकर आँकड़े एकत्र करता है। इसलिए इसे प्राथमिक समंक संग्रह की विधि माना जाता है।

अन्य विकल्पों में समितियों, आयोगों, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और अनुसंधान संस्थाओं के प्रकाशित प्रतिवेदन द्वितीयक समंकों के स्रोत हैं।

32. यदि समंकों का वर्गीकरण 0-10, 10-20, 20-30 ..... रूप में किया जाता है, तो वर्गीकरण की यह विधि कहलाती हैः

(अ) व्यक्तिगत विधि (श्रेणी) (ब) अपवर्जी विधि (श्रेणी)

(स) समावेशी विधि (श्रेणी) (द) खण्डित विधि (श्रेणी)

If data is classified as 0-10, 10-20, 20-30,..... the method of this classification is known as:

(A) Individual Method (Series)

(B) Exclusive Method (Series)

(C) Inclusive Method (Series)

(D) Discrete Method (Series)

उत्तर-(ब) अपवर्जी विधि (Exclusive Method)

अपवर्जी विधि में एक वर्ग की ऊपरी सीमा अगले वर्ग की निचली सीमा होती है। सीमा पर आने वाला मान अगले वर्ग में शामिल किया जाता है।

उदाहरणः

वर्ग-अंतराल	किस वर्ग में जाएगा?
0-10	0 शामिल, 10 अगले वर्ग में
10-20	10 शामिल, 20 अगले वर्ग में
20-30	20 शामिल, 30 अगले वर्ग में

इसलिए 10 का मान 10-20 वर्ग में आएगा, न कि 0-10 में।

33. निम्नलिखित में से कौनसा द्वि-विमा चित्र का प्रकार नहीं है ?

(अ) वर्ग चित्र (ब) पाई (कोणीय) चित्र

(स) आयत चित्र (द) आवृत्ति चित्र

Which of the following is not a type of two-dimensional diagram ?

(A) Square diagram (B) Pie diagram

(C) Rectangular diagram (D) Histogram

उत्तर-(द) आवृत्ति चित्र

द्वि-विमा चित्रों में आँकड़ों को लंबाई और चौड़ाई, दोनों के आधार पर प्रदर्शित किया जाता है।

- **वर्ग चित्रः** वर्ग के क्षेत्रफल से आँकड़े दर्शाए जाते हैं।
- **पाई (कोणीय) चित्रः** वृत्त के विभिन्न भागों से आँकड़े दर्शाए जाते हैं।
- **आयत चित्रः** आयत के क्षेत्रफल से आँकड़े दर्शाए जाते हैं।
- **आवृत्ति चित्रः** यह विकल्प सामान्य रूप से किसी विशिष्ट द्वि-विमा चित्र का नाम नहीं है।

34. माध्यिका के मान का बिन्दुरेखीय निर्धारण जिस बिन्दुरेखा की सहायता से किया जाता है वह कहलाता है :

(अ) आवृत्ति चित्र
(ब) आवृत्ति बहुभुज
(स) आवृत्ति वक्र
(द) ओजाइव वक्र (संचयी आवृत्ति वक्र)

The value of median is determined graphically with the help of the graph known as:

(A) Histogram
(B) Frequency polygon
(C) Frequency curve
(D) Ogive curve (Cumulative Frequency Curve)

उत्तर-(द) ओजाइव वक्र (संचयी आवृत्ति वक्र)।

माध्यिका (Median) वह मान है जो किसी व्यवस्थित आँकड़ा-समूह को दो बराबर भागों में बाँटता है। माध्यिका का मान ग्राफ की सहायता से ओजाइव वक्र (Ogive Curve) द्वारा ज्ञात किया जाता है। इसे संचयी आवृत्ति वक्र (Cumulative Frequency Curve) भी कहते हैं।

35. जब भूयिष्ठिक (Z) अवर्णनीय (अस्पष्ट) हो तो इसका निर्धारण जिस सूत्र से किया जाता है, वह है :

When mode (Z) is ill-defined, its value is determined by the formula:

(अ) $Z = 2M - \overline{X}$ (ब) $Z = 3M + 2\overline{X}$

(स) $Z = 3M - 2\overline{X}$ (द) $Z = 3\overline{X} - 2M$

(जहाँ M-माध्यिका व $\overline{X}$ - माध्य है)
(Where, M-median and overline $\overline{X}$ - mean)

उत्तर-(स) $Z = 3M - 2\overline{X}$

1. **माध्यिका (Median)M:** बड़ा शब्द → इसके साथ 3 आएगा। (3M)
2. **माध्य (Mean)($\overline{X}$) :** छोटा शब्द → इसके साथ 2 आएगा। ($2\overline{X}$)
3. हमेशा बड़े मान से छोटे मान को घटाते हैं।

बहुलक (Mode) = 3 × माध्यिका (Median) – 2 × माध्य (Mean)

$$Z = 3M - 2\overline{X}$$

36. कौनसा घटक आपके कम्प्यूटर को स्थायी रूप से बड़ी मात्रा में डाटा बनाये रखने में सक्षम बनाता है ?

(अ) केन्द्रीय प्रसंस्करण इकाई (सी.पी.यू.)
(ब) रैम
(स) स्टोरेज डिवाइस
(द) रोम

Which component enables your computer to permanently retain large amount of data?

(A) Central Processing Unit (B) RAM
(C) Storage Device (D) ROM

उत्तर-(स) स्टोरेज डिवाइस।

स्टोरेज डिवाइस डेटा और फाइलों को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए उपयोग किया जाता है।

- **CPU**: निर्देशों को संसाधित करता है।
- **RAM:** अस्थायी रूप से डेटा रखती है, बिजली बंद होने पर डेटा मिट जाता है।
- **स्टोरेज डिवाइसः** HDD, SSD आदि में डेटा स्थायी रूप से रखा जाता है।
- **ROM:** स्थायी निर्देशों या फर्मवेयर को रखने वाली मेमोरी है।

37. उस डिवाइस का नाम जो टेलीफोन लाइन के माध्यम से कम्प्यूटर को इंटरनेट से जोड़ता है:

(अ) मोडेम (ब) केबल
(स) जैक (द) कर्सर

Name of the device that connects computers to internet by means of a telephone line:

(A) Modem (B) Cable
(C) Jack (D) Cursor

उत्तर-(अ) मोडेम (Modem)

मोडेम का पूरा नाम Modulator-Demodulator है। यह संचार माध्यम पर डेटा भेजने और प्राप्त करने के लिए संकेतों को रूपांतरित करता है।

38. निम्नलिखित में से कौनसा इंटरनेट सिस्टम सर्च इंजन नहीं है ?

(अ) गूगल (ब) अपोलो
(स) याहू (द) डॉगपाइल

Which of the following is not a search engine in the internet system?

(A) Google (B) Apollo
(C) Yahoo (D) Dogpile

उत्तर-(ब) अपोलो

- **Google:** लोकप्रिय सर्च इंजन।
- **Yahoo:** वेब सर्च सेवा और पोर्टल।
- **Dogpile**: एक मेटासर्च इंजन, जो अन्य सर्च इंजनों के परिणाम एकत्र करता है।
- **Apollo:** दिए गए विकल्पों में सामान्य इंटरनेट सर्च इंजन के रूप में नहीं जाना जाता।

39. भारत द्वारा शिक्षा जगत के लिए सर्वप्रथम कौनसी सेटेलाइट भेजी गई थी ?

(अ) सेटऐडू (ब) इनसेट बी
(स) एडूसेट (द) इनसेट सी

The first Indian satellite for serving the education sector is known as:

(A) SATEDU (B) INSAT B
(C) EDUSAT (D) INSAT C

उत्तर-(स) एडूसेट (EDUSAT)

EDUSAT भारत का पहला समर्पित शैक्षिक उपग्रह था। इसे 20 सितंबर 2004 को प्रक्षेपित किया गया था। इसका उद्देश्य दूरस्थ शिक्षा और शैक्षिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देना था।

40. नेपटेल (NPTEL) का पूर्ण रूप हैः

(अ) नेशनल प्रोग्राम ऑन टेक्नोलॉजी इनेबिल्ड लर्निंग
(ब) नेशनल प्रोग्राम ऑन टेक्नोलॉजी एनहांस्ड लेसन्स
(स) नेशनल प्रोग्राम ऑन टेक्नोलॉजी इम्बेडिड लर्निंग
(द) नेशनल प्रोग्राम ऑफ टेक्नोलॉजी एनहांस्ड लर्निंग

NPTEL stands for:

(A) National Programme on Technology Enabled Learning
(B) National Programme on Technology Enhanced Lessons
(C) National Programme on Technology Embedded Learning
(D) National Programme of Technology Enhanced Learning

उत्तर-(अ) National Programme on Technology Enhanced Learning

NPTEL भारत की एक शैक्षिक पहल है, जिसे IITs और IISc के सहयोग से शुरू किया गया। इसके माध्यम से इंजीनियरिंग, विज्ञान और अन्य विषयों के ऑनलाइन पाठ्यक्रम उपलब्ध कराए जाते हैं।

41. वर्ष 2010 और 2020 के बीच की अवधि में औसत वार्षिक वन क्षेत्र की निवल वृद्धि के सम्बन्ध में देश का वैश्विक स्तर पर कौनसा स्थान रहा ?

(अ) दूसरा (ब) तीसरा
(स) चौथा (द) पाँचवाँ

What rank does India hold globally with respect to net gain in average annual forest area between year 2010 and 2020?

(A) Second (B) Third
(C) Fourth (D) Fifth

उत्तर-(ब) तीसरा

आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 के अनुसार, 2010 से 2020 के बीच भारत वन क्षेत्र की औसत वार्षिक निवल वृद्धि में विश्व में तीसरे स्थान पर था। भारत में औसतन लगभग 2.66 लाख हेक्टेयर वन क्षेत्र प्रतिवर्ष बढ़ा।

42. केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण (सी.ई.ए.) के अनुसार वर्ष 2029-30 के लिए कुल संस्थापित क्षमता के इष्टतम मिश्रण में सौर एवं पवन ऊर्जा का संयुक्त अंश निर्धारित है :

(अ) 40.37 प्रतिशत (ब) 60.41 प्रतिशत
(स) 69.37 प्रतिशत (द) 51.41 प्रतिशत

As per the Central Electricity Authority (CEA), the combined share of solar and wind energy in total projected optimal mix of installed capacity for 2029-30 is:

(A) 40.37 per cent (B) 60.41 per cent
(C) 69.37 per cent (D) 51.41 per cent

उत्तर-(द) 51.41 प्रतिशत

केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण (CEA) की रिपोर्टः 'Report on Optimal Generation Capacity Mix for 2029-30' के अनुसार, वर्ष 2029-30 तक भारत की कुल अनुमानित स्थापित क्षमता में सौर (Solar) और पवन (Wind) ऊर्जा का संयुक्त हिस्सा 51.41% रहने का अनुमान लगाया गया है। वर्ष 2029-30 के अंत तक देश की कुल बिजली उत्पादन क्षमता लगभग 817 GW (गीगावॉट) होने की संभावना है, जिसमें सौर ऊर्जा (280 GW) और पवन ऊर्जा (140 GW) प्रमुख योगदानकर्ता होंगे।

43. सतत् विकास लक्ष्यों के सम्बन्ध में निम्न कथनों पर विचार कीजिएः

(i) इसमें 20 लक्ष्य एवं 180 टारगेट हैं।
(ii) इसे सितम्बर, 2015 में न्यूयार्क में अपनाया गया था ।

सही विकल्प चुनिए :

(अ) (i) एवं (ii) दोनों सही है
(ब) (i) एवं (ii) दोनों गलत है
(स) केवल (i) सही है
(द) केवल (ii) सही है

Consider the following statements regarding Sustainable Development Goals:

(i) It contains 20 Goals and 180 Targets
(ii) It was adopted in New York in September, 2015

Choose the correct option:

(A) Both (i) and (ii) are correct
(B) Both (i) and (ii) are incorrect
(C) Only (i) is correct
(D) Only (ii) is correct

उत्तर-(द) केवल (ii) सही है।

- **कथन (i) गलतः** सतत् विकास लक्ष्यों में 20 लक्ष्य और 180 टारगेट नहीं हैं। वास्तव में 17 लक्ष्य और 169 टारगेट हैं।
- **कथन (ii) सहीः** इन्हें सितंबर 2015 में न्यूयॉर्क में अपनाया गया था।

44. निम्नलिखित में से कौनसा पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 में सम्मिलित नहीं है ?

(अ) पारिस्थितिकी संवेदी क्षेत्र
(ब) आर्द्रभूमि
(स) चिड़ियाघर एवं उद्यान
(द) तटीय विनियमन क्षेत्र

Which of the following is not covered under Environment Protection Act, 1986?

(A) Eco-sensitive Zone
(B) Wetland
(C) Zoos and Parks
(D) Coastal Regulation Zone

उत्तर-(स) चिड़ियाघर एवं उद्यान।

चिड़ियाघरों का नियमन मुख्यतः वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 और केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण से संबंधित प्रावधानों के अंतर्गत होता है। दूसरी ओर, पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 के अंतर्गत पर्यावरण संबंधी विभिन्न अधिसूचनाएँ जारी की गई हैं।

45. जैव-विविधता पर कन्वेंशन (सी.बी.डी.) के सम्बन्ध में निम्न पर विचार कीजिएः

(i) यह 29 दिसम्बर, 1993 को अस्तित्व में आया ।

(ii) भारत इसकी एक पार्टी है ।

(iii) भारत ने इस पर 1996 में हस्ताक्षर किए।

(iv) अन्तर्राष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस प्रति वर्ष 22 जून को मनाया जाता है।

सही विकल्प का चयन कीजिएः

(अ) केवल (i) और (ii) सही है

(ब) केवल (iii) और (iv) सही है

(स) केवल (i) और (iii) सही है

(द) केवल (ii) और (iv) सही है

Consider the following regarding Convention on Biological Diversity (CBD):

(i) It came into force on 29 December, 1993

(ii) India is one of the parties to the convention.

(iii) India signed the convention in 1996.

(iv) International Biodiversity Day is celebrated every year on 22 June

Choose the correct option:

(A) Only (i) and (ii) are correct.

(B) Only (iii) and (iv) are correct.

(C) Only (i) and (iii) are correct.

(D) Only (ii) and (iv) are correct.

उत्तर-(अ) केवल (i) और (ii) सही हैं।

- **कथन (i) सहीः** CBD 29 दिसंबर 1993 को अस्तित्व में आया।
- **कथन (ii) सहीः** भारत इस कन्वेंशन की पार्टी है। भारत ने 1994 में इसका अनुसमर्थन किया। 1
- **कथन (iii) गलतः** भारत ने 1996 में नहीं, बल्कि 1992 में इस पर हस्ताक्षर किए थे।
- **कथन (iv) गलतः** अंतरराष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस 22 मई को मनाया जाता है, 22 जून को नहीं।

46. निम्नलिखित में से कौनसे पहले तीन विश्वविद्यालय थे जो 1857 के दौरान स्थापित किए गए थे ?

(अ) कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली

(ब) कलकत्ता, बम्बई, मद्रास

(स) बम्बई, दिल्ली, मद्रास

(द) दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास

Which of the following were the first three universities that were established during 1857 ?

(A) Calcutta, Bombay, Delhi

(B) Calcutta, Bombay, Madras

(C) Bombay, Delhi, Madras

(D) Delhi, Calcutta, Madras

उत्तर-(ब) कलकत्ता, बम्बई, मद्रास

भारत में वर्ष 1857 में ये तीन विश्वविद्यालय (कलकत्ता, बम्बई, मद्रास) स्थापित हुए थे।

47. निम्नलिखित में से कौनसा स्वयं का एक चतुर्थांश नहीं है ?

(अ) ई-ट्यूटोरियल (ब) ऑनलाइन चर्चा मंच

(स) ई-कन्टेन्ट (द) पोडकास्ट

Which of the following is not a quadrant of Swayam ?

(A) *e*-tutorial

(B) Online discussion forum

(C) *e*-content

(D) Podcast

उत्तर-(द) पोडकास्ट

SWAYAM के चार चतुर्थांश (Quadrants) हैंः

1. वीडियो लेक्चर
2. ई-कंटेन्ट ई-अध्ययन सामग्री
3. ऑनलाइन चर्चा मंच
4. स्व-मूल्यांकन परीक्षण (क्विज़ एवं टेस्ट)

48. उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (जी.ई.आर.) को 50 प्रतिशत तक बढ़ाने के लिए एन.ई.पी.-2020 द्वारा तैयार की गई समय सीमा क्या है ?

What is the timeline produced by NEP-2020 to raise Gross Enrollment Ratio (GER) in Higher Education to 50% ?

(अ) 2025 (ब) 2030

(स) 2035 (द) 2040

उत्तर-(स) 2035

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 2020 का लक्ष्य उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (GER) को वर्ष 2035 तक 50% करना है।

49. राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) की स्थापना 1994 में की गई थीः

(अ) UGC द्वारा (ब) AICTE द्वारा

(स) NCERT द्वारा (द) DEC द्वारा

National Assessment and Accreditation Council (NAAC) was established in 1994 by:

(A) UGC (B) AICTE

(C) NCERT (D) DEC

उत्तर-(अ) UGC द्वारा

NAAC का पूरा नाम **National Assessment and Accreditation Council** है। इसकी स्थापना सितंबर **1994** में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा बेंगलुरु में की गई थी।

50. भारत में पहला खुला विश्वविद्यालय किस वर्ष स्थापित किया गया था ?

The first Open University in India was established in which year ?

(अ) 1982 (ब) 1985

(स) 1988 (द) 1989

उत्तर-(अ) 1982

आंध्र प्रदेश ओपन यूनिवर्सिटी की स्थापना 26 अगस्त 1982 को हुई थी। बाद में इसका नाम डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ओपन यूनिवर्सिटी रखा गया।

51. पालि भाषा तथा अशोक की धर्म-लिपियों का कालक्रम हैः

(अ) 1500 ई.पू. से 500 ई.पू. (ब) 500 ई.पू. से 1 ई.

(स) 2000 ई.पू. से 1500 ई.पू. (द) 500 ई.पू. से अब तक

उत्तर-(ब) 500 ई.पू. से 1 ई.

भारतीय आर्य भाषाओं के इतिहास में पालि भाषा और अशोक की धर्म-लिपियों (अभिलेखों की भाषा) का समय 'प्रथम प्राकृत काल' के अंतर्गत आता है, जिसका प्रमाणिक कालक्रम 500 ई.पू. से 1 ईस्वी तक माना जाता है।

सम्राट अशोक के अभिलेखों और धर्म-लिपियों का सामान्य कालक्रम निम्नलिखित प्रकार से है-

- **लघु शिलालेख-** यह अशोक के शासनकाल की शुरुआत (लगभग 10वें वर्ष, जैसे कंधार द्विभाषी अभिलेख 260 ई.पू.) में सबसे पहले उत्कीर्ण किए गए।
- **चतुर्दश दीर्घ शिलालेख-** लघु शिलालेखों के बाद के काल में (लगभग शासन के 12वें से 14वें वर्ष के दौरान) संपूर्ण साम्राज्य की सीमाओं पर ये उत्कीर्ण कराए गए।
- **लघु स्तंभ लेख**-जैसे- रुम्मिंदेई, निगाली सागर, क्वीन एडिक्ट (रानी का अभिलेख) और कौशांबी/प्रयाग का संघ भेद अभिलेख।
- **दीर्घ स्तंभ लेख-** सात प्रमुख स्तंभ लेख अशोक के शासनकाल के अंतिम वर्षों (लगभग 26वें से 27वें वर्ष के आसपास, 237-236 ई.पू.) में उत्कीर्ण कराए गए।

52. जॉर्ज ग्रियर्सन ने आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं को कितने भाषा समुदायों में बाँटा है?

(अ) छः (ब) सात

(स) चार (द) आठ

उत्तर- (अ) छः

जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ **'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया'** में आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं को 6 भाषा समुदायों (और 3 उप-शाखाओं) में वर्गीकृत किया है, जो इस प्रकार हैं-

ग्रियर्सन द्वारा किया गया वर्गीकरणः

1. **बहिरंग उपशाखा-**
   - **उत्तर-पश्चिमी समूहः** सिंधी और लहँदा (पश्चिमी पंजाबी)
   - **दक्षिणी समूहः** मराठी
   - **पूर्वी समूहः** उड़िया, बिहारी, बांग्ला और असमिया
2. **मध्य उपशाखा-मध्यवर्ती समूहः** पूर्वी हिंदी (अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी)
3. **अन्तरंग उपशाखा**
   - **केंद्रीय समूहः** पश्चिमी हिंदी (खड़ी बोली, ब्रज, बुंदेली, कन्नौजी, बांगड़ू), पूर्वी पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, भीली और पहाड़ी (पश्चिमी, केंद्रीय, पूर्वी/नेपाली)
   - **पहाड़ी समूहः** पश्चिमी पहाड़ी, केंद्रीय पहाड़ी (कुमाऊँनी, गढ़वाली) और पूर्वी पहाड़ी (नेपाली)

53. नागर अपभ्रंश के व्याकरण के लेखक हैं -

(अ) पुष्यदंत (ब) शालिभद्र सूरि

(स) स्वयंभू (द) हेमचंद्र

उत्तर- (द) हेमचंद्र

आचार्य हेमचंद्र ने अपने प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ 'सिद्धहेमशब्दानुशासन' के आठवें अध्याय में प्राकृत और अपभ्रंश (विशेष रूप से शिष्ट नागर अपभ्रंश) का सोदाहरण और विस्तृत व्याकरण प्रस्तुत किया है। इसी महान कार्य के कारण उन्हें 'प्राकृत का पाणिनि' भी कहा जाता है।

भाषाएँ-इस ग्रंथ में संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश तीनों भाषाओं का समावेश एवं व्याकरण दिया गया है।

पाँच अंग-यह एक पंचांगी व्याकरण है, जिसके पाँच प्रमुख अंग हैं1. सूत्रपाठ, 2. धातुपाठ, 3. गणपाठ, 4. उणादिसूत्रपाठ / उणादिप्रत्यय, 5.लिङ्गानुशासन

विशेषता- इसमें कुल आठ अध्याय हैं, जिनके अंतिम अध्यायों में विभिन्न प्राकृत भाषाओं का व्याकरण समझाया गया है।

54. इनमें से कौनसी ध्वनि अंतःस्थ व्यंजन है?

(अ) घ (ब) ष

(स) श (द) र

उत्तर- (द) र

अंतःस्थ व्यंजनः हिंदी वर्णमाला में चार अंतःस्थ व्यंजन होते हैं- य, र, ल, व।

अन्य विकल्पों का वर्गीकरण - • घ : कंठ्य व्यंजन (स्पर्श व्यंजन) **• ष :** ऊष्म व्यंजन **• श :** ऊष्म व्यंजन

55. 'खुशबू' में उपसर्ग है -

(अ) खु (ब) खुश

(स) उत् (द) यू

उत्तर- (ब) खुश

- खुश (उपसर्ग) + बू (मूल शब्द) = खुशबू।
- 'खुश' फारसी भाषा का उपसर्ग है, जिसका अर्थ 'अच्छा' होता है।

56. 'वाग्युद्ध' में समास हैः

(अ) कर्म तत्पुरुष (ब) संप्रदान तत्पुरुष

(स) करण तत्पुरुष (द) संबंध तत्पुरुष

उत्तर- (स) करण तत्पुरुष

'वाग्युद्ध' का समास विग्रह 'वाक् (वाणी) से युद्ध' होता है। इसमें करण कारक की विभक्ति 'से' का लोप हुआ है, इसलिए यह करण तत्पुरुष समास का उदाहरण है।

57. इनमें से कौनसा शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा होते हुए जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता है?

(अ) जगन्नाथपुरी (ब) राजा हरिश्चंद्र

(स) पंडितजी (द) मोटापा

उत्तर-(ब) राजा हरिश्चंद्र

यह मूल रूप से एक विशेष व्यक्ति का नाम है, इसलिए यह व्यक्तिवाचक संज्ञा है। लेकिन जब हम कहते हैं कि **''वह तो बड़ा हरिश्चंद्र बनता है''** या **''आज के जमाने में हरिश्चंद्रों की कमी है''**, तो यहाँ **'हरिश्चंद्र'** शब्द का प्रयोग किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि **'सत्यवादी और ईमानदार लोगों की पूरी जाति-वर्ग'** को दर्शाने के लिए किया जाता है। इसलिए यह व्यक्तिवाचक संज्ञा होते हुए भी जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता है।

अन्य विकल्प-

(अ) जगन्नाथपुरीः यह एक विशेष स्थान का नाम है, जो हमेशा व्यक्तिवाचक संज्ञा रहता है।

(स) पंडितजीः यह मूल रूप से एक जातिवाचक शब्द (पंडित) है, लेकिन जब हम ''पंडितजी देश के पहले प्रधानमंत्री थे'' कहते हैं, तो यह जवाहरलाल नेहरू के लिए रूढ़ हो जाता है। यानी यह जातिवाचक से व्यक्तिवाचक बनता है (इसके विपरीत)।

(द) मोटापाः यह एक भाव (अवस्था) का नाम है, इसलिए यह भाववाचक संज्ञा है।

58. 'मोहन का कुछ खो गया है, तभी टार्च से ढूँढ़ रहा है' वाक्य में सर्वनाम का प्रकार है।

(अ) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (ब) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(स) निजवाचक सर्वनाम (द) संबंधवाचक सर्वनाम

उत्तर-(अ) अनिश्चयवाचक सर्वनाम

वाक्य में प्रयुक्त 'कुछ' शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम का उदाहरण है, क्योंकि यह किसी निश्चित वस्तु का बोध न कराकर अनिश्चित वस्तु की ओर संकेत करता है।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम-

- **परिभाषा-** जो सर्वनाम किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध नहीं कराते, अर्थात जिनसे अनिश्चितता बनी रहती है, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
- **मुख्य शब्दः** कोई, कुछ, किसी, किन्हीं।
- **उदाहरणः**

''दरवाजे पर कोई खड़ा है।'' (यह निश्चित नहीं है कि कौन खड़ा है)
''दाल में कुछ गिरा है।'' (यह स्पष्ट नहीं है कि क्या गिरा है)
''मुझे किसी ने बुलाया है।'' (यह निश्चित नहीं है कि किसने बुलाया है)

59. भाषा रूप के विभिन्न स्तरों पर एकरूपता लाने के कार्य को कहा जाता हैः

(अ) एकीकरण (ब) मानकीकरण
(स) शुद्धीकरण (द) सरलीकरण

उत्तर-(ब) मानकीकरण

भाषा रूप के विभिन्न स्तरों पर एकरूपता लाने के कार्य को मानकीकरण कहा जाता है। मानकीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा भाषा के किसी रूप को विभिन्न स्तरों (जैसे- वर्ण, वर्तनी, व्याकरण और शब्द) पर सुव्यवस्थित और सर्वमान्य बनाया जाता है ताकि सभी जगह उसमें एकरूपता और स्पष्टता रहे।

60. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 347 में उल्लिखित हैः

(अ) राजभाषा संबंधी आयोग और समिति
(ब) संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा
(स) केंद्र के कर्मचारियों के लिए हिंदी का प्रशिक्षण
(द) किसी राज्य की जनसंख्या के पर्याप्त भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध

उत्तर- (द) किसी राज्य की जनसंख्या के पर्याप्त भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 347 के अनुसार, यदि किसी राज्य की जनसंख्या का कोई पर्याप्त भाग यह माँग करता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य में मान्यता दी जाए, तो राष्ट्रपति उस भाषा को राज्य में शासकीय या आधिकारिक प्रयोजनों के लिए मान्यता देने का निर्देश दे सकते हैं।

भाषा को मान्यता देने का अधिकारः यदि किसी राज्य की जनसंख्या का एक पर्याप्त और बड़ा भाग यह चाहता है कि उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य में मान्यता दी जाए, और इस संबंध में माँग किए जाने पर राष्ट्रपति संतुष्ट हो जाते हैं, तो वे निर्देश दे सकते हैं कि ऐसी भाषा को उस राज्य में सर्वत्र (पूरे राज्य में) या उसके किसी विशेष भाग में ऐसे प्रयोजन के लिए मान्यता दी जाए जैसा वे निर्दिष्ट करें।

61. 'आध्यात्मिक रंग के चश्मे आजकल बहुत सस्ते हो गए हैं। उन्हें चढ़ाकर जैसे कुछ लोगों ने 'गीतगोविन्द' के पदों को आध्यात्मिक संकेत बताया है, वैसे ही विद्यापति के इन पदों को भी।'' उक्त कथन हिन्दी के किस आलोचक का है?

(अ) रामचन्द्र शुक्ल (ब) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(स) रामविलास शर्मा (द) नामवर सिंह

उत्तर- (अ) रामचन्द्र शुक्ल

विद्यापति (1352-1448 ई.) मैथिली और संस्कृत कवि, संगीतकार, लेखक, दरबारी और राज पुरोहित थे। वह शिव के भक्त थे, लेकिन उन्होंने प्रेम गीत और भक्ति वैष्णव गीत भी लिखे। उन्हें 'मैथिल कवि कोकिल' (मैथिली के कवि कोयल) के नाम से भी जाना जाता है। विद्यापति का प्रभाव केवल मैथिली और संस्कृत साहित्य तक ही सीमित नहीं था, बल्कि अन्य पूर्वी भारतीय साहित्यिक परम्पराओं तक भी था।

परिचय

- **मूल नामः** विद्यापति ठाकुर
- **जन्मः** वर्ष 1352 ई. (संवत 1425)
- **जन्म स्थानः** बिसफी (विप्सी) गांव, मधुबनी जिला (तत्कालीन तिरहुत क्षेत्र), बिहार
- **मृत्युः** लगभग 1448 ई.
- **माता-पिताः** पिता- गणपति ठाकुर, माता- हांसिनी देवी (गंगा देवी)
- **गुरुः** पंडित हरि मिश्र
- **प्रमुख उपाधियाँः** मैथिल कोकिल, अभिनव जयदेव, कवि शेखर, कवि कंठहार

62. ''इसके साथ ही मनुष्यत्व की सामान्य भावना को आगे करके निम्न श्रेणी की जनता में उन्होंने आत्मगौरव का भाव जगाया और भक्ति के ऊँचे से ऊँचे सोपान की ओर बढ़ने के लिए बढ़ावा दिया।'' उक्त कथन किस भक्त कवि के संदर्भ में कहा गया है?

(अ) तुलसीदास (ब) कबीर
(स) सूरदास (द) जायसी

उत्तर- (ब) कबीर

यह प्रसिद्ध कथन आचार्य रामचंद्र शुक्ल का है, जो उन्होंने अपने ग्रंथ 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में कबीर के संदर्भ में कहा है। शुक्ल जी के अनुसार, जब तत्कालीन समाज का एक बड़ा वर्ग बाह्य आडंबरों और नाथपंथियों के शुष्क प्रभाव के कारण भक्तिरस से विमुख हो रहा था, तब

कबीरदास जी ने मनुष्यता की सामान्य भावना को केंद्र में रखकर समाज के पिछड़े और निम्न वर्ग के लोगों में आत्मगौरव का भाव जगाया। उन्होंने यह संदेश दिया कि ईश्वर की भक्ति पर सभी का समान अधिकार है और हर कोई भक्ति के सर्वोच्च मुकाम (सोपान) तक पहुँच सकता है।

63. ''निगम अगम, साहब सुगम, राम साँचिली चाह।
अंबु असन अवलोकियत सुलभ सबहि जग माँह।।''
उक्त पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

(अ) कबीर (ब) तुलसीदास
(स) नंददास (द) मीराबाई

उत्तर- (ब) तुलसीदास

यह प्रसिद्ध दोहा गोस्वामी तुलसीदास जी की रचना **'दोहावली'** से लिया गया है।

मुख्य विषयः इसमें भक्ति, राम-नाम की महिमा, नीति-नियम, सत्संग का प्रभाव और चातक पक्षी के उदाहरण के माध्यम से आत्म-सम्मान एवं प्रेम के दोहे शामिल हैं।

दोहावली का परिचय एवं मुख्य बातें-

- **रचना का स्वरूप**- यह मुख्य रूप से दोहों (और कुछ सोरठों) का संग्रह है। इसमें कुल 573 छंद (दोहे व सोरठे) हैं।
- **भाषा-** इसकी भाषा मुख्य रूप से ब्रज भाषा है, जिसमें अवधी भाषा के कुछ शब्दों का भी प्रभाव देखने को मिलता है।
- **रचनाकाल-** इसका रचनाकाल लगभग 1581 ईस्वी माना जाता है।
- **विषय-वस्तु-** इसमें श्रीराम की भक्ति, नीति, ज्ञान, वैराग्य, सदाचार, सत्संग-असत्संग, सज्जन-दुर्जन की पहचान और सांसारिक व्यवहार से जुड़ी सुंदर और गहरी बातें सरल शब्दों में कही गई हैं।

64. 'भाषाभूषण' निम्नलिखित में से किस कवि की रचना है?

(अ) चिंतामणि त्रिपाठी (ब) भूषण
(स) महाराज जसवंत सिंह (द) मतिराम

उत्तर -(स) महाराज जसवंत सिंह

'भाषाभूषण' महाराजा जसवंत सिंह की रचना है। यह अलंकार ग्रंथ है, जिसे रीति काल के प्रसिद्ध कवि और जोधपुर के महाराज जसवंत सिंह ने लिखा था। **'भाषा-भूषण'** हिंदी रीतिकाल का एक प्रसिद्ध काव्यशास्त्रीय ग्रंथ है।

प्रमुख विवरण-

- **रचयिताः** महाराजा जसवंत सिंह (मारवाड़ के शासक)
- **विषयः** अलंकार शास्त्र (यह ग्रंथ संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रंथ 'चंद्रालोक' पर आधारित है)
- **रचना कालः** लगभग 1643 ईस्वी
- **भाषाः** ब्रजभाषा
- **विशेषताः** इसमें अत्यंत संक्षिप्त और सरल रूप में अलंकारों का निरूपण किया गया है।

65. ''भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? ''भारतवर्ष है।''
उक्त पंक्तियों के रचनाकार कौन हैं?

(अ) हरिऔध (ब) मैथिलीशरण गुप्त
(स) महावीरप्रसाद द्विवेदी (द) नाथूराम शर्मा 'शंकर'

उत्तर- (ब) मैथिलीशरण गुप्त

यह प्रसिद्ध पंक्तियाँ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित प्रसिद्ध काव्य-ग्रंथ 'भारत-भारती' (अतीत खंड) से ली गई हैं।

- **राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ 'भारत-भारती' तीन खंडों में विभाजित हैः** (1) अतीत खंड, (2) वर्तमान खंड, और (3) भविष्यत् खंड।
- इसमें से 'अतीत खंड' भारत के स्वर्णिम प्राचीन इतिहास, संस्कृति, गौरव और पूर्वजों की महानता का विस्तृत वर्णन करता है।
- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित प्रसिद्ध काव्य-ग्रंथ 'भारत-भारती' (अतीत खंड) से ली गई इन पंक्तियों का भावार्थ यह है कि कवि भारतवर्ष के गौरवशाली, प्राचीन और आध्यात्मिक रूप का वर्णन करते हुए देश की महत्ता को रेखांकित कर रहे हैं।
- इन पंक्तियों के माध्यम से कवि भारत की अद्वितीय प्राकृतिक सुंदरता, उसकी प्राचीन संस्कृति, आध्यात्मिक गरिमा और विश्व में उसकी सर्वोच्च श्रेष्ठता को व्यक्त करते हुए भारतीयों के मन में अपने देश के प्रति गर्व और सम्मान का भाव जगाना चाहते हैं।

66. 'मारेसि मोहिं कुठांव' निबन्ध के लेखक हैंः

(अ) चंद्रधर शर्मा गुलेरी (ब) जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी
(स) आचार्य रामचंद्र शुक्ल (द) बालमुकुंद गुप्त

उत्तर- (अ) चंद्रधर शर्मा गुलेरी

'मारेसि मोहिं कुठांव' निबन्ध के लेखक चंद्रधर शर्मा गुलेरी हैं। यह उनका एक अत्यंत प्रसिद्ध और व्यंग्यात्मक निबंध है। चंद्रधर शर्मा गुलेरी अपनी कालजयी कहानी **'उसने कहा था'** के लिए भी विशेष रूप से जाने जाते हैं।

जब कैकेयी ने दशरथ से यह वर माँगा कि राम को बनवास दे दो तब दशरथ तिलमिला उठे, कहने लगे कि चाहे मेरा सिर माँग ले अभी दे दूँगा, किन्तु मुझे राम के विरह से मत मार। गोसाई तुलसीदासजी की भाव भरे शब्दों में राजा ने सिर धुनकर लम्बी साँस भर कर कहा **'मारेसि मोहिं कुठाँउ**- मुझे बुरी जगह पर घात किया।

67. '' यह सच है
बार-बार हार-हार मैं गया,
खोजा जो हार क्षार में नया,
उड़ी धूल, तन सारा भर गया,
नहीं फूल, जीवन अविकच है-
यह सच है!''
उक्त काव्य पंक्तियों के रचनाकार हैंः

(अ) मुक्तिबोध (ब) अज्ञेय
(स) महादेवी वर्मा (द) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

उत्तर- (द) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

यह प्रसिद्ध काव्य पंक्तियाँ छायावाद के प्रमुख स्तंभ और महाप्राण कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'सच है' से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में कवि ने जीवन के कड़वे यथार्थ, संघर्ष और निरंतर मिलने वाली असफलताओं का अत्यंत संवेदनशील और मार्मिक चित्रण किया है। कवि कहते हैं कि जीवन के संघर्षों में लड़ते-लड़ते वे बार-बार पराजित हुए हैं (या हार मान चुके हैं)। जब उन्होंने इस हार की राख या धूल (क्षार) में फिर से किसी विजय या नए हार (फूलों की माला/जीत) को खोजना चाहा, तो वहाँ उन्हें निराशा ही मिली।

संघर्षों के इस रास्ते पर चलते हुए चारों तरफ असफलता और संघर्ष की धूल उड़ी, जिससे उनका पूरा शरीर और जीवन उस धूल से सन गया, यानी वे पूरी तरह व्यथित और संघर्षों से सराबोर हो गए।
जीवन में कहीं भी सफलता या खुशियों के फूल नहीं खिले। 'अविकच' शब्द का अर्थ होता है- जो खिला हुआ न हो अथवा अविकसित। कवि का तात्पर्य है कि उनका जीवन किसी खिले हुए सुंदर फूल की तरह विकसित या पूर्ण नहीं हो सका, उनकी उम्मीदें और अरमान अधूरे ही रह गए और यही इस जीवन का सबसे बड़ा और कड़वा सच है।

68. 'सिंदूर की होली (1934)' नाटक किसकी रचना है?
(अ) हरिकृष्ण प्रेमी (ब) लक्ष्मीनारायण मिश्र
(स) जयशंकर प्रसाद (द) द्विजेंद्रलाल राय

उत्तर- (ब) लक्ष्मीनारायण मिश्र
- **रचना वर्ष**- 1934
- **विधा-** समस्या प्रधान नाटक
- यह नाटक पारिवारिक संपत्ति, न्याय, नैतिकता और विधवा विवाह जैसी सामाजिक समस्याओं को केंद्र में रखकर लिखा गया है।
- जमींदार भगवंत सिंह अपने भतीजे रजनीकांत की हत्या की साजिश रचता है और डिप्टी कलेक्टर मुरारीलाल को घूस देकर काम साधना चाहता है।
- नाटक के अंत में जब रजनीकांत की मृत्यु होती है, तो चंद्रकला उसके मृत हाथों से सिंदूर लेकर अपनी माँग में भरती है और वैधव्य स्वीकार करती है।

69. 'गैंग्रीन' कहानी के लेखक हैं:
(अ) विष्णु प्रभाकर (ब) अज्ञेय
(स) भैरव प्रसाद गुप्त (द) अमृत राय

उत्तर- (ब) अज्ञेय
'गैंग्रीन' कहानी के लेखक अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय') हैं। इस कहानी से जुड़ी कुछ मुख्य बातें नीचे दी गई हैं:
- **अन्य नाम:** इस कहानी को बाद में 'रोज' नाम से भी प्रकाशित किया गया।
- **मुख्य पात्र:** कहानी की मुख्य पात्रा मालती है, जिसके यांत्रिक और नीरस जीवन को केंद्र में रखकर मध्यवर्गीय वैवाहिक जीवन की बोरियत को दिखाया गया है।
- **विषय:** 'गैंग्रीन' वास्तव में एक बीमारी है जो सड़न के कारण होती है, लेकिन कहानी में यह मालती के जीवन में छाई उदासी, एकरसता और मानसिक जड़ता का प्रतीक है।

70. ''मैं उन व्यक्तियों में से हूँ और ऐसे व्यक्तियों की संख्या शायद दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है जो भाषा का सम्मान करते हैं और अच्छी भाषा को अपने आप में एक सिद्धि मानते हैं।'' उक्त पंक्तियों के लेखक कौन हैं?
(अ) जयशंकर प्रसाद (ब) अज्ञेय
(स) मुक्तिबोध (द) शमशेर

उत्तर- (ब) अज्ञेय
यह कथन अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन **'अज्ञेय'**) का है, जो उनके प्रसिद्ध निबंध-संग्रह **'आत्मनेपद'** से लिया गया है।
''आत्मनेपद- 'आत्मनेपद' में, जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है, **'अज्ञेय'** ने अपनी ही कृतियों के बारे में अपने विचार प्रकट किये हैं- कृतियों के ही नहीं, कृतिकार के रूप में स्वयं अपने बारे में। अज्ञेय की कृतियाँ भी, उनके विचार भी निरन्तर विवाद का विषय रहे हैं। सम्भवतः यह पुस्तक भी विवादास्पद रही हो। पर इसमें न तो आत्म-प्रशंसा है, न आत्म-विज्ञापनय जो आत्म-स्पष्टीकरण इसमें है उसका उद्देश्य भी साहित्य, कला अथवा जीवन के उन मूल्यों का निरूपण करना और उन पर बल देना है जिन्हें लेखक मानता है और जिन्हें वह व्यापक रूप से प्रतिष्ठित देखना चाहता है। अज्ञेय ने स्वयं इस पुस्तक के निवेदन में एक जगह लिखा है- **'अपने'** बारे में होकर भी यह पुस्तक अपने में डूबी हुई नहीं है- कम-से-कम इसके लेखक की **'कृतियों'** से अधिक नहीं!' अज्ञेय की विशेषता है उनकी सुलझी हुई विचार परम्परा, वैज्ञानिक तर्क पद्धति और सर्वथा समीचीन युक्ति युक्त भाषा-शैली।

71. हेमचंद्र द्वारा दिया गया काव्य का लक्षण है:
(अ) अदोषौ सगुणौ सालंकारौ च शब्दार्थौ काव्यम्
(ब) शब्दार्थौ निर्दोषौ सगुणौ प्रायः सालंकारौ काव्य
(स) काव्यं स्फुरदलंकारं गुणवदोष वर्जितम्
(द) रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्

उत्तर- (अ) अदोषौ सगुणौ सालंकारौ च शब्दार्थौ काव्यम्
आचार्य हेमचंद्र ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'काव्यानुशासन' में काव्य का यह लक्षण (परिभाषा) दिया है, जिसका अर्थ है-दोषरहित, गुणसहित और अलंकारयुक्त शब्द और अर्थ का सहभाव ही काव्य है।
अन्य विकल्पों का विवरण इस प्रकार है-
(ब) शब्दार्थौ निर्दोषौ सगुणौ प्रायः सालंकारौ काव्य- यह आचार्य वाग्भट्ट का काव्य-लक्षण है।
(स) काव्यं स्फुरदलंकारं गुणवदोष वर्जितम्-यह अग्निपुराणकार (महर्षि व्यास) का काव्य-लक्षण है।
(द) रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्- यह पंडितराज जगन्नाथ द्वारा दिया गया प्रसिद्ध काव्य-लक्षण है।

72. 'काव्य को आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति' किसने कहा है?
(अ) नगेन्द्र (ब) प्रेमचंद
(स) जयशंकर प्रसाद (द) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

उत्तर- (स) जयशंकर प्रसाद
जयशंकर प्रसाद ने काव्य को 'आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति' कहा है। हिंदी साहित्य के महान कवि और छायावाद के प्रमुख स्तंभ जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचय इस प्रकार है -

संक्षिप्त जीवन परिचय
- **पूरा नाम:** जयशंकर प्रसाद साहू
- **जन्म:** 30 जनवरी 1889 (काशी / वाराणसी, उत्तर प्रदेश)
- **मृत्यु:** 15 नवंबर 1937 (काशी / वाराणसी, उत्तर प्रदेश)
- **पिता का नाम:** बाबू देवीप्रसाद
- **विधा:** कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार और निबंध-लेखक

73. 'परा प्रतिभा' के नाम से चिन्मयी शक्ति का विचार-विवेचन किस विद्वान द्वारा किया गया है?
(अ) आचार्य अभिनव गुप्त (ब) आचार्य मम्मट
(स) वाग्भट्ट (द) राजशेखर

उत्तर- (अ) आचार्य अभिनव गुप्त
आचार्य अभिनवगुप्त ने अपने तंत्र और काव्यशास्त्रीय दर्शन में 'परा प्रतिभा' को ही 'चिन्मयी शक्ति' (चेतनमयी संवित् शक्ति) मानकर उसका विस्तृत विचार-विवेचन किया है।

आचार्य अभिनवगुप्त के तंत्र और काव्यशास्त्रीय दर्शन में 'परा प्रतिभा' (साधना और चेतना की उच्चतम अवस्था) को काव्य-सृजन और रसास्वाद की मूल शक्ति माना गया है। अभिनवगुप्त ने शैव दर्शन (विशेषकर प्रत्यभिज्ञा दर्शन) के सिद्धांतों को काव्यशास्त्र में समाहित करके प्रतिभा और रस की एक नई व्याख्या प्रस्तुत की।

अभिनवगुप्त के दर्शन में 'परा प्रतिभा' के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं-

- **ईश्वरीय शक्ति-** अभिनवगुप्त के अनुसार, 'परा प्रतिभा' साक्षात् परमेश्वर (शिव) की विमर्श शक्ति या स्वातंत्र्य शक्ति है। यह ब्रह्मांड की सृष्टि करने वाली मूल चेतना है।
- **सृजन का मूल**- जैसे परमशिव अपनी इस परा प्रतिभा (इच्छा, ज्ञान, क्रिया) से संपूर्ण जगत का निर्माण करते हैं, ठीक वैसे ही कवि अपनी प्रतिभा से एक अपूर्व काव्य-संसार की सृष्टि करता है।

74. भामह ने 'काव्यालंकार' में कितने अलंकारों का विवेचन किया है ?

(अ) 70 (ब) 65
(स) 38 (द) 48

उत्तर- (स) 38

आचार्य भामह ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'काव्यालंकार' में कुल 38 अलंकारों का विवेचन किया है। इनमें 2 शब्दालंकार (अनुप्रास और यमक) तथा 36 अर्थालंकार शामिल हैं।

आचार्य भामह काव्यशास्त्र के सुप्रसिद्ध आचार्य थे। इन्हें अलंकार संप्रदाय का जनक कहते हैं। ''शब्दार्थौं सहितौ काव्यम्'' इनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध काव्य परिभाषा है। उनका काल निर्णय भी अन्य पूर्ववर्ती आचार्यों की तरह विवादपूर्ण है। परंतु अनेक प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि भामह 300 ई. से 600 ई. के मध्य हुए। काव्यशास्त्र पर इनका काव्यालंकार नामक ग्रंथ उपलब्ध है। यह अलंकार शास्त्र का प्रथम उपलब्ध ग्रन्थ है। जो 20वीं शताब्दी के आरम्भ में प्रकाशित हुआ था।

संस्कृत साहित्यशास्त्र प्रणेताओं में आचार्य भामह का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उनके द्वारा प्रणीत काव्यालंकार साहित्यशास्त्र का प्रथम उपलब्ध ग्रन्थ है जिसमें साहित्यशास्त्र एक स्वतन्त्र शास्त्र के रूप में दिखाई पड़ता है। स्वतन्त्र रूप में साहित्यशास्त्र को एक अलग शास्त्र रूप प्रदान करने वाला आचार्य भामह का काव्यालंकार ही है।

75. वीभत्स रस के देवता माने जाते हैं:

(अ) विष्णु (ब) महाकाल
(स) इंद्र (द) कालदेव

उत्तर- (ब) महाकाल

वीभत्स रस के देवता महाकाल माने जाते हैं। साहित्य शास्त्र के अनुसार, सभी रसों के अपने निर्धारित देवता और स्थायी भाव होते हैं। वीभत्स रस से संबंधित मुख्य बिंदु नीचे दिए गए हैं:

- **स्थायी भाव:** जुगुप्सा (घृणा) • **देवता:** महाकाल (या काल)
- **वर्ण (रंग):** नील (नीला)

76. यूरोप में व्यवस्थित काव्य-चिंतन का आरम्भ किससे माना जाता है?

(अ) होमर से (ब) प्लेटो से
(स) अरस्तू से (द) लोंजाइनस से

उत्तर- (ब) प्लेटो

यूरोप में व्यवस्थित काव्य-चिंतन का आरम्भ प्लेटो से माना जाता है। एक व्यवस्थित शास्त्र के रूप में पाश्चात्य साहित्यालोचना या काव्यशास्त्र की शुरुआत प्राचीन यूनानी दार्शनिक प्लेटो के विचारों से मानी जाती है। प्लेटो के ग्रंथ 'द रिपब्लिक' और उनके संवाद 'इओन' में काव्य-सृजन, कवि की प्रेरणा और कला पर व्यापक चर्चा मिलती है। प्लेटो के बाद उनके शिष्य अरस्तू ने इसे 'काव्यशास्त्र' ग्रंथ लिखकर अधिक वैज्ञानिक और व्यवस्थित रूप दिया था।

77. 'काव्य प्रकृति की अनुकृति है पर एकदम नकल न होकर उसका पुनः प्रस्तुतीकरण है।'' यह कथन किसका है?

(अ) अरस्तू (ब) प्लेटो
(स) मैथ्यू अर्नाल्ड (द) लोंजाइनस

उत्तर- (अ) अरस्तू

यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'पोएटिक्स' (काव्यशास्त्र) में अनुकरण का सिद्धांत प्रतिपादित किया था। प्लेटो ने जहाँ काव्य को सत्य की 'हू-ब-हू नकल' मानकर उसका तिरस्कार किया था, वहीं उनके शिष्य अरस्तू ने इसकी नवीन व्याख्या की। अरस्तू के अनुसार, अनुकरण केवल एक यंत्रवत् या निर्जीव नकल नहीं है, बल्कि वह कल्पना और संवेदना द्वारा जीवन तथा प्रकृति का 'पुनःसृजन' या पुनः प्रस्तुतीकरण है। अरस्तू का प्रसिद्ध ग्रंथ 'पोएटिक्स' (काव्यशास्त्र) प्राचीन ग्रीक साहित्य, नाट्य सिद्धांत और सौंदर्यशास्त्र की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और मौलिक रचना है। इसकी रचना लगभग 330 ईसा पूर्व (335 ईसा पूर्व के आसपास) हुई थी।

मुख्य बिंदु -

- **रचना का उद्देश्य-** यह ग्रंथ मुख्य रूप से उनके गुरु प्लेटो के उस विचार का खंडन करने के लिए लिखा गया था, जिसमें प्लेटो ने कविता को समाज के लिए नैतिक रूप से भ्रामक और हानिकारक बताया था।
- **काव्य के प्रकार-** अरस्तू ने इसमें काव्य (कविता) को विभिन्न रूपों में बांटा है, जैसे- त्रासदी, कॉमेडी, महाकाव्य और गान काव्य।
- **त्रासदी का विश्लेषण-** इस पुस्तक का अधिकांश भाग 'त्रासदी' के विश्लेषण पर केंद्रित है।

78. 'स्वच्छंदतावादी आलोचना का घोषणा पत्र' किस रचना को माना जाता है?

(अ) चर्च एण्ड स्टेट
(ब) प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म
(स) प्रिफेस टु लिरिकल बैलेड्स
(द) प्रेक्टिकल क्रिटिसिज्म

उत्तर- (स) प्रिफेस टु लिरिकल बैलेड्स

'स्वच्छंदतावादी आलोचना का घोषणा पत्र' प्रिफेस टु लिरिकल बैलेड्स को माना जाता है।

यह प्रसिद्ध आलोचनात्मक कृति विलियम वर्ड्सवर्थ द्वारा लिखी गई है, जिसे रोमांटिक आंदोलन (स्वच्छंदतावाद) की शुरुआत और उसकी काव्य शैली का मुख्य घोषणा पत्र स्वीकार किया गया है।

'स्वच्छंदतावादी आलोचना का घोषणा-पत्र' मुख्य रूप से अंग्रेजी साहित्य से जुड़ा है, जिसे विलियम वर्ड्सवर्थ और एस. टी. कॉलरिज के काव्य-संग्रह 'लिरिकल बैलेड्स' (1798) के दूसरे संस्करण (1800) में जोड़ी गई 'प्रिफेस टू लिरिकल बैलेड्स' को माना जाता है।

इस घोषणा-पत्र से जुड़ी मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

- **रचयिता-** विलियम वड्र्सवर्थ।
- **प्रकाशन वर्ष-** 1800 (इसका प्रथम संस्करण 1798 में आया था, जिसमें यह भूमिका नहीं थी)।
- **मुख्य उद्देश्य-** पारंपरिक नव्यशास्त्रीय (क्लासिकल) नियमों, कृत्रिम भाषा और बंधे-बंधाए नियमों का विरोध करना तथा काव्य में सहज भावनाओं, कल्पना और आम आदमी की भाषा का समर्थन करना।

79. 'प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म' किसकी रचना है?

(अ) क्रोचे (ब) आई.ए. रिचड्र्स
(स) मैथ्यू अर्नाल्ड (द) लोंजाइनस

उत्तर- (ब) आई.ए. रिचड्र्स

अतिरिक्त जानकारी-

- **रचना वर्ष-** यह पुस्तक वर्ष 1924 में प्रकाशित हुई थी।
- **लेखक-**आई.ए. रिचड्र्स एक प्रसिद्ध अंग्रेजी समालोचक और शिक्षाविद् थे।

इस पुस्तक की मुख्य बातें और सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

- **लेखक एवं प्रकाशन-** आई. ए. रिचड्र्स ने यह पुस्तक 1924 में प्रकाशित की (इसका दूसरा संस्करण 1926 में आया)।
- **वैज्ञानिक दृष्टिकोण-** रिचड्र्स का मानना था कि साहित्यिक आलोचना को प्रभाववादी या व्यक्तिगत रुचियों पर आधारित न होकर अधिक वैज्ञानिक और व्यवस्थित होना चाहिए।
- **मूल्य का मनोवैज्ञानिक सिद्धांत-** उन्होंने साहित्य के मूल्य को नैतिक या दार्शनिक न मानकर मनोवैज्ञानिक माना। उनके अनुसार, अच्छी रचना वह है जो हमारी अनुभूतियों और आवेगों को अच्छे ढंग से व्यवस्थित करती है।

80. नई समीक्षा का जनक माना गया है:

(अ) लोंजाइनस (ब) सुकरात
(स) हीगेल (द) आई.ए. रिचड्र्स

उत्तर- (द) आई.ए. रिचड्र्स

आई.ए. रिचड्र्स को उनकी व्यावहारिक आलोचना और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण नई समीक्षा का जनक माना जाता है।
यद्यपि 'द न्यू क्रिटिसिज्म' (1941) नामक पुस्तक लिखकर इस शब्द को लोकप्रिय बनाने का श्रेय जॉन क्रो रैनसम को जाता है, परंतु रिचड्र्स ने ही सबसे पहले इस पद्धति की आधारशिला रखी थी।

81. बालकृष्ण भट्ट का उपन्यास है।

(अ) धूर्त रसिक लाल (ब) एक अजान सौ सुजान
(स) निस्सहाय हिंदू (द) सौ अजान एक सुजान

उत्तर- (द) सौ अजान एक सुजान

'सौ अजान एक सुजान' पंडित बालकृष्ण भट्ट द्वारा सन् 1892 में रचित एक प्रसिद्ध सामाजिक उपन्यास है। इसके अतिरिक्त उनके अन्य प्रमुख उपन्यासों में 'नूतन ब्रह्मचारी' और 'रहस्य कथा' शामिल हैं।

अन्य विकल्पों का विवरण-

- **धूर्त रसिकलाल:** यह पंडित किशोरीलाल गोस्वामी (या मेहता लज्जाराम शर्मा) की रचना से प्रभावित/संबंधित विधा है।
- **निस्सहाय हिंदू:** यह राधाकृष्ण दास द्वारा लिखित प्रसिद्ध उपन्यास है।
- 'सौ अजान और एक सुजान' भी भट्टजी की अनूठी कृति है। यह रचना अपनी मौलिकता और उत्कृष्टता के कारण सर्वप्रिय बन चुकी है। एक प्रबंध-कल्पना के रूप में यह कृति अपने विषय की बेजोड़ चीज है। भाषा में हास्यरस की सुंदर पुट है। भाव स्पष्ट और गंभीर हैं। भट्टजी की यह रचना व्यंग्यात्मक है, और इसमें मानव-जीवन की सामाजिक परिस्थितियों का सुंदर चित्रण पाया जाता है।
- श्रृंखलित कथानक का आश्रय लेकर लेखक ने इस पुस्तक के विषय को और भी रोचक और सर्वग्राही बना दिया है। उनकी शैली का अनोखापन सहज ही पाठकों को मुग्ध कर लेता है।

82. 'अब्र' नाम से उर्दू में कविताएँ किसने लिखीं?

(अ) भारतेन्दु हरिश्चंद्र (ब) मदनमोहन मालवीय
(स) बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' (द) अंबिकादत्त व्यास

उत्तर- (स) बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

- भारतेंदु मंडल के प्रमुख कवि बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' उर्दू में 'अब्र' (तखल्लुस / उपनाम) से कविताएँ, गजलें और शेर लिखते थे। हिंदी साहित्य में वे 'प्रेमघन' उपनाम से प्रसिद्ध हुए। इसके विपरीत, आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र उर्दू में 'रसा' उपनाम से कविताएँ लिखते थे।
- 'प्रेमघन' जी आधुनिक हिंदी के आविर्भाव काल में उत्पन्न हुए थे। इनके अनेक समसामयिक थे, जिन्होंने हिंदी को हिंदी का रूप देने में संपूर्ण योगदान किया। वे कवि ही नहीं उच्च कोटि के गद्यलेखक और नाटककार भी थे। गद्य में निबंध, आलोचना, नाटक, प्रहसन, लिखकर अपनी साहित्यिक प्रतिभा का बड़ी पटुता से निर्वाह किया है।
- प्रेमघन जी की गद्यशैली की समीक्षा से यह स्पष्ट हो जाता है कि खड़ीबोली गद्य के वे प्रथम आचार्य थे। समालोच्य पुस्तक के विषयों का अच्छी तरह विवेचन करके उसके विस्तृत निरूपण की चाल इन्होंने चलाई। 'प्रेमघन' जी का स्मरण हिंदी साहित्य के प्रथम उत्थान का स्मरण है।
- **आचार्य रामचंद्र शुक्ल** के शब्दों में- 'हिंदी में सच्ची समालोचना का सूत्रपात सही अर्थों में बालकृष्ण भट्ट व बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' से ही हुआ।'

83. 'मौर्यविजय' खंडकाव्य के लेखक हैं:

(अ) मैथिलीशरण गुप्त (ब) शंभु गुप्त
(स) सियारामशरण गुप्त (द) लक्ष्मणप्रसाद गुप्त

उत्तर- (स) सियारामशरण गुप्त

सियारामशरण गुप्त राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के छोटे भाई थे। 'मौर्यविजय' उनका एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक खंडकाव्य है, जिसकी रचना उन्होंने वर्ष 1914 में की थी। उनकी अन्य प्रमुख कृतियों में अनाथ, बापू, मृण्मयी, आर्द्रा और पाथेय शामिल हैं।

- **चंद्रगुप्त मौर्य की विजय-** इस काव्य में मगध के क्रूर शासक घनानंद के अत्याचारों का अंत करने और वीर चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा मौर्य साम्राज्य की स्थापना करने की ऐतिहासिक घटना को आधार बनाया गया है।
- **अन्याय पर न्याय की जीत-** इसमें अत्याचारी शासन के विरुद्ध जन-आक्रोश और एक न्यायप्रिय सत्ता की स्थापना के संघर्ष को दिखाया गया है।

84. क्या हिंदी नाम की कोई भाषा ही नहीं' उक्त निबन्ध किस पत्रिका में प्रकाशित हुआ?

(अ) सरस्वती (ब) हंस
(स) जागरण (द) कल्याण

उत्तर- (अ) सरस्वती

'क्या हिंदी नाम की कोई भाषा ही नहीं' निबंध आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखा गया था। यह निबंध वर्ष 1913 में 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था।

- **विवाद की पृष्ठभूमि-** यह निबंध संयुक्त प्रांत की प्राथमिक शिक्षा समिति द्वारा स्कूली पाठ्यपुस्तकों (रीडरों) की भाषा के संबंध में दिए गए प्रस्तावों और बहस के संदर्भ में लिखा गया था।
- **विरोधी विचार का खंडन-** इस निबंध में आचार्य द्विवेदी ने उन लोगों को करारा उत्तर दिया है जो यह दावा करते थे कि "हिंदी नाम की कोई भाषा संयुक्त प्रांतों में नहीं है" और यह कि उर्दू या हिंदुस्तानी ही एकमात्र व्यापक भाषा है।

85. 'हिंद स्वराज' पुस्तक गांधीजी ने किस भाषा में लिखी थी ?

(अ) अंग्रेजी (ब) हिंदी
(स) गुजराती (द) उर्दू

उत्तर- (स) गुजराती

गांधीजी ने 'हिंद स्वराज' पुस्तक वर्ष 1909 में मूल रूप से गुजराती भाषा में लिखी थी।

पुस्तक का सामान्य परिचय-

- **रचयिताः** महात्मा गांधी
- **रचना वर्षः**1909 (इंग्लैंड से दक्षिण अफ्रीका लौटते समय जहाज पर)
- **मूल भाषाः** गुजराती (बाद में 'इंडियन ओपिनियन' में प्रकाशित)
- **संरचनाः** यह 'पाठक' और 'संपादक' (स्वयं गांधीजी) के बीच एक संवाद के रूप में लिखी गई 20 अध्यायों की पुस्तक है।
- पाठक भारत की आजादी के लिए उग्र तरीकों और हिंसक संघर्ष का समर्थन करता है, जबकि संपादक (गांधीजी) उसे अहिंसा और नैतिक बल का रास्ता समझाते हैं।
- **स्वराज का अर्थ-** गांधीजी के अनुसार स्वराज का अर्थ केवल अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालना नहीं है, अपितु भारतीयों द्वारा स्वयं पर शासन (आत्म-नियंत्रण), नैतिक सुधार और पारंपरिक जीवनशैली को अपनाना है।

86. 'यंग इंडिया' का पहला अंक कब प्रकाशित हुआ?

(अ) सन् 1915 (ब) सन् 1921
(स) सन् 1922 (द) सन् 1919

उत्तर- (द) सन् 1919

'यंग इंडिया' महात्मा गांधी द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी भाषा की एक प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्रिका थी।

- गांधीजी के संपादन में इसका पहला अंक 8 अक्टूबर, 1919 को अहमदाबाद से प्रकाशित किया गया था।
- **भाषा-** अंग्रेजी
- **स्थान-** अहमदाबाद
- **मुख्य उद्देश्य-** सत्याग्रह, अहिंसा, और राष्ट्रवाद के विचारों का प्रसार करना तथा भारतीयों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ स्वतंत्रता के लिए संगठित करना।
- इस पत्रिका के माध्यम से गांधीजी अपने विचार, सामाजिक-आर्थिक समस्याओं और स्वराज की माँग को देश की जनता तक पहुँचाते थे।

87. डॉ. भीमराव अम्बेडकर के पिता क्या थे?

(अ) मजदूर (ब) सूबेदार
(स) नेता (द) किसान

उत्तर-(ब) सूबेदार

- सूबेदार मेजर रामजी मालोजी सकपाल भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर के पिता थे।

परिचय और जीवन

- **सैन्य सेवा-** वे ब्रिटिश भारतीय सेना में सूबेदार-मेजर के पद पर कार्यरत थे और सेना के स्कूल में प्रधानाध्यापक (हेडमास्टर) के रूप में भी सेवा दी।
- **पैतृक निवास-** उनका परिवार मूल रूप से महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के मांडनगढ़ तालुका के 'अंबावडे' गांव का था।
- **संतान-** वे और उनकी पत्नी भीमाबाई के कुल चौदह संतानें थीं, जिनमें डॉ. भीमराव अंबेडकर सबसे छोटे (चौदहवें) पुत्र थे।
- **सामाजिक एवं शैक्षणिक योगदान-** उन्होंने अंग्रेजी और गणित में अच्छी दक्षता प्राप्त की थी। घोर गरीबी और कम पेंशन के बाद भी उन्होंने अपने बच्चों, विशेष रूप से भीमराव की शिक्षा पर विशेष बल दिया और उन्हें प्रेरित किया।

88. 'हिंदू बनाम हिंदू' पुस्तक के लेखक हैं -

(अ) वीर सावरकर (ब) महात्मा गाँधी
(स) जवाहर लाल नेहरू (द) राममनोहर लोहिया

उत्तर- (द) राममनोहर लोहिया

'हिंदू बनाम हिंदू' पुस्तक प्रसिद्ध समाजवादी चिंतक डॉ. राममनोहर लोहिया द्वारा लिखी गई है। इस पुस्तक में उन्होंने हिंदू समाज के भीतर पिछले पाँच हजार वर्षों से चले आ रहे उदारवाद और कट्टरवाद के अंतर्द्वंद्व पर गहराई से प्रकाश डाला है।

'हिंदू बनाम हिंदू' प्रखर समाजवादी चिंतक, विचारक और स्वतंत्रता सेनानी डॉ. राममनोहर लोहिया द्वारा लिखित एक चर्चित पुस्तक एवं निबंध-संग्रह है।

पुस्तक का संक्षिप्त परिचय और मुख्य बिंदु -

- **लेखक-** डॉ. राममनोहर लोहिया
- **प्रकाशक-** लोकभारती प्रकाशन
- **मुख्य विचार-** लोहिया का तर्क है कि हिंदू धर्म के भीतर उदारवादी और कट्टरपंथी धाराओं के बीच एक लंबा संघर्ष रहा है।

89. उत्तर-आधुनिकता के संबंध में सही नहीं हैः

(अ) यह ईश्वर की मृत्यु की घोषणा करता है।
(ब) यह विचारधाराओं के अन्त की घोषणा करता है।
(स) यह केन्द्रवाद को ध्वस्त करता है।
(द) यह मार्क्सवाद का समर्थन करता है।

उत्तर- (द) यह मार्क्सवाद का समर्थन करता है।

उत्तर-आधुनिकता के संबंध में यह कथन सही नहीं है क्योंकि उत्तर-आधुनिकतावादी विचारक मार्क्सवाद जैसी 'महा-आख्यानों' या सार्वभौमिक विचारधाराओं को पूरी तरह से खारिज करते हैं, न कि उनका समर्थन करते हैं।

अन्य विकल्पों का विश्लेषण-

(अ) यह ईश्वर की मृत्यु की घोषणा करता हैः उत्तर-आधुनिकता किसी भी परम सत्ता या अंतिम सत्य (जैसे ईश्वर) के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करती।

(ब) यह विचारधाराओं के अन्त की घोषणा करता हैः ज्यां-फ्रांस्वा ल्योतार जैसे विचारकों के अनुसार, उत्तर-आधुनिकता सभी बड़े वैचारिक ढाँचों के प्रति अविश्वास प्रकट करती है।

(स) यह केन्द्रवाद को ध्वस्त करता हैः यह विचारधारा किसी एक केंद्र, निश्चित अर्थ या अंतिम सत्य को नकारती है और बहुलतावाद का समर्थन करती है।

- उत्तर-आधुनिकतावाद 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध (लगभग 1950-60 के दशक के बाद) में उभरा एक दार्शनिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और कलात्मक आंदोलन है। यह अपने पहले की विचारधारा अर्थात् आधुनिकतावाद के प्रति एक संशयपूर्ण और आलोचनात्मक प्रतिक्रिया के रूप में पैदा हुआ।
- **उत्तर आधुनिकतावाद की मूल अवधारणा-**आधुनिकतावाद तर्क, विज्ञान, प्रगति और सार्वभौमिक सत्यों में विश्वास करता था। इसके विपरीत, उत्तर आधुनिकतावाद इन बड़े और एकात्मक सिद्धांतों (जिन्हें 'महाआख्यान' कहा जाता है) को नकारता है। यह मानता है कि संसार में कोई एक परम सत्य नहीं है, बल्कि हर व्यक्ति, समाज और संस्कृति के अपने अलग अनुभव और सत्य हो सकते हैं।

90. इनमें से कौन अस्तित्ववादी दार्शनिक ईश्वर में विश्वास नहीं करता है?

(अ) किर्केगार्ड (ब) कार्ल जास्पर्स
(स) गैब्रियल मार्सल (द) ज्याँ- पाल सार्त्र

उत्तर- (द) ज्याँ- पाल सार्त्र

ज्याँ-पाल सार्त्र एक प्रमुख नास्तिक अस्तित्ववादी दार्शनिक थे। उनका मानना था कि ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है और मनुष्य अपनी नियति चुनने तथा अपने जीवन को अर्थ देने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र और स्वयं जिम्मेदार है।

दूसरी ओर, सोरेन किर्केगार्ड, कार्ल जास्पर्स, और गैब्रियल मार्सेल को आस्तिक अस्तित्ववादी माना जाता है, जो अस्तित्ववाद के साथ ईश्वर या एक सर्वोच्च सत्ता में विश्वास रखते थे।

91. भारतेंदु हरिश्चंद्र किस सम्प्रदाय में दीक्षित थे?

(अ) शिव सम्प्रदाय (ब) वल्लभ सम्प्रदाय
(स) लक्ष्मी सम्प्रदाय (द) कुमार सम्प्रदाय

उत्तर- (ब) वल्लभ सम्प्रदाय

- **संप्रदायः** भारतेंदु हरिश्चंद्र वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित थे।
- **भक्ति भावनाः** उनकी रचनाओं और पदों में ''सखा प्यार कृष्ण के गुलाम राधारानी के'' की भावना के अनुसार सख्य और विनय भाव की भक्ति देखने को मिलती है।
- **साहित्यिक योगदानः** उन्हें आधुनिक हिंदी साहित्य और नाटक का जनक माना जाता है।
- **तदीय समाज की स्थापना-** वल्लभ संप्रदाय के धार्मिक विचारों और कृष्ण भक्ति के सही प्रचार-प्रसार के लिए भारतेंदु हरिश्चंद्र ने सन् 1873 ईस्वी में 'तदीय समाज' की स्थापना की थी।
- **साहित्यिक प्रभाव-** उनके कई नाटकों और काव्य रचनाओं (जैसे 'श्री चंद्रावली नाटिका' और विभिन्न प्रेम-भक्ति परक रचनाओं) में वल्लभ संप्रदाय के पुष्टि मार्गीय भक्ति-दर्शन और राधा-कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम का भाव मुखर हुआ है।

92. 'सुजानहित' किस कवि के काव्योत्कर्ष का प्रतिमान माना जाता है?

(अ) बिहारी (ब) जायसी
(स) घनानंद (द) विद्यापति

उत्तर- (स) घनानंद

घनानंद रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। उन्होंने अपनी प्रेमिका 'सुजान' को संबोधित करते हुए अत्यधिक भावपूर्ण और विरह-प्रधान काव्यों की रचना की, जिनमें 'सुजानहित' (या सुजान सागर) उनकी एक बहुत महत्वपूर्ण रचना है।

- इस रचना से जुड़ी मुख्य बातें इस प्रकार हैं -
- **पदों की संख्या-** इसमें कुल 507 पद संकलित हैं।
- विषय-वस्तुः इसमें प्रेमिका 'सुजान' के प्रति प्रेम, उसका रूप-सौंदर्य, आकर्षण तथा वियोग (विरह) का अत्यंत गहरा और भावपूर्ण वर्णन किया गया है।
- **काव्य रूप-** यह रचना ब्रजभाषा में रीतिकालीन प्रेम की उदात्त, निर्मल और व्यंजनापूर्ण अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है।

93. दूसरा सप्तक किस वर्ष प्रकाशित हुआ?

(अ) 1950 (ब) 1952
(स) 1951 (द) 1954

उत्तर-(स) 1951

'दूसरा सप्तक' का प्रकाशन वर्ष 1951 ई. है।

- **संपादकः** सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
- **प्रकाशन वर्ष :** 1951 ई.
- **प्रकाशकः** भारतीय ज्ञानपीठ
- **दूसरे सप्तक के कवि-** शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, शकुंतला माथुर, हरिनारायण व्यास, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय।
- **नई कविता का प्रारम्भ-** दूसरे सप्तक से ही हिंदी कविता में 'नई कविता' के स्वरूप के दर्शन होने लगते हैं।
- **प्रयोगवाद-** अज्ञेय ने इसकी भूमिका में स्पष्ट किया कि प्रयोग कोई 'वाद' या साध्य नहीं है, बल्कि सत्य को जानने और अभिव्यक्ति का एक 'साधन' है।
- **स्वतंत्र प्रवेश-** इसमें सम्मिलित सभी कवि इससे पहले किसी स्वतंत्र कविता-संग्रह के रूप में सामने नहीं आए थे, इस पुस्तक के जरिए उन्होंने हिंदी काव्य-जगत् में प्रवेश किया।

94. 'कामायनी' का छठा सर्ग किस शीर्षक से लिखा गया है?

(अ) लज्जा (ब) इड़ा
(स) श्रद्धा (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर- (अ) लज्जा

जयशंकर प्रसाद के महाकाव्य 'कामायनी' का छठा सर्ग 'लज्जा' शीर्षक से लिखा गया है।

जयशंकर प्रसाद के महाकाव्य 'कामायनी' का छठा सर्ग 'लज्जा' श्रद्धा और मनु के संबंधों के बीच मानवीय संवेदनाओं, शालीनता और आंतरिक संयम का गहरा विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस सर्ग में लज्जा को सौंदर्य और पवित्रता की रक्षिका के रूप में दिखाया गया है जो श्रद्धा के मन में अनुराग के क्षणों में संयम का संदेश देती है। इसकी प्रसिद्ध पंक्तियाँ नारी के गौरव और महिमा को रेखांकित करती हैं।

95. 'कटी जब नैन की झाई, लख्यौं तब गगन में सारी' यह पंक्ति किसके द्वारा रचित है?

(अ) कबीरदास (ब) बिहारी
(स) घनानंद (द) मीरा

उत्तर- (अ) कबीरदास

यह पंक्ति मूल रूप से संत कबीरदास द्वारा रचित पद से ली गई है, जिसमें आध्यात्मिक ज्ञान और आत्म-साक्षात्कार का वर्णन है। मूल पद की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं -

''कटी जब नैन की झाईं। लख्यौं तब गगन में साईं।।''

इसका अर्थ है हमारी आँखों पर पड़ी मोह, माया, अहंकार और भ्रम की वह परत, जिसके कारण मनुष्य अपने भीतर या आसपास बैठे ईश्वर (साईं) को देख नहीं पाता। जब ज्ञान, गुरु की कृपा या सच्चे प्रेम से वह भ्रम और माया का पर्दा हट जाता है तब आत्मा को संपूर्ण ब्रह्मांड (गगन) और कण-कण में परमेश्वर (साईं) के दर्शन होते हैं।

96. 'वाही की चित चटपटी धरत अटपटे पाइ।'
यह पंक्ति किसके द्वारा रचित है?

(अ) बिहारी (ब) घनानंद
(स) जायसी (द) सूरदास

उत्तर- (अ) बिहारी

यह पंक्ति रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि महाकवि बिहारी द्वारा रचित उनके एकमात्र ग्रंथ 'बिहारी सतसई' से ली गई है।

पूरा दोहा इस प्रकार है-

वाही की चित चटपटी, धरत अटपटे पाइ।
लपट बुझावत बिरह की, कपट-भरेऊ आइ।।

अर्थ : इस दोहे में नायिका अपने नायक से कहती है कि तुम्हारे दिल में उसी (दूसरी प्रेयसी) की व्याकुलता (चटपटी) भरी हुई है, जिसके कारण तुम यहाँ अनमने ढंग से लड़खड़ाते हुए कदम (अटपटे पाँव) रख रहे हो। भले ही तुम कपट भाव से भरे हुए मेरे पास आए हो, लेकिन फिर भी कम-से-कम आकर मेरी विरह-ज्वाला को शांत तो कर रहे हो।

इस दोहे में उत्तमा खंडिता नायिका की मनोदशा का वर्णन है। नायिका कहती है कि हे प्रियतम! तुम्हारे चित्त (मन) में तो उस दूसरी स्त्री (अन्य नायिका) को पाने की तीव्र लालसा लगी हुई है। इसी कारण तुम्हारे कदम यहाँ आते समय लड़खड़ा रहे हैं और उलटे-सीधे पड़ रहे हैं। तुम मन से उसके पास होकर आए हो और मेरे प्रति प्रेम में पूरी तरह कपट (बनावट) भरे हुए हो।

97. ''कामायनी साहित्य के रसवादी छायावादी
पुराणपोथियों के हाथ में नवीन प्रगति शक्तियों
के विरुद्ध एक अस्त्र बन गई।'' यह कथन किसका है?

(अ) मुक्तिबोध (ब) अज्ञेय
(स) धूमिल (द) नागार्जुन

उत्तर- (अ) मुक्तिबोध

यह प्रसिद्ध कथन गजानन माधव **'मुक्तिबोध'** का है, जो उन्होंने हिंदी आलोचना के अंतर्गत 'कामायनी' और छायावादी साहित्य के मूल्यांकन के संदर्भ में कहा था।

- इस कथन का अर्थ और निहितार्थ निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है -
- **रसवादी और छायावादी दृष्टिकोण-** मुक्तिबोध के अनुसार, पारंपरिक और सौंदर्यवादी आलोचकों (जैसे नंददुलारे वाजपेयी आदि) ने जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' को केवल एक 'रसात्मक इतिहास' या विशुद्ध आध्यात्मिक-आनंदवादी रचना मानकर उसकी व्याख्या की।
- **पुराणपोथियों के हाथ में अस्त्र-** मुक्तिबोध का मानना है कि जब इस महाकाव्य के ऐतिहासिक और वर्गीय संघर्षों की अनदेखी करके इसे केवल व्यक्तिवादी या पलायनवादी 'समरसता' और 'आनंद' का संदेश बना दिया जाता है, तब वह पुनरुत्थानवादी या रूढ़िवादी (पुराणपंथी) सोच रखने वालों के हाथों में एक ऐसा हथियार बन जाती है, जो समाज में आने वाली नई क्रांतिकारी और प्रगतिशील ताकतों (नवीन प्रगति शक्तियों) का विरोध करता है।

98. 'स्वतंत्र भारत का इस्पाती दस्तावेज' किस काव्य-संग्रह को कहा गया है?

(अ) प्रिय प्रवास (ब) चाँद का मुँह टेढ़ा है
(स) भूल गलती (द) अँधेरे में

उत्तर- (द) अँधेरे में

कवि शमशेर बहादुर सिंह ने गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की सुप्रसिद्ध लंबी कविता 'अँधेरे में' को ''देश के आधुनिक जन-इतिहास का, स्वतंत्रता-पूर्व और पश्चात् का एक दहकता इस्पाती दस्तावेज'' कहा है। यह कविता मुक्तिबोध के प्रसिद्ध काव्य-संग्रह 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' में संकलित है।

प्रमुख कविताएँ- इस संग्रह में मुक्तिबोध की प्रसिद्ध और लंबी कविताएँ सम्मिलित हैं, जिनमें 'अंधेरे में', 'ब्रह्मराक्षस', और शीर्षक कविता 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' प्रमुख हैं।

मुख्य विषय- यह संग्रह अपनी प्रयोगधर्मी, प्रतीकात्मक और प्रगतिशील शैली के लिए जाना जाता है, जिसमें स्वतंत्रता-पूर्व और पश्चात की सामाजिक-राजनीतिक विषमताओं, आंतरिक संघर्ष और मानवीय संत्रास को गहराई से उकेरा गया है।

99. 'आस्था मानव के युगान्तर से प्राप्त दार्शनिक लक्ष्य पर केन्द्रित रागात्मकता दृष्टि है।'' यह कथन किसका है?

(अ) महादेवी वर्मा (ब) पंत
(स) जयशंकर प्रसाद (द) नागार्जुन

उत्तर- (अ) महादेवी वर्मा

यह प्रसिद्ध कथन छायावादी युग की प्रमुख कवयित्री और गद्यकार महादेवी वर्मा का है। उनके अनुसार, आस्था मात्र एक अंधविश्वास नहीं है, बल्कि मानव द्वारा युगों के अनुभव से प्राप्त उस दार्शनिक लक्ष्य पर टिकी हुई रागात्मक (भावनात्मक) दृष्टि है, जो व्यक्ति को समष्टि (संसार) से जोड़ती है।इस गंभीर और दार्शनिक पंक्ति का सरल शब्दों में अर्थ निम्नलिखित है-

- **युगान्तर से प्राप्त-** आस्था या विश्वास कोई ऐसी चीज नहीं है जो रातों-रात पैदा हो जाती है। यह मानव सभ्यता के सदियों लंबे अनुभवों, मंथन और विकास (युगों-युगों के अंतर) से छनकर आती है।
- **दार्शनिक लक्ष्य पर केन्द्रित-** मानव जीवन का एक अंतिम सत्य या उद्देश्य (दार्शनिक लक्ष्य) होता है, जैसे- कल्याण, सत्य और मानवता। आस्था का केंद्र यही महान लक्ष्य होता है।
- **रागात्मकता दृष्टि-** 'रागात्मकता' का अर्थ है प्रेम, करुणा और भावना से युक्त होना। महादेवी जी के अनुसार, आस्था केवल बुद्धि या तर्क का विषय नहीं है, अपितु यह एक ऐसी दृष्टि है जो हृदय की गहराइयों, प्रेम और संवेदना से जुड़ी होती है।

100. निम्नलिखित पद्य पंक्तियाँ किस कवि द्वारा रचित हैं?
''जीवन की जटिल समस्या है बढ़ी जटा सी कैसी।।''
(अ) जयशंकर प्रसाद (ब) निराला
(स) सुमित्रानंदन पंत (द) मैथिलीशरण गुप्त

उत्तर- (अ) जयशंकर प्रसाद
यह प्रसिद्ध पद्य पंक्तियाँ छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित उनकी प्रसिद्ध काव्य रचना 'आँसू' से ली गई हैं।
काव्य रचनाः आँसू (जयशंकर प्रसाद)
अर्थ एवं भावार्थ-
- **जटिल समस्या और जटा**- कवि जीवन की उलझनों और दुखों की तुलना साधु-संन्यासियों की उलझी हुई जटाओं से करते हैं। जैसे जटाएँ आपस में इतनी उलझ जाती हैं कि उन्हें सुलझाना कठिन होता है, वैसे ही मानव जीवन की समस्याएँ भी बहुत जटिल और पहेलीनुमा हैं।
- **हृदय की धूल और पीड़ा-** मन के भीतर निराशा और चिंताओं के कारण जो उदासी व घुटन (धूल) उड़ रही है, वह किस अंधी शक्ति या याद का परिणाम है?
- **आँसू के रूप में अभिव्यक्ति-** हृदय में जो दुख बहुत समय से दबा हुआ था और जो घनीभूत पीड़ा बनकर मस्तिष्क में किसी पुरानी याद की तरह मंडरा रहा था, वही बुरे वक्त (दुर्दिन) में आँखों से आँसू बनकर आज छलक पड़ा है।

101. उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यमवर्गीय बनिया समाज के जीवन का यथार्थ चित्रण किस उपन्यास में किया गया है?
(अ) देवरानी-जेठानी की कहानी (ब) रानी केतकी की कहानी
(स) परीक्षागुरु (द) भाग्यवती

उत्तर- (अ) देवरानी-जेठानी की कहानी
- **उपन्यासः** देवरानी-जेठानी की कहानी
- **रचयिताः** पंडित गौरीदत्त
- **प्रकाशन वर्षः** 1870 ई.
- **मुख्य विषयः** इस उपन्यास में उन्नीसवीं शताब्दी के मेरठ के एक मध्यमवर्गीय अग्रवाल बनिया परिवार के जीवन, बाल-विवाह और स्त्री-शिक्षा का यथार्थ चित्रण किया गया है।
- **कथानक-** यह उपन्यास एक मध्यमवर्गीय संयुक्त परिवार की कहानी है। इसमें दो बहुओं अनपढ़ जेठानी (ज्ञानो) और पढ़ी-लिखी देवरानी (आनंदी) के स्वभाव, आचरण और उनके जीवन के अलग-अलग परिणामों को दर्शाया गया है।
- **प्रमुख संदेश-** उपन्यास का मुख्य उद्देश्य स्त्री-शिक्षा, बाल विवाह के दुष्प्रभावों, अच्छे पारिवारिक संस्कारों और समझदारी का महत्व समझाना है।
- **निष्कर्ष-** अंत में समझदारी, शिक्षा और अच्छे व्यवहार की जीत होती है, जबकि ईर्ष्या और अज्ञानता से परिवार में होने वाले क्लेश का बुरा परिणाम दिखाया गया है।

102. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' किस विधा की रचना है?
(अ) कहानी (ब) आत्मकथा
(स) जीवनी (द) उपन्यास

उत्तर- (द) उपन्यास
- **'बाणभट्ट की आत्मकथा'** आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है। नाम में 'आत्मकथा' होने के बाद भी यह कोई आत्मकथा नहीं है, बल्कि एक काल्पनिक और ऐतिहासिक कथा पर आधारित उपन्यास है।
- बुद्धीवाद जब निष्पक्षता से देखता है तो वह यह पाता है कि समाज में भी कुछ दोष व्याप्त है। मनुष्य की उत्क्रांती में सामाजिक रचना के विकास में कुछ दोष घर कर के बैठे है। उसे ही साहित्यिक अभिव्यक्ति देते हुए आचार्य जी लिखते है, ''निपुणिका में इतने गुण हैं कि वह समाज और परिवार की पूजा का पात्र हो सकती थी, पर हुई नहीं। इतने दिनों के साथ हूँ, उसके चरित्र में मैंने कहीं कलुष नहीं देखा। वह हँसमुख है, कृतज्ञ है, मोहिनी है, लीलावती है ये क्या दोष है? मेरा चित्त कहता है कि दोष किसी और वस्तु में है, जो इन सारे सदगुणों को दुर्गुण कहकर व्याख्या करा देती है। वह वस्तु क्या है ? निश्चय ही कोई बड़ा असत्य समाज में सत्य के नाम घर बना बैठा है।'' इस असत्य की व्याख्या आचार्य जी ने प्रस्तुत उपन्यास में की है। समाज में सत्य के नाम पर चल रहे इस असत्य को उद्घाटित करना उपन्यासकार का मुख्य उद्देश्य रहा है।

103. निम्नलिखित गाँवों में से 'मैला आँचल' में वर्णित गाँव कौनसा है?
(अ) मेरीगंज (ब) सेमरी
(स) बेलारी (द) गंगौली

उत्तर- (अ) मेरीगंज
मैला आँचलः यह प्रसिद्ध साहित्यकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' द्वारा लिखा गया हिंदी का एक श्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास है। इसमें बिहार के पूर्णिया जिले के 'मेरीगंज' गाँव की कथा को दर्शाया गया है।
अन्य विकल्पः
- **सेमरी और बेलारीः** ये गाँव मुंशी प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' से संबंधित हैं।
- **गंगौलीः** यह गाँव राही मासूम रजा के उपन्यास 'आधा गाँव' की पृष्ठभूमि है।

104. 'नत्थू' किस उपन्यास का पात्र है?
(अ) धरती धन न अपना (ब) तमस
(स) गोदान (द) जिंदगीनामा

उत्तर- (ब) तमस
'नत्थू' प्रसिद्ध साहित्यकार भीष्म साहनी द्वारा रचित कालजयी उपन्यास 'तमस' (प्रकाशन वर्ष:1973) का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और मुख्य पुरुष पात्र है। इस उपन्यास में नत्थू एक गरीब चमार (विवश व्यक्ति) है, जिसे मुरादअली पैसों का लालच देकर धोखे से एक सूअर मारने के लिए राजी करता है। बाद में इसी मरे हुए सूअर को मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंककर शहर में भयानक सांप्रदायिक दंगे भड़काए जाते हैं।
'तमस' उपन्यास भारत-पाकिस्तान विभाजन के ठीक पहले (अप्रैल 1947) पंजाब में हुए पाँच दिनों के भयानक सांप्रदायिक दंगों की पृष्ठभूमि पर आधारित है। इसके लिए भीष्म साहनी को 1975 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।

105. निम्नलिखित में से किस उपन्यास में रईस साहूकार मदनमोहन के अंग्रेजी सभ्यता की नकल और अपव्यय की कथा है?
(अ) परीक्षागुरु (ब) मानस का हंस
(स) शेखर एक जीवनी (द) भाग्यवती

उत्तर- (अ) परीक्षागुरु

लाला श्रीनिवास दास द्वारा लिखित 'परीक्षागुरु' (1882) को हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास माना जाता है, जिसमें रईस साहूकार लाला मदनमोहन के अंग्रेजी सभ्यता की अंधी नकल, फिजूलखर्ची और नैतिक पतन की कथा का वर्णन किया गया है।

लाला श्रीनिवास कुशल महाजन और व्यापारी थे। अपने उपन्यास में उन्होंने मदनमोहन नामक एक रईस के पतन और फिर सुधार की कहानी सुनाई है। मदनमोहन एक समृद्ध वैश्व परिवार में पैदा होता है, पर बचपन में अच्छी शिक्षा और उचित मार्गदर्शन न मिलने के कारण और युवावस्था में गलत संगति में पड़कर अपनी सारी दौलत खो बैठता है। न ही उसे आदमी की ही परख है। वह अपने सच्चे हितैषी ब्रजकिशोर को अपने से दूर करके चुन्नीलाल, शंभूदयाल, बैजनाथ और पुरुषोत्तम दास जैसे कपटी, लालची, मौका परस्त, खुशामदी ''दोस्तों'' से अपने आपको घिरा रखता है। बहुत जल्द इनकी गलत सलाहों के चक्कर में मदनमोहन भारी कर्ज में भी डूब जाता है और कर्ज समय पर अदा न कर पाने से उसे अल्प समय के लिए कारावास भी हो जाता है।

इस कठिन स्थिति में उसका सच्चा मित्र ब्रजकिशोर, जो एक वकील है, उसकी सहायता करता है और उसकी खोई हुई संपत्ति उसे वापस दिलाता है। इतना ही नहीं, मदनमोहन को सही उपदेश देकर उसे अपनी गलतियों का आभास भी कराता है।

106. देश विभाजन की त्रासदी किस उपन्यास में वर्णित है?

(अ) झूठा सच (ब) गोदान
(स) मानस का हंस (द) जिंदगीनामा

उत्तर- (अ) झूठा सच

देश विभाजन की त्रासदी 'झूठा सच' उपन्यास में वर्णित है।

- **झूठा सच-** इसके लेखक यशपाल हैं। यह उपन्यास भारत के विभाजन (1947) की पृष्ठभूमि, सांप्रदायिक दंगों और शरणार्थियों के दर्द को बहुत मार्मिक ढंग से दिखाता है।
- **गोदान-** मुंशी प्रेमचंद का प्रसिद्ध उपन्यास है, जो ग्रामीण जीवन और कृषक समाज की समस्याओं पर आधारित है।
- **मानस का हंस-** अमृतलाल नागर का उपन्यास है, जो तुलसीदास के जीवन पर आधारित है।
- **जिंदगीनामा-** कृष्णा सोबती का उपन्यास है, जो 20वीं सदी के शुरुआती पंजाब के ग्रामीण जीवन का चित्रण करता है।

107. निम्नलिखित उपन्यासों में से 'ज्ञानो' किस उपन्यास का पात्र है?

(अ) राग दरबारी (ब) जिंदगीनामा
(स) तमस (द) धरती धन न अपना

उत्तर- (द) धरती धन न अपना

- **उपन्यासः** धरती धन न अपना (रचनाकारः जगदीश चंद्र, 1972)
- **मुख्य पात्रः** ज्ञानो इस उपन्यास की एक प्रमुख और सशक्त स्त्री पात्र (नायिका) है, जो नायक 'काली' के साथ जुड़ी है।
- 'धरती धन न अपना' हिंदी के प्रसिद्ध रचनाकार जगदीश चंद्र द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण आंचलिक और दलित-प्रधान उपन्यास है, जो 1972 में प्रकाशित हुआ था। यह कहानी पंजाब के घोड़ेवाहा गाँव की है और मुख्य रूप से दलित जीवन, सामंती उत्पीड़न, अमानवीय शोषण तथा जातिगत भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष को दर्शाती है। उपन्यास का केंद्रीय नायक काली है, जो कानपुर से शिक्षित होकर लौटने के बाद समाज की क्रूर वास्तविकताओं और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाता है।

108. गोस्वामी तुलसीदास की जीवनी को आधार बनाकर लिखा गया उपन्यास है -

(अ) खंजन नयन (ब) मानस का हंस
(स) जिंदगीनामा (द) नाच्यौ बहुत गोपाल

उत्तर- (ब) मानस का हंस

गोस्वामी तुलसीदास की जीवनी को आधार बनाकर लिखा गया उपन्यास 'मानस का हंस' है।

इस उपन्यास के बारे में कुछ मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

- **लेखकः** इसके लेखक सुप्रसिद्ध उपन्यासकार अमृतलाल नागर हैं।
- **विषयः** इस उपन्यास में गोस्वामी तुलसीदास के जीवन, उनके संघर्षों और उनके व्यक्तित्व को बहुत ही सजीव रूप में चित्रित किया गया है।

अन्य विकल्पों की जानकारी-

- **खंजन नयनः** यह भी अमृतलाल नागर का ही उपन्यास है, लेकिन यह सूरदास की जीवनी पर आधारित है।
- **जिंदगीनामाः** यह कृष्णा सोबती द्वारा लिखा गया प्रसिद्ध उपन्यास है, जो पंजाब के ग्रामीण जीवन और संस्कृति पर आधारित है।
- **नाच्यौ बहुत गोपालः** यह भी अमृतलाल नागर का उपन्यास है, जो मेहतर (सफाई कर्मी) समाज के जीवन और उनके संघर्षों पर केंद्रित है।

109. दलित जीवन पर आधारित उपन्यास कौनसा है?

(अ) झूठा सच (ब) मैला आँचल
(स) जिंदगीनामा (द) धरती धन न अपना

उत्तर- (द) धरती धन न अपना

इस उपन्यास के लेखक जगदीश चंद्र हैं और यह पंजाब के होशियारपुर जिले के ग्रामीण दलित जीवन (चमारों) की आर्थिक, सामाजिक और मानसिक पीड़ा को बहुत प्रामाणिक रूप से दर्शाता है।

अन्य विकल्पों की जानकारी-

- **झूठा सच-** यशपाल (भारत-विभाजन की त्रासदी पर आधारित)
- **मैला आँचल-** फणीश्वरनाथ 'रेणु' (बिहार के पूर्णिया जिले के ग्रामीण जीवन पर आधारित पहला आंचलिक उपन्यास)
- **जिंदगीनामा-** कृष्णा सोबती (पंजाब के ग्रामीण जीवन और संस्कृति पर आधारित)

110. 'शिवपालगंज' किस उपन्यास से संबंधित है?

(अ) आधा गाँव (ब) राग दरबारी
(स) मैला आँचल (द) झूठा सच

उत्तर- (ब) राग दरबारी

- **उपन्यासः** राग दरबारी
- **लेखकः** श्रीलाल शुक्ल (इन्हें इस उपन्यास के लिए 1969 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था)
- **विषयः** यह उपन्यास शिवपालगंज नामक गाँव के माध्यम से स्वतंत्रता के बाद के ग्रामीण जीवन, राजनीति, भ्रष्टाचार और शिक्षा व्यवस्था पर एक तीखा व्यंग्य है।

अन्य विकल्पों की जानकारी-

- **आधा गाँवः** राही मासूम रजा (गंगौली गाँव की पृष्ठभूमि)
- **मैला आँचलः** फणीश्वरनाथ 'रेणु' (मेरीगंज गाँव की पृष्ठभूमि)
- **झूठा सचः** यशपाल (देश के विभाजन की पृष्ठभूमि)

111. 'दुलाईवाली' कहानी के पात्र वंशीधर कहाँ के रहने वाले थे?

(अ) बनारस (ब) झाँसी
(स) भोपाल (द) इलाहाबाद

उत्तर- (द) इलाहाबाद

- दुलाईवाली' कहानी (1907 ई.) की रचना राजेन्द्र बाला घोष (बंग महिला) द्वारा की गई थी।
- कहानी के मुख्य पात्र वंशीधर इलाहाबाद के रहने वाले हैं और उनकी ससुराल बनारस (काशी) में है, जहाँ वे अपनी पत्नी जानकी देवी को विदा कराने आते हैं।
- **स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव-** कहानी में वंशीधर जब गलती से विलायती (विदेशी) धोती पहनकर आ जाते हैं, तो उन्हें ममेरे भाई नवलकिशोर के कट्टर स्वदेशी विचारों का ध्यान आता है और वे घबरा जाते हैं। यह प्रसंग उस समय देश में चल रहे 'स्वदेशी आंदोलन' और विदेशी वस्तुओं के प्रति मध्यमवर्गीय चेतना को दर्शाता है।
- **मध्यवर्गीय जीवन और सजीव परिवेश-** काशी के दशाश्वमेध घाट की सुबह, वहाँ की दिनचर्या, पुराने मकान, इक्के-घोड़ागाड़ी की सवारी और रेलवे स्टेशन की भागदौड़ का चित्रण तत्कालीन छोटे शहरों और कस्बों के सामाजिक वातावरण को पूरी तरह जीवंत करता है।
- **परस्पर पारिवारिक संबंध और आत्मीयता-** वंशीधर और नवलकिशोर की मित्रता तथा पारिवारिक जुड़ाव उस दौर के संयुक्त व आत्मीय सामाजिक ताने-बाने को उजागर करता है।

112. हिन्दी की चर्चित कहानी 'राही' का लेखक कौन है?

(अ) उषा प्रियंवदा (ब) मन्नू भण्डारी
(स) कृष्णा सोबती (द) सुभद्राकुमारी चौहान

उत्तर- (द) सुभद्राकुमारी चौहान

हिन्दी की चर्चित कहानी 'राही' की लेखिका सुभद्राकुमारी चौहान हैं। यह कहानी उनके प्रसिद्ध कहानी-संग्रह 'सीधे-सादे चित्र' में संकलित है, जो कि गरीबी, देशभक्ति और जेल की पृष्ठभूमि पर आधारित है।
सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखित 'राही' कहानी के मुख्य पात्र निम्नलिखित हैं-

- **राही-** एक गरीब और निराश्रित औरत, जिसे बच्चों की भूख मिटाने के लिए अनाज चुराने के आरोप में जेल हुई है।
- **अनीता-** एक उच्च/अमीर घर की महिला और स्वतंत्रता सेनानी, जो देश की स्वतंत्रता के आंदोलन के चलते जेल आई है।
- **चोरी की मजबूरी-** जेल में अनीता और राही की भेंट होती है। बातचीत में राही बताती है कि उसने पाँच-छह सेर अनाज (नाज की गठरी) चुराई थी। पूछने पर वह बताती है कि उसकी जाति मांगरोरी है, जिनका काम सिर्फ भीख मांगना है। उस दिन बच्चों के भूखे रहने और भीख न मिलने पर उसने विवश होकर चोरी की थी।

113. 'बुद्धगुप्त' कौनसी कहानी का पात्र है?

(अ) पिता (ब) आकाशदीप
(स) परिन्दे (द) कोसी का घटवार

उत्तर- (ब) आकाशदीप

'बुद्धगुप्त' 'आकाशदीप' कहानी का पात्र है।

इस कहानी से जुड़ी कुछ मुख्य बातें इस प्रकार हैं-

- **कहानीकारः** यह महान लेखक जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक और भावुक कहानी है।
- **मुख्य पात्रः** 'बुद्धगुप्त' (एक जलदस्यु यानी समुद्री डाकू) और 'चम्पा' इस कहानी के मुख्य पात्र हैं।
- कहानी का प्रारम्भ समुद्र के अशांत परिवेश से होता है। चंपा के पिता मणिभद्र के यहाँ प्रहरी का काम करते थे। माता के देहांत के बाद चंपा अपने पिता के साथ नाव पर ही रहती थी। एक युद्ध या संघर्ष के दौरान चंपा के पिता वीरगति को प्राप्त हुए। इसके बाद कपटी व्यापारी मणिभद्र ने चंपा को बंदी बना लिया। उसी जहाज पर बुद्धगुप्त नाम का एक अन्य बंदी भी था। बुद्धगुप्त और चंपा मिलकर मणिभद्र के अत्याचारों से मुक्ति पाते हैं। संघर्ष के दौरान एक भयंकर समुद्री आंधी आती है और उनकी नाव डगमगाकर एक अज्ञात और सुंदर द्वीप पर पहुँच जाती है। वे दोनों इस नए द्वीप को अपना घर बना लेते हैं और बुद्धगुप्त वहाँ का राजा/नायक बन जाता है। समय बीतने के साथ चंपा से प्रेम करने लगता है। वह चंपा के सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है। वह अपने पिता के कथित हत्यारे के रूप में उसके प्रेम को स्वीकार करने से मना कर देती है। चंपा अपने पिता की स्मृति में और समुद्र में आने वाले जहाजों का मार्गदर्शन करने के लिए एक दीप-स्तम्भ (आकाशदीप) पर नियमित रूप से दीपक जलाने लगती है। आजीवन वह वहीं रहकर उस दीप को जलाती रहती है।

114. ''खुदा के लिए दरवाजा खोलो। मेरे साथ में औरत जात है। गाड़ी निकल जायेगी।' कौनसी कहानी का संवाद है?

(अ) अमृतसर आ गया है (ब) गैंग्रीन
(स) उसने कहा था (द) आकाशदीप

उत्तर- (अ) अमृतसर आ गया है

- यह संवाद भीष्म साहनी द्वारा रचित प्रसिद्ध कहानी 'अमृतसर आ गया है' से लिया गया है।
- 'अमृतसर आ गया है' प्रसिद्ध लेखक भीष्म साहनी की एक मर्मस्पर्शी कहानी है, जो भारत-पाक विभाजन की विभीषिका और उस दौरान फैली सांप्रदायिक नफरत को एक ट्रेन के सफर के माध्यम से दर्शाती है। कहानी का प्रारम्भ पाकिस्तान वाले हिस्से से अमृतसर की ओर जाने वाली एक ट्रेन की यात्रा से होता है। डिब्बे में कहानीकार (लेखक) के अलावा एक फौजी सरदार जी, तीन हंसमुख पठान व्यापारी, एक प्रार्थना करती हुई वृद्ध महिला और एक दुबला-पतला पेशावरी बाबू बैठे हैं। जैसे-जैसे ट्रेन आगे बढ़ती है, बाहर विभाजन के दंगों, अफवाहों और आगजनी का माहौल दिखाई देता है। रास्ते के विभिन्न स्टेशनों पर दहशत और अफरातफरी का वातावरण है।
- वजीराबाद स्टेशन पर भागते हुए कुछ शरणार्थी (एक पुरुष, उसकी पत्नी और बेटी) भारी सामान के साथ ट्रेन में चढ़ते हैं। भीड़-भाड़ में एक पठान का पैर उस महिला को लग जाता है। इसके बाद यात्री उस परिवार को चलती ट्रेन से बाहर धकेल देते हैं और उनका सामान भी नीचे फेंक दिया जाता है। इस घटना के बाद डिब्बे में सन्नाटा छा जाता है। पठान ऊपर बर्थ पर लेटकर बेपरवाह रहते हैं, जबकि हिंदू-सिख यात्री और वह दुबला बाबू अंदर ही अंदर खौफ और मानसिक घुटन महसूस करते हैं। सुबह के समय जब ट्रेन अमृतसर के करीब पहुँचती है या स्टेशन पर रुकती है, तो वही शांत और डरा हुआ दुबला पेशावरी बाबू अचानक हिंसक हो उठता है। हत्या करने के बाद वह चुपचाप अपनी सीट पर बैठ जाता है। यह कहानी विभाजन की पीड़ा को प्रदर्शित करती है।

115. 'हामिद' ने मेले में से क्या खरीदा?

(अ) पतीली (ब) कड़ाही
(स) चाकू (द) चिमटा

उत्तर- (द) चिमटा

प्रेमचंद द्वारा रचित प्रसिद्ध कहानी 'ईदगाह' में मुख्य पात्र हामिद ने मेले में अपने पास मौजूद मात्र तीन पैसों से एक चिमटा खरीदा था। उसने यह चिमटा अपनी दादी अमीना के लिए खरीदा था ताकि रोटियाँ सेंकते समय उनके हाथ न जलें।

- इस कहानी के प्रमुख आधार और विषय निम्नलिखित हैं-
- **बाल मनोविज्ञान-** कहानी में एक चार-पाँच साल के अनाथ बच्चे हामिद के मन की स्थिति, उसकी मासूमियत, कल्पना और समझ को गहराई से दिखाया गया है।
- **समय से पहले परिपक्वता-** गरीबी और कठिन परिस्थितियों ने हामिद को उसकी आयु से अधिक समझदार और संवेदनशील बना दिया है।
- **निस्वार्थ प्रेम और त्याग-** हामिद मेले में अपने लिए खिलौने या मिठाइयाँ खरीदने की अपेक्षा अपनी बूढ़ी दादी अमीना के बारे में सोचता है, जो रोटियाँ पकाते वक्त अपनी उंगलियाँ जला लेती हैं। वह उनके लिए एक चिमटा खरीदता है, जो उसके त्याग और प्रेम के आदर्श को प्रस्तुत करता है।

116. ''हमारे समाज में बड़े-बूढ़े लोग जैसे बहू-बेटियों के निजी जीवन को स्वच्छन्द रहने देने के लिए अपना अधिकांश समय बाहर व्यतीत किया करते हैं।'' प्रस्तुत अवतरण किस कहानी का है?

(अ) तीसरी कसम (ब) उसने कहा था
(स) पिता (द) चीफ की दावत

उत्तर- (स) पिता

यह अवतरण पिता कहानी का है, जिसे प्रसिद्ध लेखक ज्ञानरंजन ने लिखा है। प्रसिद्ध कहानीकार ज्ञानरंजन की चर्चित कहानी 'पिता' (प्रकाशित वर्ष 1965) दो पीढ़ियों के बीच की वैचारिक दूरियों, बदलते पारिवारिक मूल्यों और पुराने संस्कार वाले पिता के अकेलेपन का संवेदनशील चित्रण करती है।

कहानी का मुख्य कथ्य और विषय-

- **दो पीढ़ियों का संघर्षः** यह कहानी पुरानी पीढ़ी (पिता) और नई पीढ़ी (पुत्र सुधीर) के बीच तालमेल की असफलता को दिखाती है।
- **स्वाभिमान और सरलताः** पिता पुराने ख्यालों के, आत्मविश्वासी और स्वाभिमानी व्यक्ति हैं। वे आधुनिक सुख-सुविधाओं, महंगे कपड़ों और नई जीवनशैली को स्वीकार नहीं करते।
- **पारिवारिक अलगावः** बेटा सुधीर और उसका परिवार शहर के आधुनिक परिवेश में रहता है, जो पिता की सादगी और स्वभाव को समझ नहीं पाता, जबकि बच्चों के मन में पिता के प्रति कोई घृणा या उपेक्षा का भाव नहीं होता।

117. ''सजनवा वैरी हो गय हमारो! सजनवा.....! फणीश्वरनाथ रेणु की कौनसी कहानी का गीत है?

(अ) पंचलाइट (ब) कपड़घर
(स) कस्बे की लड़की
(द) तीसरी कसम अर्थात् मारे गए गुलफाम

उत्तर- (द) तीसरी कसम अर्थात् मारे गए गुलफाम

''सजनवा वैरी हो गय हमारो...'' गीत फणीश्वरनाथ रेणु की अत्यंत प्रसिद्ध और भावुक कहानी 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम' का हिस्सा है। इस कहानी के मुख्य पात्र हीरामन और हीराबाई हैं। इस कहानी पर इसी नाम से ('तीसरी कसम') एक लोकप्रिय बॉलीवुड फिल्म भी बनाई गई है, जिसमें राज कपूर और वहीदा रहमान ने मुख्य भूमिकाएँ निभाई थीं।

अनजाने में या मजबूरी में हीरामन अपनी गाड़ी में नौटंकी वाली हीराबाई को बैठाकर चंपानगर के मेले तक ले जाता है। रास्ते में दोनों के बीच एक बेहद मासूम, सहज और आत्मीय रिश्ता बन जाता है। हीराबाई उसे प्यार से 'मीता' कहकर पुकारती है। हीरामन को हीराबाई से एक अनकहा और पवित्र लगाव हो जाता है, जिसे वह शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाता।

118. ''तेरी कुड़माई हो गयी?'' प्रस्तुत कथन कौनसी कहानी का संवाद है?

(अ) कफन (ब) परमात्मा का कुत्ता
(स) अपना-अपना भाग्य (द) उसने कहा था

उत्तर- (द) उसने कहा था

''तेरी कुड़माई हो गयी?'' प्रस्तुत कथन उसने कहा था कहानी का प्रसिद्ध संवाद है। यह कहानी चन्द्रधर शर्मा **'गुलेरी'** द्वारा लिखी गई है, जिसमें 'कुड़माई' का अर्थ 'सगाई' होता है।

कहानी की शुरुआत अमृतसर के चौक-बाजार से होती है। 12 साल का लहना सिंह और 8 साल की एक लड़की किसी काम से बाजार आए हैं। लहना सिंह मजाक-मजाक में बार-बार लड़की से पूछता है- **''तेरी कुड़माई (सगाई) हो गई?''** लड़की हर बार **''धत्''** कहकर भाग जाती है। एक दिन पूछने पर वह शरमाकर कहती है- ''हाँ, हो गई, कल हो गयी है, देखते नहीं, यह रेशमी फूलों वाला सालू।'' यह सुनकर लहना सिंह उदास हो जाता है और घर लौटते समय रास्ते में किसी को धक्का देता है, तो किसी की टांग तोड़ता है।

119. ''कोई बीमार बाप का इलाज नहीं करता।'' प्रस्तुत कथन कौनसी कहानी में कहा गया है?

(अ) अकेली (ब) गदल
(स) गैंग्रीन (द) इन्सपेक्टर मातादीन चाँद पर

उत्तर-(ब) गदल

- यह प्रसिद्ध कहानी रांगेय राघव जी द्वारा लिखित है।
- **कहानी का नामः** गदल
- **लेखकः** रांगेय राघव

मुख्य पात्र-

- **गदल-** कहानी की मुख्य नायिका
- **गुन्ना-** गदल का पति, जिसकी 55 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई थी।
- **डोडी-** गदल का देवर, जिससे उसकी आत्मीयता और प्रेम था।
- **मोनी (लौहरे)-** 32 वर्षीय मौनी लोहड़ा गुर्जर, जिससे गदल ने संबंध जोड़े और बाद में शादी की।
- **निहाल और नारायण-** गदल के बेटे।

'गदल' रांगेय राघव द्वारा रचित एक प्रसिद्ध और सशक्त कहानी है जो राजस्थान के भरतपुर अंचल की खारी गुर्जर जाति की पृष्ठभूमि पर आधारित है। यह कहानी लगभग 45 वर्षीय स्वाभिमानी और दबंग नायिका गदल के जीवन, उसके द्विद्रोही प्रेम प्रसंग तथा पारिवारिक प्रतिष्ठा के लिए किए गए संघर्षों का सजीव चित्रण करती है। अपने देवर के मृत्यु-भोज के सफल आयोजन के बाद प्रशासनिक संघर्ष और गोलीबारी के बीच गदल हँसते हुए अपने प्राण त्याग देती है।

120. कथाकार निर्मल वर्मा का जन्म कब हुआ?

(अ) सन् 1933 ई. (ब) सन् 1926 ई.
(स) सन् 1931 ई. (द) सन् 1929 ई.

उत्तर-(द) सन् 1929 ई.

कथाकार निर्मल वर्मा का जन्म 3 अप्रैल 1929 को शिमला (हिमाचल प्रदेश) में हुआ था। वह हिंदी साहित्य में 'नई कहानी आंदोलन' के प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं।

निर्मल वर्मा की प्रमुख रचनाएँ-

- **कहाणी-संग्रह-** परिंदे, कव्वे और काला पानी, जलती झाड़ी, बीच बहस में।
- **प्रमुख उपन्यास-** वे दिन, लाल टीन की छत, एक चिथड़ा सुख, रात का रिपोर्टर, अंतिम अरण्य।
- **यात्रा-वृत्तांत और निबंध-** चीड़ों पर चाँदनी, भारत और यूरोपः प्रतिश्रुति के क्षेत्र।

प्रमुख सम्मान एवं पुरस्कार-

- **साहित्य अकादमी पुरस्कारः** वर्ष 1985 में उनके कहानी-संग्रह 'कव्वे और काला पानी' के लिए।
- **ज्ञानपीठ पुरस्कारः** वर्ष 1999 का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान।
- **पद्म भूषणः** वर्ष 2002 में भारत सरकार द्वारा सम्मानित।
- **साहित्य अकादमी फेलोशिपः** वर्ष 2005 में।
- **मूर्तिदेवी पुरस्कारः** वर्ष 1995।

121. ''राम के नाम से दोनों नयन बिनु,
सूरदास भये कवि कुलराई''

(अ) अंधा युग (ब) चंद्रगुप्त
(स) स्कन्दगुप्त (द) अंधेर नगरी

उत्तर- (द) अंधेर नगरी

यह गीत भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा रचित नाटक अंधेर नगरी का अंश है।

मुख्य जानकारी-

- **नाटक-** अंधेर नगरी
- **रचयिता-** भारतेंदु हरिश्चंद्र
- **संदर्भ-** यह नाटक के प्रथम अंक (बाह्य प्रांत) में महंत जी और उनके दोनों चेले (गोवर्धन दास और नारायण दास) द्वारा गाए गए राम-भजन का हिस्सा है।
- **रचना वर्ष-** 1881 ईस्वी (इसे भारतेंदु जी ने बनारस के हिंदू नेशनल थिएटर के लिए केवल एक दिन में लिखा था)।
- **अंकों की संख्या-** इस नाटक में कुल 6 अंक (या दृश्य) हैं।
- **मुख्य पात्र-** महंत जी, गोवर्धन दास, नारायण दास, चौपट राजा (राजा), मंत्री, कोतवाल, कल्लू बनिया और विभिन्न व्यापारी।
- **कहानी का सार-** कहानी में एक ऐसे नगर का वर्णन है जहाँ राजा 'चौपट' और उसकी शासन व्यवस्था पूरी तरह मूर्खतापूर्ण और अन्यायपूर्ण है। उस नगर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वहाँ भाजी और खाजा (सभी वस्तुएँ, चाहे वह सब्जी हो या मिठाई) एक ही भाव यानी 'टके सेर' (एक टके में एक सेर) मिलते हैं।

122. (स्थान- तक्षशिला के गुरुकुल का मठ। चाणक्य और सिंहरण) उक्त स्थान संकेत किस नाटक के प्रथम अंक और प्रथम दृश्य से संबंधित है?

(अ) स्कन्दगुप्त (ब) ध्रुवस्वामिनी
(स) चन्द्रगुप्त (द) विशाख

उत्तर- (स) चन्द्रगुप्त

यह स्थान संकेत जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक **'चन्द्रगुप्त'** के प्रथम अंक और प्रथम दृश्य से संबंधित है। जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित **'चंद्रगुप्त'** (1931) हिंदी साहित्य का एक श्रेष्ठ ऐतिहासिक नाटक है। इसमें आचार्य चाणक्य की कूटनीति और चंद्रगुप्त मौर्य के बाहुबल से मगध के नंद वंश का पतन, सिकंदर के आक्रमण का प्रतिरोध और विशाल मौर्य साम्राज्य की स्थापना का भव्य चित्रण किया गया है।

123. निम्नलिखित में कौन 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का पात्र नहीं है?

(अ) मंदाकिनी (ब) कोमा
(स) खिगिल (द) देवसेना

उत्तर- (द) देवसेना

देवसेना जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध नाटक 'स्कंदगुप्त' की मुख्य स्त्री पात्र है, न कि 'ध्रुवस्वामिनी' की। प्रसिद्ध कविता ''देवसेना का गीत'' (आह! वेदना मिली विदाई) इसी स्कंदगुप्त नाटक से ली गई है। जबकि मंदाकिनी और कोमा 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के प्रमुख स्त्री पात्र हैं और खिगिल (या खिंगल) इस नाटक में शकराज का दूत (पुरुष पात्र) है।

नाटक का कथानक और सारांश-

- समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद उनके बड़े पुत्र रामगुप्त ने मंत्री शिखरस्वामी के षड्यंत्र से छलपूर्वक सिंहासन हथिया लिया और चंद्रगुप्त के हिस्से की ध्रुवस्वामिनी से बलपूर्वक विवाह कर लिया। रामगुप्त अत्यंत कायर और विलासी था। वह ध्रुवस्वामिनी पर शक करता था कि वह चंद्रगुप्त से प्रेम करती है।
- शकराज ने गुप्त साम्राज्य की सेना को घेर लिया और एक अपमानजनक संधि का प्रस्ताव रखा कि यदि रामगुप्त अपनी पत्नी ध्रुवस्वामिनी को उसे सौंप दे, तो वह युद्ध रोक देगा। कायर रामगुप्त अपनी जान बचाने के लिए ध्रुवस्वामिनी को शकराज के पास भेजने के लिए तैयार हो जाता है। ध्रुवस्वामिनी विद्रोह करती है। ध्रुवस्वामिनी की रक्षा के लिए चंद्रगुप्त स्त्री का वेश धारण कर शकराज के शिविर में जाता है। वहाँ चंद्रगुप्त और उसके साथियों द्वारा शकराज का वध कर दिया जाता है। बाद में रामगुप्त चंद्रगुप्त पर पीछे से वार करना चाहता है, पर चंद्रगुप्त के सामंत उसका वध कर देते हैं। अंततः परिषद के निर्णय और धर्मशास्त्र की स्वीकृति से ध्रुवस्वामिनी चंद्रगुप्त का वरण करती है और दोनों का विवाह होता है।

124. ''जो कुछ सुन्दर था, शुभ था, कोमलतम था वह हार गया द्वापर युग बीत गया''
उक्त कथा गायन का संबंध 'अंधायुग' नाटक के किस अंक से है?

(अ) पहला (ब) दूसरा
(स) तीसरा (द) पाँचवाँ

उत्तर- (अ) पहला

यह कथा गायन धर्मवीर भारती के प्रसिद्ध गीतिनाट्य 'अंधा युग' के प्रथम अंक (शीर्षकः कौरव नगरी) के प्रारंभ में आता है। 'अंधा युग' डॉ. धर्मवीर भारती द्वारा रचित हिंदी साहित्य का एक प्रसिद्ध गीतिनाट्य है। इसका प्रकाशन वर्ष 1954 है। यह महाभारत के 18वें दिन की संध्या से लेकर भगवान श्रीकृष्ण की मृत्यु तक की घटनाओं और युद्ध की विभीषिका पर आधारित है।

संरचना और अंक- इस गीतिनाट्य में कुल पाँच अंक और आठ भाग हैं- 1.स्थापना (मंगलाचरण), **2. प्रथम अंक-** कौरव नगरी, 3.**द्वितीय अंक-** पशु का उदय, 4. **तृतीय अंक-** अश्वत्थामा का अर्ध सत्य, 5. **अंतराल-**पंख, पहिया और पट्टियाँ, 6.**चतुर्थ अंक-** गांधारी का शाप, 7. **पंचम अंक- विजय-** एक क्रमिक आत्महत्या 8**. समापन-** प्रभु की मृत्यु।

125. 'सिन्दूर की होली' नाटक की दो स्त्री पात्र हैं -

(अ) चन्द्रकला और मनोरमा (ब) मनोरमा और अर्चना
(स) अर्चना और चन्द्रकला (द) चन्द्रकला और चन्द्रप्रभा

उत्तर- (अ) चन्द्रकला और मनोरमा

'सिन्दूर की होली' नाटक के दो प्रमुख स्त्री पात्र चन्द्रकला और मनोरमा हैं। यह प्रसिद्ध नाटक लक्ष्मीनारायण मिश्र द्वारा वर्ष 1934 में लिखा गया था, जो सामाजिक समस्याओं और विधवा विवाह के प्रश्न को रेखांकित करता है।

1. चन्द्रकला-

- **परिचय-** चन्द्रकला नाटक की केंद्रीय (मुख्य) स्त्री पात्र है। वह डिप्टी कलेक्टर मुरारीलाल की 20 वर्षीय शिक्षित और स्वतंत्र विचारों वाली पुत्री है।
- **व्यक्तित्व एवं चरित्र-** वह एक भावुक, अदम्य साहसी और सच्चे प्रेम में समर्पित युवती है। वह रूढ़िवादी सामाजिक बंधनों से परे अपने विचारों पर अडिग रहने वाली पात्र है।

2. मनोरमा-

- **परिचय-** मनोरमा 18 वर्षीय एक बाल-विधवा (बचपन में ही विधवा हुई) है, जिसे मुरारीलाल ने चन्द्रकला को चित्रकला सिखाने या संभालने के लिए अपने घर पर रखा है।
- **व्यक्तित्व एवं चरित्र-** मनोरमा संयम, त्याग, बुद्धिवाद और आदर्श का प्रतीक है। वह चंद्रकला से अलग विचारों वाली है, जहाँ चंद्रकला रोमांटिक और स्वतंत्र प्रेम की प्रतीक है, वहीं मनोरमा सामाजिक मर्यादाओं और विधवा जीवन के दर्द को यथार्थवादी दृष्टिकोण से देखती है।

126. ''विलोम क्या है? एक असफल कालिदास। और कालिदास? एक सफल विलोम।''
'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में उक्त संवाद किसके द्वारा कहा गया?

(अ) मल्लिका (ब) कालिदास
(स) अम्बिका (द) विलोम

उत्तर- (द) विलोम

मोहन राकेश के प्रसिद्ध नाटक आषाढ़ का एक दिन में यह संवाद पात्र विलोम द्वारा कालिदास से कहा गया था। 'आषाढ़ का एक दिन' (1958) मोहन राकेश द्वारा रचित एक ऐतिहासिक एवं मनोवैज्ञानिक हिंदी नाटक है, जिसे आधुनिक हिंदी नाटक का प्रथम नाटक माना जाता है। यह नाटक संस्कृत कवि कालिदास के जीवन, उनकी रचना 'ऋतुसंहार', और उनके प्रेम व सत्ता की महत्वाकांक्षा के बीच के द्वंद्व पर आधारित है।

127. '' यह नाटक इब्राहिम अल्काजी के साथ इस बातचीत के बाद लिखा गया था कि हिंदी में आम आदमी का समसामयिक नाटक नहीं है।''
उक्त गद्यांश का संबंध किस नाटक से है?

(अ) आगरा बाजार (ब) बकरी
(स) आधे-अधूरे (द) एक और द्रोणाचार्य

उत्तर- (ब) बकरी

'बकरी' प्रसिद्ध साहित्यकार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा वर्ष 1974 में रचित एक अत्यंत लोकप्रिय और राजनीतिक-सामाजिक व्यंग्य नाटक है। यह नाटक आजादी के बाद की राजनीति, स्वार्थी नेताओं के पाखंड और भोले-भाले आम लोगों के शोषण पर करारा प्रहार करता है।

नाटक का परिचय एवं मुख्य बातें-

- **प्रकाशन वर्ष:**1974
- **संरचना:** इसमें 2 अंक हैं और प्रत्येक अंक में 3-3 दृश्य हैं।
- **शैली:** उत्तर प्रदेश की पारंपरिक 'नौटंकी शैली' में लिखा गया है (दोहा, चौबोला, कहरवा आदि छंदों का प्रयोग)।
- **मुख्य विषय:** गांधीवादी सिद्धांतों और प्रतीकों का दुरुपयोग कर सत्ता और पैसा प्राप्त करने वाले भ्रष्ट नेताओं की पोल खोलना।

128. '' धीरे-धीरे अंधकार। अंधकार में बच्चों के रोने की सिसकने की आवाजें आती हैं। धीरे-धीरे प्रकाश। सात-आठ वर्ष का अश्वत्थामा जमीन पर पांव घिसलाता मचल रहा है।' उक्त दृश्य परिवर्तन की सूचना किस नाटक की है?

(अ) अंधायुग (ब) एक और द्रोणाचार्य
(स) महाभोज (द) भारत दुर्दशा

उत्तर-(अ) अंधायुग

धर्मवीर भारती द्वारा रचित प्रसिद्ध गीतिनाट्य 'अंधायुग' से यह दृश्य परिवर्तन की सूचना संबंधित है। धर्मवीर भारती द्वारा रचित 'अंधा युग' हिंदी साहित्य का एक प्रसिद्ध गीतिनाट्य है। इसका प्रकाशन सन् 1954 में हुआ था। यह महाभारत के अठारहवें दिन की संध्या से लेकर प्रभास तीर्थ में श्रीकृष्ण की मृत्यु तक के समय पर आधारित है।

प्रमुख कथानक और विषय- यह नाटक महाभारत के युद्ध के बाद की विभीषिका, मानवीय संवेदनाओं के क्षरण, नैतिक विघटन और अंधकार को दर्शाता है। लेखक के अनुसार, युद्ध में जीतने वाले और हारने वाले दोनों ही पक्षों का पतन होता है, युद्ध केवल विनाश लाता है। नाटक यह संदेश देता है कि हिंसा और अहंकार से अंततः मनुष्यता का अंधकार ही फैलता है।

129. निम्नलिखित में से कौनसा विकल्प असत्य है?

(अ) स्थान- दिल्ली में अंजली दीदी के बँगले की बैठक और खाने का कमरा
(ब) पहला अंक- गर्मियों में एक दिन
(स) दूसरा अंक- बीस वर्ष बाद सर्दियों में एक दिन
(द) तीसरा अंक- पच्चीस वर्ष बाद बरसात का एक दिन

उत्तर- (द) तीसरा अंक- पच्चीस वर्ष बाद बरसात का एक दिन है, क्योंकि यह विकल्प असत्य है।

कारण: उपेंद्रनाथ अश्क द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक 'अंजो दीदी' (1955) केवल दो ही अंकों में विभाजित है (दोनों अंकों में तीन-तीन दृश्य हैं)। इस नाटक में कोई तीसरा अंक नहीं है।

नाटक की संरचना इस प्रकार है-

- **स्थान:** दिल्ली में अंजली दीदी के बँगले की बैठक और खाने का कमरा।
- **पहला अंक:** समय 1933 ईस्वी, गर्मियों का एक दिन।
- **दूसरा अंक:** बीस वर्ष बाद (समय 1953 ईस्वी), सर्दियों का एक दिन।

- **विषय-वस्तु एवं कथानक-**यह नाटक मध्यवर्गीय यांत्रिक जीवन, अहंकार, अति-नियमबद्धता और कठोर पारिवारिक नियंत्रण के कारण परिवार के विघटन की पीड़ा को दर्शाता है। नायिका अंजलि (अंजो दीदी) समय, साफ-सफाई और अनुशासन को लेकर इस हद तक जिद्दी और तानाशाह है कि उसका यह कठोर व्यवहार उसके पति, बेटे और पूरे परिवार की स्वाभाविक जिंदगी और मानसिक शांति को नष्ट कर देता है। नाटक में यह दिखाया गया है कि कैसे भावनाहीन अनुशासन और सनक किस प्रकार रिश्तों को खोखला कर देती है।

130. 'आज सरोहा में घटी छोटी से छोटी घटना भी इसी सीट के साथ जोड़कर देखी परखी जा रही है। वरना और दिन होता तो क्या तो बिसू और क्या बिसू की मौत।'' सूत्रधार का उक्त कथन किस नाटक से लिया गया है?

(अ) बकरी (ब) महाभोज
(स) सिन्दूर की होली (द) एक और द्रोणाचार्य

उत्तर- (ब) महाभोज

नाटक के संबंध में -

- **नाटक-** महाभोज
- **नाटककार-** मन्नू भण्डारी
- **प्रकाशन वर्ष**- 1982
- **कुल दृश्य-** 11
- **नाटक स्थान-** सरोहा
- **प्रकार-** उपन्यास का नाट्य रूपान्तरण

131. 'संस्कृति और सौन्दर्य' निबन्ध के लेखक कौन हैं?

(अ) बालकृष्ण भट्ट (ब) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(स) विवेकी राय (द) नामवर सिंह

उत्तर- (द) नामवर सिंह

प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह ने अपने चर्चित निबंध 'संस्कृति और सौंदर्य' (प्रकाशित वर्ष 1982) में संस्कृति और सौंदर्य के पारंपरिक व संकीर्ण दृष्टिकोणों की आलोचना की है। यह निबंध मुख्य रूप से उनके गुरु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'अशोक के फूल' के विचारों पर आधारित है।

संस्कृति और सौंदर्य के बारे में उनके मुख्य विचार इस प्रकार हैं-

1. संस्कृति की विशुद्धता का खंडन (मिश्रित संस्कृति)
2. मनुष्य की जिजीविषा और श्रम
3. सौंदर्य और 'लालित्य-मीमांसा' (विद्रोह के रूप में सौंदर्य)
4. लोक और शास्त्र का संवाद

132. ''मैं इनकी आशा-आकांक्षा, उत्साह, साहस, उद्यमता आदि से वैसे ही अनुप्राणित और आविष्ट रहूँगा जैसे चुम्बकीय आकर्षण क्षेत्र में पड़कर साधारण लोहा भी चुम्बक बन जाता है।'' किस निबन्ध का अंश है?

(अ) विज्ञान और साहित्य (ब) उत्तराफाल्गुनी के आसपास
(स) नाखून क्यों बढ़ते हैं (द) कविता क्या है

उत्तर- (ब) उत्तराफाल्गुनी के आसपास

उत्तराफाल्गुनी के आसपास' मानव जीवन की विभिन्न अवस्थाओं, उम्र के पड़ावों और प्रकृति के संबंधों का प्रतीकात्मक चित्रण करता है। इसमें लेखक ने जीवन के प्रवाह और परिपक्वता को नक्षत्रों और ऋतुओं के माध्यम से गहराई से समझाया है।

'उत्तराफाल्गुनी के आसपास' हिंदी के प्रसिद्ध रचनाकार कुबेरनाथ राय का एक चर्चित ललित निबंध है।

निबंध का परिचय और मुख्य बिंदु-

- **रचयिता-** कुबेरनाथ राय
- **प्रकाशन वर्ष-** 1973 ई.
- **संग्रह**- यह निबंध उनके प्रसिद्ध निबंध संग्रह 'विषाद योग' में संकलित है।
- **विषय-वस्तु-** इस निबंध में लेखक ने वर्षा ऋतु के अंतिम नक्षत्र 'उत्तराफाल्गुनी' के माध्यम से मानव लेखक के अनुसार, 'गदह-पचीसी' (सावन-मनभावन अवस्था) के बाद जब मनुष्य सत्ताइसवें और फिर चालीसवें वर्ष के पड़ाव पर पहुंचता है, तब जीवन में दायित्व, परिपक्वता और बढ़ती आयु (जरा और जीर्णता) के संकेत मिलने लगते हैं।

133. ''इनका जीवन बर्फ की पवित्रता से पूर्ण और वन की सुगन्ध से सुगन्धित है। इनके मुख, शरीर और अन्तःकरण सफेद, इनकी बर्फ पर्वत और भेड़ सफेद।'' पंक्ति के लेखक का नाम हैः

(अ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ब) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(स) पूर्ण सिंह (द) नामवर सिंह

उत्तर- (स) पूर्ण सिंह

इस निबंध में लेखक ने शारीरिक श्रम, किसान, गड़रिए और मजदूरों के जीवन के माध्यम से श्रम की महत्ता, प्रेम और सच्ची आध्यात्मिकता का सुंदर चित्रण किया है।

सरदार पूर्ण सिंह आधुनिक हिंदी साहित्य के द्विवेदी युग के एक प्रख्यात, भावात्मक और काव्यात्मक निबंधकार एवं पंजाबी के श्रेष्ठ कवि थे। उनका जन्म 17 फरवरी 1881 को एबटाबाद के निकट सलहड़ गाँव (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था और उनका निधन 31 मार्च 1931 को देहरादून में हुआ था।

साहित्यिक परिचय और विशेषताएँ-

- **निबंध लेखन-** सरदार पूर्ण सिंह ने हिंदी में केवल छह निबंध लिखे, लेकिन इन्हीं छह निबंधों के आधार पर उन्हें हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ निबंधकारों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ।
- **भाव-प्रधान शैली-** उनके निबंधों में विचारों की शीतलता के साथ-साथ हृदय को स्पर्श करने वाली भावात्मकता और काव्यात्मकता होती है।
- **प्रमुख विषय-** उन्होंने अपने साहित्य में श्रम की प्रतिष्ठा, प्रेम, सदाचार, नैतिकता, आध्यात्मिकता और मानवतावाद को मुख्य आधार बनाया। स्वामी रामतीर्थ और भाई वीर सिंह के संपर्क से उनके विचारों में गहरा आध्यात्मिक प्रभाव आया।
- **भाषा एवं शैली-** उनकी भाषा शुद्ध खड़ी बोली है, जिसमें तत्सम शब्दों के साथ-साथ फारसी और अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का भी सुंदर प्रयोग मिलता है। उनकी शैली मुख्य रूप से भावात्मक, विचारात्मक और वर्णनात्मक रही है।

134. प्रताप नारायण मिश्र के अधिकतर निबन्ध किस पत्र में प्रकाशित हुए?

(अ) प्रताप (ब) ब्राह्मण
(स) सरस्वती (द) बालबोधिनी

उत्तर- (ब) ब्राह्मण

प्रताप नारायण मिश्र भारतेंदु मंडल के प्रमुख लेखक और निबंधकार थे। इन्होंने 'ब्राह्मण' नामक मासिक पत्र का संपादन और प्रकाशन 1883 ई. में कानपुर से शुरू किया था। इनके अधिकांश प्रसिद्ध और व्यंग्यात्मक निबंध इसी पत्र में प्रकाशित हुए थे।

प्रारंभिक जीवन एवं जन्म-

- **जन्म-** 24 सितंबर 1856 ई.
- **जन्म स्थान-** बैजे गाँव (बेथर), जिला उन्नाव, उत्तर प्रदेश
- **पिता का नाम-** पंडित संकटाप्रसाद मिश्र (जो एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे)
- **शिक्षा-दीक्षा-** उन्होंने कुछ समय तक अंग्रेजी स्कूल में भी पढ़ाई की, पर इनका स्वभाव फक्कड़ और मनमौजी था। उन्होंने घर पर ही स्वाध्याय (स्वयं अध्ययन) से हिंदी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया।
- **साहित्यिक और पत्रकारिता जीवन-** प्रताप नारायण मिश्र भारतेन्दु हरिश्चंद्र से अत्यधिक प्रभावित थे और उन्हें अपना गुरु मानते थे। उन्हें **'प्रतिभारतेन्दु'** और **'द्वितीयचन्द्र'** जैसे उपनामों से भी सम्मान मिला। उन्होंने 1889 में **'हिंदोस्थान'** (कालाकाँकर) के सहायक संपादक के रूप में भी कार्य किया। कानपुर में उन्होंने 'रसिक समाज' की स्थापना की।

135. 'उठ जाग मुसाफिर' के लेखक हैं -

(अ) विवेकी राय (ब) भारतेन्दु
(स) बालकृष्ण भट्ट (द) रामचन्द्र शुक्ल

उत्तर- (अ) विवेकी राय

'उठ जाग मुसाफिर' प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार विवेकी राय द्वारा रचित एक बहुत चर्चित ललित निबंध और निबंध-संग्रह है, जिसका प्रकाशन वर्ष 2012 है। इस रचना में ग्रामीण जीवन, संस्कृति, देश-काल और जीवन-दर्शन का बहुत ही सुंदर एवं वैचारिक चित्रण किया गया है।

निबंध का सार एवं मुख्य विषय-

- **कथानक और पात्र-** इस निबंध की शुरुआत लेखक के 95 वर्षीय बुजुर्ग एवं बीमार ग्रामीण गांधीवादी विचारक 'जगदीश बाबू' (मास्टर साहब) से मिलने जाने की घटना से होती है।
- **ग्रामीण संवेदना और संस्कृति-** इसमें ग्रामीण जीवन, कृषि-संस्कृति, प्रकृति और मनुष्य के बीच के जुड़ाव को बहुत खूबसूरती से उभारा गया है।
- **आधुनिकता की आलोचना-** यह निबंध मशीनीकरण, अंधाधुंध उपभोक्तावाद और भौतिकवादी विकास की आलोचना करता है जो गांवों की पारंपरिक एकता और संस्कृति को नष्ट कर रहा है।
- **जीवन दर्शन-** ''जो सोवत है, सो खोवत है, जो जागत है, सो पावत है'' जैसी पारंपरिक लोक-चेतना और आध्यात्मिक जागरण का संदेश इस रचना में मिलता है।

136. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्धों की विशेषता है -

(अ) भाव एवं मनोविकार संबंधी
(ब) आलोचना का सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप
(स) दोनों (अ) और (ब)
(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर- (स) दोनों (अ) और (ब)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्धों की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं: भाव एवं मनोविकार संबंधी निबन्धः उन्होंने 'चिंतामणि' (भाग-1) में क्रोध, उत्साह, श्रद्धा-भक्ति, लोभ और प्रीति जैसे मानवीय भावों और मनोविकारों पर गंभीर और विश्लेषणात्मक निबंध लिखे हैं।

आलोचना का सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूपः शुक्ल जी ने साहित्य और समीक्षा से संबंधित निबंध भी लिखे हैं, जिनमें आलोचना के सैद्धांतिक पक्ष (जैसे- 'कविता क्या है', 'साधारणीकरण और व्यक्तिवैचित्र्यवाद') और व्यावहारिक पक्ष (विभिन्न कवियों और साहित्यों की समीक्षा) दोनों का सुंदर समन्वय मिलता है।

137. ''व्यापक मानवतावादी दृष्टि और गंभीर सांस्कृतिक निष्ठा' किसके निबन्धों की प्रमुख विशेषता है?

(अ) नामवर सिंह (ब) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(स) बालकृष्ण भट्ट (द) विवेकी राय

उत्तर- (ब) हजारीप्रसाद द्विवेदी

'व्यापक मानवतावादी दृष्टि और गंभीर सांस्कृतिक निष्ठा' आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबन्धों की सबसे प्रमुख विशेषता है। उनके निबन्धों (जैसे- अशोक के फूल, कुटज, आलोक पर्व) में भारतीय संस्कृति, इतिहास, परंपरा और सनातन मानवीय मूल्यों का अनूठा समन्वय देखने को मिलता है। वे साहित्य को सदैव 'मनुष्य की दृष्टि' से देखने के पक्षपाती थे।

निबंध-संग्रह- अशोक के फूल, कल्पलता, मध्यकालीन धर्मसाधना, विचार और वितर्क, विचार-प्रवाह, कुटज, आलोक पर्व। आलोक पर्व रचना के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था।

138. विद्यानिवास मिश्र द्वारा लिखित निबन्ध है -

(अ) मजदूरी और प्रेम (ब) उठ जाग मुसाफिर
(स) संस्कृति और सौन्दर्य (द) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है

उत्तर- (द) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है

यहाँ दिए गए विकल्पों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

- **मेरे राम का मुकुट भीग रहा हैः** यह प्रसिद्ध ललित निबंध विद्यानिवास मिश्र द्वारा ही लिखा गया है (प्रकाशन वर्षः1974)।
- **मजदूरी और प्रेमः** यह पूर्ण सिंह (अध्यापक पूर्ण सिंह) का निबंध है।
  उठ जाग मुसाफिरः यह विवेकी राय का निबंध है।
- **संस्कृति और सौन्दर्यः** यह नामवर सिंह का आलोचनात्मक निबंध है।

139. ''अमेरिकन, अंग्रेज, फ्रांसीस आदि तुर्की सब सरपट दौड़े जाते हैं। सबके जी में यही है कि पाला हमीं पहले छू लें।'' यह किस निबन्ध का अंश है?

(अ) दिल्ली दरबार दर्पण
(ब) शिवशंभु के चिट्ठे
(स) भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?
(द) उठ जाग मुसाफिर

उत्तर- (स) भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?

यह प्रसिद्ध निबंध भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखा गया है, जिसमें उन्होंने देश की प्रगति और अन्य देशों के साथ होड़ का वर्णन किया है। वर्ष 1884 में बलिया के दादरी मेले में दिए गए उनके ऐतिहासिक भाषण पर आधारित है। इस निबंध में उन्होंने भारतीयों के आलस्य, आपसी फूट और विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता की आलोचना करते हुए देश के विकास के लिए आत्म-निर्भरता, शिक्षा, स्वदेशी और सामाजिक एकता का आह्वान किया है।

140. 'शिवशंभु के चिट्ठे' में किसको संबोधित किया गया है?

(अ) लॉर्ड डलहौजी (ब) लॉर्ड कर्जन
(स) महात्मा गांधी (द) बालगंगाधर तिलक

उत्तर- (ब) लॉर्ड कर्जन

'शिवशंभु के चिट्ठे' में लॉर्ड कर्जन को संबोधित किया गया है।

मुख्य बिंदु-

- **लेखकः**यह प्रसिद्ध निबंध संग्रह बाबू बालमुकुंद गुप्त द्वारा लिखा गया है।
- **विषयः** इसमें 'शिवशंभु' नामक एक काल्पनिक चरित्र के माध्यम से तत्कालीन ब्रिटिश वाइसराय लॉर्ड कर्जन की दमनकारी नीतियों और उनके शासन पर तीखा और व्यंग्यात्मक प्रहार किया गया है।
- **प्रमुख चिट्ठों के नाम -**
  1. बनाम लार्ड कर्जन
  2. श्रीमान् का स्वागत
  3. वायसराय का कर्तव्य
  4. पीछे मत फेंकिए
  5. आशा का अंत
  6. एक दुराशा
  7. विदाई संभाषण (सबसे प्रसिद्ध निबंध, जिसमें लॉर्ड कर्जन के जाने का वर्णन है)
  8. बंग विच्छेद (या अन्य संबंधित पत्र)

141. लेखक के अनुसार 'माटी की मूरतें' में क्या चीज है ?

(अ) जिंदगी (ब) मृत्यु
(स) गरीबी (द) घृणा

उत्तर- (अ) जिंदगी

लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी के अनुसार 'माटी की मूरतें' में जिंदगी है। लेखक ने इस रचना की भूमिका में स्पष्ट लिखा है कि इन कुरूप और बदशक्ल मूरतों में भले ही कोई बाहरी खूबसूरती या रंगीनी न हो, लेकिन इनमें जो एक चीज मौजूद है, वह है जिंदगी, क्योंकि ये मिट्टी की बनी हैं और मिट्टी पर ही टिकी हैं, जिससे ये जीवन के सबसे करीब और जिंदगी से सराबोर महसूस होती हैं।

'माटी की मूरतें' 1941 ई. से 1945 ई. के बीच में लिखें गए संस्मरणात्मक रेखाचित्रों का संग्रह है। इन सभी संस्मरणात्मक रेखाचित्रों को बेनीपुरी जी ने स्वयं 'शब्दचित्र' कहा है। मानव को अपनी मट्टी के प्रति जो आसक्ति रहती है उसका उत्कृष्ट और बेजोड़ नमूना 'माटी की मूरतें है। 'माटी की मूरतें में लिखित सभी रेखाचित्र बेनीपुरी जी ने हजारीबाग सेन्ट्रल जेल में रहते हुए लिखें है। इन रेखाचित्रों को बेनीपुरी जी ने अपने जीवन के उन चुनिंदा लोगों के विषय में लिखा है जो उनके अत्यंत प्रिय थे। हर व्यक्ति के विषय में बताते हुए वे अपने बचपन के दिन को याद करते हैं।

142. ''जब तक इंसान अँधेरी रात न देखे तब तक रोशनी की वक्त उसे कैसे मालूम हो।'' उपर्युक्त अंश किस रचना से लिया गया है?

(अ) प्रेमचंद्र घर में (ब) आवारा मसीहा
(स) क्या भूलूँ क्या याद करूँ (द) माटी की मूरतें

उत्तर- (अ) प्रेमचंद घर में

यह अंश शिवरानी देवी द्वारा लिखित उनकी पुस्तक प्रेमचंद घर में से लिया गया है।

पुस्तक का परिचय एवं उद्देश्य-

- यह पुस्तक प्रेमचंद के साहित्यिक व्यक्तित्व के बजाय उनके निजी जीवन, स्वभाव, संघर्षों और घरेलू रूप को सामने लाती है।
- शिवरानी देवी ने इसमें प्रेमचंद के बचपन से लेकर अंतिम दिनों तक के लगभग 88 संस्मरणों और घटनाओं को साझा किया है।

143. 'आपहुदरी' किसकी आत्मकथा है?

(अ) मन्नू भण्डारी (ब) रमणिका गुप्ता
(स) शिवरानी देवी (द) शिवानी

उत्तर- (ब) रमणिका गुप्ता

मुख्य बिंदु-

- 'आपहुदरी' (एक जिद्दी लड़की की आत्मकथा) प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता, कवयित्री और राजनीतिज्ञ रमणिका गुप्ता की आत्मकथा का दूसरा भाग है, जो वर्ष 2015 में प्रकाशित हुआ था।
- 'आपहुदरी' एक पंजाबी शब्द है जिसका अर्थ होता है-''अपनी शर्तों पर जीने वाली स्त्री''।
- इनकी आत्मकथा का पहला भाग 'हादसे' (2005) नाम से प्रकाशित हुआ था।
- **अन्य विकल्पों की प्रमुख आत्मकथाएँ- मन्नू भण्डारीः** 'एक कहानी यह भी'। **शिवरानी देवीः** 'प्रेमचंद घर में' (यह जीवनी विधा के अंतर्गत आती है)

144. 'भोलाराम का जीव' में पेंशन के लिए रिश्वत के तौर पर बड़े अफसर ने क्या रख लिया था?

(अ) रुपये (ब) गदा
(स) वीणा (द) बाँसुरी

उत्तर- (स) वीणा

'भोलाराम का जीव' कहानी में पेंशन के लिए रिश्वत के तौर पर बड़े अफसर ने वीणा रख लिया था। कहानी में जब नारद जी भोलाराम की पेंशन की दरख्वास्त के सिलसिले में बड़े साहब से मिलते हैं, तो साहब उन्हें बताते हैं कि रिश्वत (या ''वेट'') दिए बिना काम नहीं होता। वह नारद जी के हाथ में वीणा देखकर उसे अपनी बेटी के संगीत सीखने के लिए रिश्वत के तौर पर माँग लेते हैं, और नारद जी को अपनी वीणा वहाँ देनी पड़ती है।

- हरिशंकर परसाई द्वारा रचित व्यंग्य रचना 'भोलाराम का जीव' का मुख्य उद्देश्य समाज और प्रशासनिक व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर करना है। इस कहानी के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैंः
- **सरकारी तंत्र में भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी पर प्रहार-** लेखक ने यह दर्शाया है कि किस प्रकार सरकारी कार्यालयों में बिना घूस (वजन) के कोई काम नहीं होता।
- **लालफीताशाही और प्रशासनिक लापरवाही-** पेंशन जैसी प्राथमिक आवश्यकता के लिए एक सेवानिवृत्त कर्मचारी को किस तरह सालों-साल दफ्तरों के चक्कर काटने पड़ते हैं, इसे प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

145. 'जामुन का पेड़' किसकी रचना है?

(अ) हरिशंकर परसाई
(ब) कृष्ण चन्दर
(स) विष्णु प्रभाकर
(द) प्रतापनारायण मिश्र

उत्तर- (ब) कृष्ण चन्दर

जामुन का पेड़' प्रसिद्ध कहानीकार कृष्ण चन्दर की रचना है। यह एक बहुत लोकप्रिय व्यंग्य विधा की कहानी है, जिसमें सरकारी तंत्र और उसकी नौकरशाही की लालफीताशाही पर तीखा कटाक्ष किया गया है।

146. ''किसी भी शासन के दो प्रमुख अंग होते हैं- सुरक्षा और विधि व्यवस्था। यदि कायस्थों ने हिन्दू शासन की विधि व्यवस्था संभाली होगी- सुरक्षा व्यवस्था क्षत्रिय संभालते होंगे-तो उन्होंने मुस्लिम शासन में भी यह कार्य किया होगा।'' यह किस पुस्तक का अंश है?

(अ) आवारा मसीहा (ब) संस्कृति के चार अध्याय
(स) क्या भूलूँ क्या याद करूँ (द) एक कहानी यह भी

उत्तर- (ब) संस्कृति के चार अध्याय

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की प्रसिद्ध पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' (1956) में कुल 4 अध्याय (खंड) और 39 प्रकरण हैं। यह पुस्तक भारत के सांस्कृतिक इतिहास और यहाँ हुई चार प्रमुख क्रांतियों पर आधारित है। इन चारों अध्यायों और उनके अंतर्गत आने वाले प्रकरणों का विवरण इस प्रकार है:

- **प्रथम अध्याय:** भारतीय जनता की रचना और हिंदू-संस्कृति का आविर्भाव
- **द्वितीय अध्याय:** प्राचीन हिंदुत्व से बौद्ध विद्रोह
- **तृतीय अध्याय:** हिंदू संस्कृति और इस्लाम का मेल
- **चतुर्थ अध्याय:** भारतीय संस्कृति और यूरोप

147. 'मेरी तिब्बत यात्रा' में प्रथम खण्ड कौनसा है?

(अ) ल्हासा से उत्तर की ओर (ब) स-क्य की ओर
(स) नेपाल की ओर (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर- (अ) ल्हासा से उत्तर की ओर

राहुल सांकृत्यायन द्वारा रचित प्रसिद्ध यात्रा-वृत्तांत 'ल्हासा की ओर' में लेखक ने सन 1929-30 में नेपाल से तिब्बत जाने वाले मुख्य व्यापारिक और सैनिक रास्ते से अपनी यात्रा का वर्णन किया है। इस यात्रा में उन्होंने तिब्बती समाज, संस्कृति और ऊँचे पर्वतीय दर्रों की कठिन परिस्थितियों को साझा किया है।

यात्रा का स्वरूप एवं वेशभूषा-

- **भिखमंगे का वेश-** उस समय भारतीयों को तिब्बत जाने की अनुमति नहीं थी, इसलिए लेखक को अपनी जान और यात्रा की सुरक्षा के लिए एक भिखमंगे (या बौद्ध साधु) का वेश धारण करना पड़ा।
- **साथी सुमति-** इस यात्रा में उनके साथ एक तिब्बती मित्र 'सुमति' (लोहेंत छर्बा) थे, जो बौद्ध धर्म में आस्था रखते थे और पूरे क्षेत्र में उनकी बड़ी जान-पहचान व सम्मान था।

148. 'संस्कृति के चार अध्याय' के लेखक कौन हैं?

(अ) रामधारी सिंह 'दिनकर' (ब) मैथिलीशरण गुप्त
(स) जयशंकर प्रसाद (द) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

उत्तर- (अ) रामधारी सिंह 'दिनकर'

'संस्कृति के चार अध्याय' प्रसिद्ध साहित्यकार राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गद्य रचना है। इस पुस्तक के लिए उन्हें वर्ष 1959 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

149. जीवनी लेखन में किन घटनाओं का चयन किया जाता है?

(अ) जिनमें संवेदना की गहराई हो
(ब) अनुभवों का श्रृंखलाबद्ध कलात्मक चयन हो
(स) भावों को आलोड़ित करने की शक्ति हो
(द) उपर्युक्त सभी

उत्तर- (द) उपर्युक्त सभी

जीवनी लेखन में किसी व्यक्ति के जीवन की ऐसी घटनाओं का चयन किया जाता है जो प्रभावशाली हों। इसके लिए नीचे दी गई सभी विशेषताएँ आवश्यक हैं:

(अ) जिनमें संवेदना की गहराई हो: घटनाएँ पाठक के दिल को छूने वाली और संवेदनशील होनी चाहिए।

(ब) अनुभवों का श्रृंखलाबद्ध कलात्मक चयन हो: जीवन के अनुभव एक क्रम (तार्किक सिलसिले) में और सुंदर ढंग से लिखे होने चाहिए।

(स) भावों को आलोड़ित करने की शक्ति हो: घटनाएँ ऐसी हों जो पाठक की भावनाओं को जगा सकें या उन्हें प्रभावित कर सकें।

150. 'मुर्दहिया' किसकी आत्मकथा है?

(अ) रमणिका गुप्ता (ब) तुलसीराम
(स) मुक्तिबोध (द) ओमप्रकाश

उत्तर- (ब) तुलसीराम

'मुर्दहिया' तुलसीराम की आत्मकथा है। यह आत्मकथा उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के एक दलित परिवार में जन्मे डॉ. तुलसीराम के संघर्षों और उनके जीवन के अनुभवों को दर्शाती है।

मुर्दहिया दलित साहित्यकार डॉ. तुलसीराम की आत्मकथा है, जिसके माध्यम से लेखक ने कई वर्षों से दलित आत्मकथाओं में साहित्य जगत के बंधे-बंधाये मानदण्डों को तोड़कर अपने जीवन से जुड़े उस सच्चे और कड़ुवे यथार्थ को सबके सामने उजागर करने का प्रयास किया है, जिसे उन्होंने स्वयं झेला।

❑❑❑

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित

म.प्र.राज्य पात्रता परीक्षा-2024

शिक्षण एवं शोध अभिवृति (प्रथम प्रश्नपत्र)

1. **जब हम विशिष्ट उद्देश्यों को व्यावहारिक दृष्टि से लिखते हैं तो उन्हें क्या कहा जाता है ?**
(अ) निर्देशात्मक उद्देश्य (ब) व्यावहारिक उद्देश्य
(स) शैक्षिक उद्देश्य (द) सामान्य उद्देश्य
When we write specific objectives in terms of behavioural terms they are known as:
(A) Instructional Objectives (B) Behavioural Objectives
(C) Educational Objectives (D) General Objectives

उत्तर- (अ) निर्देशात्मक उद्देश्य
जब शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों को इस रूप में लिखा जाता है कि विद्यार्थी क्या सीखेंगे और सीखने के बाद क्या कर सकेंगे, तो उन्हें निर्देशात्मक उद्देश्य (Instructional Objectives) कहा जाता है।

2. **यह कथन किसने दिया कि 'शिक्षण सुदृढ़ीकरण की आकस्मिकताओं की व्यवस्था है?'**
(अ) स्किनर (ब) रियान्स
(स) गेज (द) क्लार्क
Who gave this statement, "Teaching is the arrangement of contingencies of reinforcement."?
(A) Skinner (B) Ryans
(C) Gaze. (D) Clarke

उत्तर-(अ) स्किनर
बी. एफ. स्किनर ने क्रियाप्रसूत अनुबंधन (Operant Conditioning) और पुनर्बलन पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार, पुनर्बलन सीखने और व्यवहार को मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. **विकास तकनीक के रचनात्मक पहलू में निम्नलिखित में से कौनसा शामिल है ?**
(अ) स्मरण और पहचान (ब) धारणा
(स) प्राप्त करना (द) उत्तेजना
Conative aspect of evaluation technique includes which of the following?
(A) Recall and Recognition (B) Perception
(C) Receiving (D) Stimulation

उत्तर-(ब) धारणा
धारणा (Perception) में व्यक्ति वस्तुओं, घटनाओं और अनुभवों को समझता तथा उनका अर्थ ग्रहण करता है। हालाँकि, प्रश्न में 'विकास तकनीक' का संदर्भ स्पष्ट नहीं है, इसलिए मूल स्रोत के अनुसार उत्तर की पुष्टि करना उचित होगा।

4. **शिक्षण के चिंतनशील अभ्यास चक्र के लिए कौनसा विकल्प सही नहीं है ?**
(अ) उपदेश देना (ब) योजना बनाना
(स) लेन-देन करना (द) आकलन करना
Which one of the options is not correct for reflective practice cycle of teaching?
(A) Mentoring (B) Planning
(C) Transacting (D) Assessing

उत्तर-(अ) उपदेश देना
चिंतनशील शिक्षण में शिक्षक योजना बनाता है, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया संचालित करता है और उसके परिणामों का आकलन करके सुधार करता है। केवल उपदेश देना इस चक्र का उपयुक्त चरण नहीं है।

5. **निम्नलिखित में से कौनसा विकल्प बुलेटिन बोर्ड में शामिल नहीं है ?**
(अ) बुक-जैकेट (ब) ब्रोशर
(स) तस्वीरें (द) शिक्षक
Which of the following options is not included in Bulletin Boards?
(A) Book-Jackets (B) Brochure
(C) Photographs (D) Teacher

उत्तर-(द) शिक्षक
बुलेटिन बोर्ड पर तस्वीरें, बुक-जैकेट, ब्रोशर, सूचनाएँ और शैक्षिक सामग्री प्रदर्शित की जा सकती हैं। शिक्षक बुलेटिन बोर्ड पर प्रदर्शित सामग्री नहीं है।

6. **प्रारम्भिक सर्वेक्षण को अक्सर क्या कहा जाता है?**
(अ) मुख्य सर्वेक्षण (ब) पायलट सर्वेक्षण
(स) द्वितीयक सर्वेक्षण (द) अन्वेषणात्मक सर्वेक्षण
What is a primary survey often called?
(A) Main Survey (B) Pilot Survey
(C) Secondary Survey (D) Exploratory Survey

उत्तर-(ब) पायलट सर्वेक्षण
मुख्य सर्वेक्षण से पहले प्रश्नावली, प्रक्रिया और नमूने की जाँच करने के लिए छोटा प्रारम्भिक सर्वेक्षण किया जाता है। इसे पायलट सर्वेक्षण (Pilot Survey) कहते हैं।

7. **प्रायोगिक अनुसंधान में 'नियंत्रण' शब्द किसका उल्लेख करता है ?**
(अ) प्रयोगात्मक स्थितियों को बढ़ाना
(ब) प्रयोगात्मक स्थितियों को रोकना
(स) प्रयोगात्मक स्थितियों की अनदेखी करना
(द) प्रयोगात्मक स्थितियों को अधिकतम करना
In experimental research, what does the term 'control' refer to ?
(A) Enhancing experimental conditions
(B) Restraining experimental conditions
(C) Ignoring experimental conditions
(D) Maximizing conditions experimental

उत्तर-(ब) प्रयोगात्मक स्थितियों को रोकना

प्रयोगों के दौरान, नियंत्रण (Control) का मतलब बाहरी या अवांछित चर (extraneous variables) और वातावरण को स्थिर या सीमित रखना होता है। ऐसा करने से शोधकर्ता यह सुनिश्चित कर पाते हैं कि जो भी परिणाम (Dependent Variable) मिल रहा है, वह मुख्य रूप से स्वतंत्र चर (Independent Variable) के प्रभाव के कारण ही है, किसी अन्य बाहरी कारक के कारण नहीं।

8. **कम्प्यूटर समंक विश्लेषण में कौशल विकसित करते समय शोधकर्ताओं को पहला कदम क्या पता होना चाहिए ?**

(अ) कम्प्यूटर में समंक संग्रहीत करना

(ब) कम्प्यूटर प्रोग्राम का निष्पादन

(स) समंक संगठन और कोडिंग

(द) उपयुक्त सॉफ्टवेयर पैकेज का चयन

What is the first step researchers must be aware of when developing skills in computer data analysis?

(A) Storing the data in the computer

(B) Execution of the computer program

(C) Data organisation and coding

(D) Selection of appropriate software package

उत्तर-(स) समंक संगठन और कोडिंग

कंप्यूटर डेटा विश्लेषण में कौशल विकसित करते समय, प्रक्रिया आमतौर पर निम्नलिखित चरणों में होती है:

1. **आंकड़ों का संगठन और कोडिंग (पहला चरण):** सबसे पहले कच्चे आंकड़ों (Raw data) को साफ, व्यवस्थित और कोडित (अंकों या प्रतीकों में परिवर्तित) किया जाता है ताकि कंप्यूटर उसे समझ और प्रोसेस कर सके।
2. **कंप्यूटर में डेटा स्टोर करना:** जब डेटा व्यवस्थित और कोडित हो जाता है, तब उसे कंप्यूटर (जैसे Excel, SPSS आदि) में दर्ज किया जाता है।
3. **उपयुक्त सॉफ्टवेयर पैकेज का चयन:** डेटा की प्रकृति और विश्लेषण के आधार पर सही सॉफ्टवेयर (जैसे SPSS, R, Python आदि) चुना जाता है।
4. **कंप्यूटर प्रोग्राम का निष्पादन :** अंत में, विश्लेषण और परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रोग्राम या कमांड्स चलाए जाते हैं।

9. **एक व्यापक शोध रिपोर्ट लेआउट के तीन मुख्य घटक क्या हैं ?**

(अ) परिचय, विधियाँ, परिणाम

(ब) सार, साहित्य समीक्षा, निष्कर्ष

(स) शीर्षक पृष्ठ, संदर्भ, परिशिष्ट

(द) प्रारंभिक पृष्ठ, मुख्य पाठ, अंतमामला

What are the three main components of a comprehensive research report layout ?

(A) Introduction, Methods, Results

(B) Abstract, Literature Review, Conclusion

(C) Title Page, References, Appendices

(D) Preliminary page, Main text, End matter

उत्तर-(द) प्रारंभिक पृष्ठ, मुख्य पाठ, अंतमामला

शोध रिपोर्ट के तीन प्रमुख भाग होते हैं:

1. **प्रारंभिक पृष्ठ (Preliminary Pages):** शीर्षक पृष्ठ, प्रमाण-पत्र, आभार आदि।
2. **मुख्य पाठ (Main Text):** परिचय, साहित्य समीक्षा, विधियाँ, परिणाम और निष्कर्ष।
3. **अंतिम सामग्री (End Matter)**: संदर्भ सूची, परिशिष्ट आदि।

10. **सही और गलत आचरण के सिद्धांत को क्या कहा जाता है ?**

(अ) नीतिशास्त्र (ब) नैतिकता

(स) मान (द) सिद्धांत

What is the theory of right and wrong conduct called?

(A) Ethics (B) Morals

(C) Values (D) Principles

उत्तर-(ब) नैतिकता

नैतिकता (Morality) सही और गलत आचरण से संबंधित मान्यताओं और नियमों को दर्शाती है। नीतिशास्त्र (Ethics) नैतिक सिद्धांतों का व्यवस्थित अध्ययन है।

निम्नलिखित पैराग्राफ को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा प्रश्न संख्या 11 से 15 के उत्तर दीजिए?

उन्नीसवीं सदी के मध्य में अपने जन्म के साथ ही महिला अधिकार आन्दोलनों ने अपनी जड़ें जमा लीं और दुनिया भर में फैल गये। कई देशों में महिलाओं ने मताधिकार, काम के अधिकार, अपनी क्षमता के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार, संपत्ति के स्वामित्व एवं उसके निपटान के अधिकार और वैवाहिक संबंधों में समानता के अधिकार के लिए संघर्ष किये। यह मुद्दा संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से वैश्विक सरकारों तक पहुँचा। संघ ने 1946 में महिलाओं की वैश्विक स्थिति के अध्ययन और इसमें सुधार के तरीकों परं सामाजिक एवं आर्थिक परिषद को सिफारिशें करने के लिए एक विशेष आयोग की स्थापना की। यूनेस्को भी महिलाओं को शैक्षिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में शामिल करके उनकी उन्नति में सहायता करता है। इसके अतिरिक्त कई महिला संगठन विभिन्न देशों में कार्यरत हैं जो राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के साथ हो रहे भेदभाव के शेष क्षेत्रों को खत्म करने के लिए सक्रिय हैं। अंतर्राष्ट्रीय नारीवादी संगठनों से जुड़कर वे दुनिया भर में जारी महिला कार्यक्रमों और उनकी उपलब्धियों के संपर्क में रहते हैं।

हालांकि, दुनिया की आधी आबादी अभी भी निरक्षर है और जो हासिल किया गया है और जिसे अभी हासिल करना है, उसके बीच बहुत असमानता है । एक तरफ महिला अधिकार कार्यकर्त्ता बुनियादी शिक्षा के लिए लड़ाई लड़ रही हैं, दूसरी तरफ वे उन आरंभिक सुरक्षात्मक कानूनों को हटाने के खिलाफ भी संघर्ष कर रही हैं, जिन्हें महिलाओं को कुछ निश्चित आजादी नहीं देने के कारण भेदभावपूर्ण माना जाता है, उदाहरण के लिए महिलाओं की इच्छा के अनुसार उन्हें रात में बाहर रहकर काम करने का अधिकार । फिर भी, इस तथ्य के बावजूद कि महिला आन्दोलन असमान रूप से आगे बढ़ा है और इसने अलग-अलग अनुपात में सफलता हासिल की है, कुल मिलाकर महिलाएँ अपने बाड़े से बाहर निकल रही हैं और स्वतंत्र तथा समान नागरिक के रूप में पुरुषों के संसार में अपने लिए जगह बना रही हैं।

Read the following carefully and answer the question no. 11 to 15 :

Since its birth in the middle of the 19th century, the women's rights movement has taken root and spread throughout the world. In many countries women have fought for the right to vote, the right to work, the right to be educated to the limit of their capacities, the right to own and dispose off property and for equal right within marriage. The cause has penetrated the world governments via the United Nations which in 1946 set up a spécial Commission to study the world wide status of women and make recommendations to the Social and Economic Council on ways of improving it. UNESCO too assists in the advancement of women by seeking to involve them in educational and cultural programmes. In addition, a multitude of women's organisations exist in individual countries to further, at national and international levels, the eradication of remaining areas of discrimination, through their affiliation with international feminist bodies they are in touch with women's activities and achievements in all parts of the world.

However, with half the world's population still illiterate, there is great disparity in what has been and is still to be achieved. At one end of the scale, women's rights workers are still pressing for elementary education; at the other for the removal of early protective legislation, which is now felt to be discriminatory because it denied women certain freedoms, for example, the right to do work at night if they so choose. Nevertheless, despite the fact that the women's movement has progressed unevenly and with varying success, women in general are emerging from chatteldom and are beginning to take their place beside men as free and equal citizens.

11. महिलाओं के प्रति हो रहे भेदभाव का एक प्रमुख कारण क्या है ?

(अ) बेरोजगारी (ब) निरक्षरता
(स) गरीबी (द) अंधविश्वास

What is one major reason for disparity against women?

(A) Unemployment (B) Illiteracy
(C) Poverty (D) Superstition

उत्तर-(ब) निरक्षरता

गद्यांश में बताया गया है कि दुनिया की आधी आबादी अभी भी निरक्षर है और महिलाओं को बुनियादी शिक्षा के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है।

12. नारीवादी आंदोलन बढ़े हैं:

(अ) सहजता से (ब) बहुत धीमी गति से
(स) असमान रूप से (द) संतोषजनक तरीके से

The women's movement has progressed:

(A) smoothly (B) at a very slow pace
(C) unevenly (D) satisfactorily

उत्तर-(स) असमान रूप से

गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि महिला आंदोलन असमान रूप से आगे बढ़े हैं और अलग-अलग अनुपात में सफलता मिली है।

13. महिला अधिकार कार्यकर्ता जोर दे रही हैं:

(अ) आरंभिक सुरक्षात्मक कानून हटाने पर
(ब) समान कार्य हेतु समान वेतन पर
(स) मताधिकार पर
(द) घूमने-फिरने की आजादी पर

Women's Rights Workers are pressing for:

(A) Removal for early protective legislation
(B) Equal pay for equal work
(C) Right to vote
(D) Freedom to move

उत्तर-(अ) आरंभिक सुरक्षात्मक कानून हटाने पर

गद्यांश के अनुसार, कुछ सुरक्षात्मक कानून महिलाओं की स्वतंत्रता सीमित करते हैं। इसलिए कार्यकर्ता ऐसे भेदभावपूर्ण कानूनों को हटाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

14. शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा महिलाओं की उन्नति में किसने सहायता की ?

(अ) संयुक्त राष्ट्र संघ (ब) विश्व व्यापार संगठन
(स) यूनेस्को (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Who helped in the advancement of women through educational and cultural programmes ?

(A) United Nations Organisation
(B) World Trade Organisation
(C) UNESCO (D) None of the above

उत्तर-(स) यूनेस्को

गद्यांश में स्पष्ट उल्लेख है कि यूनेस्को महिलाओं को शैक्षिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में शामिल करके उनकी उन्नति में सहायता करता है।

15. निम्नलिखित में से किस मुद्दे के लिए महिला कार्यकर्ताओं ने संघर्ष नहीं किया ?

(अ) वैवाहिक संबंधों में समानता (ब) मताधिकार
(स) बुनियादी शिक्षा (द) गरीबी से मुक्ति

Which of the following issues was not fought for by women activists ?

(A) Equal rights within marriage (B) Right to vote
(C) Elementary education (D) Freedom from poverty

उत्तर-(द) गरीबी से मुक्ति

गद्यांश में मताधिकार, बुनियादी शिक्षा और वैवाहिक संबंधों में समानता का उल्लेख है, लेकिन गरीबी से मुक्ति को महिला अधिकार आंदोलन के विशिष्ट मुद्दे के रूप में नहीं बताया गया है।

16. इनमें से कौनसा गैर-मौखिक संचार का प्रकार नहीं है ?

(अ) चेहरे का' भाव (ब) हावभाव और मुद्राएँ
(स) प्रतीकात्मक भाषा (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Which is not a type of non-verbal communication ?

(A) Facial expression (B)Gestures and Postures
(C) Symbolic language (D) None of the above

उत्तर-(स) प्रतीकात्मक भाषा

चेहरे के भाव, हावभाव और शारीरिक मुद्राएँ गैर-मौखिक संचार के प्रमुख प्रकार हैं। प्रतीकात्मक भाषा को सामान्यतः भाषा-आधारित संचार माना जा सकता है, हालाँकि संकेतों और प्रतीकों से भी गैर-मौखिक संचार संभव है।

17. संचार की प्रक्रिया एक गतिशील, लेन-देन संबंधी (दोतरफा) प्रक्रिया है जिसे छह चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

(i) प्रेषक के पास एक विचार होता है

(ii) प्राप्तकर्ता को संदेश मिलता है (iii) प्रेषक संदेश प्रेषित करता है
(iv) प्राप्तकर्ता डिकोडिंग (v) प्रेषक इनकोडिंग
(vi) प्राप्तकर्ता (रिसीवर) फीडबैक (प्रतिपुष्टि) भेजता है

The process of communication is a dynamic, transactional (two-way) process that can be broken into six phases:
(i) Sender has an idea
(ii) Receiver gets the message
(iii) Sender transmits the message
(iv) Receiver decoding
(v) Sender encoding
(vi) Receiver sends feedback

इनकी सही क्रम में व्यवस्था होगी:
Arrangement in correct order will be:
(अ) (ii), (i), (iii), (v), (vi), (iv)
(ब) (i), (v), (iii), (ii), (iv), (vi)
(स) (i), (iii), (ii), (v), (iv), (vi)
(द) (v), (i), (ii), (iv), (iii), (vi)

उत्तर-(ब) (i), (v), (iii), (ii), (iv), (vi)।
सही क्रम-
1. प्रेषक के पास विचार होता है।
2. प्रेषक संदेश की इनकोडिंग करता है।
3. प्रेषक संदेश प्रेषित करता है।
4. प्राप्तकर्ता को संदेश मिलता है।
5. प्राप्तकर्ता संदेश की डिकोडिंग करता है।
6. प्राप्तकर्ता प्रतिपुष्टि (Feedback) भेजता है।

18. व्यावसायिक सेटिंग (परिस्थिति) में निम्नलिखित में से किस संचार बाधा के गलतफहमी पैदा करने की सबसे अधिक संभावना है ?
(अ) सांस्कृतिक अन्तर (ब) शारीरिक बाधाएँ
(स) तकनीकी भाषा (द) स्तर (स्टेटस) का अन्तर

In professional setting, which of the following communication barriers is most likely to cause misunderstanding ?
(A) Cultural differences (B) Physical barriers
(C) Technical language (D) Status differences

उत्तर-(अ) सांस्कृतिक अंतर
अलग-अलग संस्कृतियों में शब्दों, संकेतों, व्यवहार और शिष्टाचार के अर्थ भिन्न हो सकते हैं। इससे गलतफहमी उत्पन्न हो सकती है। हालाँकि, वास्तविक परिस्थिति में तकनीकी भाषा या पद-स्तर का अंतर भी बाधा बन सकता है।

19. आप एक डायरी या जर्नल रखते हैं जहाँ आप दिनभर में हुई हर चीज का हिसाब रखते हैं। यह एक उदाहरण है :
(अ) पारस्परिक संचार का (ब) अंतर्वैयक्तिक संचार का
(स) जन संचार का (द) गैर-मौखिक संचार का

You keep a Diary or Journal where you keep track of everything that has happened throughout the day. This is an example of:
(A) Interpersonal Communication
(B) Intrapersonal Communication
(C) Mass Communication
(D) Non-verbal Communication

उत्तर-(ब) अंतर्वैयक्तिक संचार
अंतर्वैयक्तिक संचार (Intrapersonal Communication) स्वयं से संवाद करने की प्रक्रिया है। डायरी लिखकर व्यक्ति अपने विचारों, अनुभवों और भावनाओं पर चिंतन करता है।

20. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा किसी तकनीक के माध्यम से संदेश प्रेषित किया जाता है, उसे कहा जाता है :
(अ) मध्यस्थ संचार (ब) सार्वजनिक संचार
(स) पारस्परिक संचार (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

The process by which a message is transmitted through some technology is termed as:
(A) Mediating communication
(B) Public communication
(C) Interpersonal communication
(D) None of the above

उत्तर-(अ) मध्यस्थ संचार
जब संदेश फोन, ईमेल, रेडियो या किसी अन्य तकनीकी माध्यम से भेजा जाता है, तो उसे मध्यस्थ संचार (Mediated Communication) कहा जाता है।

21. एक पुस्तक का विक्रय मूल्य 500 रु. है। यदि दुकानदार इस पर 25% लाभ कमाता है तो पुस्तक का क्रय मूल्य क्या है ?
(अ) 250 रुपये (ब) 300 रुपये
(स) 350 रुपये (द) 400 रुपये

Selling price of a book is Rs. 500. If the profit made by the shopkeeper is 25%, then what is the cost price of the book ?
(A) Rs. 250 (B) Rs. 300
(C) Rs. 350 (D) Rs. 400

उत्तर-(द) रु. 400
दिया गया है- विक्रय मूल्य (SP) = रु. 500, लाभ = 25%
सूत्र- $CP = \frac{SP \times 100}{100 + \text{लाभ प्रतिशत}} = \frac{500 \times 100}{125} = \frac{50000}{125} = 400$

22. एक विद्यार्थी अपने गाँव से 4 किलोमीटर/घण्टे की गति से अपने स्कूल जाता है तथा 6 किलोमीटर/घण्टे की गति से वापस आता है। यदि पूरी यात्रा में 4 घण्टे और 10 मिनट का समय लगता हैं तो उसके गाँव से स्कूल की दूरी कितनी है ?
(अ) 10 किमी. (ब) 20. किमी.
(स) 25 किमी. (द) 30 किमी.

A student travels from his village to the school with a speed of 4 kilometre/hour and returned with the speed of 6 kilometre/hour. If the whole journey takés 4 hours and 10 minutes time, then what is the distance of school from his village?.
(A) 10 km (B) 20 km
(C) 25 km (D) 30 km

उत्तर-(अ) 10 किमी.
दिया गया है- जाने की गति = 4 किमी/घंटा
लौटने की गति = 6 किमी/घंटा
कुल समय = 4 घंटे 10 मिनट = $\frac{25}{6}$ घंटे

मान कि एक तरफ की दूरी x किमी. है।

$$\Rightarrow \quad \frac{x}{4}+\frac{x}{6}=\frac{25}{6}$$

$$\Rightarrow \quad \frac{3x+2x}{12}=\frac{25}{6}$$

$$\Rightarrow \quad 5x=50$$

$$\Rightarrow \quad x=\frac{50}{5}$$

$$\Rightarrow \quad x=10 \text{ किमी.}$$

23. निम्नलिखित वर्णमाला श्रेणी में प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के स्थान पर क्या आएगा ?
What will come in place of question mark (?) in the following alphabet series?
A, F, C, H, E, J, ?

(अ) F (ब) G
(स) K (द) L

उत्तर-(ब) G

श्रेणी: A, F, C, H, E, J, ?
दो अलग-अलग श्रेणियाँ बनाइए-
- **पहला, तीसरा, पाँचवाँ, सातवाँ अक्षर:** A, C, E, G (हर बार +2)
- **दूसरा, चौथा, छठा अक्षर:** F, H, J (हर बार +2)

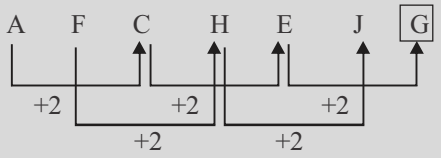

इसलिए अगला अक्षर G होगा।

24. संख्याओं की निम्नलिखित श्रेणी में प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के स्थान पर कौनसी संख्या आएगी ?
Which number will come in place of question mark (?) in the following number series?
11, 24, 75, 304, ?

(अ) 1525 (ब) 1640
(स) 1750 (द) 1800

उत्तर-(अ) 1525

दिया है- श्रेणी : 11, 24, 75, 304, ?

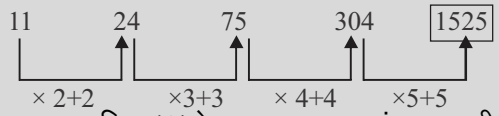

प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के स्थान पर 1525 संख्या आएगी।

25. यदि एक विशेष कूट भाषा में 'PRAGYESH' को 'ARPGYHSE' लिखा जाता है तो उसी भाषा में 'DHARMESH' को किस प्रकार लिखा जाएगा ?
In a certain code language "PRAGYESH" is written as "ARPGYHSE". Then how will "DHARMESH" be written in that language ?

(अ) AHDMRHSE (ब) AHDRMHSE
(स) AHDRMSHE (द) HSEMRAHD

उत्तर-(ब) AHDRMHSE

जिस प्रकार,

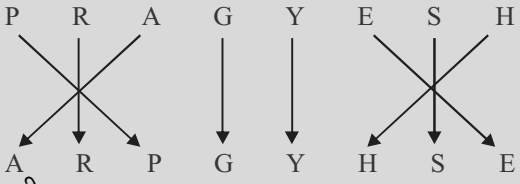

उसी प्रकार,

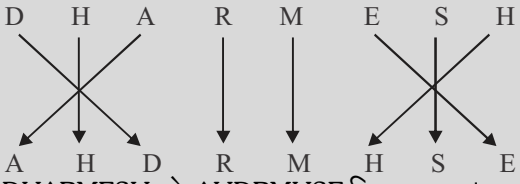

DHARMESH को AHDRMHSE लिखा जाएगा।

26. सभी यूनानी मनुष्य हैं। सभी एथेन्सवासी यूनानी हैं।
∴ सभी एथेन्सवासी मनुष्य हैं।
उपर्युक्त न्यायवाक्य की आकृति क्या है ?

(अ) प्रथम आकृति (ब) द्वितीय आकृति
(स) तृतीय आकृति (द) चतुर्थ आकृति

All Greeks are men.
All Athenians are Greeks.
∴ All Athenians are men.
What is the figure of the above. syllogism?

(A) First Figure (B) Second Figure
(C) Third Figure (D) Fourth Figure

उत्तर-(अ) प्रथम आकृति

प्रश्नानुसार,

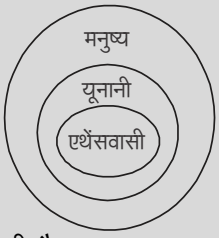

यहाँ **मध्य पद** यूनानी है। **प्रथम आधार-वाक्य** में मध्य पद **विषय** है और **दूसरे आधार-वाक्य** में मध्य पद **विधेय** है।
इसलिए यह **प्रथम आकृति (First Figure)** का न्यायवाक्य है।

27. निम्नलिखित वेन आरेख पर विचार कीजिए:
Consider the following Venn Diagram:

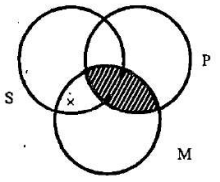

उपर्युक्त रेखाचित्र प्रतिनिधित्व करता है :
The above diagram represents:

(अ) AII-4 (ब) OIE-1
(स) EIO-4 (द) IIA-2

उत्तर-(स) EIO-4

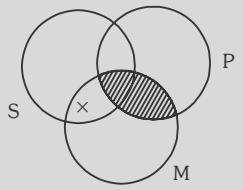

E : P, M का छायांकित भाग **''कोई P, M नहीं है।''** को दिर्शाता है।
I : S और M में मौजूद × **''कुछ M, S है।''** को निरूपित करता है।
O : इससे निष्कर्ष **'' कुछ S, P नहीं है।''** निकलता है।)

28. परम्परागत विरोध वर्ग के अनुसार निम्नलिखित में से कौनसा अनुविपरीत सम्बन्ध का उदाहरण है ?

(अ) A और E के बीच (ब) I और O के बीच
(स) E और O के बीच (द) A और I के बीच

Which one of the following is an example of sub-contraries according to the traditional square of opposition ?

(A) A and E (B) I and O.
(C) E and O (D) A and I

उत्तर- (ब) I और O के बीच

परंपरागत विरोध वर्ग में संबंध इस प्रकार हैं:

- A और E – विपरीत (Contrary)
- I और O – अनुविपरीत (Subcontrary)
- A और O – व्याघाती (Contradictory)
- E और I – व्याघाती (Contradictory)
- A और I – अधीनता (Subalternation)
- E और O – अधीनता (Subalternation)

इसलिए दिए गए विकल्पों में (ब) I और O के बीच अनुविपरीत संबंध का सही उदाहरण है।

29. बौद्ध दर्शन के अनुसार 'सामान्य लक्षण' का ज्ञान होता है :

(अ) प्रत्यक्ष द्वारा
(ब) अनुमान द्वारा
(स) शब्द द्वारा
(द) प्रत्यक्ष और अनुमान दोनों के द्वारा

According to the Buddhists, Sāmānykaksana' is known by:

(A) Perception
(B) Inference
(C) Śabda
(D) Both perception and inference

उत्तर-(ब) अनुमान द्वारा

बौद्ध दर्शन में दो प्रमुख प्रमाण स्वीकार किए जाते हैं–प्रत्यक्ष और अनुमान। प्रत्यक्ष से विशेष वस्तु का ज्ञान होता है, जबकि सामान्य लक्षण (सामान्यीकृत या वैचारिक ज्ञान) का ज्ञान अनुमान से संबंधित माना जाता है।

30. निम्नलिखित में से कौनसा प्रमाण प्रभाकर मीमांसा को स्वीकार नहीं है ?

(अ) शब्द प्रमाण (ब) अर्थापत्ति प्रमाण
(स) अनुपलब्धि प्रमाण (द) उपमान प्रमाण

Which of the following valid means of knowledge (Pramājna) is not admitted by the Prabhakar school of Mīmāmsā ?

(A) Śabda Pramāna (B) Arthapatti Pramāna
(C) Anupalabdhi Pramāna (D) Upamâna Pramāna

उत्तर-(स) अनुपलब्धि प्रमाण

प्रभाकर मीमांसा पाँच प्रमाण स्वीकार करती है–प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द और अर्थापत्ति। अनुपलब्धि को स्वतंत्र प्रमाण नहीं मानती।

31. पायलट सर्वेक्षण क्या है ?

(अ) सर्वेक्षण जो विमान चालक द्वारा किया जाता है
(ब) प्रश्नवली में सुधार करने के लिये किया गया परीक्षण सर्वेक्षण
(स) जनसंख्या को लेकर किया गया सर्वेक्षण
(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

What is Pilot Survey?

(A) A survey conducted aerially with the help of Pilot
(B) A survey to test questions with a small group of respondents to refine the questions
(C) A survey conducted with all the population
(D) None of the above

उत्तर-(ब) प्रश्नावली में सुधार करने के लिए किया गया परीक्षण सर्वेक्षण।

मुख्य सर्वेक्षण से पहले छोटे स्तर पर सर्वेक्षण करके प्रश्नों की स्पष्टता, उपयुक्तता और प्रक्रिया की जाँच की जाती है। इसे पायलट सर्वेक्षण कहते हैं। और जाँच के अनुसार प्रश्नों में आवश्यक सुधार किया जाता है।

32. अनुसंधान का पहला चरण है:

(अ) समंक संग्रहण (ब) समंक विश्लेषण
(स) समस्या की पहचान करना (द) पायलट सर्वेक्षण

The first step of research is:

(A) Data Collection (B) Data Analysis
(C) Identifying a problem (D) Pilot Survey

उत्तर-(स) समस्या की पहचान करना।

अनुसंधान की शुरुआत समस्या की पहचान और उसके स्पष्ट निर्धारण से होती है। इसके बाद शोध-योजना, समंक संग्रहण और विश्लेषण किया जाता है।

33. शोध कार्य का खाका कहा जाता है :

(अ) शोध डिजाइन (ब) समस्या का विधान
(स) साहित्यिक निरीक्षण (द) समंक संग्रहण

A Blueprint of research work is called:

(A) Research design
(B) Statement of the problem
(C) Literature Survey
(D) Data Collection

उत्तर-(अ) शोध डिजाइन।

शोध डिजाइन (Research Design) अनुसंधान की रूपरेखा है। इसमें बताया जाता है कि शोध कैसे किया जाएगा, समंक कैसे जुटाए जाएँगे और उनका विश्लेषण कैसे होगा।

34. **दूसरों द्वारा एकत्रित और संकलित किए गए समंक के स्रोत कहलाते हैं**
(अ) प्राथमिक समंव (ब) द्वितीयक समंक
(स) प्राथमिक एवं द्वितीयक समंक (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं
Sources of data collected and compiled by others is called:
(A) Primary data
(B) Secondary data
(C) Primary data and Secondary data
(D) None of the above

उत्तर-(ब) द्वितीयक समंक।
जो आँकड़े किसी अन्य व्यक्ति या संस्था द्वारा पहले से एकत्र किए गए हों और शोधकर्ता उनका उपयोग करे, वे द्वितीयक समंक (Secondary Data) कहलाते हैं। **उदाहरण-**जनगणना रिपोर्ट, सरकारी रिपोर्ट, प्रकाशित शोध-पत्र और पुस्तकें।

35. **निम्न रेखा-ग्राफ में 2020 से 2024 तक के विद्यार्थियों के नामांकन के आँकड़े दिखाए गए हैं। गणना कीजिए कि 2025 में कितने और विद्यार्थियों का नामांकन सुनिश्चित किया जाए कि छः (6) वर्षों का औसत नामांकन 640 विद्यार्थी हो जाए :**
In the following line graph, data of students' enrollment from 2020 to 2024 is depicted. Calculate, how much minimum number of students has to be enrolled during 2025 so that average number of students enrolled in 6 years will be 640 students:

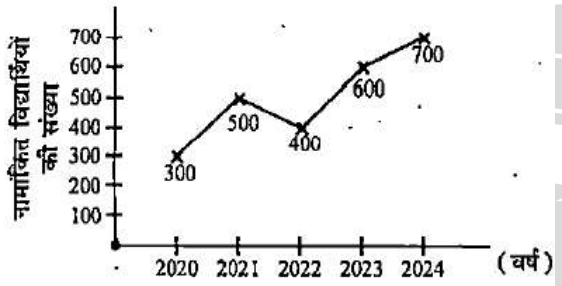

(अ) 1340 (ब) 1540
(स) 1740 (द) 1170

उत्तर-(अ) 1340
दिया है - 6 वर्षों (2020 से 2026) में नामांकित छात्रों का औसत 640 है।
6 छात्रों के लिए छात्रों की कुल आवश्यक संख्या= $6 \times 640 = 3840$
दिए गए 5 वर्षों (2020 से 2025) के छात्रों को योग = 300 (2020 में) + 500 (2021 में) + 400 (2022 में) + 500 (2023 में) + 700 (2024 में) = 2500
वर्ष 2025 में आवश्यक छात्रों की संख्या-
वर्ष 2025 के छात्र = 6 वर्षों का कुल योग – 5 वर्षों का कुल योग
वर्ष 2025 के छात्र = 3840 – 2500 = 1340

36. **निम्नलिखित में कौनसा तारों वाला ट्रांसमिशन मीडिया तेज कार्य करता है ?**
(अ) ट्विस्टेड पेयर (ब) कोएक्सियल
(स) फाइबर ऑप्टिक्स (द) सेल्यूलर टेलीफोन
Which of the following wired transmission media is the fastest ?
(A) Twisted Pair (B) Coaxial
(C) Fiber Optics (D) Cellular Telephone

उत्तर-(स) फाइबर ऑप्टिक्स
फाइबर ऑप्टिक केबल में डेटा प्रकाश संकेतों के माध्यम से भेजा जाता है। इसकी डेटा ट्रांसमिशन गति और बैंडविड्थ सामान्यतः ट्विस्टेड पेयर तथा कोएक्सियल केबल से अधिक होती है। इसका उपयोग हाई-स्पीड इंटरनेट, दूरसंचार और लंबी दूरी तक डेटा भेजने में किया जाता है। सेल्यूलर टेलीफोन वायरलेस माध्यम है, इसलिए यह तारयुक्त ट्रांसमिशन मीडिया की श्रेणी में नहीं आता।

37. **ई-रकम (e-Rakam) पोर्टल किसके कल्याण से सम्बन्धित है ?**
(अ) माइनिंग इंडस्ट्री (ब) किसान
(स) छात्र (द) ई-बिजनेस इंडस्ट्री
***e*-Rakam Portal is related to the welfare of:**
(A) Mining Industry (B) Farmers
(C) Students. (D) *e*-Business Industry

उत्तर-(ब) किसान
e-Rakam पोर्टल किसानों को कृषि उपज की ऑनलाइन बिक्री के लिए बाजार से जोड़ने में सहायता करता है। इसका उद्देश्य कृषि उत्पादों की बिक्री प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और सुविधाजनक बनाना है। इसके माध्यम से किसान अपनी उपज के लिए खरीदारों तक पहुँच बना सकते हैं। यह पोर्टल मुख्य रूप से कृषि व्यापार और किसानों के विपणन से संबंधित है, न कि खनन उद्योग या विद्यार्थियों के कल्याण से।

38. **इंटरनेट पर प्रत्येक होस्ट कम्प्यूटर को एक अद्वितीय संख्या से जाना जाता है:**
(अ) आई.पी. एड्रेस (पता) (ब) टर्मिनल एड्रेस (पता)
(स) सिस्टम एड्रेस (पता) (द) नोड एड्रेस (पता)
Each host computer on the Internet has a unique number called:
(A) I.P. Address (B) Terminal Address
(C) System Address (D) Node Address

उत्तर-(अ) आई.पी. एड्रेस
IP Address का पूरा नाम **Internet Protocol Address** है। यह नेटवर्क से जुड़े कंप्यूटर या अन्य उपकरण की पहचान करने में सहायता करता है। इसके माध्यम से डेटा सही डिवाइस तक पहुँचाया जाता है। IP Address के प्रमुख संस्करण IPv4 और IPv6 हैं। IPv4 में सामान्यतः चार संख्यात्मक भाग होते हैं, जबकिIPv6 अधिक बड़े एड्रेस स्थान की सुविधा देता है। इसलिए सही विकल्प IP Address है।

39. **निम्नलिखित में से कौनसा संस्थान केन्द्र एवं राज्य सरकारों को प्रौद्योगिकी संचालित करने के समाधान प्रदान करता है ?**
(अ) नैसकॉम (ब) एन.आई.सी.
(स) भारतीय स्टेट बैंक (द) उपर्युक्त सभी
Which of the following institutions provides technology driven solutions to Central and State governments ?
(A) NASSCOM (B) NIC
(C) State Bank of India (D) All of the above

उत्तर-(ब) एन.आई.सी. (NIC)

NIC का पूरा नाम National Informatics Centre अर्थात् राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र है। यह भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करता है। NIC केंद्र और राज्य सरकारों को ई-गवर्नेंस, सरकारी वेबसाइटों, डिजिटल सेवाओं और सूचना-प्रौद्योगिकी आधारित समाधानों में सहायता प्रदान करता है। इसका उद्देश्य सरकारी कार्यों को अधिक प्रभावी, पारदर्शी और तकनीक-सक्षम बनाना है। इसलिए सही उत्तर ब **एन.आई.सी** है।

40. यू.आर.एल. का क्या अर्थ है ?

(अ) यूनिक रिसोर्स लोकेटर (ब) यूनिवर्सल रिसोर्स लोकेटर
(स) यूनिफॉर्म रिसोर्स लोकेटर (द) यूनाइटेड रिसोर्स लोकेटर

URL stands for:

(A) Unique Resource Locator
(B) Universal Resource Locator
(C) Uniform Resource Locator
(D) United Resource Locator

उत्तर-(स) यूनिफॉर्म रिसोर्स लोकेटर

URL का पूरा नाम **Uniform Resource Locator** है। यह इंटरनेट पर किसी वेब पेज, फाइल या अन्य ऑनलाइन संसाधन का पता बताता है। उदाहरण के लिए, https://www.example.com एक URL है। इसमें प्रोटोकॉल और डोमेन नाम जैसे भाग हो सकते हैं। URL की सहायता से ब्राउज़र इच्छित वेबसाइट या संसाधन तक पहुँचता है।

41. गांधी सागर जलाशय का निर्माण किस नदी पर किया गया है ?

(अ) बेतवा (ब) चम्बल
(स) दामोदर (द) महानदी

Gandhi Sagar Reservoir is constructed on which river ?

(A) Betwa (B) Chambal
(C) Damodar (D) Mahanadi

उत्तर-(ब) चम्बल

गांधी सागर बाँध, मध्य प्रदेश के मंदसौर क्षेत्र के निकट चम्बल नदी पर बनाया गया है। यह चम्बल घाटी परियोजना का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। बाँध से जलविद्युत उत्पादन और सिंचाई में सहायता मिलती है। गांधी सागर जलाशय क्षेत्र में जल संग्रहण तथा जल संसाधन प्रबंधन के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। अतः दिए गए विकल्पों में सही उत्तर चम्बल नदी है।

42. अपशिष्ट पदार्थों की डंपिंग में इस्तेमाल किया जाने वाला गाजीपुर लैंडफिल क्षेत्र किस जगह स्थित है ?

(अ) मध्य प्रदेश (ब) उत्तर प्रदेश
(स) दिल्ली (द) हरियाणा

Where is Ghazipur landfill site situated for waste dumping?

(A) Madhya Pradesh (B) Uttar Pradesh
(C) Delhi (D) Haryana

उत्तर-(स) दिल्ली

गाजीपुर लैंडफिल पूर्वी दिल्ली में स्थित एक प्रमुख ठोस अपशिष्ट निस्तारण स्थल है। यहाँ नगरों से एकत्रित बड़ी मात्रा में कचरा जमा किया जाता रहा है। अत्यधिक कचरा जमा होने से भूमि, वायु और आसपास के पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकते हैं। इस कारण कचरे का पृथक्करण, पुनर्चक्रण और वैज्ञानिक निस्तारण आवश्यक है। इसलिए सही विकल्प दिल्ली है।

43. लवणीय मृदा को इलेक्ट्रिकल कंडक्टिविटी (EC) और सोडियम अधिशोषण अनुपात (SAR) के अनुसार चिन्हित किया गया है:

(अ) EC = 4 से कम; SAR = 13 से कम
(ब) EC = 4 से अधिक; SAR = 13 से कम
(स) EC = 4 से कम; SAR = 13 से अधिक
(द) EC = 4 से अधिक; SAR 13 से अधिक

Classification of saline soils depends on Electrical Conductivity (EC) and Sodium Adsorption Ratio (SAR) criteria:

(A) EC = Less than 4; SAR = Less than 13
(B) EC = More than 4; SAR = Less than 13
(C) EC = Less than 4; SAR = More than 13
(D) EC = More than 4; SAR = More than 13

उत्तर-(ब) EC = 4 से अधिक; SAR = 13 से कम।

लवणयुक्त मृदाओं (Saline Soils) के वर्गीकरण के मानक निम्नलिखित हैं-

- **विद्युत चालकता (Electrical Conductivity - EC):** 4 dS/m से अधिक (> 4) होती है।
- **सोडियम अधिशोषक अनुपात (Sodium Adsorption Ratio - SAR):** 13 से कम (< 13) होता है।
- **विनिमययोग्य सोडियम प्रतिशत (ESP):** 15 से कम होता है, और pH मान सामान्यतः 8.5 से कम होता है।

44. भारत में BioE3 नीति, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार (GOI) द्वारा दी गई है, इसका अर्थ है :

(अ) अर्थव्यवस्था, ऊर्जा, पर्यावरण के लिये बायोलॉजी
(ब) इकोलॉजी, इकोसिस्टम, पर्यावरण के लिये जैव-प्रौद्योगिकी
(स) ऊर्जा, स्व-रोजगार, पर्यावरण के लिये जैव-प्रौद्योगिकी
(द) अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, रोजगार के लिये जैव-प्रौद्योगिकी

BioE3 policy by GOI under the Department of Biotechnology means:

(A) Biology for Economy, Energy, Environment
(B) Biotechnolgoy for Ecology, Ecosystem, Environment
(C) Biotechnolgoy for Energy, Self-Employment, Environment
(D) Biotechnology for Economy, Environment, Employment

उत्तर-(द) अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, रोजगार के लिये जैव-प्रौद्योगिकी।

BioE3 का पूरा नाम Biotechnology for Economy, Environment and Employment है। भारत सरकार की यह नीति जैव-आधारित विनिर्माण को बढ़ावा देने, पर्यावरण-अनुकूल प्रक्रियाओं को विकसित करने और रोजगार के अवसर पैदा करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य जैव प्रौद्योगिकी के माध्यम से आर्थिक विकास और सतत विकास को प्रोत्साहित करना है।

45. नेशनल ग्रीन हाइड्रोजन मिशन के अनुसार कम से कम 5 मिलियन मीट्रिक टन (MMT) ग्रीन हाइड्रोजन का वार्षिक उत्पादन अनुमानित है:

National Green Hydrogen Mission belongs to at least 5 Million Metric Tonne (MMT) of production of Green Hydrogen per annum by:

(अ) 2045 तक (ब) 2047 तक
(स) 2030 तक (द) 2070 तक

उत्तर-(स) 2030 तक

राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन का लक्ष्य वर्ष 2030 तक प्रतिवर्ष कम-से-कम 5 मिलियन मीट्रिक टन (MMT) ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता विकसित करना है। ग्रीन हाइड्रोजन नवीकरणीय ऊर्जा की सहायता से बनाया जा सकता है और इसका उपयोग उद्योगों तथा परिवहन में जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने के लिए किया जाता है।

46. नालंदा विश्वविद्यालय के खंडहरों को किस वर्ष यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया ?

In which year were the ruins of Nalanda University declared a UNESCO World Heritage Site ?

(अ) 2014 (ब) 2016

(स) 2015 (द) 2017

उत्तर-(ब) 2016

बिहार में स्थित नालंदा महाविहार के पुरातात्त्विक अवशेषों को वर्ष 2016 में UNESCO की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया। नालंदा प्राचीन भारत का प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र था, जहाँ बौद्ध दर्शन सहित विभिन्न विषयों का अध्ययन होता था। इसके अवशेष भारत की प्राचीन शिक्षा, वास्तुकला और सांस्कृतिक विरासत के महत्त्वपूर्ण प्रमाण हैं।

47. सरकार द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना संसदीय अधिनियम के द्वारा किस वर्ष में की गयी थी ?

The Government established the University Grants Commission by an Act of Parliament in the year:

(अ) 1948 (ब) 1950

(स) 1956 (द) 1980

उत्तर-(स) 1956

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग(UGC) विश्वविद्यालयों में शिक्षण, परीक्षा और अनुसंधान के मानकों का समन्वय तथा निर्धारण करता है। UGC की शुरुआत 1953 में हुई थी, लेकिन इसे संसदीय अधिनियम के अंतर्गत वैधानिक संस्था का दर्जा 1956 में मिला। इसलिए प्रश्न में संसदीय अधिनियम का उल्लेख होने पर सही उत्तर 1956 है।

48. कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत संक्षिप्त शब्द 'संकल्प' (SANKALP) का अर्थ है :

(अ) आजीविका संवर्धन के लिये कौशल जागरूकता और ज्ञान मूल्यांकन

(ब) आजीविका संवर्धन हेतु कौशल संवर्धन और ज्ञान मूल्यांकन

(स) आजीविका संवर्धन के लिये कौशल अधिग्रहण और ज्ञान जागरूकता

(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

The acronym "SANKALP" introduced by the Ministry of Skill Development and Entrepreneurship, stands for:

(A) Skill Awareness and Knowledge Assessment for Livelihood Promotion

(B) Skill Addition and Knowledge Assessment for Promotion Livelihood

(C) Skill Acquisition and Knowledge Awareness for Livelihood Promotion

(D) None of the above

उत्तर-(स) आजीविका संवर्धन के लिए कौशल अधिग्रहण और ज्ञान जागरूकता

SANKALP का पूरा नाम Skills Acquisition and Knowledge Awareness for Livelihood Promotion है। यह कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय की योजना थी, जिसका उद्देश्य युवाओं के लिए कौशल प्रशिक्षण की गुणवत्ता और उसकी रोजगारपरकता बढ़ाना था। इसके अंतर्गत कौशल विकास की संस्थागत व्यवस्था को मजबूत करने तथा प्रशिक्षण को बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने पर जोर दिया गया।

49. निम्नलिखित में से कौन पाश्चात्य शिक्षा को भारत में थोपने का विरोधी था ?

(अ) थॉमस बैबिंगटन मैकॉले (ब) आर. डायर

(स) एनी बेसेंट (द) जेम्स फर्गुसन

Who among the following was a strong critic of western education in India?

(A) Thomas Babington Macaulay

(B) R. Dyer

(C) Annie Besant

(D) James Fergusson

उत्तर-(स) एनी बेसेंट

एनी बेसेंट भारतीय संस्कृति और परंपराओं पर आधारित शिक्षा की समर्थक थीं। उन्होंने भारत में राष्ट्रीय शिक्षा के विकास तथा भारतीय मूल्यों के संरक्षण पर बल दिया। इसके विपरीत, थॉमस बैबिंगटन मैकॉले भारत में अंग्रेजी माध्यम और पाश्चात्य ज्ञान पर आधारित शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख समर्थकों में थे। इसलिए दिए गए विकल्पों में एनी बेसेंट सबसे उपयुक्त उत्तर हैं।

50. निम्नलिखित का मिलान कीजिये:

Match the following:

(a) नालंदा विश्वविद्यालय	(i) बिहार
(b) तक्षशिला विश्वविद्यालय	(ii) ओडिशा
(c) विक्रमशिला विश्वविद्यालय	(iii) पाकिस्तान
(d) पुष्पगिरि विश्वविद्यालय	(iv) उत्तर प्रदेश
(a) Nalanda University	(i) Bihar
(b) Takshashila University	(ii) Odisha
(c) Vikramshila University	(iii) Pakistan
(d) Pushpagiri University	(iv) Uttar Pradesh

	(a)	**(b)**	**(c)**	**(d)**
(अ)	(i)	(iii)	(i)	(ii)
(ब)	(i)	(iv)	(ii)	(iii)
(स)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(द)	(i)	(ii)	(i)	(iii)

उत्तर-(अ) (i) , (iii), (i), (ii)

सही मिलान-

(a) नालंदा विश्वविद्यालय	(i) बिहार
(b) तक्षशिला विश्वविद्यालय	(iii) पाकिस्तान
(c) विक्रमशिला विश्वविद्यालय	(i) बिहार
(d) पुष्पगिरि विश्वविद्यालय	(ii) ओडिशा

51. समाक्षर लोप का उदाहरण है।
(अ) विज्ञप्तिका = विनती (ब) फलाहारी = फलारी
(स) नाककटा = नकटा (द) सूची = सुई

उत्तर- (ब) फलाहारी = फलारी
समाक्षर लोपः जब किसी शब्द में दो समान या लगभग समान अक्षर (या ध्वनियाँ) पास-पास आती हैं, तो उच्चारण की शीघ्रता या मुख-सुख के कारण उनमें से एक अक्षर का लोप (गायब) हो जाता है।
'फलाहारी' शब्द में 'हा' और 'री' (या फला-हा-री) के प्रवाह में समान प्रकार की स्वर ध्वनियों के कारण 'हा' का लोप हो जाता है और शब्द 'फलारी' बन जाता है।
अन्य विकल्प-
- **विज्ञप्तिका = विनती-** यह रूप परिवर्तन और घिसने (तद्भव रूप) का उदाहरण है।
- **नाककटा = नकटा-** यह संधि और स्वर के ह्रस्वीकरण (नाक का नकटा) का उदाहरण है।,
- **सूची = सुई-** यह तत्सम से तद्भव परिवर्तन का उदाहरण है।

52. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा में 'अपश्रुति' किस कारण से होता है?
(अ) वाक्य की प्रकृति के कारण
(ब) वाक्य में अन्तोदात्त के कारण
(स) पद में व्यंजन आयुदात्त के कारण
(द) पद की प्रकृति अथवा विभक्ति या प्रत्यय में स्वर परिवर्तन के कारण

उत्तर-(द) पद की प्रकृति अथवा विभक्ति या प्रत्यय में स्वर परिवर्तन के कारण
प्राचीन भारतीय आर्यभाषा में 'अपश्रुति' पद की प्रकृति अथवा विभक्ति या प्रत्यय में स्वर परिवर्तन के कारण होता है।
अपश्रुति क्या है? भारोपीय और प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (संस्कृत) में शब्दों के मूल रूप (धातु) में प्रत्यय या विभक्ति जुड़ते समय जो आन्तरिक स्वर-परिवर्तन होता है, उसे अपश्रुति कहते हैं।
उदाहरण- जैसे संस्कृत में 'कृ' धातु से **'करोति' (गुण)** और **'कर्तव्य'** या **'कारयति'** (वृद्धि) रूप बनते हैं, जहाँ प्रत्यय के कारण आंतरिक स्वरों में बदलाव आता है।

53. ''जो भाषा आज हिन्दुस्तानी कहलाती है, उसी का नाम हिन्दी, उर्दू और रेखता भी है। इसमें अरबी, फारसी, संस्कृत भाषा के शब्द हैं।'- यह कथन किस विद्वान का है?
(अ) मिस्टर बीम्स (ब) डॉक्टर गिलक्राइस्ट
(स) डॉक्टर राजेन्द्र लाल मिश्र (द) ग्रियर्सन

उत्तर- (ब) डॉक्टर गिलक्राइस्ट
जॉन बोर्थविक गिलक्राइस्ट एक स्कॉटिश सर्जन और भाषाविद् थे, जिन्होंने उत्तर भारत की बोलचाल की भाषा के बारे में यह कथन कहा था।
गिलक्राइस्ट का महत्व इस दृष्टि से बहुत अधिक है कि शिक्षा माध्यम के रूप में इन्होंने हिन्दी का महत्व पहचाना। माक्विस बेलेजली ने अपने गर्वनर जनरल के कार्यकाल (1798-1805) में अंग्रेज प्रशासकों तथा कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने तथा उन्हें भारतीय भाषाओं से परिचित कराने के लिए कलकत्ता में 4 मई सन् 1800 ई. को फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की। सन् 1800 में कालेज के हिन्दुस्तानी विभाग के अध्यक्ष के रूप में गिलक्राइस्ट को नियुक्त किया गया। उत्तरी भारत के कई स्थानों में रहकर इन्होंने भारतीय भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। सन् 1800 ई. में ही गिलक्राइस्ट के सहायक के रूप में लल्लू लाल की नियुक्ति सर्टिफिकेट मुंशी के पद पर हुई। गिलक्राइस्ट ने हिन्दी में पाठ्य पुस्तकें तैयार कराने की दिशा में प्रयास किया। गिलक्राइस्ट ने भारत में बहुप्रयुक्त भाषा रूप को 'खड़ी बोली' की संज्ञा से अभिहित किया।

54. पूर्वी हिन्दी का विकास किससे हुआ है ?
(अ) अर्द्धमागधी अपभ्रंश (ब) शौरसेनी अपभ्रंश
(स) मागधी अपभ्रंश (द) पैशाची अपभ्रंश

उत्तर- (अ) अर्द्धमागधी अपभ्रंश
पूर्वी हिन्दी का विकास अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है। इसके अंतर्गत मुख्य रूप से तीन बोलियाँ आती हैं- **अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी।**
अन्य विकल्पों का वर्गीकरण इस प्रकार है-
- **शौरसेनी अपभ्रंश-** इससे पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी और गुजराती का विकास हुआ है।
- **मागधी अपभ्रंश-** इससे बिहारी हिन्दी (भोजपुरी, मैथिली, मगही), बांग्ला, ओड़िया और असमिया का विकास हुआ है।
- **पैशाची अपभ्रंश-** इससे लहंदा और पंजाबी भाषा का विकास हुआ है।

55. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 कब से लागू की गयी थी?
(अ) 26 जनवरी, 1965 (ब) 14 सितम्बर, 1963
(स) 12 अक्टूबर, 1964 (द) 11 जनवरी, 1963

उत्तर- (अ) 26 जनवरी, 1965
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अनुसार, राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 को 26 जनवरी, 1965 से लागू किया गया था। इस धारा के तहत संघ के राजकीय प्रयोजनों और संसद में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग जारी रखने की व्यवस्था की गई थी।
जिस दिनांक को धारा 3 प्रवृत्त होती है उससे दस वर्ष की समाप्ति के पश्चात, राजभाषा के सम्बन्ध में एक समिति, इस विषय का संकल्प संसद के किसी भी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व स्वीकृति से प्रस्तावित और दोनों सदनों द्वारा पारित किए जाने पर, गठित की जाएगी।
इस समिति का कर्तव्य होगा कि वह संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन करें और उस पर अनुशंसाएँ करते हुए राष्ट्रपति को प्रतिवेदन करें और राष्ट्रपति उस प्रतिवेदन को संसद् के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा और सभी राज्य सरकारों को भिजवाएगा।

56. अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं?

(अ) पाँच (ब) सात

(स) आठ (द) तीन

उत्तर- (स) आठ

अर्थ के आधार पर वाक्य के 8 भेद होते हैं:

1. विधानवाचक वाक्य (सामान्य कथन या सूचना देने वाला)
2. निषेधवाचक वाक्य (नकारात्मक भाव या 'नहीं' का बोध)
3. प्रश्नवाचक वाक्य (प्रश्न पूछने वाला)
4. आज्ञावाचक वाक्य (आज्ञा, आदेश या प्रार्थना वाला)
5. इच्छावाचक वाक्य (इच्छा, कामना या आशीर्वाद वाला)
6. विस्मयादिवाचक वाक्य (आश्चर्य, हर्ष, शोक आदि का भाव)
7. संदेहवाचक वाक्य (कार्य में संदेह या संभावना)
8. संकेतवाचक वाक्य (एक क्रिया का दूसरी पर निर्भर होना)

57. हिन्दी की कौनसी बोली 'जाटू' या 'हरियानी' नाम से भी जानी जाती है?

(अ) ब्रजभाषा (ब) कन्नौजी

(स) बांगरू (द) बुन्देली

उत्तर- (स) बांगरू

हिन्दी की 'बांगरू' बोली को ही 'जाटू' या 'हरियाणवी' (हरियानी) नाम से भी जाना जाता है।

मुख्य जानकारी-

- **उपभाषा वर्ग:**पश्चिमी हिन्दी (शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित)
- **अन्य नाम:** हरियाणवी, जाटू, देशवाली
- **मुख्य क्षेत्र:** हरियाणा (रोहतक, जिंद, सोनीपत, करनाल, हिसार आदि) और दिल्ली का ग्रामीण क्षेत्र।
- पश्चिमी हिंदी का विकास शौरसैनी अपभ्रंश से हुआ है। इसके अंतर्गत पाँच बोलियाँ हैं- खड़ी बोली, हरियाणवी, ब्रज, कन्नौजी और बुंदेली। खड़ी बोली अपने मूल रूप में मेरठ, रामपुर, मुरादाबाद, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर,बिजनौर,बागपत के आसपास बोली जाती है। इसी के आधार पर आधुनिक हिंदी और उर्दू का रूप खड़ा हुआ। बांगरू को जाटू या हरियाणवी भी कहते हैं। यह पंजाब के दक्षिण पूर्व में बोली जाती है। कुछ विद्वानों के अनुसार बांगरू खड़ी बोली का ही एक रूप है जिसमें पंजाबी और राजस्थानी का मिश्रण है।

58. वर्तमान देवनागरी लिपि किस लिपि का परिवर्तित रूप है?

(अ) आर्यन लिपि (ब) कैथी लिपि

(स) संस्कृत लिपि (द) ब्राह्मी लिपि

उत्तर- (द) ब्राह्मी लिपि

वर्तमान देवनागरी लिपि का विकास प्राचीन ब्राह्मी लिपि से हुआ है। ब्राह्मी लिपि को भारत की अधिकांश आधुनिक लिपियों (जैसे देवनागरी, बांग्ला, गुजराती, गुरुमुखी आदि) की जननी माना जाता है।

देवनागरी लिपि का उद्भव और विकास भाषा को स्थायित्व प्रदान करने के लिये हुआ। लिपि का सबसे बड़ा उपयोग तो यही है कि हम भाषा के उच्चारित रूप को लिपिबद्ध करके स्थायी बना सकते हैं। हिन्दी, संस्कृत और मराठी भाषाएँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं। आज देवनागरी लिपि के जिन वर्णों तथा चिन्हों का प्रयोग किया जाता है ये आरम्भ में इसी रूप में नहीं थे। इनका निरन्तर विकास होता रहा है और इसके स्वरूप में आदर्श रूप बनाने के लिये अनेक प्रकार के सुधार भी किये गये।

59. धातुओं को छोड़कर शेष शब्दों के आगे प्रत्यय लगाने से निर्मित होने वाले शब्दों को क्या कहते हैं?

(अ) कृदन्त (ब) तद्धित

(स) तद्भव (द) तत्सम

उत्तर- (ब) तद्धित

धातुओं (क्रिया के मूल रूप) को छोड़कर अन्य शब्दों -जैसे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और अव्यय- के अंत में लगने वाले प्रत्ययों को तद्धित प्रत्यय कहा जाता है और इनसे बनने वाले शब्दों को तद्धित या तद्धितांत शब्द कहते हैं।

- **कृदन्त-** ये प्रत्यय धातुओं या क्रियाओं के अंत में लगते हैं (जैसे: लिख +आवट = लिखावट)।
- **तद्भव और तत्सम-** ये शब्दों के स्रोत, उत्पत्ति के भेद हैं, प्रत्यय के नहीं।

तद्धित प्रत्यय के मुख्य भेद-संस्कृत और हिंदी व्याकरण में तद्धित प्रत्ययों के कई प्रकार होते हैं, जैसे-

1. **मतुप् / वतुप् प्रत्यय** (वाला, युक्त अर्थ में जैसे- बलवान्, बुद्धिमान्),
2. **तरप् प्रत्यय** (दो में से एक की श्रेष्ठता या तुलना के लिए जैसे- लघुतर),
3. **तमप् प्रत्यय** (सबमें श्रेष्ठता या अत्यंतबोध के लिए जैसे- लघुतम),
4. **तल् प्रत्यय** (भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए जैसे- सुन्दरता),
5. **मयट् प्रत्यय** (विकार यामयता दर्शाने के लिए जैसे- स्वर्णमय),

60. करण कारक का उदाहरण है -

(अ) यात्रा भोपाल से रवाना हुई।(ब) हिमालय से गंगा निकलती है।

(स) आपके दर्शन से लाभ हुआ। (द) पेड़ से पत्ते गिरते हैं।

उत्तर- (स) आपके दर्शन से लाभ हुआ है।

- **करण कारक-** जहाँ क्रिया को करने के साधन या माध्यम का बोध होता है (जिसके द्वारा काम हो), वहाँ करण कारक होता है। इसका विभक्ति चिह्न 'से' या 'के द्वारा' होता है। यहाँ 'दर्शन' को लाभ होने का माध्यम कारण माना गया है।
- **अन्य विकल्प (अ, ब और द):** 'यात्रा भोपाल से रवाना हुई', 'हिमालय से गंगा निकलती है' और 'पेड़ से पत्ते गिरते हैं'- इन तीनों वाक्यों में 'से' का प्रयोग अपादान कारक के रूप में हुआ है, क्योंकि यहाँ किसी स्थान या वस्तु से अलग होने (पृथकता) का भाव प्रकट हो रहा है।

61. राहुल सांकृत्यायन ने सिद्धों की संख्या कितनी मानी है?

(अ) 84 (ब) 36

(स) 21 (द) 51

उत्तर (अ) 84

राहुल सांकृत्यायन ने सिद्धों की संख्या 84 मानी है।इन 84 सिद्धों में से-

- 80 पुरुष सिद्ध थे तथा 4 स्त्रियाँ (योगिनियाँ) थीं (कनखलापा, लक्ष्मीकरा, मणिभद्रा और मेखलापा)।
- उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिंदी काव्यधारा' में सिद्ध साहित्य का विस्तार से वर्णन किया है और सरहपा को हिंदी का प्रथम कवि माना है।
- इस ग्रंथ में हिंदी कविता के ऐतिहासिक संदर्भ, उसकी शुरुआत, विभिन्न प्रवृत्तियों और समय के साथ हुए बदलावों का गहन विश्लेषण किया गया है। इसमें अपभ्रंश और प्रारंभिक हिंदी काल के अनेक अनछुए और कम प्रसिद्धकवियों की रचनाओं और उनके योगदान को प्रकाश में लाया गया है।

62. विद्यापति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों का अवलोकन कीजिएः

(क) विद्यापति ने संस्कृत भाषा में कोई ग्रंथ नहीं लिखा।

(ख) विद्यापति दरबारी कवि नहीं थे।

(ग) विद्यापति मिथिला निवासी थे।

(घ) विद्यापति ने 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' की रचना अवहट्ठ में की थी।

उपर्युक्त कथनों के आधार पर सही उत्तर हैः

(अ) (क) और (ख) दोनों सही

(ब) (ग) और (घ) दोनों सही

(स) (क) और (ग) दोनों सही

(द) (ख) और (घ) दोनों सही

उत्तर- (ब) (ग) और (घ) दोनों सही है।

(क) गलत हैः विद्यापति ने संस्कृत भाषा में कई प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना की थी, जैसे कि भूपरिक्रमा, पुरुषपरीक्षा, लिखनावली और शैवसर्वस्वसार। इसलिए यह कहना गलत है कि उन्होंने संस्कृत में कोई ग्रंथ नहीं लिखा।

(ख) गलत हैः विद्यापति दरबारी कवि थे। वे मिथिला के राजा कीर्तिसिंह और शिवसिंह के दरबार में राजकवि और सलाहकार थे।

(ग) सही हैः विद्यापति का जन्म मिथिला (वर्तमान बिहार के मधुबनी जिले के बिस्फी गाँव) में हुआ था, इसलिए वे मिथिला निवासी थे।

(घ) सही हैः विद्यापति ने अपनी प्रसिद्ध रचनाएँ 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' की रचना अवहट्ठ भाषा में की थी।

63. ''देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए वह अवकाश न रह गया। ..... ''अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था?''

भक्तिकाल के प्रादुर्भाव के बारे में यह कथन किसका है?

(अ) रामकुमार वर्मा (ब) रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'

(स) रामचंद्र शुक्ल (द) हजारीप्रसाद द्विवेदी

उत्तर- (स) रामचंद्र शुक्ल

यह प्रसिद्ध कथन आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा उनकी पुस्तक 'हिंदी साहित्य का इतिहास' (1929) में भक्तिकाल के प्रादुर्भाव और उसकी परिस्थितियों की व्याख्या करते हुए कहा गया है।

यह प्रसिद्ध कथन आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा उनकी पुस्तक 'हिंदी साहित्य का इतिहास' (1929) में भक्तिकाल के प्रादुर्भाव और उसकी परिस्थितियों की व्याख्या करते हुए कहा गया है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (4 अक्टूबर 1884- 2 फरवरी 1941) हिन्दी आलोचक, कहानीकार, निबन्धकार, साहित्येतिहासकार, कोशकार, अनुवादक, कथाकार और कवि थे। हिन्दी साहित्य का इतिहास उनके द्वारा लिखी गई सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है जिसके द्वारा आज भी काल निर्धारण एवं पाठ्यक्रम निर्माण में सहायता ली जाती है। हिन्दी में पाठ आधारित वैज्ञानिक आलोचना का सूत्रपात भी उन्हीं के द्वारा हुआ। हिन्दी निबन्ध के क्षेत्र में भी शुक्ल का महत्त्वपूर्ण योगदान है। भाव, मनोविकार सम्बन्धित मनोविश्लेषणात्मक निबन्ध उनके प्रमुख हस्ताक्षर हैं। शुक्ल ने साहित्य के इतिहास लेखन में रचनाकार के जीवन और पाठ को समान महत्त्व दिया। उन्होंने प्रासंगिकता के दृष्टिकोण से साहित्यिक प्रत्ययों एवं रस आदि की पुनर्व्याख्या की।

64. मध्यकालीन वैष्णवाचार्यो और उनके दार्शनिक विचारों की दृष्टि से कौनसा विकल्प असंगत है?

(अ) निम्बार्काचार्य- द्वैताद्वैतवाद (ब) वल्लभाचार्य- शुद्धाद्वैतवाद

(स) रामानुजाचार्य- विशिष्टाद्वैतवाद(द) मध्वाचार्य-अद्वैतवाद

उत्तर-(द) मध्वाचार्य- अद्वैतवाद

मध्वाचार्य ने द्वैतवाद दर्शन का प्रतिपादन किया था, जबकि अद्वैतवाद दर्शन के प्रतिपादक शंकराचार्य थे।

'द्वैत' का शाब्दिक अर्थ है 'दो' या 'दोहरा'। इस दर्शन के अनुसार ईश्वर (परमात्मा) और जीव (आत्मा) तथा प्रकृति पूरी तरह से अलग-अलग सत्य हैं।

ईश्वर और जीव में भेद- यह दर्शन इस बात का खंडन करता है कि ''जीव और ब्रह्म एक हैं''। इसके अनुसार जीव कभी भी ईश्वर नहीं बन सकता, वह हमेशा ईश्वर का दास या अधीन रहता है।

(अ) निम्बार्काचार्यः द्वैताद्वैतवाद (भेदाभेदवाद)

- **भेदाभेद (भिन्न और अभिन्न दोनों)-** इस सिद्धांत के अनुसार ईश्वर, जीव (आत्मा) और जगत् (प्रकृति) के बीच एक ही समय में भेद (द्वैत) और अभेद (अद्वैत) दोनों प्रकार का स्वाभाविक संबंध होता है।
- निम्बार्काचार्य ने सत्ता को तीन स्वतंत्र और अनादि श्रेणियों ईश्वर (ब्रह्म), जीव (चित्) तथा जगत् (अचित्) में बांटा है।

(ब) वल्लभाचार्यः शुद्धाद्वैतवाद

- **शुद्धाद्वैत-** वल्लभाचार्य के अनुसार ब्रह्म और जीव एक ही हैं, इनमें कोई भेद नहीं है। उन्होंने शंकराचार्य के 'मायावाद' का खंडन किया और कहा कि यह संसार मिथ्या (झूठा) नहीं, बल्कि स्वयं ब्रह्म का ही वास्तविक रूप है।
- **पुष्टिमार्ग-** यह श्री कृष्ण की भक्ति और उनकी कृपा (अनुग्रह) पर आधारित मार्ग है। इस मार्ग में कठिन तपस्या या संन्यास की अपेक्षा ईश्वर के प्रति समर्पण और प्रेमपूर्ण सेवा को प्रधान माना गया है।
- **ब्रह्मवाद-** उनके दर्शन में परम ब्रह्म साकार हैं और उनका स्वरूप भगवान श्रीकृष्ण हैं।

(स) रामानुजाचार्यः विशिष्टाद्वैतवाद

सिद्धांत -

- विशिष्टाद्वैत का अर्थ है कि ब्रह्म (ईश्वर) एक है, लेकिन वह जीव (आत्मा) और अचित (जड़/पदार्थ) से युक्त (विशेषताओं सहित) है।
- **संबंध**- आत्मा और परमात्मा अलग होने के बावजूद एक-दूसरे से अविभाज्य रूप से जुड़े हैं (शरीरात्मा भाव)।
- **मोक्ष का साधन-** उन्होंने मोक्ष (मुक्ति) की प्राप्ति के लिए भगवान विष्णु की अनन्य भक्ति और समर्पण को सबसे बड़ा साधन बताया।

65. पंडित रामगुलाम द्विवेदी ने तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या कितनी मानी है?

(अ) 13 (ब) 12

(स) 7 (द) 10

उत्तर- (ब) 12

- मिर्जापुर निवासी रामायण के प्रसिद्ध मर्मज्ञ और विद्वान पंडित रामगुलाम द्विवेदी ने गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित प्रामाणिक ग्रंथों की कुल संख्या 12 मानी है।

- इन्होंने एक घनाक्षरी (छंद) के माध्यम से तुलसीदास जी की इन सभी 12 रचनाओं का उल्लेख किया है।
- इनके अलावा आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी तुलसीदास जी के इन्हीं 12 ग्रंथों को प्रामाणिक स्वीकार किया है, जिनमें 5 बड़े और 7 छोटे ग्रंथ शामिल हैं।

66. ''नेही महा ब्रजभाषा प्रबीन औ सुंदरतानि के भेद को जानै। जोग-वियोग की रीति में कोबिद भावनाभेद स्वरूप को ठानै? ये पंक्तियाँ किस कवि के बारे में कही गई हैं?

(अ) आलम (ब) पद्माकर
(स) घनानंद (द) बिहारी

उत्तर- (स) घनानंद

यह प्रसिद्ध सवैया कवि ब्रजनाथ द्वारा लिखा गया है, जिसमें उन्होंने घनानंद की काव्य-प्रतिभा और उनके भाषा-ज्ञान की प्रशंसा की है। पूरा सवैया इस प्रकार हैः

''नेही महा ब्रजभाषा प्रबीन औ सुंदरतानि के भेद को जानै।
जोग-वियोग की रीति में कोबिद भावनाभेद स्वरूप को ठानै।।
चाह के रंग में भीज्यो हियै बिछुरैं मिलैं प्रीत के रीति न मानै।
भाषा प्रबीन सुछंद सदा रहै सो घनआनँद के कबित्त बखानै।।''

67. 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' का प्रकाशन कहाँ से आरम्भ हुआ?

(अ) कलकत्ता (ब) अलीगढ़
(स) बनारस (द) जयपुर

उत्तर- (स) बनारस

आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रणेता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 15 अक्टूबर, 1873 को बनारस (काशी) से 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया था। 8 अंकों के बाद इस पत्रिका का नाम बदलकर 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' कर दिया गया था।

इसमें पुरातत्व, उपन्यास, कविता, आलोचना, इतिहास, राजनीति, दर्शन, व्यंग्य और कहानियाँ प्रकाशित होती थीं। जिस समय पत्रिका में देशभक्ति से परिपूर्ण लेख आदि प्रकाशित होने लगे तो इसे बन्द करा दिया गया।

68. छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थो में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ उसका सम्बन्धं काव्यवस्तु से होता है अर्थात् जहाँ कवि उस अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलंबन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। ..... छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्यशैली या पद्धतिविशेष के व्यापक अर्थ में है।''
छायावाद के सम्बन्ध में यह किसका कथन है?

(अ) रामविलास शर्मा (ब) नंददुलारे वाजपेयी
(स) रामचन्द्र शुक्ल (द) मुकुटधर पाण्डेय

उत्तर- (स) रामचन्द्र शुक्ल

आधुनिक हिंदी कविता का एक प्रमुख और महत्वपूर्ण रोमांटिक/स्वच्छंदतावादी आंदोलन है, जो मुख्य रूप से सन् 1918 से 1936 ईस्वी के बीच फला-फूला, इसे हिंदी खड़ीबोली काव्य का 'स्वर्णयुग' भी कहा जाता है।

छायावादी काव्य की विशेषताएँ-

- छायावादी कवियों ने काव्य की विषयवस्तु अपने व्यक्तिगत जीवन से ही खोजने का प्रयास किया। अपने जीवन के निजी प्रसंगों, घटनाओंएवं व्यक्तिगत भावनाओं को अनेक छायावादी कवियों ने काव्य-वस्तुबनाया। छायावादी कविता में वैयक्तिक सुख-दुःख की खुलकर अभिव्यक्तिहुई।
- छायावादी कवि मूलतः प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं, किन्तु उनकी सोन्दर्य भावना सूक्ष्म एवं उदात्त है। सौन्दर्य चित्रण में उनकी वृत्ति उतनी नहीं रमी, जितनी आन्तरिक सौन्दर्य के उद्घाटन में एवं दशाओं के वर्णन में रमी।

69. रचना और रचनाकार की दृष्टि से कौनसा विकल्प सुमेलित नहीं है?

(अ) विष्णुप्रिया - कुँवर नारायण
(ब) कनुप्रिया - धर्मवीर भारती
(स) लोकायतन - सुमित्रानंदन पंत
(द) रश्मिरथी - रामधारी सिंह 'दिनकर'

उत्तर- (अ) विष्णुप्रिया- कुँवर नारायण

विष्णुप्रिया के रचनाकार कुँवर नारायण नहीं, बल्कि मैथिलीशरण गुप्त हैं। (कुँवर नारायण की मुख्य रचनाओं में 'आत्मजयी' और 'परिवेशः हम-तुम' आदि शामिल हैं)।

अन्य सभी विकल्प सही सुमेलित हैं-

- **कनुप्रिया- धर्मवीर भारती**

  'कनु' (कृष्ण) और 'प्रिया' (राधा) अर्थात् कृष्ण से प्रेम करने वाली राधा। इसमें कृष्ण को पारंपरिक रूप से भगवान के रूप में न देखकर, एक मानवीय और उत्तरदायी पात्र के रूप में चित्रित किया गया है।

  राधा की वेदना- यह रचना महाभारत के युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है। इसमें राधा कुरुक्षेत्र के युद्धभूमि में खड़े कृष्ण से संवाद करती हैं और उनके अंतर्मन के द्वंद्व, अकेलेपन, प्रतीक्षा तथा युद्ध की विभीषिका पर प्रश्न उठाती हैं।
- **लोकायतन- सुमित्रानंदन पंत**

  यह दो खण्डों में विभाजित है- 1. बाह्य परिवेश 2. अंतश्चौतन्य इस प्रबन्ध की पृष्ठभूमि बहुत ही व्यापक है जिसमें स्वाधीनता के पहले से लेकर उत्तर स्वप्न तक का विशाल भारतीय जीवन अंतर्भुक्त हो उठा है। पंत जी युग जीवन के यथार्थ के हर पहलू को समझते थे, देश-विदेश के समस्त परिवर्तनों को, बदले मूल्यों को, पुरातन और नवीन के संघर्षों को, भौतिकता और आध्यात्मिकता के छन्दों को उन्होंने परखा था। प्रबन्ध को देखकर ऐसा लगता है कि यथार्थ दर्शन और आदर्श कल्पना, ये दोनों अध्ययन और जानकारी के परिणाम के रूप में उनमें संयुक्त हैं।
- **रश्मिरथी- रामधारी सिंह 'दिनकर'**

'रश्मिरथी' राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित एक प्रसिद्ध हिंदी खंडकाव्य है, जिसका प्रकाशन वर्ष 1952 में हुआ था। 'रश्मिरथी' शब्द का अर्थ है- 'सूर्य की किरणों (रश्मि) के रथ पर सवार (रथी)' अर्थात कर्ण। इस पूरे खंडकाव्य में महाभारत के महानायक कर्ण के जीवन, संघर्ष, शौर्य, मित्रता और दानशीलता का सात सर्गों में वर्णन किया गया है।

70. (क) निर्मला (ख) गोदान
(ग) गबन (घ) प्रेमाश्रम
प्रेमचंद के इन उपन्यासों के प्रकाशन वर्ष का सही आरोही क्रम हैः

(अ) (क), (ग), (घ), (ख) (ब) (ख), (घ), (क), (ग)
(स) (घ), (क), (ग), (ख) (द) (ग), (क), (घ), (ख)

उत्तर- (स) (घ), (क), (ग), (ख)

मुंशी प्रेमचंद के इन उपन्यासों के प्रकाशन वर्ष का विवरण (आरोही अर्थात बढ़ते हुए क्रम में) इस प्रकार हैः

1.प्रेमाश्रम (घ): 1922 ई.

मुख्य विषय-

- जमींदार और किसानों के बीच संघर्ष तथा ब्रिटिश राज के दौरान किसानों का शोषण।
- गांधीवादी आंदोलनों, सत्याग्रह और ग्रामीण जीवन का चित्रण।
- प्रेमशंकर द्वारा स्थापित 'प्रेमाश्रम' के माध्यम से समानता, सहकारिता और 'राम-राज्य' की स्थापना का आदर्श।

2. निर्मला (क): 1927 ई.

मुख्य विषय-

- दहेज प्रथा का अभिशापः उपन्यास में दिखाया गया है कि कैसे दहेज की माँग और आर्थिक मजबूरी के कारण एक युवा लड़की का विवाह उसकी उम्र से दोगुने बड़े व्यक्ति से करना पड़ता है।
- अनमेल विवाह (बेमेल विवाह): पंद्रह वर्षीय निर्मला का विवाह अधेड़ उम्र (40 से अधिक) और पहले से ही तीन बेटों के पिता मुंशी तोताराम से करा दिया जाता है, जिससे उनके दांपत्य जीवन में असमंजस और हीनभावना पैदा होती है।

3. गबन (ग): 1931 ई.

मुख्य विषय-

- कहानी की शुरुआत प्रयाग (इलाहाबाद) के एक गांव से होती है। उपन्यास की नायिका जालपा एक चंचल युवती है, जिसे बचपन से ही गहनों और खासकर 'चन्द्रहार' (एक प्रकार का हार) पाने की तीव्र लालसा है। जालपा का विवाह प्रयाग के एक साधारण और कम वेतन पाने वाले क्लर्क रमानाथ से होता है। खर्चों और कर्ज का बोझ बढ़ने पर रमानाथ अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिए नौकरी (चुंगी विभाग) से 600 रुपये का गबन (सरकारी धन की चोरी) कर लेता है। पोल खुलने के डर से वह प्रयाग छोड़कर कलकत्ता (कोलकाता) भाग जाता है।

4. गोदान (ख): 1936 ई.

प्रमुख विषय-

- उपन्यास में होरी जैसे गरीब किसान के जीवन और उसकी महाजनी जाल (कर्ज, ब्याज) में फंसने की दर्दनाक दास्तान को मुख्य रूप से उभारा गया है। जमींदारी प्रथा, साहूकारों, पुजारियों और भ्रष्ट व्यवस्था द्वारा निम्न वर्ग के किसानों का लगातार किया जाने वाला शोषण इसमें दिखाया गया है। एक गाय पाने और 'गोदान' करने की होरी की अधूरी आकांक्षा भारतीय किसान की 'मरजाद' (इज्जत) और उसकी ट्रेजडी का प्रतीक है।

अतः इनका सही कालानुक्रमिक आरोही क्रम (घ) (क) (ग) (ख) है।

71. आचार्य मम्मट ने काव्य के कितने प्रयोजन निर्दिष्ट किए हैं?

(अ) 02 (दो) (ब) 04 (चार)
(स) 06 (छः) (द) 03 (तीन)

उत्तर- (स) 06 (छः)

आचार्य मम्मट ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'काव्यप्रकाश' में काव्य के छः (6) प्रयोजन निर्दिष्ट किए हैं। उन्होंने इसके लिए निम्नलिखित कारिका दी हैः ''काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये। सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।''

इन छः प्रयोजनों का विवरण इस प्रकार हैः

1. **यशसेः** यश या प्रसिद्धि की प्राप्ति।
2. **अर्थकृतेः** धन या संपत्ति का अर्जन।
3. **व्यवहारविदेः** लौकिक व्यवहार का ज्ञान होना।
4. **शिवेतरक्षतयेः** अमंगल या अनिष्ट का निवारण (लोकमंगल)।
5. **सद्यः परनिर्वृतयेः** अलौकिक आनंद (ब्रह्मानन्द सहोदर) की प्राप्ति (इसे सर्वप्रमुख प्रयोजन माना जाता है)।
6. **कान्तासम्मिततयोपदेशयुजेः** जिस प्रकार एक पत्नी (कांता) अपने प्रेम, मधुरता और कोमलता से अपने पति को अच्छे और सही मार्ग पर ले आती है। उसी प्रकार काव्य भी बिना उपदेश दिये प्रेमपूर्ण तरीके से धर्म और नीति की शिक्षा देता है।

72. रस-सिद्धान्त के भरत-परवर्ती आचार्यों में किसका नाम काल-क्रमानुसार सर्वप्रथम आता है?

(अ) शंकुक्क (ब) भट्टलोल्लट
(स) भट्टनायक (द) अभिनव गुप्त

उत्तर- (ब) भट्टलोल्लट

रस-सिद्धान्त के भरत-परवर्ती आचार्यों में सबसे पहला नाम भट्टलोल्लट का आता है।

आचार्यों का सही काल-क्रम (क्रमानुसार) इस प्रकार हैः

1. **भट्टलोल्लट (9वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध)-** इन्होंने 'उत्पत्तिवाद' या 'आरोपवाद' का प्रतिपादन किया।
2. **शंकुक (9वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध)-** इन्होंने 'अनुमितिवाद' का प्रतिपादन किया।
3. **भट्टनायक (11वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध)-** इन्होंने 'भुक्तिवाद' या 'भोगवाद' का प्रतिपादन किया।
4. **अभिनवगुप्त (11वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध)-** इन्होंने 'अभिव्यक्तिवाद' का प्रतिपादन किया।

73. ''भारतीय रस-सिद्धान्त की तुलना में डॉ. रिचर्ड्स का भाव-प्रेरण सिद्धान्त अधिक स्पष्ट, व्यावहारिक एवं मनोविज्ञान सम्मत है।'' यह कथन किसका है?

(अ) डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त (ब) डॉ. नगेन्द्र
(स) डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी (द) डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा

उत्तर- (ब) डॉ. नगेन्द्र

यह कथन हिंदी के प्रतिष्ठित समीक्षक एवं रस-सिद्धान्त के मर्मज्ञ डॉ. नगेन्द्र का है।

रस सिद्धांत (संप्रदाय) के मूल प्रवर्तक आचार्य भरतमुनि हैं, जिन्होंने इसे अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में प्रस्तुत किया था। रस सूत्र के प्रमुख तत्व विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी (संचारी) भाव तथा संयोग और निष्पत्ति है। हिन्दी साहित्य में 'रस-सिद्धांत' (आलोचनात्मक/काव्यशास्त्रीय ग्रंथ) के रचयिता विख्यात साहित्यकार डॉ. नगेन्द्र हैं, जिन्हें इस रचना के लिए वर्ष 1965 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

74. ''चिर जीवो जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर। को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।।''
इन पंक्तियों में कौनसी शब्दशक्ति है?

(अ) अभिधा (ब) लक्षणा
(स) व्यंजना (द) प्रयोजनवती

उत्तर- (स) व्यंजना (विशेष रूप से शाब्दी व्यंजना)।

व्यंजना शब्दशक्ति- जब किसी शब्द के वाच्यार्थ (सामान्य अर्थ) और लक्ष्यार्थ (लक्षित अर्थ) से भिन्न कोई तीसरा या विशेष (व्यंग्यार्थ) अर्थ प्रकट होता है, तब वहाँ व्यंजना शब्दशक्ति होती है।

इन पंक्तियों में आए शब्द **'वृषभानुजा'** और 'हलधर के वीर' श्लिष्ट (अनेकार्थक) शब्द हैं।

इनके एक अर्थ से **'राधा और कृष्ण'** का बोध होता है तथा दूसरे अर्थ से **'गाय और बैल'** का व्यंग्यार्थ निकलता है।

शब्दों के विशेष अर्थ पर आधारित होने के कारण यहाँ शाब्दी व्यंजना है।

75. ''दुलहिन गावहु मंगलाचार।
हम घर आये राजाराम भरतार।।''
उपर्युक्त पंक्तियों में 'दुलहिन' और 'भरतार' शब्द क्रमशः किसके प्रतीक हैं?

(अ) आत्मा, परमात्मा (ब) परमात्मा, आत्मा
(स) अनाहतनाद, आनंद (द) मधुरता, हृदय

उत्तर- (अ) आत्मा, परमात्मा

- संत कबीरदास के इस पद में प्रतीकात्मक रूप से दुलहिन 'आत्मा' का और भरतार (राजा राम) 'परमात्मा' का प्रतीक है। कबीरदास जी ने आत्मा और परमात्मा के मिलन (आध्यात्मिक विवाह) को इस रूपक के माध्यम से व्यक्त किया है।
- इस पद में कबीरदास जी ने अपने प्रभु राम के साथ आत्मा के विवाह का सुंदर वर्णन किया है। वे कहते हैं कि जैसे दुल्हन मंगल गीत गाती है, वैसे ही मैं अपने घर (हृदय) में राम को पाकर मंगल गा रही हूँ। मेरा तन और मन दोनों राम में रत (लीन) हैं। रामदेव (भगवान राम) मेरे घर पधारे हैं, मैं अपने यौवन (आनंद) से उनका स्वागत कर रही हूँ।
- कबीर कहते हैं कि मुझे वह परमात्मा (अविनाशी पुरुष) पति रूप में मिले हैं। बहुत दिनों बाद मुझे अपने प्रियतम (राम) मिले हैं, यह मेरे बड़े भाग्य की बात है। मैं अपने मन में मंगलचार (शुभ गीत) गाती हूँ और राम के रस का स्वाद लेती हूँ। मेरे मंदिर (हृदय) में उजियारा (प्रकाश) हो गया है, क्योंकि मैंने अपने प्रियतम को पा लिया है। कबीर कहते हैं कि मैंने कुछ नहीं किया, यह सब राम की कृपा है।

76. ''काव्य की पूर्ण अनुभूति के लिए कल्पना का व्यापार कवि और श्रोता दोनों के लिए अनिवार्य है।'' यह कथन किस आलोचक का है?

(अ) नंददुलारे वाजपेयी (ब) डॉ. नगेन्द्र
(स) रामचन्द्र शुक्ल (द) कॉलरिज

उत्तर- (स) रामचन्द्र शुक्ल

कथनः ''काव्य की पूर्ण अनुभूति के लिए कल्पना का व्यापार कवि और श्रोता दोनों के लिए अनिवार्य है।'' **-आलोचकः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**

यह प्रसिद्ध कथन हिंदी के मूर्धन्य आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल का है। उन्होंने अपने आलोचनात्मक निबंधों (विशेषकर 'रस मीमांसा' और 'चिंतामणि' के अंतर्गत) में स्पष्ट किया है कि काव्य का आस्वादन या उसकी पूर्ण अनुभूति केवल कवि की कल्पना पर निर्भर नहीं होती, बल्कि पाठक या श्रोता को भी अपने भीतर उसी स्तर पर कल्पना का व्यापार जाग्रत करना अनिवार्य होता है। शुक्ल जी ने इसके तहत कल्पना के दो रूप भी बताए हैं- विधायिका (कवि के लिए) और ग्राहिका (श्रोता/पाठक के लिए)।

77. निम्नलिखित में से कौन रूपवाद से सम्बन्धित नहीं है?

(अ) रेमंड विलियम्स (ब) तानिनोव
(स) विस्टर स्केलोवस्की (द) बोरिस तोयस्जेवस्की

उत्तर- (अ) रेमंड विलियम्स

रेमंड विलियम्स रूपवाद से संबंधित नहीं हैं, बल्कि वे मार्क्सवादी आलोचना और सांस्कृतिक भौतिकवाद के प्रमुख विचारक हैं।

इन्होंने संस्कृति और साहित्य को समाज और इतिहास के संदर्भ में देखा, न कि केवल उसके रूप के आधार पर।

अन्य तीनों विचारक कृतानिनोव, विक्टर श्कलोव्स्की और बोरिस तोमाशेव्स्की- रूसी रूपवाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं।

रूसी रूपवाद- यह 20वीं सदी की शुरुआत का एक साहित्यिक आंदोलन था, जो किसी रचना के बाहरी संदर्भों (जैसे लेखक की जीवनी या सामाजिक स्थिति) की अपेक्षा उसकी आंतरिक बनावट, भाषा और शिल्प (रूप) पर ध्यान केंद्रित करता था।

78. प्लेटो ने काव्य के कौनसे भेद स्वीकार किए हैं?

(1) अनुकरणात्मक - प्रहसन और दुःखांतक (नाटक)
(2) वर्णनात्मक - डिथिंब (प्रगीत)
(3) मिश्र - महाकाव्य (जैसे होमर, इलियट / ओडेसी)
सही विकल्प का चयन कीजिएः

(अ) केवल 1, 2 (ब) केवल 2, 3
(स) केवल 1, 3 (द) 1, 2, 3 तीनों

उत्तर- (द) 1, 2, 3 तीनों

प्लेटो ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'रिपब्लिक' में रूप और शैली की दृष्टि से काव्य के तीन भेद स्वीकार किए हैंः

1. **अनुकरणात्मकः** इसके अंतर्गत प्रहसन और दुःखांतक (नाटक) आते हैं।
2. **वर्णनात्मकः** इसके अंतर्गत डिथिरैंब (डिथीटैंब / प्रगीत / लिरिकल कविता) आता है।
3. **मिश्रः** इसके अंतर्गत महाकाव्य (जैसे होमर कृत इलियट और ओडिसी) आते हैं।

79. 'मेरे विद्यापीठ के दो भाग हैं- एक है शरीर और दूसरा मस्तिष्क, अन्य सभी छात्र शरीर हैं और अरस्तू मस्तिष्क है।'' यह कथन किस पाश्चात्य दार्शनिक का है?

(अ) प्लेटो (ब) हेरमियास
(स) होमर (द) सुकरात

उत्तर- (अ) प्लेटो

यह प्रसिद्ध कथन यूनानी (पाश्चात्य) दार्शनिक प्लेटो का है, जो उन्होंने अपने शिष्य अरस्तू के लिए कहा था। प्लेटो अरस्तू को अपनी अकादमी (विद्यापीठ) का सबसे मेधावी और बुद्धिमान छात्र मानते थे।

80. निर्वैयक्तिकता के संदर्भ में टी.एस. इलियट किसके विचारों से प्रभावित थे?

(अ) क्रिस्टोफर कॉडवेल (ब) एजरा पाउण्ड
(स) टिलियर्ड (द) किर्केगार्ड

उत्तर- (ब) एजरा पाउण्ड

निर्वैयक्तिकता के सिद्धांत के संदर्भ में टी.एस. इलियट, एजरा पाउण्ड के विचारों से काफी प्रभावित थे। एजरा पाउण्ड की यह मान्यता थी कि कवि

एक वैज्ञानिक के समान ही निर्वैयक्तिक और वस्तुनिष्ठ होता है और उसका कार्य आत्मनिरपेक्ष होता है। इसी मत को आधार बनाकर इलियट ने रोमैंटिक कवियों की व्यक्तिवादिता का विरोध करते हुए अपने 'निर्वैयक्तिकता के सिद्धांत' का प्रतिपादन किया।

81. लल्लूलाल जी कृत 'प्रेमसागर' किस रूप में लिखित है?

(अ) ब्रजभाषा में (ब) खड़ी बोली पद्य में
(स) खड़ी बोली गद्य में (द) अवधी मिश्रित गद्य में

उत्तर- (स) खड़ी बोली गद्य में

लल्लूलाल जी कृत **'प्रेमसागर'** खड़ी बोली गद्य के रूप में लिखित है।

- **रचना-** प्रेमसागर
- **लेखक**-लल्लूलाल जी (फोर्ट विलयिम कॉलेज के भाषा मुंशी)
- **विधा व भाषा-** खड़ी बोली गद्य (इसकी भाषा पर ब्रजभाषा का प्रभाव भी देखने को मिलता है, लेकिन मुख्य रूप से इसे आधुनिक खड़ी बोली गद्य के शुरुआती ग्रंथों में गिना जाता है)।
- **रचना काल-** सन 1803 से 1810 के बीच (जॉन गिलक्राइस्ट की प्रेरणा से फोर्ट विलियम कॉलेज के विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए इसकी रचना की गई थी)।
- **प्रकाशन-** सन 1810 ई. में 'संस्कृत मंत्रालय, कलकत्ता' से प्रकाशित हुई।
- **विषय-वस्तु-** यह श्रीमद्भागवत पुराण के दशम स्कंध पर आधारित है, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण की जन्म-लीलाओं, बाल्यावस्था, गोकुल-वृंदावन की लीलाओं, रासक्रीड़ा और कंस वध आदि का वर्णन है (इसमें कुल 90 अध्याय हैं)।

82. 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' किसकी पुस्तक है?

(अ) क्षमा शर्मा (ब) प्रभा खेतान
(स) नासिरा शर्मा (द) सुमन राजे

उत्तर- (द) सुमन राजे

- 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' डॉ. सुमन राजे की पुस्तक है।
- यह पुस्तक वर्ष 2003 में प्रकाशित हुई थी।
- इसमें इतिहास लेखन में महिलाओं के योगदान और उनकी उपेक्षा को केंद्र में रखकर हिंदी साहित्य के इतिहास को एक नए नजरिए से प्रस्तुत किया गया है।

पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ-

- **स्त्री-दृष्टिकोणः** इस पुस्तक में वैदिक ऋषिकाओं, बौद्ध थेरियों, प्राकृत गाथाकारों, संस्कृत कवयित्रियों तथा भक्त और संत महिलाओं के योगदान को केंद्र में रखा गया है।
- **लोकगीतों का महत्वः** इसमें पहली बार लोकगीतों को स्त्री-लेखन का साक्ष्य मानकर इतिहास में दर्ज किया गया है।
- **पुनर्विचार का प्रस्तावः** यह पुस्तक पारंपरिक इतिहास-लेखन के पूर्वाग्रहों को चुनौती देती है और संपूर्ण हिंदी साहित्य के पुनर्लेखन का प्रस्ताव करती है।

83. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी के किन गद्यकारों को अंग्रेजी गद्य साहित्य के एडीसन और स्टील के समान माना है?

(अ) प्रताप नारायण मिश्र और बालकृष्ण भट्ट
(ब) महावीर प्रसाद द्विवेदी और बालमुकुंद गुप्त
(स) महावीर प्रसाद द्विवेदी और चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'
(द) सरदार पूर्णसिंह और बालमुकुंद गुप्त

उत्तर- (अ) प्रताप नारायण मिश्र और बालकृष्ण भट्ट

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रताप नारायण मिश्र को 'एडीसन' और बालकृष्ण भट्ट को 'स्टील' के समान माना है।

- **बालकृष्ण भट्ट-** हिन्दी का 'स्टील'
- **प्रताप नारायण मिश्र-** हिन्दी का 'एडीसन'

84. 'हिंदी नई चाल में ढली' इसका उल्लेख 'कालचक्र' नाम की पुस्तक में कब किया गया?

(अ) सन् 1870 ई. (ब) सन् 1873 ई.
(स) सन् 1880 ई. (द) सन् 1885 ई.

उत्तर- (ब) सन् 1873 ई.

भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अपनी पुस्तक 'कालचक्र' में इसका उल्लेख किया था।

- **विषय-वस्तु-** इसमें संसार की प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं और उनका समय निर्धारित किया गया है। इसमें श्री राम, युधिष्ठिर, सिकंदर के आक्रमण और कर्बला के युद्ध जैसी महत्वपूर्ण घटनाओं का काल-निर्णय किया गया है।
- **ऐतिहासिक महत्व-** इसी पुस्तक में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने यह ऐतिहासिक घोषणा की थी कि **'हिंदी नई चाल में ढली- 1873 ई.'** (अर्थात् सन 1873 से हिंदी गद्य या नई चाल का आरंभ माना जाता है)।

85. निम्नलिखित में से कौन 'मनोविश्लेषणवाद' से सम्बन्धित नहीं है?

(अ) फ्रायड (ब) युंग
(स) कॉडवेल (द) एडलर

उत्तर- (स) कॉडवेल

सिगमंड फ्रायड, कार्ल युंग, और अल्फ्रेड एडलर मनोविश्लेषणवाद और मनोविज्ञान के क्षेत्र से गहराई से जुड़े हैं। फ्रायड को मनोविश्लेषणवाद का जनक माना जाता है, जबकि युंग और एडलर उनके प्रमुख सहयोगी और अनुगामी थे जिन्होंने बाद में अपने सिद्धांत (क्रमशः विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान और व्यक्तिगत मनोविज्ञान) विकसित किए।

क्रिस्टोफर कॉडवेल एक ब्रिटिश मार्क्सवादी लेखक, कवि और आलोचक थे। उनका संबंध मनोविश्लेषणवाद से नहीं, बल्कि मार्क्सवादी आलोचना और साहित्य से है।

86. 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र' किस लेखक की रचना है ?

(अ) कँवल भारती (ब) डॉ. तुलसीराम
(स) मोहनदास नैमिशराय (द) ओमप्रकाश वाल्मीकि

उत्तर- (द) ओमप्रकाश वाल्मीकि

दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र' ओमप्रकाश वाल्मीकि की रचना है।

- 'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र' पुस्तक में ओमप्रकाश वाल्मीकि ने वर्णन किया है कि किस प्रकार वर्ण व्यवस्था के अमानवीय बन्धनों ने शताब्दियों से दलितों के भीतर हीनता भाव को पुख्ता किया है। धर्म और संस्कृति की आड़ में साहित्य ने भी इस भावना की नींव सुदृढ़ की है। ऐसा सौन्दर्य शास्त्र का निर्माण किया गया जो अपनी सोच और स्थापनाओं में दलित विरोधी है और समाज के अनिवार्य अन्तर्सम्बन्धों को खंडित करने वाला भी ।
- जनवादी प्रगतिशील और राजतान्त्रिक साहित्य द्वारा भरत में केवल वर्ग की ही बात करने से उपजी एकांकी दृष्टि के विपरीत दलित साहित्य समाजिक समानता और राजनीतिक भागीदारी को भी साहित्य का विषय बनाकर आर्थिक समानता की मुहिम को पूरा करता है- ऐसी समानता जिसके बगैर मनुष्य पूर्ण समानता नहीं पा सकता।

• यह पुस्तक दलित साहित्य आन्दोलन की एक बड़ी कमी को पूरी करती हुई दलित-रचनात्मकता की कुछ मूलभूत आस्थाओं और प्रस्थान बिन्दुओं की खोज भी करती है, और साहित्य के स्थापित तथा सर्वस्वशाली गढ़ों को उन आस्थाओं के बल पर चुनौती देता है।

87. 'भारतमाता धरतीमाता' किस विचारक के सांस्कृतिक लेखों का संग्रह है?

(अ) डॉ. राममनोहर लोहिया (ब) डॉ. भीमराव अंबेडकर
(स) मोहनदास करमचंद गांधी (द) पडित मदन मोहन मालवीय

उत्तर- (अ) डॉ. राममनोहर लोहिया

• 'भारतमाताः धरतीमाता' प्रसिद्ध समाजवादी विचारक और चिंतक डॉ. राममनोहर लोहिया के सामाजिक और सांस्कृतिक (गैर-राजनीतिक) लेखों व भाषणों का संग्रह है। इस पुस्तक का संपादन ओंकार शरद ने किया था।
• डॉ. लोहिया मुख्य रूप से राजनेता थे और उनके व्यक्तित्व का वही पहलू अधिक प्रमुख होकर देश के सामने आया है, लेकिन देश की राजनीति के अलावा भी वे देश के, समाज के व्यक्ति के अन्य पहलुओं और समस्याओं पर कितनी गहरी दृष्टि रखते थे और उन पर कितना चिंतन करते थे। यह इन लेखों से स्पष्ट होता है। चाहे उनकी ख्याति एक राजनीतिक के रूप में रही हो, लेकिन वे भारतीय नर-नारी व भारतीय समाज के हर अंग पर दृष्टि रखते थे। उनका राजनीतिक से अधिक एक सांस्कृतिक सामाकि देशभक्त का सम्पूर्ण व्यक्तित्व था।
• इन संग्रह के सभी लेख मूल रूप से गैर राजनीतिक हैं, लेकिन कहीं-कहीं राजनीति की झलक जरूर दिख जाती है, वह लोहिया की मजबूरी थी।

88. निम्नलिखित में से किसका सम्बन्ध 'मूकनायक' पत्रिका से है ?

(अ) डॉ. भीमराव अंबेडकर (ब) महात्मा गांधी
(स) सुभाषचन्द्र बोस (द) डॉ. राममनोहर लोहिया

उत्तर-(अ) डॉ. भीमराव अंबेडकर

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने 31 जनवरी 1920 को इस साप्ताहिक पत्रिका की शुरुआत की थी, जिसका मुख्य उद्देश्य दलितों और शोषित वर्गों की आवाज को उठाना था।

'मूकनायक' (अर्थ- ''बेजुबानों का नेता'' या ''मूक लोगों का नायक'') मराठी भाषा का एक पाक्षिक समाचार पत्र था, जिसे 1920 में बी. आर. अंबेडकर ने प्रारम्भ किया था। इस समाचार पत्र का उद्देश्य समाज के दर्द और उसके भीतर पनप रहे विद्रोह को सामने लाना था। 'मूकनायक' का पहला अंक 31 जनवरी 1920 को प्रकाशित हुआ था। यह समाचार पत्र मुंबई से निकलता था। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने स्वयं इसके पहले अंक में 'मनोगत' शीर्षक से प्रस्तावना लिखी थी। उन्होंने इसके बाद के तेरह अंकों में भी लेख लिखे। कोल्हापुर के छत्रपति राजर्षि शाहू ने 'मूकनायक' के लिए 2500 रुपये की आर्थिक सहायता दी थी। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने 'मूकनायक' को मराठी भाषा में प्रकाशित किया था।

89. निम्नलिखित में से किस विचारक का सम्बन्ध 'अस्तित्ववाद' से है ?

(अ) रॉबर्ट पेन वारेन (ब) किर्केगार्ड
(स) क्लीन्थ ब्रुक्स (द) एलेन टेट

उत्तर- (ब) किर्केगार्ड

सोरेन किर्केगार्ड को आमतौर पर 'अस्तित्ववाद' का जनक या पहला विचारक माना जाता है। अन्य तीनों विचारक (रॉबर्ट पेन वारेन, क्लीन्थ ब्रुक्स और एलेन टेट) मुख्य रूप से अमेरिका की 'नई आलोचना' नामक साहित्यिक प्रवृत्ति से जुड़े हैं।

उनका अस्तित्ववाद मुख्य रूप से व्यक्तिगत स्वतंत्रता, प्रामाणिकता और व्यक्तिपरक सत्य पर केंद्रित है। किर्केगार्ड के अनुसार, जीवन का असली सत्य किताबी ज्ञान, विज्ञान या वस्तुनिष्ठ तर्कों में नहीं होता, बल्कि यह व्यक्ति के अपने भीतर के अनुभव, भावनाओं और गहरी आस्था में होता है।

90. किस लेखक ने 'भुजंग भूषण भट्टाचार्य' के छद्म नाम से 'कवियों की उर्मिला विषयक 'उदासीनता' नामक लेख लिखा था?

(अ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ब) बालमुकुंद गुप्त
(स) महावीर प्रसाद द्विवेदी (द) चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'

उत्तर- (स) महावीर प्रसाद द्विवेदी

'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' नामक लेख महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'भुजंग भूषण भट्टाचार्य' के छद्म नाम से लिखा था। यह लेख वर्ष 1908 में प्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित हुआ था। इसी लेख से प्रेरणा लेकर आगे चलकर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने प्रसिद्ध महाकाव्य 'साकेत' की रचना की थी।

इस निबंध में द्विवेदी जी ने संस्कृत और हिंदी के महान कवियों द्वारा रामकथा में 'उर्मिला' की उपेक्षा किए जाने पर गहरी नाराजगी और चिंता व्यक्त की है। उनका उद्देश्य उर्मिला के त्याग और बलिदान को सामने लाना था, जो सीता से किसी भी रूप में कम नहीं था।

द्विवेदी जी ने आदि कवि वाल्मीकि और गोस्वामी तुलसीदास पर यह आरोप लगाया कि उन्होंने जनकपुर से अयोध्या आने के बाद 14 साल तक वियोगिनी उर्मिला को लगभग भुला दिया।

91. निम्नलिखित में से 'कामायनी' के क्रमागत सर्गों का सही अनुक्रम हैः

(अ) कर्म, काम, वासना, लज्जा (ब) काम, वासना, लज्जा, कर्म
(स) वासना, लज्जा, काम, कर्म (द) लज्जा, वासना, कर्म, काम

उत्तर- (ब) काम, वासना, लज्जा, कर्म

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य 'कामायनी' में कुल 15 सर्ग हैं। इन सर्गों का क्रमिक अनुक्रम इस प्रकार हैः 1. चिंता 2. आशा 3. श्रद्धा 4. काम (चौथा सर्ग) 5. वासना (पांचवां सर्ग) 6. लज्जा (छठा सर्ग) 7.कर्म (सातवां सर्ग) 8. ईर्ष्या 9. इड़ा 10.स्वप्न 11. संघर्ष 12. निर्वेद 13. दर्शन 14.रहस्य 15. आनंद

92. ''मैं नीर भरी दुःख की बदली'- महादेवी वर्मा का यह गीत इनमें से उनके किस काव्यसंग्रह में संकलित है?

(अ) 'दीपशिखा' में (ब) 'नीरजा' में
(स) 'रश्मि' में (द) 'सान्ध्यगीत' में

उत्तर- (द) 'सान्ध्यगीत' में

महादेवी वर्मा का यह गीत 'सान्ध्यगीत' में संकलित है।

कविता का मूल भाव और अर्थ-

• **प्रतीकात्मक रूप-** इस कविता में महादेवी वर्मा ने स्वयं की तुलना और सम्पूर्ण नारी-वेदना को जल से भरी एक 'बदली' (बादल) के माध्यम से व्यक्त किया है।

- **वेदना और करुणा**- जिस प्रकार आकाश में काले बादल जल (आंसुओं) को लेकर घूमते हैं और बरसकर मिट जाते हैं, उसी प्रकार कवयित्री के जीवन में भी असीम दुख, करुणा और विरह भरा हुआ है।
- **परोपकार और नश्वरताः** बदली जिस तरह धरती के रज-कण पर बरसकर नए अंकुर को जीवन देती है और स्वयं विलीन हो जाती है, वैसे ही मानव जीवन और विशेषकर स्त्री का जीवन भी त्याग और क्षणभंगुरता का प्रतीक है।

93. भवानीप्रसाद मिश्र कृत निम्नलिखित पंक्तियों को, कविता में लिखे के अनुसार, पहले से बाद के क्रम में लगाइए।

(1) जी, यह मसान में भूख जगाता है,
(2) यह गीत पिया को पास बुलाएगा!
(3) यह सोच-सोचकर भर जाने का गीत,
(4) यह गीत पहाड़ी पर चढ़ जाता है,
नीचे दिए गये विकल्पों में से सही उत्तर हैः

(अ) 3, 1, 4, 2 (ब) 4, 3, 2, 1
(स) 2, 4, 1, 3 (द) 2, 3, 1, 4

उत्तर- (स) 2, 4, 1, 3

भवानीप्रसाद मिश्र की कविता 'गीत-फरोश' की दी गई पंक्तियों का सही अनुक्रम इस प्रकार हैः (2) यह गीत पिया को पास बुलाएगा !, (4) यह गीत पहाड़ी पर चढ़ जाता है, (1) जी, यह मसान में भूख जगाता है, तथा (3) यह सोच-सोचकर भर जाने का गीत।

94. निम्नलिखित में से किस कृति की रचना 'मुसद्दसे हाली' की प्रतिक्रिया में हुई?

(अ) 'भारत-भारती' की (ब) शासन की बंदूक' की
(स) 'प्रियप्रवास' की (द) 'जागो फिर एक बार' की

उत्तर- (अ) 'भारत-भारती' की

'भारत-भारती' राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित एक अत्यंत प्रसिद्ध काव्यकृति है, जिसका प्रकाशन सन 1912-13 में हुआ था।
उर्दू के प्रसिद्ध कवि मौलाना अल्ताफ हुसैन 'हाली' ने वर्ष 1879 में मुस्लिम समाज की दुर्दशा और अतीत के गौरव को रेखांकित करते हुए 'मुसद्दस-ए-हाली' (मुसद्दस मद-ओ-जज्र-ए-इस्लाम) की रचना की थी। इसी रचना की प्रतिक्रिया और प्रेरणा स्वरूप मैथिलीशरण गुप्त ने संपूर्ण हिंदू समाज व देश की तत्कालीन स्थिति, अतीत और भविष्य को केंद्र में रखकर **'भारत-भारती'** ग्रंथ लिखा। स्वयं गुप्त जी ने इसकी प्रस्तावना में **'मुसद्दस'** का उल्लेख किया है।

95. 'उर्वशी' काव्यकृति के तृतीय अंक के प्रारम्भ में इनमें से किस 'पर्वत' का उल्लेख हुआ है?

(अ) 'रामगिरि' (ब) 'गन्धमादन'
(स) 'आम्रकूट' (द) 'मैनाक'

उत्तर- (ब) 'गन्धमादन'

रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित प्रसिद्ध गीतिनाट्य 'उर्वशी' के तृतीय अंक का प्रारम्भ गन्धमादन पर्वत की पृष्ठभूमि से होता है। इस अंक के शुरुआत में महाराज पुरूरवा और अप्सरा उर्वशी गन्धमादन पर्वत पर उपस्थित रहकर परस्पर प्रेम, देह, आत्मा और काम-अध्यात्म के गूढ़ विषयों पर संवाद करते हैं।

- **विषय-** इसमें राजा पुरुरवा और अप्सरा उर्वशी का संवाद होता है। उर्वशी पुरुरवा से कहती है- ''हे पुरुरवा! तुम अपने घर को लौट जाओ, मैं वायु के समान दुष्प्राप्य (कठिनता से मिलने वाली) हूँ।''
- **मूल भाव-** इस अंक में मानव और देवलोक के आपसी संबंध, दैहिक प्रेम से ऊपर उठकर आत्मिक एवं आध्यात्मिक प्रेम की गहनता का चित्रण किया गया है।

96. 'प्रकाशन वर्ष' के 'अनुसार 'अज्ञेय' की निम्नलिखित काव्यकृतियों का इनमें से सही क्रम हैः

(अ) 'हरी घास पर क्षण भर', 'इन्द्रधनु रौंदे हुए ये', 'बावरा अहेरी', 'आँगन के पार द्वार'
(ब) 'इन्द्रधनु रौंदे हुए ये', 'हरी घास पर क्षण भर' 'बावरा अहेरी', 'आँगन के पार द्वार'
(स) 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी', 'आँगन के पार द्वार', 'इन्द्रधनु रौंदे हुए ये'
(द) 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी', 'इन्द्रधनु रौंदे हुए ये', 'आँगन के पार द्वार'

उत्तर- (द) 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी', 'इन्द्रधनु रौंदे हुए ये', 'आँगन के पार द्वार'

इन काव्यकृतियों का प्रकाशन वर्ष इस प्रकार है-

- **'हरी घास पर क्षण भर'(1949 ईस्वी)-** यह कविता प्रकृति के सान्निध्य में कुछ पल बिताने और आधुनिक भागदौड़ भरी व बनावटी शहरी जिंदगी से मुक्ति पाने की चाह को दर्शाती है।
- **'बावरा अहेरी' (1954 ईस्वी)- 'बावरा अहेरी'** का अर्थः **'बावरा'** का अर्थ पागल या भोला-भाला और 'अहेरी' का अर्थ शिकारी है। इस कविता में सूर्य को एक 'बावरे अहेरी' (पागल शिकारी) के रूप में दर्शाया गया है।
- **'इन्द्रधनु रौंदे हुए ये'(1957 ईस्वी)-** इस संग्रह की कविताओं में प्रेमानुभूति, प्रकृति, जीवन दर्शन और व्यंग्य का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। अज्ञेय की कविताओं में आधुनिक जीवन की जटिलताओं,अंतरंग क्षणों की वेदना और मानवीय प्रवृत्तियों पर गहरा तंज कसा गया है।
- **'आँगन के पार द्वार' (1961 ईस्वी)-** यह काव्य-संग्रह आधुनिक हिंदी कविता और 'नई कविता' आंदोलन की एक अत्यंत प्रौढ़ उपलब्धि माना जाता है। इसमें मानव जीवन के आंतरिक यथार्थ, क्षण की अनुभूतियों, मौन, प्रकृति और विराट चेतना के साथ मनुष्य के जुड़ाव को बहुत ही गहराई से प्रस्तुत किया गया है।

97. ''जिन्ह घर कन्ता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्व।
कन्त पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व।।''
यह दोहा जायसी कृत 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग खण्ड' के किस मास के वर्णन के अन्त में आया है?

(अ) 'सावन' (ब) 'फागुन'
(स) 'अषाढ़' (द) 'माघ'

उत्तर- (स) अषाढ़

यह दोहा मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा रचित महाकाव्य पद्मावत के नागमती वियोग खण्ड के **'असाढ़'** मास के वर्णन के अंत में आता है। इस अंश में आषाढ़ मास के आगमन पर आकाश में उमड़ते-घुमड़ते बादलों और विरह की पीड़ा का वर्णन है।

मलिक मुहम्मद जायसी की प्रसिद्ध रचना 'पद्मावत' का 'नागमती वियोग खंड' हिंदी साहित्य में विरह-वर्णन (प्रेम और बिछोह) का सर्वोच्च और अत्यंत मर्मस्पर्शी उदाहरण माना जाता है।

कथानक-जब राजा रत्नसेन सिंहलद्वीप जाकर पद्मावती से विवाह करके चित्तौड़ लौटते हैं, तो उनकी पहली पत्नी नागमती राजा के वियोग में अकेली तड़पती है। राजा का पद्मावती के प्रति आसक्त होना और नागमती का उपेक्षित होना इस विरह की नींव बनता है।

98. 'रेवा तट' चंदबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' का कौनसा 'समय' है?

(अ) 27वाँ (ब) 24वाँ
(स) 26वाँ (द) 28वाँ

उत्तर- (अ) 27वाँ सर्ग

पृथ्वीराज रासो में 'रेवा तट' 27वाँ सर्ग (जिसे 'समय' कहा जाता है) है।

रेवा तट सर्ग से जुड़ी मुख्य बातें-

- **रचयिता-** यह महाकव्य चंदबरदाई द्वारा रचित है।
- **कुल सर्ग-** पृथ्वीराज रासो में कुल 69 सर्ग (समय) हैं, जिनमें 'रेवा तट' 27वें स्थान पर आता है।
- **कथा का सार-** इसमें दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान और शहाबुद्दीन मोहम्मद गोरी के बीच नर्मदा (रेवा) नदी के तट पर हुए युद्ध और संघर्ष का वर्णन है।
- **प्रेरणा-** सेनापति चामंड राय के कहने पर पृथ्वीराज चौहान रेवा तट पर शिकार खेलने जाते हैं, जहाँ गोरी आक्रमण करता है लेकिन पृथ्वीराज उसे हराकर बंदी बना लेते हैं।

99. 'दिवस का अवसान समीप था।
गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु शिखा पर थी अवराजती।
कमलिनी-कुल-बल्लभ की प्रभा।।
इन काव्यपंक्तियों में प्रयुक्त 'छन्द' हैं:

(अ) 'वसंततिलका' (ब) 'द्रुतविलम्बित'
(स) 'वंशस्थ' (द) "उपेन्द्रवज्रा'

उत्तर- (ब) 'द्रुतविलम्बित'

- **छंद का प्रकार-** द्रुतविलम्बित एक वर्णिक समवृत्त छंद है।
- **वर्ण संख्या-** इसके प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं।
- **गण क्रम-** नगण, भगण, भगण और रगण (न-भ-भ-र)।
- **विशेषता-** ये पंक्तियाँ अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के प्रसिद्ध महाकाव्य 'प्रियप्रवास' (1914) के प्रथम सर्ग से ली गई हैं।

100. ''नीर-सनेही कों लाय कलंक निरास वै कायर त्यागत प्रानै।'' इस काव्यपंक्ति के रचयिता हैं:

(अ) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (ब) तुलसीदास
(स) भिखारीदास (द) घनानन्द

उत्तर- (द) घनानन्द

यह प्रसिद्ध काव्यपंक्ति रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि घनानंद की रचना (उनकी 'सुजान हित' / घनानंद ग्रंथावली) से ली गई है।

विषय-वस्तु: इसमें प्रेमिका 'सुजान' के प्रति गाढ़ प्रेम, सौंदर्य (रूप-वर्णन), और विरह (वियोग) की वेदना का अत्यंत जीवंत और मार्मिक चित्रण किया गया है। बाद में यह लौकिक प्रेम कृष्ण के प्रति अलौकिक और भक्तपरक रूप में भी प्रगट होता है।

पूरी पंक्ति इस प्रकार है:

''हीन भएँ जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि-समानै।
नीर-सनेही कों लाय कलंक, निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै।।''

101. 'देवरानी जेठानी की कहानी' उपन्यास में कथानक के केन्द्र में किस शहर का वर्णन है?

(अ) मेरठ (ब) आजमगढ़
(स) गाजीपुर (द) मिर्जापुर

उत्तर- (अ) मेरठ

देवरानी जेठानी की कहानी उपन्यास के कथानक के केंद्र में मेरठ शहर का वर्णन है। पंडित गौरीदत्त द्वारा सन् 1870 में रचित इस उपन्यास की पृष्ठभूमि मेरठ और उसके आस-पास के क्षेत्रों पर आधारित है, जिसमें एक बनिया परिवार की कथा के माध्यम से तत्कालीन समाज, बाल-विवाह, स्त्री शिक्षा और पारिवारिक जीवन को दर्शाया गया है।

यह उपन्यास एक संयुक्त परिवार की कहानी है। इसमें दो बहुओं- देवरानी (आनंदी) और जेठानी (ज्ञानो) के स्वभाव और उनके जीवन के अंतर को बहुत ही सरल भाषा में दिखाया गया है।

- **अनपढ़ जेठानी (ज्ञानो)-** अशिक्षा, अहंकार और समझ की कमी के कारण घर में हमेशा कलह, ईर्ष्या और अशांति का माहौल रखती है।
- **शिक्षित देवरानी (आनंदी)-** अपनी समझदारी, शिष्टाचार और शिक्षा के बल पर घर-परिवार को संभालती है, बच्चों का सही पालन-पोषण करती है और परिवार में सुख-शांति लाती है।
- इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने यह संदेश देने का प्रयास किया है कि स्त्री शिक्षा कितनी आवश्यक है, क्योंकि एक शिक्षित महिला न सिर्फ अपना बल्कि पूरे परिवार का उद्धार कर सकती है।

102. ''मेहरिया रख लेना पाप नहीं, हाँ, रख के छोड़ देना पाप है।'' 'गोदान' उपन्यास में यह कथन कौन किससे कहता है?

(अ) होरी धनिया से (ब) धनिया होरी से
(स) धनिया दातादीन से (द) झुनिया गोबर से

उत्तर- (ब) धनिया होरी से

मुंशी प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' में यह कथन धनिया अपने पति होरी से कहती है।

जब झुनिया (भोला की बेटी, जो गोबर के साथ आ गई थी) को घर में रखने को लेकर समाज और बिरादरी के डर से होरी घबराता है और धनिया पर झुनिया को घर से निकालने का दबाव डालता है, तब धनिया उत्तेजित होकर होरी से यह बात कहती है।

103. ''..... ने दो आजाद देशों की, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की ईमानदारी को इंसानियत को, बस दो डेग में ही नाप लिया।'' 'मैला आँचल' उपन्यास में उल्लेखित इस कथन के रिक्त स्थान की सार्थक पूर्ति हेतु सही विकल्प का चयन कीजिए।

(अ) बालदेव (ब) कालीचरन
(स) तहसीलदार (द) बावन

उत्तर- (द) बावन

बावनदास- गांधीजी के अनन्य भक्त और एक समर्पित चरित्र हैं, जो अपनी आदर्शवादिता के लिए जाने जाते हैं। एक बौने कद के गाँधीवादी एवं निष्ठावान कार्यकर्ता, जो अपने आदर्शों के लिए जान दे देते हैं।

पूर्ण कथन: ''बावन ने दो आजाद देशों की, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की- ईमानदारी को, इंसानियत को, बस दो डेग में ही नाप लिया !''

104. ''इसमें फूल भी हैं शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चन्दन भी, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया।'' आत्म वक्तव्य की ये पंक्तियाँ किस उपन्यास के उपन्यासकार की हैं?

(अ) धरती धन न अपना (ब) मैला आँचल
(स) मानस का हंस (द) राग दरबारी

उत्तर- (ब) मैला आँचल

ये प्रसिद्ध पंक्तियाँ फणीश्वरनाथ 'रेणु' द्वारा लिखित प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' के 'आत्म-वक्तव्य' (भूमिका) से ली गई हैं।
यह (भूमिका) हिंदी साहित्य की सबसे चर्चित और महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक है। इसमें लेखक ने उपन्यास के उद्देश्य, उसकी पृष्ठभूमि और अपनी लेखन दृष्टि को बहुत ही संक्षेप लेकिन प्रभावी ढंग से स्पष्ट किया है। ''फूल भी हैं, शूल भी...'' कहकर लेखक यह साफ करते हैं कि उन्होंने समाज को वैसा ही दिखाया है जैसा वह वास्तव में है। उन्होंने ग्रामीण जीवन की अच्छाइयों (चंदन, गुलाब) को दिखाने के लिए उसकी बुराइयों, गरीबी और पिछड़ेपन (कीचड़, धूल) से आँखें नहीं मूंदीं।

105. ''पुरुष स्त्री को शक्ति समझकर ही पूर्ण हो सकता है, पर स्त्री, स्त्री को शक्ति समझकर अधूरी रह जाती है।'' 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास में यह कथन किसका है?

(अ) बाबा (ब) आनंद भैरव
(स) महामाया (द) विरतिवज्रा

उत्तर- (स) महामाया

'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास (लेखकः आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी) में यह कथन महामाया का है।
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के ऐतिहासिक उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में महामाया (जिसे 'चंडमंडना महामाया' या महामाया भैरवी भी कहा गया है) एक अत्यंत सशक्त और महत्वपूर्ण गौण/काल्पनिक पात्र हैं। उपन्यास में उनके चरित्र और भूमिका के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं-

- **भैरवी स्वरूप और संगठन-** महामाया गेरिक वस्त्र धारण करने वाली भैरवियों के एक दल का नेतृत्व करती हैं और पूरे देश में घूम-घूमकर युवा शक्ति एवं नारियों को जगाने का कार्य करती हैं।
- **अपहृता कन्या की पृष्ठभूमि-** महामाया स्वयं भी एक अपहृता कन्या थीं, जिनका धूर्तों ने सम्राट ग्रह वर्मा के साथ विवाह करवा दिया था। अपहरण से पूर्व उनका वाग्दान कहीं और हो चुका था।

106. ''निस्संदेह ! मित्रता ऐसी ही चीज है पर जो 'लोग प्रीति का सुख नहीं जानते वह किसी तरह इसका भेद नहीं समझ सकते'' 'परीक्षा-गुरु' उपन्यास में इस कथन के वक्ता कौन हैं?

(अ) लाला हरदयाल (ब) लाला मदनमोहन
(स) लाला ब्रजकिशोर (द) मास्टर शिंभूदयाल

उत्तर- (स) लाला ब्रजकिशोर

यह कथन लाला श्रीनिवास दास के प्रसिद्ध उपन्यास 'परीक्षा-गुरु' के पात्र लाला ब्रजकिशोर का है। परीक्षा-गुरू हिन्दी का प्रथम उपन्यास था जिसकी रचना भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध नाटककार लाला श्रीनिवास दास ने 25 नवम्बर,1882 को की थी। अपने उपन्यास में उन्होंने मदनमोहन नामक एक रईस के पतन और फिर सुधार की कहानी सुनाई है।
लाला श्रीनिवास दास द्वारा रचित हिंदी के प्रथम मौलिक उपन्यास 'परीक्षा-गुरु' (1882) में लाला ब्रजकिशोर मुख्य नायक लाला मदनमोहन के सच्चे मित्र, मार्गदर्शक और एक बुद्धिमान वकील के रूप में चित्रित किए गए हैं।
जब मदनमोहन बुरी संगति, फिजूलखर्ची और चाटुकार मित्रों (जैसे मुंशी चुन्नीलाल, मास्टर शिंभूदयाल आदि) के चक्कर में फंसकर अपना सारा धन लुटा देता है और कर्ज में डूब जाता है, तब ब्रजकिशोर ही उसकी सही राह पर सहायता करते हैं।

107. ''हर बड़े राजनीतिज्ञ की तरह वे राजनीति से नफरत करते थे और राजनीतिज्ञों का मजाक उड़ाते थे।'' यह कथन 'राग दरबारी' में किसके लिए लिखा गया है?

(अ) वैद्यजी (ब) सनीचर
(स) रुप्पन बाबू (द) खन्ना मास्टर

उत्तर- (अ) वैद्यजी

यह कथन श्रीलाल शुक्ल के प्रसिद्ध व्यंग्य उपन्यास 'राग दरबारी' में वैद्यजी के लिए लिखा गया है। 'राग दरबारी' हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखा गया एक कालजयी और व्यंग्यात्मक उपन्यास है, जो 1968 में प्रकाशित हुआ था।

- **रचनाकार-** श्रीलाल शुक्ल
- **प्रकाशन वर्ष-** 1968 (साहित्य अकादमी पुरस्कार से 1969 में सम्मानित)
- **कथानक का केंद्र-** उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल स्थित एक काल्पनिक गाँव 'शिवपालगंज', जो पूरे भारतीय समाज और उसकी व्यवस्था का प्रतीक है।
- **कुल अध्यायः 3**5 परिच्छेद (अध्याय)

108. 'आपका बंटी' उपन्यास की भूमिका किस शीर्षक से लिखी गयी है?

(अ) जन्मपत्रीः बंटी की
(ब) बांकुरा की एक साँझ
(स) माँ और नये पिता के बीच एक बालक
(द) तीन निगाहों की एक तस्वीर

उत्तर- (अ) जन्मपत्रीः बंटी की

'आपका बंटी' उपन्यास की भूमिका 'जन्मपत्रीः बंटी की' शीर्षक से लिखी गई है। यह शीर्षक उपन्यास के मुख्य पात्र बंटी के जीवन और उसकी पहचान से संबंधित है।
मन्नू भंडारी के प्रसिद्ध उपन्यास 'आपका बंटी' का मुख्य पात्र बंटी (पूरा नामः अरूप बत्रा) एक आठ साल का मासूम बच्चा है। कहानी की शुरुआत में बंटी एक हंसमुख, बुद्धिमान, बागवानी और घरेलू कामों में रुचि रखने वाला बच्चा है। माता-पिता के आपसी अहंकार, अलगाव (तलाक) और पारिवारिक विघटन की त्रासदी का शिकार उसका जीवन बनता है।

109. कृष्णा सोबती के उपन्यास 'जिन्दगीनामा' पर कौनसी हिन्दी फिल्म बनी है?

(अ) खामोश पानी (ब) गदर! एक प्रेम कहानी
(स) वीर जारा (द) ट्रेन टू पाकिस्तान

उत्तर- (अ) खामोश पानी

प्रख्यात लेखिका कृष्णा सोबती के प्रसिद्ध उपन्यास **'जिंदगीनामा'** पर निर्देशक सबिहा सुमेर ने 'खामोश पानी' नामक फिल्म बनाई थी।

इस उपन्यास से जुड़ी मुख्य बातें नीचे दी गई हैं-

- **प्रकाशन वर्ष-** 1979 ई.
- **पुरस्कार-** वर्ष 1980 में इसके लिए प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया था।
- **कथानक और क्षेत्र-** इसमें 20वीं शताब्दी के शुरुआती 15-20 वर्षों के दौरान पंजाब के 'डेरा जट्टां' (शाहपुर) गाँव के जन-जीवन, सांझी संस्कृति, किसानों की समस्याओं और सूफी-लोक गीतों का जीवंत चित्रण किया गया है।
- **विशेषता-** इस उपन्यास की यह विशेषता है कि इसमें कोई एक पारंपरिक नायक या खलनायक नहीं है, बल्कि पूरा गाँव और वहाँ की साझा संस्कृति ही इसका मुख्य केंद्र है।
- **प्रमुख पात्र-** शाह जी-शाहनी, लाली शाह, काशी शाह, चाची महरी, राबिया और फतेह आदि।

110. निम्नलिखित उपन्यासों को प्रकाशन वर्ष के अनुसार व्यवस्थित कर सही विकल्प का चयन कीजिए।

(अ) **शेखरः** एक जीवनी (I), मैला आँचल, जिन्दगीनामा, धरती धन न अपना।

(ब) **मैला आँचल, शेखरः** एक जीवनी (I), जिंदगीनामा, धरती धन न अपना।

(स) **शेखरः** एक जीवनी (I), मैला आँचल, धरती धन न अपना, जिंदगीनामा।

(द) **मैला आँचल, जिंदगीनामा, शेखरः** एक जीवनी (I), धरती धन न अपना।

उत्तर- (स) शेखरः एक जीवनी (I), मैला आँचल, धरती धन न अपना, जिंदगीनामा

इन उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम और विवरण इस प्रकार हैः

उपन्यास	लेखक	प्रकाशन वर्ष
शेखरः एक जीवनी (भाग-I)	अज्ञेय	1940 ई.
मैला आँचल	फणीश्वरनाथ 'रेणु'	1954 ई.
धरती धन न अपना	जगदीश चन्द्र	1972 ई.
जिन्दगीनामा	कृष्णा सोबती	1979 ई.

111. कालक्रम की दृष्टि से निम्नलिखित कहानियों का सही क्रम बताइएः

(अ) दुलाईवाली- कानों में कंगना- ईदगाह- एक टोकरी भर मिट्टी

(ब) एक टोकरी भर मिट्टी- दुलाईवाली- ईदगाह, कानों में कंगना

(स) कानों में कंगना- दुलाईवाली- एक टोकरी भर मिट्टी- ईदगाह

(द) एक टोकरी भर मिट्टी- दुलाईवाली- कानों में कंगना- ईदगाह

उत्तर-(द) एक टोकरी भर मिट्टी- दुलाईवाली- कानों में कंगना- ईदगाह

कहानियों का प्रकाशन वर्ष इस प्रकार हैः

- **एक टोकरी भर मिट्टी- 1901 ई. (लेखकः माधवराव सप्रे)**
  एक लालची और धन के घमंड में चूर जमींदार किसी गरीब अनाथ विधवा की झोंपड़ी पर वकीलों की सहायता से कानूनी तौर पर कब्जा कर लेता है। विधवा बेघर हो जाती है। जमींदार का अहंकार टूटता है और लज्जित होकर जमींदार हार मान लेता है। उसे अपने किए गए अन्याय और पाप का आभास होता है, वह क्षमा मांगता है और विधवा को उसकी झोंपड़ी वापस लौटा देता है।
- **दुलाईवाली- 1907 ई. (लेखिकाः बंग महिला / राजेन्द्र बाला घोष)**
  कहानी का आरंभ काशी (बनारस) के दशाश्वमेध घाट और गोदौलिया से होता है। वंशीधर अपनी पत्नी जानकी देई को उसके मायके से विदा कराने काशी आए हैं। वंशीधर को अपने ममेरे भाई और परम मित्र नवलकिशोर के साथ इलाहाबाद जाना है।
- स्टेशन जाते समय वंशीधर को अचानक याद आता है कि उन्होंने विदेशी (विलायती) धोती पहन रखी है। नवलकिशोर स्वदेशी आंदोलन के प्रबल समर्थक हैं और विदेशी वस्त्रों के सख्त विरोधी हैं। इस बात से वंशीधर थोड़े सहमे हुए हैं। ट्रेन में बैठने पर उन्हें एक औरत बैठी दिखाई देती है जिसने मोटे कपड़े की 'दुलाई' (चादर/घूँघट) ओढ़ रखी है। वह औरत बहुत दुखी है और रो रही है। वह बताती है कि उसका पति उसे बिना टिकट छोड़कर कहीं चला गया है। एक सज्जन और दयालु स्वभाव के होने के नाते वंशीधर उस रोती हुई औरत की सहायता करने की सोचते हैं। वंशीधर उस औरत के पति को खोजने में लग जाते हैं। जब वंशीधर लौटकर आते हैं, तो उन्हें पता चलता है कि वह 'दुलाईवाली' कोई और नहीं, बल्कि उनका मित्र नवलकिशोर ही है।
- **कानों में कंगना-1913 ई. (लेखकः राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह)**
  नरेंद्र के पिता उसे शिक्षा प्राप्त करने के लिए अपने मित्र और धर्मशास्त्र के ज्ञाता योगीश्वर के पास ऋषिकेश के समीप एक वन में भेजते हैं। शिक्षा पूरी होने के बाद, नरेंद्र का विवाह योगीश्वर की सरल और भोली-भाली पुत्री किरण के साथ हो जाता है।
  विवाह के बाद एक दिन नरेंद्र देखता है कि किरण ने हाथों में पहने जाने वाले कंगन अपने कानों में पहन रखे हैं। यह दृश्य नरेंद्र के मन में गहरी छाप छोड़ता है।
- नरेंद्र एक दिन मुरादाबाद में मोहन के यहाँ नृत्य देखने जाता है। वहाँ वह 'किन्नरी' नामक नर्तकी के सौंदर्य और आकर्षण में इतना डूब जाता है कि उसके प्रेम में अपना सारा धन, विवेक और धर्म तक त्याग देता है।
- किरण की मृत्यु के पश्चात जब नरेंद्र मृतप्राय किरण के पास पहुँचता है, तो उसकी दृष्टि उसके कानों पर जाती है जहाँ आज भी वही कंगन चमक रहे होते हैं। इस दृश्य को देखकर नरेंद्र का नशा उतरता है, उसे अपनी गलती का आभास होता है और उसके जीवन में केवल पश्चाताप तथा अंधकार शेष रह जाता है।
- **ईदगाह- 1933 ई. (लेखकः प्रेमचंद)**
  कहानी का मुख्य पात्र चार-पाँच साल का एक गरीब अनाथ बच्चा हामिद है, जो अपनी बूढ़ी दादी अमीना के साथ रहता है। हामिद के माता-पिता की पहले ही मृत्यु हो चुकी है। ईद के दिन गाँव के सभी बच्चे बहुत खुश हैं और ईदगाह जाने की तैयारी कर रहे हैं। अन्य बच्चों की जेब में बहुत सारे पैसे हैं, लेकिन अनाथ हामिद के पास केवल 3 पैसे (ईदी के रूप में मिले) हैं। उसके पास न तो नए जूते हैं और न ही अच्छे कपड़े।
- सभी बच्चे ईदगाह मेला जाते हैं। हामिद के दोस्त झूलों पर झूलते हैं और मिट्टी के खिलौने तथा मिठाइयाँ खरीदते हैं। हामिद को मेले में एक लोहे की दुकान पर उसे एक चिमटा दिखाई देता है। उसे याद आता है कि रोटी सेकते समय उसकी दादी अमीना की उंगलियां जल जाती हैं। वह 6 पैसे वाले चिमटे को 3 पैसे में मोलभाव करके खरीद लेता है।

- जब हामिद घर पहुँचकर अपनी दादी अमीना को चिमटा देता है, तो दादी पहले बहुत क्रोधित होती हैं जैसे ही हामिद बताता है कि 'रोटी सेकते समय आपकी उंगलियाँ जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे खरीदा', तो दादी का गुस्सा तुरंत प्रेम और करुणा में बदल जाता है।

112. 'परिन्दे' को नई कहानी की पहली कहानी मानने वाले आलोचक निम्नलिखित में से कौन हैं?

(अ) बच्चन सिंह (ब) नामवर सिंह
(स) मधुरेश (द) गोपाल राय

उत्तर- (ब) नामवर सिंह

प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह ने निर्मल वर्मा की कहानी 'परिन्दे' (1957 में 'हंस' पत्रिका में प्रकाशित) को हिंदी की 'नई कहानी' आंदोलन की पहली कहानी माना है।

प्रख्यात कथाकार निर्मल वर्मा की प्रसिद्ध कहानी 'परिन्दे' (प्रकाशन वर्षः 1956-1959) आधुनिक हिंदी साहित्य (नई कहानी आंदोलन) की एक मील का पत्थर और मनोवैज्ञानिक रचना है। यह कहानी मुख्य रूप से अकेलेपन, अलगाव, अतीत की स्मृतियों और मानवीय विडंबनाओं पर आधारित है।

113. निम्नलिखित में से किस कहानी में 'चम्पिया' नामक पात्र है?

(अ) लाल पान की बेगम (ब) राजा निरंबसिया
(स) तीसरी कसम (द) अपना-अपना भाग्य

उत्तर- (अ) लाल पान की बेगम

- 'लाल पान की बेगम' प्रसिद्ध आंचलिक कहानीकार फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित एक बहुत लोकप्रिय कहानी है।
- इस कहानी के मुख्य पात्रों में बिरजू, चम्पिया, बिरजू की माँ (लाल पान की बेगम) और बिरजू के पिता शामिल हैं। चम्पिया कहानी में बिरजू की बहन है।
- कहानी की मुख्य नायिका बिरजू की माँ हैं, जो एक स्वाभिमानी, जुझारू और स्पष्टवक्ता ग्रामीण महिला हैं।
- गाँव के नजदीक बलरामपुर में नाच (तमाशा) देखने का कार्यक्रम है। आस-पड़ोस की सभी औरतें और बच्चे बैलगाड़ी का प्रबंध करके नाच देखने जाने की तैयारी कर रहे हैं।
- जब बिरजू के पिता समय पर बैलगाड़ी और जोतने का प्रबंध नहीं कर पाते, तो बिरजू की माँ बेहद क्रोधित होती हैं और अपने पति तथा बच्चों पर खीझ उतारती हैं। अन्ततः बिरजू के पिता किसी तरह बैलगाड़ी का जुगाड़ कर लेते हैं और घर वालों को लेकर नाच देखने के लिए बैलगाड़ी से रात के समय यात्रा पर निकलते हैं।
- बैलगाड़ी पर सफर के दौरान बिरजू की माँ ने चमकीले बॉर्डर वाली लाल रंग की साड़ी और चाँदी का माँग-टीका पहन रखा है। पड़ोस की एक नवविवाहिता (जंगी की पुतोहू) उन्हें देखकर मन ही मन सोचती है कि वे तो सचमुच ताश की गड्डी की 'लाल पान की बेगम' जैसी लग रही हैं।

114. निम्नलिखित पात्रों को उनसे सम्बन्धित कहानियों से सुमेलित कीजिएः

(1) सुधीर (a) राही
(2) धुन्नीराम (b) पिता
(3) करीमुद्दीन (c) तीसरी कसम
(4) अनीता (d) परिन्दे

(अ) 1-b, 2-a, 3-d, 4-c (ब) 1-d, 2-a, 3-c, 4-b
(स) 1-b, 2-c, 3-d, 4-a (द) 1- a, 2-d, 3-b, 4-c

उत्तर- (स) 1-b, 2-c, 3-d, 4-a

प्रसिद्ध कहानीकार ज्ञानरंजन की कहानी 'पिता' (1965 में 'कहानी' पत्रिका में प्रकाशित) नई कहानी आंदोलन और वृद्ध-विमर्श की एक प्रतिनिधि रचना है। यह कहानी पुरानी और नई पीढ़ी की सोच, जीवन-शैली और उनके बीच मौजूद मनोवैज्ञानिक अंतर एवं द्वंद्व को बहुत ही संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करती है।

- **धुन्नीराम- तीसरी कसम (फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानी)**
  'तीसरी कसम' (मूल नाम-'मारे गए गुलफाम') प्रसिद्ध आंचलिक कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु की एक अत्यंत लोकप्रिय और संवेदनशील कहानी है, जो 1956 में उनके कहानी संग्रह 'ठुमरी' में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी सीधे-सादे बैलगाड़ीवान हीरामन और नौटंकी की नृत्यांगना हीराबाई के बीच विकसित होने वाले एक मासूम और पवित्र प्रेम तथा हीरामन द्वारा जीवन में ली जाने वाली तीन प्रतिज्ञाओं पर आधारित है।
- **करीमुद्दीन- परिन्दे (निर्मल वर्मा की कहानी)**
  'परिंदे' हिंदी के प्रसिद्ध कहानीकार निर्मल वर्मा की एक अति-संवेदनशील और मनोवैज्ञानिक कहानी है, जो 1956-59 के आस-पास प्रकाशित हुई। यह कहानी 'नई कहानी' आंदोलन की पहली मील का पत्थर मानी जाती है। कहानी की पृष्ठभूमि कुमाऊं की पहाड़ियों पर बसे एक शांत और सर्द पहाड़ी कस्बे (रानीखेत/कॉन्वेंट स्कूल) की है। सर्दियों की छुट्टियाँ होने वाली हैं और हॉस्टल धीरे-धीरे खाली हो रहा है। कहानी की केंद्रिय पात्र 'लतिका' है, जो उसी कॉन्वेंट स्कूल में वार्डन/अध्यापिका है। वह स्वयं को अपने पुराने दर्द और यादों से उबार नहीं पाई है और जीवन में आगे बढ़ने से डरती है।
- **अनीता- राही (सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानी)**
  सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखित 'राही' एक संवेदनशील और विचारोत्तेजक कहानी है। यह कहानी उनके तीसरे कहानी संग्रह 'सीधे-साधे चित्र' में संकलित है। कहानी की मुख्य पात्र राही मांगरोरी जाति की एक गरीब और असहाय महिला, जिसे अपने भूखे बच्चों का पेट भरने के लिए अनाज चुराने के जुर्म में एक साल की सजा हुई है।

115. 'उसने कहा था' कहानी की पृष्ठभूमि क्या है?

(अ) भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम
(ब) प्रथम विश्व युद्ध
(स) द्वितीय विश्व युद्ध
(द) भारत-चीन युद्ध

उत्तर- (ब) प्रथम विश्व युद्ध

यह प्रसिद्ध कहानी चंद्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखी गई है, जो वर्ष 1915 में 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।

कहानी की पृष्ठभूमि प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के समय की है, जिसमें भारतीय सैनिक अंग्रेजों की ओर से फ्रांस और बेल्जियम के मोर्चे पर जर्मन सेना के खिलाफ लड़ रहे थे।

कहानी का मुख्य पात्र लहना सिंह है, जो इस युद्ध में अपनी वीरता और सर्वोच्च बलिदान की कहानी पेश करता है।

116. निम्नलिखित में से कौनसा कथन सत्य नहीं है?

(अ) प्रेमचन्द की 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' कहानी उनके 'सोजे वतन' संग्रह में प्रकाशित हुई थी।

(ब) 'उसने कहा था ' चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की लिखी एकमात्र कहानी है।

(स) 'राजा निरबंसिया' कहानी में दोहरे कथा शिल्प का प्रयोग हुआ है।

(द) शेखर जोशी का पहला कहानी संग्रह 'कोसी का घटवार' 1958 ई. में प्रकाशित हुआ था।

उत्तर-(ब) 'उसने कहा था ' चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की लिखी एकमात्र कहानी है।

कथन (ब) सत्य नहीं हैः चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने केवल एक नहीं, बल्कि तीन प्रसिद्ध कहानियाँ लिखी हैंः

1.सुखमय जीवन (1911 ई.) 2.बुद्धू का काँटा (1915 ई.)

3.उसने कहा था (1915 ई.)

अन्य विकल्पों की सत्यताः

(अ) प्रेमचंद की 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' कहानी उनके पहले कहानी संग्रह 'सोजे वतन' (1908 ई.) में प्रकाशित हुई थी।

(स) कमलेश्वर की प्रसिद्ध कहानी 'राजा निरबंसिया' में लोककथा और आधुनिक यथार्थ के रूप में दोहरे कथा शिल्प का प्रयोग हुआ है।

(द) शेखर जोशी का पहला कहानी संग्रह 'कोसी का घटवार' वर्ष 1958 ई. में प्रकाशित हुआ था (कहानी स्वयं 1957 में 'कल्पना' पत्रिका में छपी थी, किंतु संग्रह 1958 में आया)।

117. निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए, सही उत्तर का चयन कीजिएः

(1) अज्ञेय की 'गैंग्रीन' मनोविज्ञान के धरातल पर गहरे पैठकर लिखी गई कहानी है।

(2) जैनेन्द्र ने कहानी को 'घटना' के स्तर से उठाकर चरित्र और मनोवैज्ञानिक सत्य पर लाने का प्रयास किया।

(अ) कथन 1 सही है, कथन 2 गलत है।

(ब) कथन 1 गलत है, कथन 2 सही है।

(स) कथन 1 व 2 दोनों गलत हैं।

(द) कथन 1 व 2 दोनों सही हैं।

उत्तर- (द) कथन 1 व 2 दोनों सही

कथन (1) सही हैः सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित 'गैंग्रीन' (जिसका अन्य प्रसिद्ध नाम 'रोज' भी है) एक उत्कृष्ट मनोवैज्ञानिक कहानी है। यह कहानी दाम्पत्य जीवन की एकरसता, ऊब और मानसिक जड़ता को बेहद गहराई से चित्रित करती है।

कथन (2) सही हैः हिन्दी कहानी के इतिहास में जैनेन्द्र कुमार को मनोवैज्ञानिक कहानी धारा का प्रवर्तक माना जाता है। उन्होंने कहानी को बाहरी घटनाक्रमों और कौतूहल के स्तर से ऊपर उठाकर इंसानी मन के भीतर की उलझनों, चरित्र और मनोवैज्ञानिक सत्य के धरातल पर स्थापित किया।

118. निम्नलिखित में से कौनसी बात 'चंद्रदेव से मेरी बातें' कहानी की कथावस्तु एवं शैली से सम्बन्धित नहीं है?

(अ) चन्द्रदेव की पूजा

(ब) पत्रात्मक शैली

(स) व्यंग्यात्मक भाषा

(द) राजनीति और अर्थनीति का चित्रण

उत्तर- (अ) चन्द्रदेव की पूजा

राजेन्द्र बाला घोष (बंग महिला) द्वारा वर्ष 1904 में रचित 'चंद्रदेव से मेरी बातें' हिन्दी साहित्य की एक अत्यंत महत्वपूर्ण रचना है। इस कहानी की कथावस्तु एवं शैली के संदर्भ में अन्य विकल्प इस प्रकार सही हैंः

- **पत्रात्मक शैली-** यह कहानी पारंपरिक शैली में न होकर पत्रात्मक (संवादात्मक) शैली में लिखी गई है, जहाँ लेखिका चंद्रदेव को संबोधित करते हुए अपनी बात कहती हैं।
- **व्यंग्यात्मक भाषा-** इस कहानी की मुख्य भाषा व्यंग्यात्मक है, जिसके माध्यम से तत्कालीन ब्रिटिश शासन (लॉर्ड कर्जन) पर तीखा प्रहार किया गया है।
- **राजनीति और अर्थनीति का चित्रण-** इसे हिन्दी की पहली राजनीतिक कहानी भी माना जाता है, क्योंकि इसके केंद्र में उस समय की औपनिवेशिक राजनीति, बेकारी, अर्थनीति और सामाजिक विसंगतियों का सजीव चित्रण है।

  इस रचना का उद्देश्य चन्द्रदेव की पूजा करना नहीं, बल्कि उन्हें एक माध्यम बनाकर देश की दुर्दशा पर राजनीतिक और सामाजिक व्यंग्य करना है।

119. 'कानों में कँगना' किस वर्ष प्रकाशित हुई थी?

(अ) 1912 (ब) 1913

(स) 1914 (द) 1915

उत्तर- (ब) 1913

'कानों में कँगना' राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह द्वारा रचित हिंदी साहित्य की एक अत्यंत प्रसिद्ध और मार्मिक कहानी है। इसका प्रकाशन वर्ष 1913 ईस्वी है और यह सर्वप्रथम **'इंदु'** पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी उनके प्रसिद्ध कहानी-संग्रह 'गल्प कुसुमांजलि' (1922) में संकलित है।

- **नरेन्द्रः** कहानी का नायक (जो वासना में भटक जाता है)।
- नरेन्द्र अपने गुरु योगीश्वर के पास रहकर शिक्षा प्राप्त करता है। गुरु की पुत्री किरण के साथ उसका विवाह होता है। किरण अत्यंत सरल, निष्कलंक और भारतीय आदर्श नारी का प्रतीक है।
- यह कहानी प्रेम और वासना के अंतर को स्पष्ट करती है तथा मनुष्य के विवेक को जगाने का संदेश देती है।

120. निम्नलिखित में से किसे आंचलिक कथाकार के रूप में ख्याति प्राप्त है?

(अ) जयशंकर प्रसाद (ब) जैनेन्द्र

(स) कृष्णा सोबती (द) फणीश्वरनाथ रेणु

उत्तर- (द) फणीश्वरनाथ रेणु

फणीश्वरनाथ 'रेणु' को हिंदी साहित्य में आंचलिक कथाकार के रूप में विशेष ख्याति प्राप्त है। उन्होंने किसी विशेष क्षेत्र (अंचल) के जनजीवन, संस्कृति, लोकगीत, भाषा और वहाँ की समस्याओं को अपनी रचनाओं का मुख्य विषय बनाया।

उनका उपन्यास **'मैला आँचल'** हिंदी साहित्य का सबसे पहला और श्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास माना जाता है।

रेणु जी को हिंदी कथा-साहित्य में **'आंचलिकता'** की नींव रखने और ग्रामीण जीवन की वास्तविक, जीवंत व लोक-संस्कृति से जुड़ी भाषा को मुख्यधारा में लाने का श्रेय दिया जाता है।

हिंदी के प्रसिद्ध आंचलिक कथाकार फणीश्वर नाथ **'रेणु'** को मुख्य रूप से भारत सरकार के प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया था।

121. 'चंद्रगुप्त' नाटक में निम्नलिखित में से कौनसा पात्र नहीं है?

(अ) सिंहरण (ब) नंद

(स) खिंगिल (द) दाण्ड्यायन

उत्तर-(स) खिंगिल

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'चंद्रगुप्त' नाटक में खिंगिल नाम का पात्र नहीं है।

महत्वपूर्ण तथ्य-

- सिंहरण मालव कुमार हैं जो चंद्रगुप्त के मित्र हैं।
- नंद मगध का राजा है।
- दाण्ड्यायन एक तपस्वी/ऋषि हैं।
- खिंगिल जयशंकर प्रसाद के ही एक अन्य नाटक 'स्कन्दगुप्त' का पात्र (हूण आक्रमणकारी) है।

122. 'अंधायुग' नाटक के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से असत्य हैः

(अ) 'अंधायुग' नाटक की कथावस्तु पूर्णतः स्वकल्पित है।

(ब) दृश्य-परिवर्तन या अंक परिवर्तन के साथ कथा गायन की योजना है।

(स) नाटक के संवाद मुक्त छन्दों में हैं।

(द) नाटक की कथावस्तु पाँच अंकों में विभाजित है। बीच में अन्तराल है।

उत्तर- (अ) 'अंधायुग' नाटक की कथावस्तु पूर्णतः स्वकल्पित है। कथन असत्य है।

धर्मवीर भारती का गीतिनाट्य 'अंधा युग' (1954) महाभारत के अंतिम दिन और युद्ध के बाद के अंधेपन की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिसकी प्रासंगिकता आज के आधुनिक और युद्ध-ग्रस्त/हिंसायुक्त समय में भी उतनी ही प्रासंगिक बनी हुई है। नाटक यह बताता है कि हिंसा से कभी स्थायी समाधान नहीं मिलता, वह केवल मानवीय संवेदनाओं और सृजनात्मकता का गला घोंटती है। धृतराष्ट्र और अन्य पात्रों के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि जब सत्ता स्वार्थ और अंधेपन की शिकार होती है, तब पूरे युग की मर्यादाएँ टूटने लगती हैं। यह रचना भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद की विभीषिका, मानवीय मूल्यों के ह्रास और नैतिक संकट की सीधी अभिव्यक्ति है।

123. ''शक्ति के कारण, तुम्हारी नियति तय करने का उसे अधिकार था। सवाल है, उसने जो तय कर दिया, उस पर तुम चले क्यों नहीं? याद है, जब तुमने विरोध की भाषा अपनाई, सत्ता ने तुम्हारे अस्तित्व पर सीधे हमला किया। कभी प्रलोभन देकर, कभी आतंक जमाकर। इसलिए विरोध मत करो। सब विरोध बकवास है।'' उपर्युक्त अंश निम्नलिखित में से किस नाटक से लिया गया है?

(अ) एक और द्रोणाचार्य (ब) महाभोज

(स) आगरा बाजार (द) आधे-अधूरे

उत्तर- (अ) एक और द्रोणाचार्य

नाटककार- शंकर शेष (प्रकाशितः 1977)

यह प्रसिद्ध नाटक वर्तमान शिक्षा व्यवस्था, सत्ता के दबाव और उसमें पिसने वाले मध्यमवर्गीय बौद्धिक वर्ग एवं शिक्षकों की विडंबना पर आधारित है।

समानांतर कथाएँ- नाटक में दो कथाएँ साथ-साथ चलती हैं-

1. **पौराणिक कथा-** महाभारत के पात्रों-कृद्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृपि, एकलव्य, अर्जुन, युधिष्ठिर और भीष्म के माध्यम से द्रोणाचार्य की मजबूरी और सत्ता के आगे झुकने की कथा दिखाई गई है।
2. **आधुनिक कथा-** वर्तमान शिक्षा प्रणाली और प्राइवेट कॉलेजों के प्रोफेसर अरविंद, प्रिंसिपल यदु, छात्र-प्रेसिडेंट चंदू, और व्हिसलब्लोअर विमलेंदु के संघर्ष की कहानी है।

124. 'आषाढ़ का एक दिन' के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से असत्य है -

(अ) हिन्दी में यह पहला यथार्थवादी नाटक है, जो बाह्य और आंतरिक यथार्थ के अंतर्द्वन्द्व को संवेदनशीलता के साथ देखता है।

(ब) प्रस्तुत नाटक चार अंकों में विभक्त है।

(स) इस नाटक की प्रत्यक्ष विषय-वस्तु कालिदास के जीवन से सम्बन्धित है।

(द) इसमें बिंबों के प्रभावी नाटकीय प्रयोग के साथ-साथ शब्दों की अपूर्व मितव्ययता भी है।

उत्तर- (ब) प्रस्तुत नाटक चार अंकों में विभक्त है।

सही तथ्यः मोहन राकेश द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' (1958) चार अंकों में नहीं, बल्कि तीन अंकों में विभक्त है।

अन्य तीनों कथन (अ, स और द) नाटक के विषय में पूर्णतः सत्य हैंः

(अ) यह हिंदी का पहला आधुनिक यथार्थवादी नाटक माना जाता है, जो बाह्य परिवेश और आंतरिक भावों के अंतर्द्वन्द्व को सूक्ष्मता से दिखाता है।

(स) इस नाटक की प्रत्यक्ष पृष्ठभूमि और विषय-वस्तु महाकवि कालिदास के जीवन और उनकी सृजनात्मकता के संघर्ष से जुड़ी है।

(द) नाटक में दृश्यों और बिंबों का प्रभावी ढंग से प्रयोग किया गया है तथा संवादों में शब्दों की अपूर्व मितव्ययता (कम शब्दों में गहरी बात कहना) दिखाई देती है।

125. ''जै जै कलियुग राज की, जै महामोह महाराज की।
अटल छत्र सिर फिरत थाप जग मानत जाके काज की।
कलह अविद्या मोह मूढ़ता सबै नास के साज की।।''
'भारत दुर्दशा' नाटक की उपर्युक्त पंक्तियाँ किस राग में निबद्ध हैं?

(अ) राग धनाश्री (ब) राग टोड़ी

(स) राग काफी (द) राग बिलावल

उत्तर- (स) राग काफी

यह पंक्तियाँ भारतेन्दु हरिश्चंद्र के प्रसिद्ध नाटक 'भारत दुर्दशा' (चतुर्थ अंक) से ली गई हैं, जिन्हें 'अंधकार' पात्र द्वारा राग काफी में गाया गया है। राग काफी एक बहुत ही मधुर और भावपूर्ण राग है। यह अपने ही नाम वाले काफी थाट का आश्रय राग है।

मुख्य विशेषताएँ-

1. **लोक संगीत से संबंध-**राग काफी का लोक संगीत से गहरा नाता है। इसी कारण होली, टप्पा, दादरा, कीर्तन और भजन अक्सर इसी राग या इसके मिलते-जुलते रूपों में गाए जाते हैं।
2. **मिश्र काफी-** इसकी खूबसूरती बढ़ाने के लिए कभी-कभी आरोह-अवरोह में शुद्ध गंधार और शुद्ध निषाद का प्रयोग भी कर लिया जाता है, जिसे 'मिश्र काफी' कहते हैं।
3. **उपशास्त्रीय संगीत-** इसका प्रयोग ख्याल शैली के साथ-साथ ठुमरी, गजल और सुगम संगीत में बहुत अधिक होता है।

126. 'अंजो दीदी' नाटक में पति-पत्नी का सम्बन्ध निम्नलिखित में से किन पात्रों के मध्य है?

(अ) अंजली- इन्द्रनारायण

(ब) अंजली- श्रीपत

(स) अनिमा- इन्द्रनारायण

(द) मुन्नी- श्रीपत

उत्तर- (अ) अंजली- इन्द्रनारायण

'अंजो दीदी' नाटक के रचनाकार सुप्रसिद्ध नाटककार उपेन्द्रनाथ 'अश्क' हैं। इस नाटक की मुख्य पात्र अंजली (अंजो दीदी) हैं, जो एक अत्यंत अनुशासनप्रिय और कठोर स्वभाव की महिला हैं। इन्द्रनारायण पेशे से वकील हैं और नाटक में अंजली के पति की भूमिका में हैं।

अन्य पात्रों का सम्बन्ध-

- **श्रीपतः** अंजली (अंजो दीदी) का भाई है।
- **अनिमाः** अंजली की सहेली है।
- **मुन्नीः** अंजली के घर की नौकरानी है।

127. ''प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवः आत्मनौ तुष्टः स्थितप्रज्ञः तदोच्यते।।
दुखेषु अनुद्विग्न मनः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतराग भयं क्रोधः स्थित धीः मुनिरुच्यते।।''
उपर्युक्त अंश निम्नलिखित में से किस पात्र के द्वारा कहा गया है?

(अ) पुरोहित (ब) भारत दुदैव
(स) श्रीकृष्ण (द) युधिष्ठिर

उत्तर -(स) श्रीकृष्ण

यह श्लोक श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 2, श्लोक 55 और 56) का है, जिसमें यह उपदेश भगवान श्रीकृष्ण (श्रीभगवानुवाच) ने अर्जुन को दिया था। दिए गए विकल्पों में यह अंश सीधे तौर पर इनमें से किसी पात्र (पुरोहित, भारत दुर्दैव, श्रीकृष्ण , युधिष्ठिर) का संवाद नहीं है, क्योंकि यह गीता में श्रीकृष्ण द्वारा कहा गया है। यह संवाद भगवान श्रीकृष्ण का है)।

128. ''हम कुछ सुनना नहीं चाहते। अपना फैसला हमने बता दिया। यदि यह नहीं हुआ, तो खैर नहीं, पर हमें देवी प्यारी है। उसका हुक्म हुक्म है। यदि वह कोई सजा कहेगी तो वह भी हमें देनी होगी। जो बदमाशी करेगा उसे परलोक भी भेजा जा सकता है।''
'बकरी' नाटक का प्रस्तुत अंश किस अंक के किस दृश्य से लिया गया है?

(अ) पहले अंक के दूसरे दृश्य से
(ब) दूसरे अंक के पहले दृश्य से
(स) दूसरे अंक के दूसरे दृश्य से
(द) दूसरे अंक के तीसरे दृश्य से

उत्तर- (ब) दूसरे अंक के पहले दृश्य से।

नाटक के दूसरे अंक के पहले दृश्य में (जो कि पहले अंक की घटना के दो साल बाद घटित होता है), दुर्जनसिंह, कर्मवीर और सत्यवीर नाम के पाखंडी पात्र अपनी सत्ता और प्रभाव का प्रयोग करके ग्रामीणों को डराने-धमकाने और 'देवी' (गांधी जी की बकरी जिसे उन्होंने देवी समान घोषित कर दिया था) के नाम पर अपना आदेश चलाने के लिए इस तरह के संवादों का प्रयोग करते हैं। वे 'लोक सेवा सदन' बनाकर ग्रामीणों का शोषण करते हैं और विरोध करने वालों को सजा या 'परलोक भेजने' की धमकी देते हैं।

129. ककड़ीवाला किस रचना का पात्र है?

(अ) आगरा बाजार (ब) ध्रुवस्वामिनी
(स) अंजो दीदी (द) महाभोज

उत्तर- (अ) आगरा बाजार

'आगरा बाजार' प्रसिद्ध नाटककार हबीब तनवीर द्वारा वर्ष 1954 में रचित एक लोकप्रिय नाटक है। ककड़ीवाला इस नाटक का एक मुख्य और महत्वपूर्ण पात्र है, जिसके इर्द-गिर्द बाजार का माहौल और नाटक का ताना-बाना बुना गया है।

इस नाटक के अन्य प्रमुख पात्रों में लड्डूवाला, तरबूजवाला, फकीर, मदारी और पतंगवाला शामिल हैं। यह नाटक मशहूर शायर नजीर अकबराबादी की कविताओं और उनकी आम जनमानस में लोकप्रियता पर आधारित है।

अन्य विकल्पों का संक्षिप्त परिचय-

- **ध्रुवस्वामिनीः** जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित ऐतिहासिक नाटक है।
- **अंजो दीदीः** उपेंद्रनाथ अश्क द्वारा रचित एक मनोवैज्ञानिक सामाजिक नाटक है।
- **महाभोजः** मन्नू भंडारी द्वारा रचित प्रसिद्ध राजनीतिक उपन्यास और नाटक है।

130. चंद्रकला और मनोरमा किस नाटक की पात्रायें हैं?

(अ) सिन्दूर की होली (ब) महाभोज
(स) आधे-अधूरे (द) ध्रुवस्वामिनी

उत्तर- (अ) सिन्दूर की होली

सिन्दूर की होली नाटक के रचनाकार लक्ष्मी नारायण मिश्र हैं और इसका प्रकाशन वर्ष 1934 ई. है। चंद्रकला और मनोरमा इस नाटक की मुख्य स्त्री पात्रायें हैं। चंद्रकला आधुनिक विचारों वाली स्वतंत्र चेतना की प्रतीक है, जबकि मनोरमा समाज के नियमों और पारंपरिक वैधव्य को मानने वाली रूढ़िवादी पात्र है।

यह नाटक विधवा-विवाह, स्त्री के अधिकार और सामाजिक रुढ़ियों की समस्या पर आधारित है। कहानी में चंद्रकला आधुनिक परिवेश में पली-बढ़ी है। उसे रजनीकांत से प्रेम हो जाता है। अंत में सामाजिक परंपराओं की चिन्ता न करते हुए, वह मरणासन्न / मृत रजनीकांत की उंगलियों से अपनी मांग में सिंदूर भरकर वैधव्य (विधवा होने का संकल्प) अपनाती है और इसे 'सिंदूर की होली' का नाम देती है।

131. ''जन्म दिया माता सा जिसने किया सदा लालन-पालन।
जिसकी मिट्टी जल से ही है, रचा गया हम सबका तन।।''
उपर्युक्त पंक्तियाँ किसके द्वारा रचित हैं?

(अ) माखनलाल चतुर्वेदी (ब) मन्नन द्विवेदी
(स) चंदन द्विवेदी (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर- (ब) मन्नन द्विवेदी

यह पंक्तियाँ कवि मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी' की प्रसिद्ध कविता 'मातृभूमि' से ली गई हैं।

मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी' की प्रसिद्ध कविता 'मातृभूमि' देशप्रेम और मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा को दर्शाती है। इस कविता में मातृभूमि को जन्मदात्री माता से भी बढ़कर बताया गया है, जो जीवन भर हमारा पालन-पोषण करती है और अंत में अपने आंचल में समा लेती है।

उनका जन्म आज से लगभग सवा सौ साल पहले हुआ था। उस समय अंग्रेजों का भारत पर आधिपत्य था। उन्होंने अपनी लेखनी से अंग्रेजों का विरोध किया। उनकी लेखनी का सबसे प्रिय विषय था **'देशभक्ति'**। भारत के गौरव का गान करना उन्हें बहुत प्रिय था। उनकी कुछ और चर्चित रचनाएँ हैं- **'बढ़े चलो, बढ़े चलो'**, **'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती'** आदि।

132. 'दिल्ली दरबार दर्पण' निबन्ध के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही नहीं है?

(अ) 01 जनवरी को दरबार का महोत्सव हुआ।
(ब) यह दरबार जो हिन्दुस्तान के इतिहास में सदा प्रसिद्ध रहेगा, एक बड़े भारी मैदान में नगर से पाँच मील पर हुआ था।
(स) बीच में श्रीयुत वाइसराय का गोल चबूतरा था।
(द) इस चबूतरे पर श्रीयुत अपने राजसिंहासन में सुशोभित हुए थे।

उत्तर- (स) बीच में श्रीयुत वाइसराय का गोल चबूतरा था।

भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा रचित निबंध **'दिल्ली दरबार दर्पण'** के अनुसार, बीच में वाइसराय का षटकोण चबूतरा था, न कि गोल चबूतरा।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा रचित निबंध **'दिल्ली दरबार दर्पण'** (1877) का मुख्य उद्देश्य 1 जनवरी 1877 को दिल्ली में आयोजित प्रथम 'दिल्ली दरबार' का सजीव और ऐतिहासिक वर्णन करना तथा ब्रिटिश साम्राज्य की दिखावटी शक्ति के पीछे छिपी कूटनीति को उजागर करना था।

इस निबंध का प्रमुख उद्देश्य उस समय के ब्रिटिश साम्राज्य और महारानी विक्टोरिया (जिन्हें 'एम्प्रैस ऑफ इंडिया' या भारत की सम्राज्ञी घोषित किया गया था) के राजकीय वैभव, शान-शौकत और शक्ति को एक 'दर्पण' की तरह जनता के सामने प्रस्तुत करना।

133. 'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है' निबन्ध के प्रारम्भ में किस शहर का उल्लेख किया गया है?

(अ) बनारस (ब) बलरामपुर
(स) बलिया (द) बस्ती

उत्तर- (स) बलिया

भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा लिखित निबंध 'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है' के प्रारम्भ में बलिया शहर का उल्लेख किया गया है। इस निबंध की शुरुआत ही इन पंक्तियों से होती हैः ''आज बड़े आनंद का दिन है कि छोटे-से नगर बलिया में हम इतने मनुष्यों को एक बड़े उत्साह से एक स्थान पर देखते हैं...''। यह निबंध मूल रूप से दिसंबर 1884 में बलिया के ददरी मेले में दिया गया एक प्रसिद्ध भाषण है।

134. निम्नलिखित में से कौन सुमेलित नहीं है?

(अ) 'उधर प्रभात ने अपनी सुफेद किरणों
से अंधेरी रात पर सुफेदी-सी छिटकाई
इधर मेरी प्रेयसी, मैना अथवा कोयल
की तरह अपने बिस्तर से उठी।'' **- मजदूरी और प्रेम**

(ब) ''भविष्य का ज्ञान अत्यन्त अद्भुत और
रहस्यमय है, जिसके कारण प्राणी आने
वाली विपत्ति की कुछ भी भावना न
करके अपनी दशा में मग्न रहता है।'' **- कविता क्या है?**

(स) ''विलासिता और कलात्मक विलासिता एक ही वस्तु नहीं है।'' **- उत्तरा फाल्गुनी के आस-पास**

(द) ''महीनों से मन बेहद बेहद उदास है।
उदासी की कोई खास वजह नहीं; कुछ
तबियत ढीली, कुछ आस-पास के तनाव
और कुछ उनसे टूटने का डर, खुले
आकाश के नीचे भी खुलकर साँस लेने
की जगह की कमी।'' **- मेरे राम का मुकुट भीग रहा है**

उत्तर- (स) ''विलासिता और कलात्मक विलासिता एक ही वस्तु नहीं है।''- उत्तरा फाल्गुनी के आस-पास

कथन ''विलासिता और कलात्मक विलासिता एक ही वस्तु नहीं है''- 'उत्तरा फाल्गुनी के आस-पास' से नहीं, बल्कि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की पुस्तक 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद' (या नामवर सिंह के निबंध 'संस्कृति और सौंदर्य' जिसमें इसका संदर्भ है) से संबंधित है। अन्य सभी विकल्प (अ, ब, और द) सही सुमेलित हैं।

135. '' जैसे कई अंधों के आगे हाथों आवै और कोई उसका नाम बता दे, तो सब उसे टटोलेंगे। यह तो संभव ही नहीं है कि मनुष्य के बालक की भाँति उसे गोद में लेके सब कोई अवयव का ठीक-ठीक बोध कर ले।'' उपर्युक्त गद्यांश किस निबंध से उद्धृत है?

(अ) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (ब) कविता क्या है
(स) संस्कृति और सौन्दर्य (द) शिवमूर्ति

उत्तर- (स) संस्कृति और सौन्दर्य

संस्कृति और सौंदर्य हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह द्वारा लिखित एक अत्यंत महत्वपूर्ण निबंध है। यह निबंध वर्ष 1982 में उनकी चर्चित पुस्तक 'दूसरी परंपरा की खोज' में संकलित किया गया था।

मुख्य विषय और विचार-

- **आधार-** यह निबंध आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के प्रसिद्ध निबंध 'अशोक के फूल' पर आधारित है।
- **आर्य संस्कृति के अहंकार पर चोटः** नामवर सिंह के अनुसार, 'अशोक के फूल' केवल प्रकृति-वर्णन नहीं है, बल्कि यह तथाकथित आर्य संस्कृति की शुद्धता के अहंकार पर करारा प्रहार है।

136. 'मजदूरी और प्रेम' सहित सरदार पूर्णसिंह ने कुल कितने निबंध लिखे हैं?

(अ) पाँच (ब) छः
(स) सात (द) आठ

उत्तर- (ब) छः

आधुनिक हिंदी साहित्य के द्विवेदी युग के श्रेष्ठ और काव्यात्मक निबंधकारों में सरदार पूर्णसिंह की गिनती होती है। उन्होंने मुख्य रूप से 6 प्रसिद्ध हिंदी निबंध लिखे हैं, जो आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित हुए थे।

सरदार पूर्णसिंह ने हिंदी में कुल छः (6) निबंध लिखे हैंः

1.मजदूरी और प्रेम, 2.आचरण की सभ्यता 3.कन्यादान
4.सच्ची वीरता 5.अमेरिका का मस्त जोगी वाल्ट हिटमैन (विटमैन)
6.पवित्रता (या हिंदी साहित्य जगत का सिंहावलोकन)

137. 'संस्कृति और सौन्दर्य' निबन्ध में नामवर सिंह ने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की लालित्य मीमांसा के कितने सूत्रों का वर्णन किया है?

(अ) तीन (ब) पाँच
(स) सात (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर- (अ) तीन

'संस्कृति और सौन्दर्य' (निबंध) में नामवर सिंह ने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की लालित्य मीमांसा के तीन प्रमुख सूत्रों का वर्णन किया है।

पहला सूत्रः द्विवेदी जी सौंदर्य को सौंदर्य न कहकर 'लालित्य' कहना चाहते थे।

दूसरा सूत्रः लालित्य 'बंधन के विरुद्ध विद्रोह' है और बंधनद्रोही व्याकुलता को रूप देता है।
तीसरा सूत्रः सौंदर्य मनुष्य की 'सिसृक्षा' (सृजन की इच्छा) या सृजनशीलता का परिणाम है।

138. 'उत्तरा फाल्गुनी' किस ऋतु का नक्षत्र है -
(अ) ग्रीष्म (ब) वर्षा (स) बसन्त (द) शरद ऋतु

उत्तर- (स) बसन्त
'उत्तरा फाल्गुनी' नक्षत्र का संबंध बसन्त ऋतु के उत्तरार्ध (अंतिम भाग) से है। फाल्गुन और चौत्र महीने पारंपरिक रूप से बसन्त ऋतु के अंतर्गत आते हैं।

139. 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबन्ध में उल्लेख है कि तुलसीदास ने ..... को 'सत अवध समाना' कहा है।
(अ) कानन (ब) आनन
(स) मिथिला (द) चित्रकूट

उत्तर- (अ) कानन
डॉ. विद्यानिवास मिश्र द्वारा रचित प्रसिद्ध ललित निबंध 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' में उल्लेख आता हैः **''क्या बात है कि तुलसीदास ने 'कानन' को 'सत अवध समाना' कहा और चित्रकूट में ही पहुँचने पर उन्हें 'कलि की कुटिल कुचाल' दीख पड़ी?''**
यहाँ **'कानन'** का अर्थ वन-जंगल से है। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के अयोध्याकांड में लिखा है कि राम जी के साथ रहने पर वन (कानन) भी सौ अयोध्या के समान सुखद हो जाता है।

140. निम्नलिखित में से कौनसा निबन्ध हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित नहीं है?
(अ) संस्कृतियों का संगम (ब) साहित्य का नया कदम
(स) महिलाओं की लिखी कहानियाँ
(द) भारतीय साहित्य की प्राणधारा और लोकधर्म

उत्तर- (स) महिलाओं की लिखी कहानियाँ
- 'साहित्य का नया कदम', 'संस्कृतियों का संगम' और 'भारतीय साहित्य की प्राणधारा और 'लोकधर्म'- ये तीनों आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी द्वारा रचित निबंध हैं। 'महिलाओं की लिखी कहानियाँ' उनका निबंध नहीं है।
- 'साहित्य का नया कदम' आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का एक महत्वपूर्ण निबंध है, जो उनके निबंध-संग्रह 'कल्पलता' में संकलित है। इस निबंध में द्विवेदी जी ने एक नाटकीय एवं संवादात्मक ढांचे का उपयोग किया है। इसके माध्यम से उन्होंने प्राचीन साहित्य को आधुनिक समय के लिए अनुपयोगी मानने वाले लोगों और नए साहित्य को पूरी तरह छिछला या खारिज करने वालों-इन दोनों पक्षों के बीच की खाई को पाटने का प्रयास किया है।
- 'संस्कृतियों का संगम' निबंध भारतीय संस्कृति की बहुलतावादी, समन्वयात्मक और मिश्रित प्रकृति को रेखांकित करता है। द्विवेदी जी के अनुसार, जिसे आज 'भारतीय संस्कृति' कहा जाता है, वह किसी एक जाति या समुदाय की देन नहीं है। इसमें आर्य, द्रविड़, कोल, मुण्डा और किरात जैसी अनेक जातियों और उनकी संस्कृतियों का मिला-जुला योगदान है।
- ''भारतीय साहित्य की प्राणधारा और लोकधर्म'' आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्येतिहास दर्शन और आलोचना दृष्टि का सबसे केंद्रीय स्तंभ है। द्विवेदी जी का मानना था कि भारत का भक्ति आंदोलन या मध्यकालीन साहित्य किसी बाहरी प्रतिक्रिया का परिणाम नहीं था, बल्कि वह भारतीय लोक-चिंता और लोकधर्म की सहज प्राणधारा का स्वाभाविक विकास था। द्विवेदी जी इतिहास और साहित्य को टुकड़ों में नहीं, बल्कि एक बहती हुई अविरल और अखंड धारा के रूप में देखते हैं।

141. महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'ठकुरी बाबा' के ठकुरी बाबा क्या हैं?
(अ) नर्तक (ब) वादक
(स) लेखक (द) रसिया, बिरहा गायक

उत्तर- (द) रसिया, बिरहा गायक
महादेवी वर्मा के प्रसिद्ध रेखाचित्र 'ठकुरी बाबा' (जो उनके संग्रह 'स्मृति की रेखाएँ' में संकलित है) के मुख्य पात्र ठाकुरदीन (ठकुरी बाबा) एक ग्रामीण लोक-कवि और गायक हैं।
वे गाँव-गाँव घूमकर रसिया, बिरहा, आल्हा-ऊदल की कथा और कबीर के पद गाते हैं।
उनका चरित्र ग्रामीण लोक संस्कृति, निश्छलता और लोक गीतों के प्रति उनके अगाध प्रेम को प्रदर्शित करता है।

142. तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' का आरंभ होता हैः
(अ) भूतप्रेत और अंधविश्वास से (ब) स्कूली वातावरण से
(स) समाज के उदात्त रूप से (द) पूजा-पाठ से

उत्तर- (अ) भूतप्रेत और अंधविश्वास से
डॉ. तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' (2010) हिंदी दलित साहित्य की एक बहुत महत्वपूर्ण और चर्चित कृति है। आपके द्वारा दी गई व्याख्या के मुख्य बिंदु इसकी प्रामाणिकता को स्पष्ट करते हैंः
पुस्तक का पहला अध्याय वास्तव में 'भुतही पारिवारिक पृष्ठभूमि' ही है। विषय-वस्तु में लेखक ने उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के अपने धरमपुर गाँव के उस माहौल को दिखाया है, जहाँ का पूरा जीवन अंधविश्वास, भूत-प्रेत, टोने-टोटके और शकुन-अपशकुन के साए में जीता था।

143. 'प्रेमचन्द घर में' किस विधा की रचना है?
(अ) आत्मकथा (ब) जीवनी (स) रेखाचित्र (द) डायरी

उत्तर- (ब) जीवनी
'प्रेमचन्द घर में' जीवनी विधा की रचना है। इस पुस्तक की रचना मुंशी प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी ने की थी, जिसमें उन्होंने प्रेमचंद के घरेलू और निजी जीवन को बहुत ही सुंदर ढंग से चित्रित किया है।
प्रेमचन्द घर में के मुख्य बिन्दु -
- प्रेमचन्द के व्यक्तित्व का चित्रप। • समाज सेवा में विश्वास।
- जीवन भर साहित्य सेवा की। • आदर्श पति के रूप में फर्ज निभाया।
- गांधी विचारधारा से प्रभावित।
- दयावान, संवेदनशील, भावुक व्यक्तित्व के धनी।
- दिखावे से दूर, वास्तविकता में विश्वास।

144. मन्नू भण्डारी के पति कौन थे?
(अ) निर्मल वर्मा (ब) कमलेश्वर
(स) राजेन्द्र यादव (द) अमरकांत

उत्तर-(स) राजेन्द्र यादव
- **पति का नामः** राजेन्द्र यादव (प्रसिद्ध कहानीकार और उपन्यासकार)
- **जन्मः 28 अगस्त 1929, आगरा, उत्तर प्रदेश**
- **विवाहः सन 1959 में हुआ।**
- **प्रमुख रचनाएँः** 'सारा आकाश', 'उखड़े हुए लोग', 'कुलटा', 'शह और मात'।
- **विशेष सहयोगः** दोनों ने मिलकर 'एक इंच मुस्कान' नामक प्रसिद्ध उपन्यास की रचना की थी।

• मन्नू भंडारी के पति राजेन्द्र यादव हिंदी साहित्य के एक प्रसिद्ध लेखक, उपन्यासकार, कहानीकार और आलोचक थे। वे हिंदी के चर्चित 'नयी कहानी' आंदोलन के प्रमुख सूत्रधारों में से एक थे।

145. विष्णु प्रभाकर कृत 'आवारा मसीहा' किसकी जीवनी है?

(अ) शरतचन्द्र (ब) रवीन्द्रनाथ टैगोर
(स) कालिदास (द) जयशंकर प्रसाद

उत्तर- (अ) शरतचन्द्र

विष्णु प्रभाकर कृत **'आवारा मसीहा'** प्रसिद्ध बांग्ला लेखक शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय की जीवनी है। यह जीवनी तीन भागों में विभाजित हैः

1. **दिशाहाराः** इसमें शरतचंद्र के बचपन, किशोरावस्था और उनके भटकाव भरे शुरुआती जीवन का वर्णन है।
2. **दिशा की खोजः** इसमें उनके युवा जीवन, बर्मा (रंगून) प्रवास और उनके साहित्यिक सफर की शुरुआत को दर्शाया गया है।
3. **दिशांतः** इसमें रंगून से वापसी, उनकी प्रसिद्ध रचनाओं और उनके जीवन के अंतिम पड़ाव का वर्णन है।

146. हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' कब प्रकाशित हुई?

(अ) 1959 ई. (ब) 1969 ई.
(स) 1979 ई. (द) 1989 ई.

उत्तर- (ब) 1969 ई.

हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' 1969 ई. में प्रकाशित हुई थी। यह उनकी चार खंडों में लिखी गई प्रसिद्ध आत्मकथा का पहला भाग है।

- **चारों खंडः**
  1. क्या भूलूँ क्या याद करूँ (1969) 2. नीड़ का निर्माण फिर (1970)
  3. बसेरे से दूर (1978) 4. दशद्वार से सोपान तक (1985)
- इस पहले खंड में बच्चन जी ने अपने पूर्वजों के इतिहास, उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़/इलाहाबाद क्षेत्र के परिवेश, उनके बचपन, परिवार के संघर्षों, गरीबी और उनकी पहली पत्नी 'श्यामा' के निधन की मर्मस्पर्शी घटनाओं का बहुत ईमानदार और साहसिक वर्णन किया है।

147. कृष्णचन्दर की हास्य-व्यंग्य कहानी का नाम है?

(अ) नीम का पेड़ (ब) पीपल का पेड़
(स) बबूल का पेड़ (द) जामुन का पेड़

उत्तर- (द) जामुन का पेड़

जामुन का पेड़ प्रसिद्ध कथाकार कृष्णचन्दर द्वारा लिखी गई एक लोकप्रिय हास्य-व्यंग्य कहानी है। यह कहानी सरकारी कार्यालयों की लालफीताशाही और संवेदनहीनता पर करारा व्यंग्य करती है।

घटना की शुरुआत- एक रात आई तेज आंधी-तूफान के कारण सचिवालय के लॉन में जामुन का एक विशाल और फलदार पेड़ गिर जाता है। सुबह जब माली देखता है, तो उसे पता चलता है कि उस गिरे हुए पेड़ के नीचे एक आदमी दबा हुआ है।

कहानी का संदेश- यह कहानी दिखाती है कि सरकारी तंत्र में नियमों और फाइलों को इंसान की जान से ज्यादा महत्व दिया जाता है। अधिकारी यह नहीं सोचते कि फंसे हुए इंसान की जान कैसे बचाई जाए, बल्कि वे यह सोचते हैं कि यह काम किस विभाग के नियम-पुस्तिका के अंतर्गत आता है।

148. भारत के सांस्कृतिक इतिहास को किसने चार भागों (अध्यायों) में बाँटकर लिखा है?

(अ) हरिवंश राय बच्चन (ब) अज्ञेय
(स) रामधारी सिंह 'दिनकर' (द) मुक्तिबोध

उत्तर -(स) रामधारी सिंह 'दिनकर'

भारत के सांस्कृतिक इतिहास को चार अध्यायों में बाँटकर रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखा है। उनकी इस प्रसिद्ध पुस्तक का नाम**'संस्कृति के चार अध्याय'** है।

'संस्कृति के चार अध्याय' राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक ग्रंथ है, जिसका प्रकाशन 1956 में हुआ था। इस पुस्तक के लिए उन्हें 1959 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

- दिनकर जी ने इस पुस्तक में भारत के सांस्कृतिक इतिहास को चार प्रमुख क्रांतियों या अध्यायों में विभाजित किया है -
- **प्रथम अध्यायः** भारतीय जनता की रचना और हिन्दू संस्कृति का आविर्भाव
- **द्वितीय अध्यायः** प्राचीन हिन्दुत्व से विद्रोह
- **तृतीय अध्यायः** हिन्दू संस्कृति और इस्लाम
- **चतुर्थ अध्यायः** भारतीय संस्कृति और यूरोप

149. राहुल सांकृत्यायन कृत 'मेरी तिब्बत यात्रा' का प्रकाशन वर्ष हैः

(अ) 1927 ई. (ब) 1937 ई.
(स) 1947 ई. (द) 1957 ई.

उत्तर- (ब) 1937 ई.

राहुल सांकृत्यायन कृत प्रसिद्ध यात्रा-वृत्तांत 'मेरी तिब्बत यात्रा' का प्रकाशन वर्ष 1937 ई. है।

मुख्य बिंदु-

- **रचनाकारः** महापंडित राहुल सांकृत्यायन
- **विधाः** यात्रा-वृत्तांत (यह कुल 5 खंडों में विभाजित है)
- **विषयः** इसमें लेखक की वर्ष 1929-30 की पहली तिब्बत यात्रा और वहाँ के समाज, संस्कृति तथा बौद्ध ग्रंथों व प्राचीन पांडुलिपियों की खोज का विस्तृत विवरण मिलता है।

150. अज्ञेय कृत 'अरे यायावर रहेगा याद' किस विधा की रचना है?

(अ) काव्य-संग्रह (ब) संस्मरण
(स) यात्रा-वृत्तान्त (द) निबंध

उत्तर- (स) यात्रा-वृत्तांत

- **रचनाः** अरे यायावर रहेगा याद
- **लेखकः** सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
- **प्रकाशन वर्षः**1953 • **विधाः** यात्रा-वृत्तांत / यात्रा-संस्मरण

मुख्य बिंदु-

- **भ्रमणशीलता और जीवन दर्शनः** अज्ञेय जी का मानना था कि गति ही जीवन है (''चरैवैति'' का सिद्धांत)। यह पुस्तक केवल भौगोलिक यात्राओं का ब्यौरा नहीं है, बल्कि बाहरी यात्रा के साथ-साथ लेखक की आंतरिक और मानसिक अनुभूतियों की गहराई को भी दर्शाती है।
- **विविध क्षेत्रों का वर्णनः** इसमें असम, बंगाल, औरंगाबाद (एलोरा), कश्मीर, पंजाब, हिमाचल प्रदेश और तमिलनाडु के प्राचीन मंदिरों से लेकर प्राकृतिक दृश्यों का सजीव चित्रण किया गया है।

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित

म.प्र.राज्य पात्रता परीक्षा-2025

शिक्षण एवं शोध अभिवृति (प्रथम प्रश्नपत्र)

1. निम्नलिखित कौनसे अध्यापन स्तर के लिए कक्षा का वातावरण 'खुला और स्वतंत्र' होना चाहिए ?

(अ) स्मृति स्तर (ब) बोध स्तर

(स) चिंतनशील स्तर (द) उपर्युक्त सभी

In which of the following levels of teaching classroom environment required to be sufficiently 'open and independent'?

(A) Memory level (B) Understanding level

(C) Reflective level (D) All of the above

उत्तर-(स) चिंतनशील स्तर

चिंतनशील स्तर पर विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से सोचते हैं, प्रश्न पूछते हैं, समस्याओं का विश्लेषण करते हैं और अपने निष्कर्ष निकालते हैं। इसलिए कक्षा का वातावरण खुला और स्वतंत्र होना चाहिए।

2. पारंपरिक शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?

(अ) छात्र केंद्रित शिक्षा (ब) शिक्षक केंद्रित शिक्षा

(स) तंत्रज्ञान आधारित शिक्षा (द) परियोजना आधारित शिक्षा

What is the primary focus of Traditional Education ?

(A) Student centred learning

(B) Teacher centred learning

(C) Technology based learning

(D) Project based learning

उत्तर-(ब) शिक्षक केंद्रित शिक्षा

पारंपरिक शिक्षा में शिक्षक मुख्य भूमिका निभाता है और विद्यार्थी प्रायः शिक्षक से ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसलिए इसे शिक्षक-केंद्रित शिक्षा कहा जाता है।

3. पियाजे के बौद्धिक विकास के सिद्धान्त के अनुसार 'बच्चे नई संकल्पना या नया ज्ञान समझने के लिए अपने पुराने ज्ञान की मदद लेते हैं', यह है :

(अ) आत्मसातीकरण

(ब) समायोजन

(स) संतुलन

(द) अवधारणा

According to Piaget's theory of cognitive development "children understand the new knowledge or concept with the help of old knowledge" is:

(A) Assimilation

(B) Accommodation

(C) Equilibration

(D) Schemas

उत्तर-(अ) आत्मसातीकरण (Assimilation)

जब बच्चा नई जानकारी को अपनी पहले से बनी मानसिक समझ में शामिल करता है, तो इसे आत्मसातीकरण कहते हैं।

4. निम्नलिखित में से कौनसा दृष्टिकोण मूल्यांकन के लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है?

(अ) सतत् और व्यापक मूल्यांकन

(ब) वस्तुनिष्ठ सत्रांत परीक्षा आयोजित करना

(स) छात्रों के संचित रिकॉर्ड बनाये रखना

(द) सेमेस्टर प्रणाली मूल्यांकन

Which is the most significant approach of evaluation?

(A) Continuous and Comprehensive Evaluation

(B) Conducting objective term end examination

(C) Maintaining cumulative records of students

(D) Semester system evaluation

उत्तर-(अ) सतत् और व्यापक मूल्यांकन

मूल्यांकन (Evaluation) के सभी तरीकों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) को सबसे महत्वपूर्ण दृष्टिकोण माना जाता है, क्योंकिः

1. **सतत (Continuous):** यह केवल परीक्षा के समय न होकर पूरी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (Teaching-Learning Process) के दौरान लगातार चलता रहता है। इससे छात्रों की प्रगति का निरंतर आकलन होता है।
2. **व्यापक (Comprehensive):** यह छात्र के केवल किताबी ज्ञान (Scholastic) ही नहीं, बल्कि उसके सर्वांगीण विकास (Co-scholastic domains) जैसे - व्यक्तित्व, व्यवहार, खेलकूद, जीवन कौशल (Life skills) और रचनात्मकता का भी मूल्यांकन करता है।

5. विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम-2016 (दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम-2016) किस अधिनियम को पुनर्स्थापित करता है ?

(अ) राष्ट्रीय न्यास अधिनियम -1999

(ब) विकलांग व्यक्ति अधिनियम -1995

(स) शिक्षा का अधिकार अधिनियम - 2009

(द) भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम - 1992

RPWD (Rights of Persons with Disabilities) Act-2016 replaces which Act?

(A) National Trust Act - 1999

(B) Person with Disability Act-1995

(C) Right to Education Act - 2009

(D) Rehabilitation Council of India Act-1992

उत्तर-(ब) विकलांग व्यक्ति अधिनियम-1995
दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 ने पुराने Persons with Disabilities Act, 1995 को प्रतिस्थापित किया।

6. निम्नांकित में से गलत युग्म का चयन कीजिए :
(अ) जब शोध-समस्या के विषय में बहुत कम जानकारी उपलब्ध होती है: अन्वेषणी अनुसंधान
(ब) जब सामाजिक स्थितियों, घटनाओं, संरचना या प्रणाली का विशद् अध्ययन करना होता है: व्यावहारिक अनुसंधान
(स) जब सांख्यिकीय विश्लेषण का प्रयोग एवं परिमाणात्मक मापन करना होता है: मात्रात्मक अनुसंधान
(द) विभिन्न समय में होने वाली घटना या सामाजिक समस्या का विस्तृत अध्ययन करना होता है: लम्बात्मक अनुसंधान

Choose the wrongly matched pair from the following:
(A) When very less information about the research problem is available: Exploratory Research
(B) When there is a detailed study of a social situation, events, structure or system: Applied Research
(C) When there is application of statistical analysis and the measurement to calculate things: Quantitative Research
(D) When there is a detailed study of a social problem or event occurring in extended period of time Longitudinal Research

उत्तर-(ब) जब सामाजिक स्थितियों, घटनाओं, संरचना या प्रणाली का विशद् अध्ययन करना होता है: व्यावहारिक अनुसंधान
सामाजिक स्थितियों, घटनाओं, संरचना या प्रणाली का विस्तृत अध्ययन सामान्यतः वर्णनात्मक अनुसंधान (Descriptive Research) से संबंधित है, न कि व्यावहारिक अनुसंधान से। अतः विकल्प (ब) वाला युग्म गलत है।

7. निम्नांकित में से असत्य कथन का चयन कीजिए :
(अ) सामाजिक अनुसंधान में प्रत्यक्षवाद का अर्थ है - 'सामाजिक घटनाओं का अध्ययन, तर्क और धार्मिक सिद्धांतों के आधार पर किया जाना
(ब) सामाजिक अनुसंधान में प्रत्यक्षवाद के प्रणेता, ऑगस्ट कॉम्टे को माना जाता है।
(स) मार्क्सवादी विचार पद्धतियाँ प्रत्यक्षवाद की तीव्र आलोचना करती है।
(द) प्रत्यक्षवाद के बाहर कुछ विचार पद्धतियाँ विकसित हुई, जैसे कि प्रतीकात्मक अन्तर्क्रियावाद, घंटनाक्रियावाद और लोकपद्धति विज्ञान

Choose the incorrect statement amongst the following:
(A) Positivism in social research means the study of social events on the basis of logic and religious principles.
(B) It is believed that Auguste Comte propounded positivism in social research.
(C) The Marxist ideology highly criticizes positivism.
(D) Some theories like symbolic interactionism, phenomenology and ethnomethodology were developed beyond positivist theory.

उत्तर-(अ) सामाजिक अनुसंधान में प्रत्यक्षवाद का अर्थ है - 'सामाजिक घटनाओं का अध्ययन, तर्क और धार्मिक सिद्धांतों के आधार पर किया जाना
प्रत्यक्षवाद (Positivism) सामाजिक घटनाओं का अध्ययन वैज्ञानिक अवलोकन, अनुभवजन्य प्रमाण और तर्क के आधार पर करता है। इसे धार्मिक सिद्धांतों पर आधारित अध्ययन कहना गलत है। **अन्य कथन सामान्यतः** सही हैं। ऑगस्ट कॉम्टे को प्रत्यक्षवाद का प्रमुख प्रवर्तक माना जाता है।

8. 'आधुनिक भाषा संघ पद्धति' एवं 'अमेरिकी मनोवैज्ञानिक संघ पद्धति' किससे सम्बन्ध रखती हैं?
(अ) प्रतिवेदन लेखन पद्धतियों से
(ब) शोध-भाषा एवं शब्दकोश से
(स) तथ्य विश्लेषण की पद्धतियों से
(द) उद्धरण या संदर्भ लेखन के तरीके से

'Modern Language Association Format' and 'American Psychological Association Format' are related to:
(A) Methods of report writing
(B) Research language and vocabulary
(C) Methods of data analysis
(D) Types of referencing and reference writing

उत्तर-(द) उद्धरण या संदर्भ लेखन के तरीके से
आधुनिक भाषा संघ और अमेरिकी मनोवैज्ञानिक संघ पद्धतियाँ अकारमिक शोध और लेखन में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख संदर्भ और उदधरण लेखन के मानक तरीके है।

9. निम्नांकित में से कौनसी शोध प्रतिवेदन लेखन के समय सम्मुख आने वाली चुनौतियाँ हैं ?
(1) भाषा की चुनौती
(2) जनता के ज्ञान स्तर की जानकारी प्राप्त करना और इसी स्तर के अनुरूप लेखन करना
(3) सत्य को अभिव्यक्त करने की चुनौती
(4) अनुसंधानकर्ता की पहचान और शोध उद्देश्य को छुपाए रखने की चुनौती
(5) वस्तुनिष्ठता बनाए रखने की चुनौती

सही कथनों के कूट का चयन कीजिए:
(अ) 1, 2, 3, 4 (ब) 1, 2, 3, 5
(स) 3, 4 (द) 1, 4, 5

Which among the following are the challenges during research report writing?
(1) Challenge of language
(2) To identify the intellectual levels of masses and write report accordingly
(3) Challenge of expressing the truth
(4) Challenge to hide the identity of researcher and the research objectives
(5) Challenge to maintain objectivity

Choose the codes for the correct statements:
(A) 1, 2, 3, 4 (B) 1, 2, 3, 5
(C) 3,4 (D) 1, 4, 5

उत्तर-(ब) 1, 2, 3, 5
1. भाषा की चुनौती – **सही**
2. पाठकों के ज्ञान-स्तर के अनुरूप लेखन – **सही**
3. सत्य को अभिव्यक्त करने की चुनौती – **सही**

4. शोधकर्ता की पहचान और शोध उद्देश्य छिपाना – **सामान्य चुनौती के रूप में सही नहीं**
5. वस्तुनिष्ठता बनाए रखना – **सही**

इसलिए सही कूट 1, 2, 3, 5 अर्थात् विकल्प (ब) है।

10. सामाजिक अनुसंधान में निम्नांकित चरणों (शोध प्रक्रिया) के सही क्रम का चयन कीजिएः

(1) चरों का चयन (2) निदर्शन निर्धारण
(3) तथ्यों का विश्लेषण (4) साहित्य समीक्षा
(5) प्रतिवेदन लेखन (6) शोध-समस्या निर्धारण
(7) प्राक्कल्पना निर्माण (8) सामग्री का संकलन

Choose the correct sequence of the steps of Social Research (Research Process) from the following:

(1) Selection of variables (2) Sample determination
(3) Data analysis (4) Literature review
(5) Report writing (6) Research problem formulation
(7) Hypothesis formulation (8) Data collection

सही क्रम का कोड हैः

The code for the correct sequence is:

(अ) 6, 4, 7, 1, 2, 8, 3, 5
(ब) 4, 7, 6, 1, 2, 8, 3, 5
(स) 4, 6, 7, 2, 1, 3, 8, 5
(द) 6, 7, 4, 2, 1, 8, 3, 5

उत्तर-(अ) 6, 4, 7, 1, 2, 8, 3, 5

चरणों का सही क्रमः

क्रम	शोध प्रक्रिया का चरण
1	(6) शोध-समस्या निर्धारण
2	(4) साहित्य समीक्षा
3	(7) प्राक्कल्पना निर्माण
4	(1) चरों का चयन
5	(2) निदर्शन निर्धारण
6	(8) सामग्री का संकलन
7	(3) तथ्यों का विश्लेषण
8	(5) प्रतिवेदन लेखन

पहले शोध समस्या तय होती है, फिर संबंधित साहित्य की समीक्षा और प्राक्कल्पना निर्माण किया जाता है। इसके बाद चरों एवं निदर्शन का निर्धारण, सामग्री संकलन, विश्लेषण और अंत में प्रतिवेदन लेखन होता है।

निर्देश (प्रश्न क्रमांक 11 से 15): निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सर्वाधिक उचित उत्तर वाले विकल्प का चयन कीजिएः

उच्चतर शिक्षा मनुष्य और साथ ही सामाजिक कल्याण के विकास में अति आवश्यक भूमिका निभाती है । जैसा कि हमारे संविधान में भारत को एक लोकतांत्रिक, न्यायपूर्ण, सामाजिक रूप से सचेत, सांस्कारिक और मानवीय राष्ट्र जहाँ सभी के लिए न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का भाव हो, एक ऐसे राष्ट्र के रूप में विकसित करने की परिकल्पना की गई है। एक राष्ट्र के आर्थिक विकास और आजीविकाओं को स्थायित्व देने में भी उच्चतर शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। जैसे-जैसे भारत ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था और समाज की ओर बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे और अधिक भारतीय युवा उच्चतर शिक्षा की ओर बढ़ेंगे। इक्कीसवीं सदी की आवश्यकताओं को देखते हुए गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षा का जरूरी उद्देश्य अच्छे, चिंतनशील, बहुमुखी प्रतिभा वाले रचनात्मक व्यक्तियों का विकास करना होना चाहिए। यह एक व्यक्ति को एक या एक से अधिक विशिष्ट क्षेत्रों में गहन स्तर पर अध्ययन करने में सक्षम बनाती है, और साथ ही चरित्र, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों, बौद्धिक जिज्ञासा, वैज्ञानिक स्वभाव, रचनात्मकता, सेवा की भावना और विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी, भाषा, साथ ही व्यावसायिक, तकनीकी और व्यावसायिक विषयों सहित विभिन्न विषयों में 21वीं सदीं की क्षमताओं को विकसित करती है । व्यक्तियों के समग्र विकास के उद्देश्य के लिए यह आवश्यक है कि पूर्व-विद्यालय से उच्चतर शिक्षा तक, सीखने के प्रत्येक चरण में कौशल और मूल्यों का एक निर्धारित सेट शामिल किया जाएगा। सामाजिक स्तर पर, उच्चतर शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्र को प्रबुद्ध, सामाजिक रूप से जागरूक, जानकार और सक्षम बनाना है जो अपने नागरिकों का उत्थान कर सके और अपनी समस्याओं के लिए सशक्त समाधानों को ढूँढ़कर लागू कर सके। उच्चतर शिक्षा देश में ज्ञान निर्माण और नवाचार का आधार भी बनाती है और इसके चलते राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

Direction (Q. Nos 11 to 15): Read the passage given below and answer the questions that follow by selecting the most appropriate option:

Higher education plays an extremely important role in promoting human as well as societal well-being and in developing India as envisioned in its constitution-a democratic, just, socially-conscious, cultured, and humane nation upholding liberty, equality, fraternity and justice for all. Higher education significantly contributes towards sustainable livelihoods and economic development of the nation. As India moves towards becoming a knowledge economy and society, more and more young Indians are likely to aspire for higher education. Given the 21st century requirements, quality higher education must aim to develop good, thoughtful, well-rounded and creative individuals. It must enable an individual to study one or more specialized areas of interest at a deep level, and also develop character, ethical and constitutional values, intellectual curiosity, scientific temper, creativity, spirit of service and 21st century capabilities across a range of disciplines including sciences, social sciences, arts, humanities, languages, as well as professional, technical and vocational subjects. For the purpose of developing holistic individuals, it is essential that an identified set of skills and values will be incorporated at each stage of learning from pre-school to higher education. At the societal level, higher education must enable the development of an enlightened, socially conscious, knowledgeable, and skilled nation that can find and implement robust solutions to its own problems. Higher education must form the basis for knowledge creation and innovation thereby contributing to a growing national economy.

11. उच्चतर शिक्षा का मुख्य उद्देश्य नहीं हैः

(अ) आपदा प्रबंधन

(ब) चिंतनशील व्यक्तियों का निर्माण

(स) बहुमुखी प्रतिभा वाले रचनात्मक व्यक्तियों का विकास

(द) सामाजिक कल्याण

The main objective of higher education is not:

(A) Disaster Management

(B) Creation of thoughtful individuals

(C) Development of well-rounded creative individuals

(D) Social welfare

उत्तर-(अ) आपदा प्रबंधन

गद्यांश में चिंतनशील व्यक्तियों का निर्माण, बहुमुखी प्रतिभा वाले रचनात्मक व्यक्तियों का विकास और सामाजिक कल्याण को उच्चतर शिक्षा के उद्देश्य बताया गया है। आपदा प्रबंधन का उल्लेख मुख्य उद्देश्य के रूप में नहीं है।

12. उच्चतर शिक्षा की ओर युवाओं को आकर्षित करने के लिए आवश्यक हैः

(अ) तकनीकों का अत्यधिक उपयोग

(ब) ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का विकास

(स) व्यापार में उन्नति

(द) संस्थागत स्वायत्तता

To attract youth towards higher education, it is necessary:

(A) Excessive use of technologies

(B) Development of knowledge based economy

(C) Progress in business

(D) Institutional autonomy

उत्तर-(ब) ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का विकास

गद्यांश में स्पष्ट है कि भारत जैसे-जैसे ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था और समाज की ओर बढ़ेगा, वैसे-वैसे अधिक भारतीय युवा उच्चतर शिक्षा की ओर बढ़ेंगे।

13. निम्नलिखित में से कौनसा कथन असत्य है?

(अ) उच्चतर शिक्षा आर्थिक विकास को स्थायित्व प्रदान करती है।

(ब) संविधान में भारत की परिकल्पना सामाजिक रूप से सचेत राष्ट्र के रूप में की गई है।

(स) उच्चतर शिक्षा का उद्देश्य बौद्धिक विकास है, आजीविका प्रदान करना नहीं ।

(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Which of the following statements is false ?

(A) Higher education provides stability to economic development.

(B) India has been envisioned in the constitution as a socially conscious nation.

(C) The aim of higher education is intellectual development, not to provide livelihood.

(D) None of the above

उत्तर-(स) उच्चतर शिक्षा का उद्देश्य बौद्धिक विकास है, आजीविका प्रदान करना नहीं।

गद्यांश के अनुसार उच्चतर शिक्षा आर्थिक विकास और आजीविकाओं को स्थायित्व देने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। इसलिए यह कहना गलत है कि इसका उद्देश्य आजीविका से संबंधित नहीं है।

14. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास में उच्चतर शिक्षा किस प्रकार अपना योगदान देती है ?

(अ) संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करके

(ब) भाईचारें का भाव जगाकर

(स) नैतिक बल बढ़ाकर

(द) ज्ञान निर्माण और नवाचार द्वारा

How does higher education contribute to the development of the national economy ?

(A) by protecting constitutional values

(B) by awakening the feeling of brotherhood

(C) by increasing moral strength

(D) by knowledge creation and innovation

उत्तर- (द) ज्ञान निर्माण और नवाचार द्वारा

गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि उच्चतर शिक्षा ज्ञान निर्माण और नवाचार का आधार बनती है तथा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

15. व्यक्ति के समग्र विकास के लिए क्या आवश्यक है ?

(अ) पूर्व-विद्यालय से लेकर उच्चतर शिक्षा तक एक निर्धारित क्रम में कौशल एवं मूल्यों की शिक्षा ।

(ब) संविधान द्वारा निर्धारित मानकों का समग्र अनुपालन ।

(स) बौद्धिक जिज्ञासा एवं वैज्ञानिक स्वभाव का निरंतर विकास ।

(द) सामाजिक जीवन में अतिशय सक्रियता ।

What is necessary for the overall development of an individual ?

(A) Teaching of skills and values in a prescribed sequence from pre-school to higher education.

(B) Overall compliance with the standards set by constitution.

(C) Continuous development of intellectual curiosity and scientific temper.

(D) Excessive activity in social life.

उत्तर-(अ) पूर्व-विद्यालय से लेकर उच्चतर शिक्षा तक एक निर्धारित क्रम में कौशल एवं मूल्यों की शिक्षा।

गद्यांश में बताया गया है कि व्यक्ति के समग्र विकास के लिए पूर्व-विद्यालय से उच्चतर शिक्षा तक सीखने के प्रत्येक चरण में कौशल और मूल्यों का निर्धारित समूह शामिल होना आवश्यक है।

16. छात्रों के चेहरे का भाव संप्रेषण प्रक्रिया के किस तत्व से सम्बन्धित है ?

(अ) संदेश (ब) प्रेषक

(स) चैनल (द) प्राप्तकर्ता

The facial expression of students is related to which element of the communication process ?

(A) Message (B) Sender

(C) Channel (D) Receiver

उत्तर-(द) प्राप्तकर्ता

जब छात्र शिक्षक का संदेश सुनते हैं, तो उनके चेहरे के भाव उनकी समझ, रुचि, असमंजस या प्रतिक्रिया को दर्शा सकते हैं। इसलिए इस प्रश्न में प्राप्तकर्ता सबसे उपयुक्त विकल्प है।

17. **निम्नलिखित में से देह भाषा (भाव-भंगिमा) का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त तकनीकी शब्द कौनसा है ?**

(अ) निकटता (ब) कालक्रम

(स) गैर-मौखिक (द) स्पर्शिक

Identify the technical term used to describe body language from the following:

(A) Proxemics (B) Chronemics

(C) Kinesics (D) Haptics

उत्तर-(स) गैर-मौखिक

चेहरे के भाव, हाथों के संकेत, शारीरिक हाव-भाव और आँखों के इशारे गैर-मौखिक संप्रेषण के उदाहरण हैं।

18. **निम्नलिखित में से किसे मौखिक संप्रेषण का एक प्रभावी रूप माना जाता है ?**

(अ) कहानी सुनाना (ब) नारेबाजी

(स) ऊँची आवाज का प्रयोग (द) स्वगत भाषण

Which of the following is considered as an effective form of verbal communication?

(A) Story-telling

(B) Sloganeering

(C) Use of high pitch of voice

(D) Monologues

उत्तर-(अ) कहानी सुनाना

कहानी सुनाने से विचार सरल, रोचक और याद रखने योग्य बनते हैं। इससे श्रोता संदेश को आसानी से समझ सकते हैं।

19. **सांकेतिक संदेश किसके माध्यम से प्रसारित होता है ?**

(अ) प्रतीक (ब) संदेश

(स) चैनल (द) प्रेषक

The encoded message is transmitted through:

(A) Symbol (B) Message

(C) Channel (D) Sender

उत्तर-(अ) प्रतीक

सांकेतिक संदेश में शब्दों, संकेतों, चित्रों या अन्य प्रतीकों के माध्यम से प्रसारित होते हैं।

20. **शिक्षकों की कक्षा में अधिकतम प्रभावी संप्रेषण करने में ..... मदद कर सकता है।**

(अ) अध्यापन परिणाम (ब) अध्यापन निवेश

(स) अध्ययन परिणाम

(द) अध्यापन-अध्ययन के परिणाम

Effective communication can help the teachers to maximize the.....in the classroom.

(A) Teaching outcomes (B) Teaching input

(C) Learning outcomes

(D) Teaching-learning outcomes

उत्तर-(द) अध्यापन-अध्ययन के परिणाम

कक्षा में शिक्षकों द्वारा प्रभावी संप्रेषण (संचार) स्थापित करने के लिये अध्यापन अध्ययन के परिणाम सबसे अधिक सहायक होते हैं क्योंकि ये शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया के उद्देश्यों व उपलब्धियों को स्पष्ट करते हैं।

21. **निम्नलिखित का मान क्या होगा ?**

What would be the value of the following?

$8\sqrt{15} \div 2\sqrt{3}$

(अ) $2\sqrt{5}$ (ब) $4\sqrt{15}$

(स) $4\sqrt{5}$ (द) $2\sqrt{15}$

उत्तर-(स) $4\sqrt{5}$

$= 8\sqrt{15} \div 2\sqrt{3}$

$= \frac{8}{2} \times \sqrt{\frac{15}{3}}$

$= 4 \times \sqrt{5}$

$= 4\sqrt{5}$

22. **निम्नांकित संख्या श्रृंखला पर विचार कीजिएः**

Consider the following number series:

0, 6, 24, 60, 120, X का मान क्या होगा ?

0, 6, 24, 60, 120, X What is the value of X?.

(अ) 180 (ब) 210

(स) 240 (द) 156

उत्तर-(ब) 210

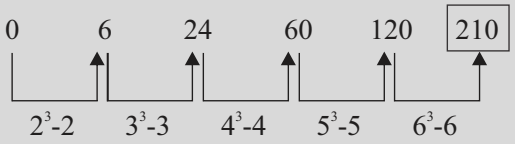

23. **एक किताब 10% लाभ पर 27.50 रुपये में बेची जाती है। यदि इसे 25.75 रुपये में बेचा जाये, तो लाभ या हानि का प्रतिशत क्या होगा ?**

A book was sold for Rs. 27.50 with a profit of 10%. If it were sold for Rs. 25.75, then find the percentage of profit or loss.

(अ) 4% (ब) 10%

(स) 5% (द) 3%

उत्तर-(द) 3% लाभ

सबसे पहले हम क्रय मूल्य ज्ञात करते हैं-

10% लाभ पर विक्रय मूल्य = रु. 27.50

$$CP = \frac{27.50 \times 100}{110} \text{ रु.} = 25$$

अब हम हानि ज्ञात करते हैं-

हानि = 25 – 25.75 = – रु. 0.75

यहाँ विक्रय मूल्य रु. 25.75, क्रय मूल्य रु. 25 से अधिक है। इसलिए हानि नहीं, लाभ होगा।

$$\text{लाभ } \% = \frac{0.75}{25} \times 100 = 3\%$$

24. दो लड़के A और B एक ही समय पर दिल्ली से मेरठ की यात्रा पर निकलते हैं, दिल्ली से मेरठ की दूरी 60 किमी. है; A, B की तुलना में 4 किमी. प्रति घंटा धीमी यात्रा करता है। B मेरठ पहुँचने के तुरंत बाद वापस लौटता है जो 12 किमी. दूर A से मिलता है। A की गति क्या होगी ?

(अ) 8 किमी./घंटा (ब) 10 किमी./घंटा

(स) 9.7 किमी./घंटा (द) 10.5 किमी./घंटा

Two boys A and B start at the same time to ride from Delhi to Meerut, 60 km away. A travels 4 km/hr slower than B. B reaches Meerut and at once turns back meeting A 12 km from Meerut. Find the speed of A.

(A) 8 km/hr (B) 10 km/hr

(C) 9.7 km/hr (D) 10.5 km/hr

उत्तर-(अ) 8 किमी/घंटा

A ने दूरी तय की : 60 - 12 = 48 किमी.

B ने दूरी तय की : 60 + 12 = 72 किमी.

दोनों ने समान समय तक यात्रा की, इसलिए उनकी गति का अनुपात

$$\frac{B}{A}=\frac{72}{48}=\frac{3}{2}$$

अब, माना कि A की गति x किमी/घंटा है।

तब B की गति $x + 4$ होगी।

$$\Rightarrow \quad \frac{x+4}{x}=\frac{3}{2}$$

$$\Rightarrow \quad 2x + 8 = 3x$$

$$\Rightarrow \quad x = 8$$

25. यदि 'RAJU' को 11-12-13-14 से कोड किया गया है और 'JUNK' को 13-14-10-9 से कोड किया गया है, तो 'RANK' का कोड क्या होगा ?

If 'RAJU' is coded as 11-12-13-14 and 'JUNK' is coded as 13-14-10-9, then how will you code 'RANK'?

(अ) 9-10-11-12 (ब) 10-11-12-9

(स) 11-12-10-9 (द) 12-11-10-9

उत्तर-(स) 11-12-10-9

जिस प्रकार,

R A J U → 11 12 13 14, J U N K → 13 14 10 9

उसी प्रकार,

R A N K → 11 12 10 9

'RANK' का कोड 11-12-10-9 होगा।

26. एक निगमनात्मक युक्ति वैध है यदि और केवल यदि :

(अ) आधारवाक्यों की सत्यता निष्कर्ष की सत्यता को आश्वासित करती है

(ब) निष्कर्ष असत्य नहीं हो सकता यदि आधार-वाक्य सत्य हैं।

(स) उसके आधारवाक्य सत्य हैं और उसका निष्कर्ष तार्किक रूप से उसका अनुसरण करता है ।

(द) उसके आधारवाक्य सत्य हैं और निष्कर्ष असत्य है ।

A deductive argument is valid if and only if:

(A) The truth of the premises guarantees the truth of the conclusion.

(B) The conclusion cannot be false if the premises are true.

(C) Its premises are true and its conclusion logically follows.

(D) Its premises are true and its conclusion is false.

उत्तर-(ब) निष्कर्ष असत्य नहीं हो सकता यदि आधार-वाक्य सत्य हैं।

निगमनात्मक युक्ति वैध होने का अर्थ है कि यदि सभी आधार-वाक्य सत्य हों, तो निष्कर्ष असत्य नहीं हो सकता। वैधता का संबंध तर्क की संरचना से है, न कि आधार-वाक्यों के वास्तव में सत्य होने से।

27. दिये गये वेन रेखाचित्र द्वारा निम्नलिखित में से कौनसी निरपेक्ष न्यायवाक्य की अवस्था और आकृति दर्शाई गई है ?

Which of the following mood and figure of a categorical syllogism is represented by this Venn diagram ?

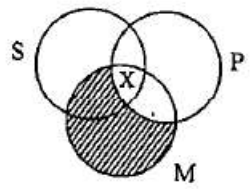

(अ) A00-4 (ब) A11-2

(स) A10-3 (द) A11-3

उत्तर-(द) A11-3

वेन आरेख A11-3 को निरूपित करता है :

- **A :** M का छायांकित भाग दर्शाता है कि "**सभी M, P है।**"
- **I :** M और S में x दर्शाता है कि "**कुछ M, S है।**"
- **I :** इससे निष्कर्ष "**कुछ S, R है**" निकलता है।
- दोनों कथनों में M के उद्देश्य (Subject) होने से यह **आकृति 3** है।

28. भाषा का निम्नलिखित में से कौनसा उपयोग निर्देशात्मक कार्य को संदर्भित करता है ?

(अ) 'खिड़की बंद कर दो।'

(ब) 'सभी मनुष्य मरणशील हैं।'

(स) 'मैं आज खुशी महसूस कर रहा हूँ।'

(द) 'कुछ कुत्ते मिलनसार होते हैं।'

Which of the following uses of language refers to the directive function?

(A) "Close the window."

(B) "All humans are mortal."

(C) "I feel happy today."

(D) "Some dogs are friendly."

उत्तर-(अ) 'खिड़की बंद कर दो।'

भाषा का Directive Function (निर्देशात्मक कार्य) किसी व्यक्ति को **कार्रवाई करने, आदेश देने** या **अनुरोध करने** के लिए इस्तेमाल होता है। **'खिड़की बंद कर दो'** एक स्पष्ट आदेश है, इसलिए यह Directive Function (निर्देशात्मक कार्य) का उदाहरण है। **अन्य विकल्प** केवल जानकारी व्यक्त करते हैं।

29. निम्नलिखित में से कौनसा अनुमान प्रमाण का आवश्यक घटक नहीं है?

(अ) हेतु (ब) 'प्रत्यक्ष

(स) पक्ष (द) व्याप्ति

Which of the following is not a necessary component of Anumāna Pramāna ?

(A) Hetu (reason)

(B) Pratyaksa (Perception)

(C) Paksa (Subject)

(D) Vyāpti (Universal relation)

उत्तर-(ब) प्रत्यक्ष

भारतीय न्याय दर्शन में अनुमान के प्रमुख घटक पक्ष, हेतु और व्याप्ति हैं। प्रत्यक्ष एक अलग प्रमाण है, पर अनुमान का आवश्यक घटक नहीं है।

30. 'देवदत्त जो जीवित है वह घर में नहीं है। उसके घर में न होने से यह अनुमान लगाया जाता है कि वह घर के बाहर कहीं है।' उपर्युक्त उदाहरण किस प्रमाण को दर्शाता है ?

(अ) अनुपलब्धि (ब) अनुमान

(स) अर्थापत्ति (द) उपमान

"Devadatta who is alive is not in the house. His non-existence in the house leads to the presumption that he is some where outside the house." The above example is the instantiation of which Pramana ?

(A) Anupalabdhi (B) Anumāna

(C) Arthāpatti (D) Upamāna

उत्तर-(स) अर्थापत्ति

अर्थापत्ति में किसी ज्ञात तथ्य की व्याख्या करने के लिए एक आवश्यक तथ्य की कल्पना की जाती है। **उदाहरणः** देवदत्त जीवित है, लेकिन घर में नहीं है; इसलिए माना जाता है कि वह कहीं बाहर है।

31. निम्नलिखित में से कौनसा समग्र और प्रतिदर्श के बीच का अन्तर परिभाषित कर रहा है ?

(अ) प्रतिदर्श सम्पूर्ण आँकड़ों का समूह है ।

(ब) समग्र प्रतिदर्श के समान है।

(स) समग्र प्रतिदर्श का एक उपसमूह है ।

(द) प्रतिदर्श समग्र का एक उपसमूह है ।

What describes the difference between a population and a sample ?

(A) A sample is the entire data set.

(B) A population is same as a sample.

(C) A population is a subset of a sample.

(D) A sample is a subset of population.

उत्तर-(द) प्रतिदर्श समग्र का एक उपसमूह है।

तर्कः

• **समग्र (Population)**: अध्ययन से संबंधित सभी इकाइयाँ।

• **प्रतिदर्श (Sample)**: समग्र में से चुनी गई कुछ इकाइयाँ।

उदाहरणः एक विद्यालय के सभी 500 विद्यार्थी समग्र हैं और उनमें से चुने गए 50 विद्यार्थी प्रतिदर्श हैं।

32. निम्नलिखित में से कौनसी आँकड़ों के वर्गीकरण की विधियाँ हैं ?

(अ) संख्यात्मक, श्रेणीबद्ध और क्रमिक

(ब) प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक

(स) असतत् बाइनरी और सतत

(द) वर्गान्तर, मात्रात्मक और गुणात्मक

Which of the following are methods of data classification ?

(A) Numerical, Categorical and Ordinal

(B) Primary, Secondary and Tertiary

(C) Discrete, Binary and Continuous

(D) Class Intervals, Quantitative and Qualitative

उत्तर-(अ) संख्यात्मक, श्रेणीबद्ध और क्रमिक।

आँकड़ों को संख्यात्मक (Numerical), श्रेणीबद्ध (Categorical) और क्रमिक (Ordinal) रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। ध्यान दें कि क्रमिक आँकड़े श्रेणीबद्ध आँकड़ों का ही एक प्रकार हैं।

33. नामांकिक माप को निम्नलिखित में से किस उदाहरण से बेहतर समझा जा सकता है ?

(अ) वजन को किलोग्राम में मापना

(ब) लिंग वर्गीकरण जैसे पुरुष और महिला

(स) तापमान डिग्री सेल्सियस में मापना

(द) ऊँचाई इंच में मापना

Nominal measurement can be understood better with the help of the following examples:

(A) Measuring weight in kg

(B) Classification of gender as a male and female

(C) Measuring temperature in degree celsius

(D) Measuring height in inches

उत्तर-(ब) लिंग वर्गीकरण जैसे पुरुष और महिला।

नामांकिक माप (Nominal Scale) में आँकड़ों को केवल अलग-अलग नामों या श्रेणियों में बाँटा जाता है। इनमें कोई निश्चित क्रम नहीं होता। उदाहरणः रक्त समूह, रंग, या प्रश्न में दिए गए लिंग-वर्ग।

34. Y का X पर प्रतीपगमन समीकरण क्या होगा ?

The Regression equation of Y on X is:

(अ) $Y = a + \frac{b}{X}$ (ब) $Y = a - bX$

(स) $Y = a + bX$ (द) $Y = ab + X$

उत्तर-(C) Y = a + bX

Y का X पर प्रतीपगमन

Y बाएँ (Left) तरफ अकेला रहेगा।

X दाएँ (Right) *b* तरफ के साथ गुणा में रहेगा।

$$Y = a + bX$$

जहाँ, a = अंतःखण्ड (Intercept)

b = समाश्रयण गुणांक (Regression Coefficient)

35. परिकल्पना के परीक्षण में प्रथम प्रकार की त्रुटि क्या दर्शाती है ?

(अ) शून्य परिकल्पना अस्वीकार हो जाने की संभावना जबकि वह सत्य हो ।

(ब) सांख्यिकीय रूप में महत्त्वपूर्ण प्रभाव का पता लगाने की संभावना जब वह मौजूद नहीं हो ।

(स) सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण प्रभाव का पता लगाने की संभावना जब वह मौजूद हो ।

(द) शून्य परिकल्पना स्वीकार हो जाने की संभावना जब वह गलत हो

What does type I error indicate in testing of a hypothesis ?

(A) The probability of rejecting a null hypothesis when it is true

(B) The probability of detecting a statistically significant effect when it does not exist.

(C) The probability of detecting a statistically significant effect when it exists.

(D) The probability of accepting a null hypothesis when it is false.

उत्तर-(अ) शून्य परिकल्पना अस्वीकार हो जाने की संभावना जबकि वह सत्य हो।

प्रथम प्रकार की त्रुटि (Type I Error) तब होती है जब सत्य शून्य परिकल्पना (H_0) को गलत तरीके से अस्वीकार कर दिया जाता है।

36. वाई-फाई इसका एक उदाहरण है :

(अ) वायरलेस WAN टेक्नोलॉजी

(ब) वायरलेस MAN टेक्नोलॉजी

(स) वायरलेस LAN टेक्नोलॉजी

(द) उपर्युक्त सभी

Wi-Fi is an example of:

(A) Wireless WAN Technology

(B) Wireless MAN Technology

(C) Wireless LAN Technology

(D) All of the above

उत्तर-(अ) वायरलेस LAN टेक्नोलॉजी

Wi-Fi का सामान्य उपयोग स्थानीय क्षेत्र में उपकरणों को वायरलेस नेटवर्क से जोड़ने के लिए होता है। इसलिए यहWireless Local Area Network (WLAN) का उदाहरण है।

37. जब एक फाइल को सर्वर से कम्प्यूटर में स्थानांतरित किया जाता है, तो उसे कहा जाता है :

(अ) एक फाइल का क्रियान्वयन (ब) फाइल अपलोड करना

(स) फाइल डाउनलोड करना (द) एक फाइल निकालना

When a file is transferred from a server to a computer, it is called:

(A) Executing a file (B) Uploading a file

(C) Downloading a file (D) Extracting a file

उत्तर-(स) फाइल डाउनलोड करना

सर्वर से अपने कंप्यूटर में फाइल लेना Download कहलाता है। अपने कंप्यूटर से सर्वर पर फाइल भेजना Upload कहलाता है।

38. अनुत्तरदायी प्रोग्राम को बंद करने के लिए उपयोग किया जाने वाला विण्डोज यूटिलिटी प्रोग्राम है :

(अ) टास्क मैनेजर (ब) डिस्क मैनेजर

(स) फाइल एक्सप्लोरर (द) लाइब्रेरी एक्सप्लोरर

The windows utility program used for closing unresponsive program is:

(A) Task Manager (B) Disk Manager

(C) File Explorer (D) Library Explorer

उत्तर-(अ) टास्क मैनेजर

Task Manager की सहायता से अनुत्तरदायी प्रोग्राम या प्रक्रिया को चुनकर End Task किया जा सकता है।

39. एम.एस.-वर्ड में एक टेम्प्लेटः

(अ) किसी विशेष प्रकार के दस्तावेज के लिए एक बुनियादी संरचना प्रदान करता है ।

(ब) एक जटिल कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक चरणों के माध्यम से एक उपयोगकर्ता का मार्गदर्शन करता है।

(स) आदेशों की एक श्रृंखला समूहित करता है ताकि वे एक ही आदेश के रूप में चल सकें ।

(द) उपर्युक्त सभी

In MS-Word a template:

(A) Provides a basic structure for a particular kind of document.

(B) Walks a user through the steps necessary to complete a complicated task.

(C) Groups a series of commands so that they will run as a single command.

(D) All of the above

उत्तर-(अ) किसी विशेष प्रकार के दस्तावेज के लिए एक बुनियादी संरचना प्रदान करता है।

टेम्प्लेट में पहले से निर्धारित डिज़ाइन, लेआउट, फॉर्मेटिंग और अन्य संरचनात्मक तत्व हो सकते हैं, जिनसे नया दस्तावेज आसानी से बनाया जा सकता है।

40. वोर्म एक कम्प्यूटर प्रोग्राम है, जो :

(अ) स्वयं को दोहराता है ।

(ब) मालवेयर का एक रूप है ।

(स) फाइल में या डिस्क पर किसी विशेष स्थान पर स्वयं की छवि बनाता है ।

(द) उपर्युक्त सभी

A worm is a computer program that:

(A) replicates itself.

(B) is a form of malware.

(C) creates an image of itself in a file or at a particular location on the disk.

(D) All of the above

उत्तर-(द) उपर्युक्त सभी

कंप्यूटर वोर्म (Computer Worm) के संबंध में दिए गए सभी कथन बिल्कुल सही हैं:

(अ) खुद की नकल/प्रतिकृति बनाता है : वोम एक ऐसा प्रोग्राम है जो किसी मानवीय हस्तक्षेप के बिना नेटवर्क के माध्यम से खुद की प्रतियां (copies) तेजी से बना सकता है।

(ब) मैलवेयर का एक रूप है : यह एक हानिकारक सॉफ्टवेयर (Malicious Software) है जो सिस्टम और नेटवर्क संसाधनों को नुकसान पहुँचाता है।

(स) डिस्क पर अपनी छवि या प्रति बनाता है: यह कंप्यूटर डिस्क या फाइलों में किसी खास जगह पर अपनी इमेज/कॉपी बनाकर खुद को स्टोर और स्प्रेड करता है।

अतः विकल्प (द) सही है।

41. निम्नलिखित ऊर्जा ईंधनों में से कौनसा सबसे पर्यावरण अनुकूल है ?

(अ) बायोगैस (ब) सी.एन.जी.

(स) हाइड्रोजन (द) ईथेनोल

Among the following fuels of energy, which is the most environment friendly?

(A) Biogas (B) CNG

(C) Hydrogen (D) Ethanol

उत्तर-(स) हाइड्रोजन

हाइड्रोजन का उपयोग ईंधन के रूप में करने पर, विशेषकर ईंधन-सेल में, मुख्य उत्पाद पानी होता है। हालाँकि, इसका पर्यावरणीय प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि हाइड्रोजन का उत्पादन किस तरीके से किया गया है। नवीकरणीय ऊर्जा से बना ग्रीन हाइड्रोजन अधिक पर्यावरण-अनुकूल विकल्प है।

42. 'मिलेनियम डेवलपमेन्ट गोल्स (MDGs)' को प्राप्त करने का लक्ष्य वर्ष क्या था ?

What was the target year for achieving the 'Millennium Development Goals. (MDGs)'?

(अ) 2009 (ब) 2012

(स) 2015 (द) 2018

उत्तर-(स) 2015

संयुक्त राष्ट्र के सहस्राब्दी विकास लक्ष्य वर्ष 2000 में निर्धारित किए गए थे और इन्हें प्राप्त करने की समय-सीमा 2015 थी।

43. सूची-I और सूची-II का मिलान कीजिए और सही कूट की पहचान कीजिए:

सूची-I	सूची- II
(a) पोडजोलाइजेशन	(i) गर्म और आर्द्र जलवायु
(b) लैटेराइजेशन	(ii) ठंडी और आर्द्र जलवायु
(c) सैलिनाइजेशन	(iii) शुष्क और अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में

कूट :

(अ) (a) (ii), (b)- (i), (c) - (iii)

(ब) (a) (i), (b)- (ii), (c) -(iii)

(स) (a) (iii), (b) - (ii), (c) - (i)

(द) (a) (iii), (b) - (i), (c) - (ii)

Match List I and List II and identify the correct code:

List I	List II
(a) Podzolization	(i) Warm and humid climate
(b) Laterization	(ii) Cold and humid climate
(c) Salinization	(iii) In arid and semi-arid regions

Codes:

(A) (a) -(ii), (b) - (i), (c) - (iii)

(B) (a) -(i), (b)- (ii), (c) - (iii)

(C) (a) -(iii), (b) (ii), (c)- (i)

(D) (a)- (iii), (b) - (i), (c) - (ii)

उत्तर-(अ) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iii)

सही मिलान -

सूची I	सूची-II
(a) पोडजोलाइजेशन	(ii) ठंडी और आर्द्र जलवायु
(b) लैटेराइजेशन	(i) गर्म और आर्द्र जलवायु
(c) सैलिनाइजेशन	(iii) शुष्क और अर्द्धशुष्क क्षेत्र

44. चक्रवात 'हुद-हुद' किस राज्य के तट से टकराया ?

(अ) आन्ध्र प्रदेश

(ब) कर्नाटक

(स) केरल

(द) गुजरात

The cyclone 'Hud-Hud' hit the coast of which state?

(A) Andhra Pradesh

(B) Karnataka

(C) Kerala

(D) Gujarat

उत्तर-(अ) आंध्र प्रदेश

यह बंगाल की खाड़ी से उठा एक अत्यंत तीव्र चक्रवाती तूफान था। अक्टूबर 2014 को आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम तट (आंध्र प्रदेश) से टकराया था। विशाखापत्तनम (Visakhapatnam), आंध्र प्रदेश का एक प्रमुख शहर और तटीय क्षेत्र है। इस चक्रवात का नाम **ओमान (Oman)** देश द्वारा रखा गया था, जो **'हुदहुद' (Hoopoe)** पक्षी के नाम पर आधारित है।

45. 'एक सूर्य, एक विश्व, एक ग्रिड (OSOWOG)' किसका हिस्सा है ?

(अ) पेरिस समझौता

(ब) क्योटो प्रोटोकॉल

(स) अन्तर्राष्ट्रीय सौर संगठन

(द) जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना

"One Sun, One World, One Grid (OSOWOG)" is a part of:

(A) Paris Agreement (PA)

(B) Kyoto Protocol (KP)

(C) International Solar Alliance (ISA)

(D) National Action Plan on Climate Change (NAPCC)

उत्तर-(स) अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (International Solar Alliance)

OSOWOG का उद्देश्य विभिन्न देशों के बिजली ग्रिडों को जोड़कर नवीकरणीय ऊर्जा, विशेषकर सौर ऊर्जा, का आदान-प्रदान संभव बनाना है। यह पहल अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) से जुड़ी है।

46. रैले आयोग की रिपोर्ट के आधार पर निम्नलिखित में से किस अधिनियम को वर्ष 1904 में पारित किया गया ?

(अ) भारतीय संसदीय अधिनियम

(ब) भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम

(स) भारतीय डाक सेवा अधिनियम

(द) भारतीय पुलिस सेवा अधिनियम

Which of the following Acts was passed in 1904 based on the report of the Raleigh Commission ?

(A) Indian Parliamentary Act

(B) Indian Universities Act

(C) Indian Postal Services Act

(D) Indian Police Services Act

उत्तर- (ब) भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम

रैले आयोग (1902) की सिफारिशों के बाद 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम (Indian Universities Act) पारित किया गया।

47. निम्नलिखित में से किसे वैदिक गणित के खोजकर्ता के रूप में जाना जाता है ?

(अ) भास्कराचार्य

(ब) श्रीनिवास रामानुजन

(स) शंकराचार्य भारती कृष्ण तीर्थ

(द) सत्येंद्रनाथ बोस

Which of the following is known as the discoverer of Vedic Mathematics?

(A) Bhaskaracharya

(B) Srinivasa Ramanujan

(C) Shankaracharya Bharti Krishna Tirtha

(D) Satyendra Nath Bose

उत्तर-(स) शंकराचार्य भारती कृष्ण तीर्थ

भारती कृष्ण तीर्थ ने वैदिक गणित की आधुनिक प्रस्तुति को लोकप्रिय बनाया और इस विषय पर पुस्तक लिखी।

48. भारत में प्रोजेक्ट टाइगर किस वर्ष में प्रारंभ किया गया था ?

Project Tiger was launched in India in the year:

(अ) 1948 (ब) 1957

(स) 1973 (द) 1978

उत्तर-(स) 1973

शंकराचार्य भारत में बाघों के संरक्षण के उद्देश्य से प्रोजेक्ट टाइगर वर्ष 1973 में शुरू किया गया था।

49. राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग निम्नलिखित में से किस तिथि को अस्तित्व में आया ?

(अ) 4 जुलाई, 2020

(ब) 24 नवंबर, 2022

(स) 26 जनवरी, 2023

(द) 25 सितंबर, 2020

The National Medical Commission was established on which date ?

(A) 4th July, 2020

(B) 24th November, 2022

(C) 26th January, 2023

(D) 25th September, 2020

उत्तर-(द) 25 सितंबर, 2020

राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग का गठन 25 सितंबर 2020 से प्रभावी हुआ।

50. निम्नलिखित में से कौनसा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का उद्देश्य नहीं है ?

(i) उच्च शिक्षा में बहुप्रवेश तथा बहुनिर्गमन का प्रावधान।

(ii) व्यावसायिक शिक्षा के साथ उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 2035 तक 50% तक बढ़ाना ।

(iii) विद्यालयीन शिक्षा के लिये एक नवीन एवं व्यापक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा की स्थापना करना ।

(iv) भारत में विद्यालयीन शिक्षा संस्थानों को अनुदान देने एवं निगरानी हेतु विद्यालयीन अनुदान आयोग की स्थापना करना ।

सही विकल्प का चुनाव कीजिए:

(अ) (i) एवं (iii) (ब) (ii) एवं (iii)

(स) (iii) एवं (iv) (द) (iv)

Which of the following is not an object of National Education Policy-2020?

(i) Provision of multiple entry and multiple exit in higher education.

(ii) To increase the gross enrolment ratio in higher education including vocational education to 50% by 2035.

(iii) The formulation of a new and Comprehensive National Curricular Framework for School Education.

(iv) To establish a School Grants Commission for allocation and monitoring of the grants to schools in India.

Choose the correct option:

(A) (i) and (iii)

(B) (ii) and (iii)

(C) (iii) and (iv)

(D) (iv)

उत्तर-(द) (iv)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा में बहुप्रवेश एवं बहुनिर्गमन, वर्ष 2035 तक उच्च शिक्षा का सकल नामांकन अनुपात 50% करना और नया राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा विकसित करना शामिल है। लेकिन विद्यालयीन अनुदान आयोग की स्थापना इसका घोषित उद्देश्य नहीं है।

51. राज्य और संघ के बीच में संचार के लिए राजभाषा का प्रावधान संविधान के किस अनुच्छेद में किया गया है ?
(अ) अनुच्छेद 343 (ब) अनुच्छेद 345
(स) अनुच्छेद 346 (द) अनुच्छेद 344

उत्तर -(स) अनुच्छेद 346
अनुच्छेद 346 भारत के संविधान का एक अनुच्छेद है। यह संविधान के भाग 17 में सम्मिलित है और एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा का वर्णन करता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 346 में एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या एक राज्य और संघ के बीच संचार के लिए आधिकारिक भाषा से जुड़े प्रावधान हैं। इस अनुच्छेद के अनुसार, ऐसे संचार के लिए उपयोग की जाने वाली भाषा राष्ट्रपति तय करेंगे। राष्ट्रपति का निर्णय आने तक, अंग्रेजी भाषा का उपयोग किया जाएगा, यदि दो या दो से अधिक राज्य सहमत हों, तो वे हिंदी भाषा का उपयोग भी कर सकते हैं। यद्यपि, यदि राज्य का विधानमंडल, कानून के द्वारा, कोई और प्रावधान न करे, तो राज्य के भीतर उन शासकीय कार्यों के लिए अंग्रेजी भाषा का उपयोग होता रहेगा, जिनके लिए उसका उपयोग संविधान लागू होने से ठीक पहले किया जा रहा था।

52. 'भवसागर' शब्द में निम्नलिखित में से कौनसा समास है?
(अ) द्वन्द्व (ब) कर्मधारय
(स) बहुब्रीहि (द) अव्ययीभाव

उत्तर- (ब) कर्मधारय
'भवसागर' शब्द में कर्मधारय समास है।
- **समास-विग्रहः** भव (संसार) रूपी सागर।
- **कारणः** इस समास में पूर्व पद (भव) और उत्तर पद (सागर) के बीच 'रूपी' या उपमान-उपमेय का संबंध होता है तथा दूसरा पद प्रधान होता है।

53. यह शब्दांश या अव्यय, जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करता है, उसको कहते हैंः
(अ) प्रत्यय (ब) विसर्ग
(स) समास (द) उपसर्ग

उत्तर- (द) उपसर्ग
'उपसर्ग' उस शब्दांश या अव्यय को कहते हैं, जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करता है। उपसर्ग दो शब्दों (उप + सर्ग) के योग से बना है। यहाँ 'उ' का अर्थ 'समीप', 'निकट' या पास में है जबकि 'सर्ग' का अर्थ सृष्टि करना है। इस प्रकार उपसर्ग का अर्थ है पास में बैठकर दूसरा नया अर्थपूर्ण शब्द बनाना। जैसे- 'हार' के पहले 'प्र' उपसर्ग लगाने से नया शब्द 'प्रहार' बनता है जिसका अर्थ 'मारना' होता है। उपसर्ग हमेशा शब्द के पहले आता है।

54. निम्नलिखित में से 'ध्वनि' का पक्ष नहीं है?
(अ) 'संवहन' (ब) 'क्षमता'
(स) 'उत्पादन' (द) 'ग्रहण'

उत्तर- (ब) 'क्षमता'
ध्वनि विज्ञान या भाषाविज्ञान के संदर्भ में, ध्वनि की पूरी प्रक्रिया के मुख्य रूप से तीन मुख्य पक्ष (उत्पादन, संवहन और ग्रहण) होते हैंः
- **उत्पादनः** ध्वनि का पैदा होना या उत्पन्न होना।
- **संवहन/प्रसारणः** ध्वनि का किसी माध्यम (जैसे हवा, पानी) से होकर एक जगह से दूसरी जगह जाना।
- **ग्रहणः** कान या किसी उपकरण द्वारा ध्वनि को स्वीकार या अनुभव किया जाना।

'क्षमता' ध्वनि की इस प्रक्रियात्मक श्रृंखला या पक्षों का भाग नहीं है।

55. 'प्रबल' शब्द निम्नलिखित में से किस प्रकार का विशेषण है?
(अ) संकेतवाचक (ब) परिमाणबोधक
(स) संख्यावाचक (द) गुणवाचक

उत्तर- (द) गुणवाचक है।
'प्रबल' शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु के बल, क्षमता, अवस्था या गुण (जैसे- प्रबल इच्छा, प्रबल विरोध, प्रबल हवा) को दर्शाता है। जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, रूप, स्वभाव, दशा या विशेषता का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

56. 'प्राचीन भारतीय आर्यभाषा' के अन्तर्गत आने वाली 'लौकिक संस्कृत' की समय-सीमा है।
(अ) 1000 ई.पू. से 500 ई.पू. (ब) 500 ई.पू. से 1 ईसवी
(स) 500 ई.पू. से 1000 ई. (द) 1500 ई.पू. से 1000 ई.

उत्तर- (अ) 1000 ई.पू. से 500 ई.पू.
प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के अंतर्गत आने वाली 'लौकिक संस्कृत' का समय सामान्यतः लगभग 1000 ई. पूर्व से 500 ई. पूर्व (या पाणिनि के व्याकरण के निर्धारण- चौथी शताब्दी ई. पूर्व- से आगे शास्त्रीय रूप में) माना जाता है। विभिन्न विद्वानों और स्रोतों के अनुसार इसका काल-विभाजन इस प्रकार हैः
- **लौकिक संस्कृत का मुख्य काल-** प्रायः 800 ई.पू.- 500 ई.पू. से आगे (पाणिनि की 'अष्टाध्यायी', जिसका समय लगभग 500-400 ई.पू. माना जाता है, के बाद से लौकिक संस्कृत का मानकीकरण हुआ और यह साहित्य की मुख्य भाषा बनी)।
- **संपूर्ण प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का काल-** 1500 ई.पू. से 500 ई.पू. के बीच वैदिक और लौकिक संस्कृत दोनों का विकास हुआ, जिसमें वैदिक संस्कृत के बाद लौकिक संस्कृत का विस्तार हुआ।
- **प्रमुख साहित्यः** रामायण (वाल्मीकि), महाभारत (वेदव्यास), महाकवि कालिदास के नाटक व काव्य, पुराण और विभिन्न शास्त्रीय ग्रंथ इसी लौकिक संस्कृत में रचे गए हैं।

57. इनमें से 'ओकार बहुला' बोली नहीं है -

(अ) ब्रज (ब) कन्नौजी
(स) हरियाणवी (द) बुन्देली

उत्तर- (स) हरियाणवी

हरियाणवी (बांगरू) एक आकार बहुला बोली है। ब्रज, कन्नौजी और बुन्देली पश्चिमी हिंदी की ओकार बहुला बोलियाँ हैं अवधी को मुख्य रूप से उकार बहुला बोली माना जाता है, क्योंकि इसमें शब्दों और व्याकरणात्मक रूपों का अंत प्रायः 'उ' (न) की ध्वनि से होता है।

उकार बहुला बोली की विशेषताएँः

- **अंत ध्वनि-** इसके शब्दों, संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया के रूपों में 'उ'कार की प्रधानता होती है।
- **क्षेत्र-** यह मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र (जैसे अयोध्या, लखनऊ, सुल्तानपुर, गोंडा आदि) में बोली जाती है।

58. 'वह कौनसा मनुष्य है, जिसने महाप्रतापी विक्रमादित्य का नाम न सुना हो।'-रचना की दृष्टि से यह इनमें से किस प्रकार का वाक्य है ?

(अ) मिश्र वाक्य (ब) सरल वाक्य
(स) संयुक्त वाक्य (द) क्रियाविशेषण उपवाक्य

उत्तर- (अ) मिश्र वाक्य

मिश्र वाक्य वह वाक्य होता है जिसमें एक प्रधान उपवाक्य हो और उस पर आश्रित एक या एक से अधिक अन्य उपवाक्य हों (जो 'जिसने', 'जो', 'कि', 'क्योंकि' आदि से जुड़े होते हैं)।

इस वाक्य में ''वह कौनसा मनुष्य है'' प्रधान उपवाक्य है और ''जिसने महाप्रतापी विक्रमादित्य का नाम न सुना हो'' उस पर आश्रित उपवाक्य है। इसलिए यह मिश्र वाक्य है।

59. 'रेगिस्तान' इनमें से किस प्रकार का संज्ञा शब्द है?

(अ) भाववाचक (ब) व्यक्तिवाचक
(स) जातिवाचक (द) निजवाचक

उत्तर- (स) जातिवाचक

- **जातिवाचक संज्ञाः** जो शब्द किसी संपूर्ण जाति, वर्ग या समूह का बोध कराते हैं, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं (जैसे- नदी, पर्वत, रेगिस्तान, लड़का)।
- 'रेगिस्तान' किसी एक विशेष मरुस्थल का नाम न होकर दुनिया के सभी मरुस्थलों की जाति का बोध कराता है। (यदि किसी विशेष रेगिस्तान का नाम हो, जैसे- 'थार का रेगिस्तान' या 'सहारा रेगिस्तान', तो वह 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' होगा)।

60. आधुनिक भारतीय भाषा 'बंगाली' की उत्पत्ति निम्नलिखित में से किस अपभ्रंश से हुई है?

(अ) शौरसेनी (ब) मागधी
(स) अर्धमागधी (द) ब्राचड़

उत्तर- (ब) मागधी

मागधी अपभ्रंश से बिहारी हिंदी (मगही, मैथिली, भोजपुरी) के साथसाथ बंगाली, ओड़िया और असमिया भाषाएँ और बोलियाँ विकसित हुई हैं। मागधी का क्षेत्र प्राच्य देश वर्तमान बिहार में रहा है। मगध की भाषा मागधी कहलाती है। इसका सर्वप्रथम रूप अश्वघोष के नाटकों में दिखाई देता है। साथ ही साथ कालिदास के नाटकों में तथा शूद्रक के मृच्छकटीक में मागधी का प्रयोग दिखाई देता है। कुछ विद्वानों के अनुसार भिक्षु, क्षपणक, रक्षक, चेट आदि मागधी बोलते थे। इस भाषा के तीन प्रकार मिलते हैं- शाकारी, चाण्डाली और शाबरी।

61. ''आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने आदिकाल को वीरगाथा काल नाम बहुत समझ-बूझकर दिया है।'' यह कथन किस आलोचक का है?

(अ) रामचन्द्र तिवारी (ब) नामवर सिंह
(स) रामविलास शर्मा (द) रामस्वरूप चतुर्वेदी

उत्तर- (स) रामस्वरूप चतुर्वेदी

भारतेन्दु युग में कई साहित्यिक भाषाओं का नवीनीकरण हुआ। इनमें से एक आलोचना भी थी। हिन्दी आलोचना का वास्तविक प्रारम्भ तो रीतिकाल से थोड़ा बाद में भारतेन्दु युग से होता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आदि काल को वीरगाथा काल नाम बहुत समझ-बूझकर दिया है। उनकी दृष्टि में इस काल का केन्द्रीय साहित्य रासो-काव्य है न कि सिद्ध-नाथों की बानियाँ। भाषा की दृष्टि से हिन्दी का वास्तविक प्रारम्भ जितने स्पष्ट रूप से रासो में दिखाई देता है उतना इन अपभ्रंश आधारित बानियों में नहीं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के नामकरण में 'वीर' शब्द ही नहीं 'गाथा' का भी विशिष्ट अर्थ है। 'गाथा' के साथ शौर्य और शिवैलरी के तत्त्व जुड़े हुए हैं।

62. देव द्वारा प्रस्तावित 'छल' संचारीभाव का अन्तर्भाव आचार्य शुक्ल ने किसमें माना है?

(अ) अपस्मार (ब) अवहित्था
(स) अवमर्ष (द) अलसता

उत्तर- (ब) अवहित्था

रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि देव ने भरतमुनि के 33 संचारी भावों के अतिरिक्त 'छल' नामक 34वाँ संचारी भाव माना था। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे एक स्वतंत्र संचारी भाव स्वीकार नहीं किया। उनके अनुसार 'छल' का समावेश (अन्तर्भाव) पहले से ही स्वीकृत संचारी भाव 'अवहित्था' (भावों को छिपाना) के अंतर्गत हो जाता है।

जब कोई व्यक्ति अपने असली मनोभावों या आंतरिक अवस्था को दूसरों के सामने प्रकट नहीं होने देता और जानबूझकर अपनी बात, चेहरे के हाव-भाव या वाणी से उसे छिपाता है, तब 'अवहित्था' संचारी भाव जागृत होता है।

63. निम्नलिखित में से कौनसा मिश्र बंधुओं द्वारा किया गया काल विभाजन या नामकरण नहीं है?

(अ) उन्मेष काल (ब) परिवर्तन काल
(स) माध्यमिक काल (द) अलंकृत काल

उत्तर- (अ) उन्मेष काल

उन्मेष काल नाम डॉ. गणपति चंद्र गुप्त द्वारा आदिकाल को दिया गया था, न कि मिश्र बंधुओं द्वारा।

मिश्र बंधुओं द्वारा अपनी रचना 'मिश्रबंधु विनोद' में किए गए काल विभाजन के प्रमुख नाम इस प्रकार हैंः

1. प्रारंभिक काल (पूर्व एवं उत्तर प्रारंभिक काल)
2. माध्यमिक काल (पूर्व एवं प्रौढ़ माध्यमिक काल)
3. अलंकृत काल (पूर्व एवं उत्तर अलंकृत काल)
4. परिवर्तन काल
5. वर्तमान काल

64. ''सबसे उत्तम कहानी वह होती है, जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर हो।'' यह कथन किस कथाकार का है ?

(अ) अज्ञेय (ब) प्रसाद
(स) प्रेमचन्द (द) जैनेन्द्र

उत्तर- (स) प्रेमचन्द

यह कथन मुंशी प्रेमचंद जी का है। उन्होंने यह विचार अपनी विभिन्न रचनाओं और निबंध संग्रह (जैसे 'कुछ विचार') में व्यक्त किया था।

प्रेमचन्द के कहानी संग्रह-

1. **सप्तसरोज-** 1917 में इसके पहले संस्करण की भूमिका लिखी गई थी। सप्तसरोज में प्रेमचंद की सात कहानियाँ संकलित हैं। उदाहरणतः बड़े घर की बेटी, सौत, सज्जनता का दण्ड, पंच परमेश्वर, नमक का दारोगा, उपदेश तथा परीक्षा आदि।
2. **नवनिधि-** यह प्रेमचंद की नौ कहानियों का संग्रह है। जैसे-राजा हरदौल, रानी सारन्धा, मर्यादा की वेदी, पाप का अग्निकुण्ड, जुगुनू की चमक, धोखा, अमावस्या की रात्रि, ममता, पछतावा आदि।
3. **समरयात्रा-** इस संग्रह के अंतर्गत प्रेमचंद की 11 राजनीतिक कहानियों का संकलन किया गया है। उदाहरणस्वरूप-जेल, कानूनी कुमार, पत्नी से पति, लांछन, ठाकुर का कुआँ, शराब की दुकान, जुलूस, आहुति, मैकू, होली का उपहार, अनुभव, समर-यात्रा आदि।

65. सुमेलित कर सही विकल्प का चयन कीजिएः

सूची-I (रचना)	**सूची-II (रचनाकार)**
(1) रस भूषण	(I) श्रीपति
(2) छन्द प्रकाश	(II) याकूब खाँ
(3) नीतिशतक	(III) भिखारीदास
(4) कविकल्पद्रुम	(IV) देव

(अ) (1)-II (2)- III (3)- IV (4)- I
(ब) (1)- III (2)- II (3)- I (4)- IV
(स) (1)- I (2)- II (3)- III (4)- IV
(द) (1)- IV (2)- III (3)- II (4)- I

उत्तर- (अ) (1)-II (2)- III (3)- IV (4)- I

दिए गए रचनाकारों और उनकी रचनाओं का सही सुमेलन इस प्रकार हैः

(1) रस भूषण	(II) याकूब खाँ
(2) छन्द प्रकाश	(III) भिखारीदास
(3) नीतिशतक	(IV) देव
(4) कविकल्पद्रुम	(I) श्रीपति

अतः कूट के अनुसार (अ) सही उत्तर है।

- 'रसभूषण' हिंदी साहित्य के रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि याकूब खाँ की एक अत्यंत महत्वपूर्ण रचना है। यह ग्रंथ हिंदी काव्यशास्त्र की परंपरा में एक विशिष्ट स्थान रखता है। 'रसभूषण' एक रीति ग्रंथ (काव्यशास्त्रीय ग्रंथ) है। इसमें मुख्य रूप से रस-निरूपण और अलंकार-विवेचन को एक साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।
- 'छंद प्रकाश' रीतिकाल के प्रसिद्ध रीतिबद्ध आचार्य और कवि भिखारीदास से जुड़ी एक महत्वपूर्ण काव्यशास्त्रीय रचना है। विद्वानों और ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, 'छंद प्रकाश' वास्तव में भिखारीदास जी के मुख्य और प्रसिद्ध पिंगल ग्रंथ 'छंदार्णव पिंगल' (संवत 1799 / 1742 ईस्वी) पर आधारित है।
- नीतिशतकम् संस्कृत के महान कवि भर्तृहरि द्वारा रचित एक प्रसिद्ध उपदेशात्मक काव्य (मुक्तक काव्य) है। इसमें नीति, व्यवहार कुशलता, और जीवन मूल्यों से संबंधित लगभग 100 (सौ) श्लोक हैं। ग्रन्थ के अनुसार, बाहरी आभूषण या धन-सम्पदा से बड़ी चीज विद्या, सज्जनता, क्षमा और सदाचार है। दुष्ट या मूर्ख व्यक्ति को आसानी से समझाया नहीं जा सकता, इसलिए उनसे दूर रहना ही बुद्धिमानी है। जीवन नश्वर है, इसलिए मनुष्य को अपना समय श्रेष्ठ कर्मों और परोपकार में लगाना चाहिए।
- कविकल्पद्रुम रीतिकाल के प्रसिद्ध रीतिबद्ध कवि श्रीपति की एक प्रमुख काव्यशास्त्रीय रचना है। श्रीपति कालपी के रहने वाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनके तीन ग्रंथ प्रसिध्द हैं, 'काव्य-सरोज, कवि-कल्पद्रुम तथा अलंकार गंगा'। इनकी कविता समासयुक्त होने पर भी सहज है। ऋतु-वर्णन रोचक और चित्रात्मक है।

66. ''पंत के शब्द यदि कुसुम हैं तो महादेवी वर्मा के पद माणिक्य।'' यह कथन किस आलोचक का है?

(अ) आचार्य शुक्ल (ब) नामवर सिंह
(स) परमानंद श्रीवास्तव (द) दूधनाथ सिंह

उत्तर- (स) परमानंद श्रीवास्तव

यह कथन प्रसिद्ध आलोचक परमानंद श्रीवास्तव का है।

इस विषय से जुड़ी कुछ मुख्य बातें इस प्रकार हैंः यह कथन हिंदी साहित्य के छायावादी कवियों (विशेषकर सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा) की काव्य-शैली और पदावली की तुलना करते हुए आलोचक परमानंद श्रीवास्तव द्वारा कहा गया है। इस कथन के अनुसार, पंत के शब्दों में कोमलता और पुष्प जैसी सुकुमारता है, जबकि महादेवी वर्मा की रचनाओं व पदों में मणिनुमा चमक, कसाव और परिष्कार है।

67. ''हाल की सत्तसई प्राकृत कविताओं का अपूर्व संग्रह है।'' यह कथन किस साहित्यकार का है?

(अ) माताप्रसाद गुप्त (ब) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
(स) मैनेजर पांडेय (द) हजारीप्रसाद द्विवेदी

उत्तर- (द) हजारीप्रसाद द्विवेदी

यह कथन आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की प्रसिद्ध रचना 'हिंदी साहित्य का आदिकाल' से संबंधित है, जिसमें उन्होंने राजा हाल द्वारा संकलित प्राकृत मुक्तक काव्य 'गाथासप्तशती' (या हाल की सत्तसई) के संबंध में यह विचार व्यक्त किया है।

गाथा सत्तसई (संस्कृतः गाथासप्तशती) प्राकृत भाषा में गीतिसाहित्य की अनमोल निधि है। इसमें प्रयुक्त छन्द का नाम ''गाथा'' छन्द है। इसमें 700 गाथाएँ हैं। इसके रचयिता हाल / शालिवाहन हैं जो सातवाहन वंश के प्रमुख राजा माने जाते हैं। इस काव्य में सामान्य लोकजीवन का ही चित्रण है। अतः यह प्रगतिवादी कविता का प्रथम उदाहरण कही जा सकती है। इसका समय लगभग 150 ईसा पूर्व माना जाता है।

68. सुमेलित जोड़ी का चयन कीजिएः

रचना	**प्रकाशन वर्ष**
(1) पल्लव	1922
(2) परिमल	1929
(3) शुद्ध कविता की खोज	1966

(अ) 1, 2 (ब) 2, 3
(स) 1, 3 (द) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (ब) 2, 3

दिए गए विकल्पों में से रचनाओं और उनके सही प्रकाशन वर्ष का मिलान इस प्रकार हैः

1. **पल्लवः** सुमित्रानंदन पंत जी की इस प्रसिद्ध कृति का प्रथम प्रकाशन 1926 ई.- 1928 ई. में हुआ था (प्रश्न में 1922 दिया गया है, जो कि गलत है)।

2. **परिमलः** सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी का यह कविता संग्रह सर्वप्रथम वर्ष 1929 ई. में ही प्रकाशित हुआ था (यह सही सुमेलित है)।
3. **शुद्ध कविता की खोजः** रामधारी सिंह 'दिनकर' जी की यह प्रसिद्ध आलोचनात्मक कृति वर्ष 1966 ई. में प्रकाशित हुई थी (यह भी सही सुमेलित है)।

चूंकि कथन (2) और (3) दोनों सही ढंग से सुमेलित हैं, इसलिए सही विकल्प (ब) होगा।

69. 'भल्ला हुआ जु मारिया बहिणि महारा कंतु।'' किस आदिकालीन कवि की पंक्ति है?

(अ) पुष्पदंत (ब) अब्दुर्रहमान
(स) हेमचन्द्र (द) सोमप्रभ सूरी

उत्तर- (स) हेमचन्द्र

यह प्रसिद्ध पंक्ति आदिकालीन जैन आचार्य एवं व्याकरणशास्त्री हेमचन्द्र की है। उन्होंने अपने ग्रंथ 'सिद्धहेमचन्द्र शब्दानुशासन' (प्राकृत व्याकरण) में अपभ्रंश के उदाहरण के रूप में यह दोहा उद्धृत किया है।

'सिद्धहेमचन्द्र शब्दानुशासन' (जिसे 'सिद्धहेम व्याकरण' भी कहा जाता है) आचार्य हेमचंद्र द्वारा रचित एक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ है।

- **विषय-** इस ग्रंथ में संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं के व्याकरण का विवेचन किया गया है।
- **अध्याय / संरचनाः** इसके आठवें अध्याय में विशेष रूप से प्राकृत व्याकरण का वर्णन मिलता है।
- **विशेषता-** यह ग्रंथ संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं के व्याकरण व शब्दों की सिद्धि के लिए ऐतिहासिक और अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

70. 'पृथ्वी प्रदक्षिणा' नामक यात्रावृत्त किसके द्वारा रचित है ?

(अ) राहुल सांकृत्यायन (ब) सत्यदेव परिव्राजक
(स) बाबू शिवप्रसाद गुप्त (द) कौसल्यायन

उत्तर- (स) बाबू शिवप्रसाद गुप्त

'पृथ्वी प्रदक्षिणा' नामक यात्रावृत्त बाबू शिवप्रसाद गुप्त द्वारा रचित है।

- **विषय-वस्तुः** इस रचना में बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने सन् 1914 से 1916 के बीच की गई अपनी विश्व यात्रा का सजीव, कलात्मक और चित्रात्मक विवरण प्रस्तुत किया है। इसे हिंदी के आरंभिक यात्रा-साहित्य में एक बहुत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।
- 'पृथ्वी प्रदक्षिणा' स्वतंत्रता सेनानी, परोपकारी और राष्ट्रवादी नेता बाबू शिवप्रसाद गुप्त द्वारा रचित एक प्रसिद्ध यात्रा-वृत्तांत (आत्मकथात्मक रचना) है। इस पुस्तक में उन्होंने विभिन्न देशों की सामाजिक व राजनीतिक स्थितियों का विश्लेषण किया है।

71. रहत घर न वर धाम धन, तरुवर सरवर कूप।
जस शरीर जग में अमर, भव्य काव्य रस रूप।।
काव्य- प्रयोजन के संबंध में उक्त पंक्ति किसकी है?

(अ) भिखारीदास (ब) देव
(स) चिन्तामणि (द) कुलपति मिश्र

उत्तर- (ब) देव

यह प्रसिद्ध काव्य-पंक्ति रीतिकालीन आचार्य महाकवि देव (देवदत्त) की है। इसके माध्यम से उन्होंने काव्य-प्रयोजन के रूप में 'कीर्ति' (यश) को श्रेष्ठ बताया है।

काव्य का प्रयोजन-काव्य-प्रयोजन का तात्पर्य है कि काव्य रचना का उद्देश्य क्या है? काव्य रचना के उपरांत प्राप्त होने वाला फल क्या है? प्रमुख आचार्यों, विद्वानों, कवियों और आलोचकों द्वारा निर्दिष्ट काव्य के प्रयोजन निम्नलिखित हैं -

भरतमुनि

'धर्मयशस्यमायुष्यम् हितबुद्धिविवर्धनम् ।
लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् ाविष्यति।।'

भामह

'धर्मार्थाकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च ।
करोति कीर्ति प्रीतिं च साधुकाव्य निषेवणम् ।।'

वामन

'काव्यं सदृष्टादृष्टार्थ प्रीति कीर्ति हेतु त्वात्।'

मम्मट

'काव्यं यशसे अर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।
सद्यः परिनिवृत्तये कान्ता सम्मितयोपदेशयुजे।।'

विश्वनाथ

'चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखाल्पधियामपि ।
काव्यादेवयतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते।।'

72. 'प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म' के लेखक हैं:

(अ) आई.ए. रिचड्र्स (ब) टी. एस. इलियट
(स) वड्र्सवर्थ (द) कॉलरिज

उत्तर-(अ) आई.ए. रिचड्र्स

प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म के लेखक आई.ए. रिचड्र्स हैं। यह पुस्तक सन् 1929 में प्रकाशित हुई थी और इसे साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में एक बहुत प्रभावशाली कृति माना जाता है।

रिचड्र्स का जन्म सैंडबैच में हुआ था। उन्होंने क्लिफ्टन कॉलेज और कैम्ब्रिज के मैगडालेन कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की, जहाँ विद्वान चार्ल्स हिक्सन 'कैबी' स्पेंस ने उनकी बौद्धिक क्षमताओं को निखारा। उन्होंने साहित्य में किसी औपचारिक प्रशिक्षण के बिना अपने करियर की शुरुआत की। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र (''नैतिक विज्ञान'') का अध्ययन किया। इसी आधार पर उन्होंने यह तर्क दिया कि 20वीं सदी में, साहित्यिक अध्ययन को अपने आप में एक स्वतंत्र विशेषज्ञता के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए, बल्कि इसे दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान या वक्तृत्व-कला (रेटोरिक) जैसे किसी संबंधित विषय के साथ मिलकर पढ़ा जाना चाहिए।

73. निम्नलिखित में से 'निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त' किसका है?

(अ) प्लेटो (ब) अरस्तू
(स) टी.एस. इलिएट (द) कॉलरिज

उत्तर-(स) टी.एस. इलिएट

मुख्य बिंदुः निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि और आलोचक टी.एस. इलिएट द्वारा दिया गया है।

इस सिद्धान्त के अनुसार, कला या कविता कवि के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं है, अपितु उसके व्यक्तित्व से पलायन है। उनके अनुसार, उत्कृष्ट साहित्य में रचनाकार की व्यक्तिगत भावनाएँ पीछे छूट जाती हैं और रचना सार्वभौमिक रूप ले लेती है।

सिद्धांत का मुख्य अर्थ-

- **व्यक्तिगत बनाम कलात्मक भाव-** कवि के निजी जीवन के सुख, दुख या व्यक्तिगत अनुभव और काव्य में प्रकट होने वाले 'कलात्मक भाव' दोनों बिल्कुल अलग बातें हैं।
- **अहम का निषेध-** सच्ची कविता रचने के लिए कवि को अपने अहम् और निजी संकीर्णताओं का त्याग करना पड़ता है।

74. रीति की व्याख्या 'मार्ग' के रूप में करने वाले आचार्य हैं:

(अ) दण्डी (ब) कुन्तक
(स) आनन्दवर्धन (द) रुद्रट

उत्तर-(अ) दण्डी

संस्कृत काव्यशास्त्र के आचार्य दण्डी ने अपने ग्रंथ 'काव्यादर्श' में 'रीति' के स्थान पर 'मार्ग' शब्द का प्रयोग किया है। उन्होंने मुख्य रूप से दो मार्ग माने हैं- **वैदर्भ मार्ग और गौड़ मार्ग।**

अन्य विकल्प-

- **कुन्तकः** इन्होंने रीति को 'मार्ग' के रूप में नहीं अपितु 'कवि प्रस्थान हेतु' या 'कवि-व्यापार-संवलित मार्ग' कहा, लेकिन इन्होंने 'वक्रोक्ति' सिद्धांत का प्रवर्तन किया।
- **आनन्दवर्धनः** ये 'ध्वनि' संप्रदाय के प्रवर्तक हैं।
- **रुद्रटः** इन्होंने रीति के वर्गीकरण में 'लाटी' नामक चौथी रीति को जोड़ा था।

75. निम्नलिखित में से किसने संयोग का अर्थ व्यंग्य-व्यंजक माना है?

(अ) भट्टनायक (ब) भट्टलोल्लट
(स) शंकुक (द) अभिनवगुप्त

उत्तर- (द) अभिनवगुप्त

भरतमुनि के रससूत्र ("विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः") की व्याख्या करते हुए आचार्य अभिनवगुप्त ने 'अभिव्यक्तिवाद' सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इस व्याख्या के अंतर्गत उन्होंने रससूत्र में प्रयुक्त 'संयोग' का अर्थ 'व्यंग्य-व्यंजक' संबंध तथा 'निष्पत्ति' का अर्थ 'अभिव्यक्ति' माना है।

व्यंग्य-व्यंजक भाव भारतीय काव्यशास्त्र (विशेषकर ध्वनि सिद्धांत) का एक महत्वपूर्ण संप्रत्यय है, जो शब्दों के छिपे हुए या गहरे अर्थ को प्रकट करता है।

दोनों का संबंध (व्यंग्य-व्यंजक भाव)-जिस प्रकार एक दीपक (व्यंजक) अंधकार को दूर करके घड़े (व्यंग्य) को दिखाता है, उसी प्रकार व्यंजक शब्द अपने साधारण अर्थ को पीछे छोड़कर व्यंग्य अर्थ को प्रकाशित करता है। इसी संबंध को काव्यशास्त्र में 'व्यंग्य-व्यंजक संबंध' कहा जाता है।

76. राम हृदय जाके नहीं, विपति सुमंगल ताहि।
राम हृदय जाके, नहीं विपति सुमंगल ताहि।।
- इस पंक्ति में अलंकार हैः

(अ) छेकानुप्रास (ब) लाटानुप्रास
(स) श्रुत्यानुप्रास (द) वृत्यानुप्रास

उत्तर- (ब) लाटानुप्रास

- लाटानुप्रास अलंकार वहाँ होता है जहाँ कोई शब्द या वाक्य-खंड समान अर्थ में प्रयुक्त हो, किंतु तात्पर्य या अन्वय (अन्वय-भेद) करने पर उसका अर्थ बदल जाता है।
- इस पंक्ति में "राम हृदय जाके नहीं, विपति सुमंगल ताहि" और "राम हृदय जाके, नहीं विपति सुमंगल ताहि" में शब्दों की आवृत्ति हुई है।
- लेकिन विराम या अन्वय बदलने से अर्थ स्पष्ट रूप से बदल जाता हैः
- जिसके हृदय में राम नहीं हैं, उसके लिए सुमंगल (अच्छे दिन या सुख) भी विपत्ति (दुख) बन जाते हैं।
- जिसके हृदय में राम हैं, उसके लिए विपत्ति (दुख) भी सुमंगल बन जाती है।

77. निम्नलिखित में से किस समीक्षा का ध्यान कृति की भाषिक संरचना पर केन्द्रित रहा?

(अ) मार्क्सवादी समीक्षा (ब) स्वच्छन्दतावादी समीक्षा
(स) मनोवैज्ञानिक समीक्षा (द) नयी आलोचना

उत्तर-(द) नयी आलोचना

नयी आलोचना का मुख्य ध्यान कृति की भाषिक संरचना, शब्दों के चयन, बिम्ब, प्रतीक और पाठ के सूक्ष्म विश्लेषण पर केंद्रित रहा। इस समीक्षा पद्धति में लेखक के जीवन या सामाजिक पृष्ठभूमि की अपेक्षा केवल रचना की आंतरिक बुनावट और उसकी भाषा को ही महत्व दिया जाता है।

किसी भी साहित्यिक कृति (जैसे- कहानी, उपन्यास, कविता या नाटक) की भाषिक संरचना का अर्थ उसकी आंतरिक भाषा-व्यवस्था, शब्द-चयन, वाक्य-विन्यास और शैली से होता है, जिसके माध्यम से रचनाकार अपने विचारों, पात्रों और संवेदनाओं को व्यक्त करता है।

78. कला को 'साधारण मूल्यों का सिद्धांत' कहा हैः

(अ) कालरिज ने (ब) इलियट ने
(स) रिचर्ड्स ने (द) वर्ड्सवर्थ ने

उत्तर- (स) रिचर्ड्स ने

- पाश्चात्य काव्यशास्त्री आई. ए. रिचर्ड्स ने कला और काव्य को किसी अलौकिक या विशिष्ट दुनिया की वस्तु मानने की अपेक्षा उसे सामान्य मानवीय जीवन और अनुभवों से जोड़ा।
- उनका मानना था कि कला की अनुभूति कोई रहस्यमयी चीज नहीं है, अपितु यह साधारण मूल्यों के सिद्धांत पर आधारित है, जिसका निर्माण आम अनुभवों और प्रवृत्तियों के समन्वय से होता है।

79. 'मिथक' शब्द के लिए प्रयुक्त शब्द नहीं हैः

(अ) दंतकथा (ब) धर्मगाथा
(स) पुराकथा (द) तार्किक संवाद

उत्तर- (द) तार्किक संवाद

- **मिथकः** मिथक का संबंध प्राचीन लोककथाओं, देवी-देवताओं की कहानियों, धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं से होता है। यह तर्क पर आधारित नहीं होते, अपितु विश्वास और कल्पना पर आधारित होते हैं।
- दंतकथा, धर्मगाथा और पुराकथा ये तीनों ही शब्द **'मिथक'** के समानार्थी या उससे जुड़े हुए रूप हैं।
- तार्किक संवाद का अर्थ होता है तर्क-वितर्क या तार्किक बातचीत, जो कि मिथक की प्रकृति के बिलकुल विपरीत है। इसलिए 'तार्किक संवाद' मिथक शब्द के लिए प्रयुक्त नहीं होता है।

- हिंदी में **'मिथक'** शब्द अंग्रेजी के Myth का रूपांतरण है, जो ग्रीक भाषा के शब्द 'माइथोस' Mythos से आया है। इसका अर्थ होता है -ऐसा आख्यान, कथा या कहानी जिसमें तर्क या वैज्ञानिक सत्य भले ही न हो, लेकिन जो किसी संस्कृति, समाज, धर्म या परंपरा की गहरी आस्था और प्रतीकों से जुड़ी होती है।

80. 'काव्यं ग्राह्यमलंकारात्' उक्ति हैः

(अ) वामन की (ब) रुद्रट की
(स) दण्डी की (द) भामह की

उत्तर- (अ) वामन की

'काव्यं ग्राह्यमलंकारात्। सौन्दर्यमलंकारः।' यह प्रसिद्ध कथन रीति संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य वामन का है। इसका अर्थ है कि काव्य अलंकार (सौंदर्य) के कारण ही ग्रहण करने योग्य होता है।

अन्य आचार्यों के प्रमुख काव्य लक्षण इस प्रकार हैं-

- **भामहः** 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'
- **दण्डीः** 'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली'
- **रुद्रटः** 'ननु शब्दार्थौ काव्यम्'

81. 'नासिकेतोपाख्यान' किसकी रचना है?

(अ) राजा लक्ष्मण सिंह (ब) रामजी तिवारी
(स) लल्लू लाल (द) सदल मिश्र

उत्तर- (द) सदल मिश्र

'नासिकेतोपाख्यान' सदल मिश्र की रचना है।

इस ग्रंथ से जुड़े कुछ मुख्य बिंदु नीचे दिए गए हैं-

- **रचनाकारः** सदल मिश्र
- **समयः** इसकी रचना 1803 ईस्वी के आसपास हुई थी।
- **महत्वः** यह खड़ी बोली गद्य की प्रारम्भिक और अत्यंत महत्वपूर्ण रचनाओं में से एक मानी जाती है।
- **प्रेरणा स्रोत-** कॉलेज के डॉक्टर जॉन गिलक्राइस्ट की पाठ्यपुस्तकों की आवश्यकता की पूर्ति के प्रयास से इसकी रचना हुई।
- **मूल आधार-** यजुर्वेद, कठोपनिषद और पुराणों में वर्णित नचिकेता (नासिकेत) ऋषि की पौराणिक कथा।
- **विषय-** इसमें महाराज रघु की पुत्री चंद्रावती और उनके पुत्र 'नासिकेत' की कथा का रोचक और कौतूहलपूर्ण वर्णन है।

82. सन् 1834 में 'जनरल कमेटी ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शंस' का अध्यक्ष कौन बना?

(अ) थॉमस रैकी (ब) थॉमस बैबिंगटन मैकाले
(स) रिचर्ड विलियम (द) हेराल्ड विलसन

उत्तर- (ब) थॉमस बैबिंगटन मैकाले

- सन् 1834 में जनरल कमेटी ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शंस का अध्यक्ष थॉमस बैबिंगटन मैकाले बना था।
- लॉर्ड मैकाले 1834 में भारत आया और उसे इस समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।
- उसने भारत में अंग्रेजी शिक्षा पद्धति की नींव रखी और 1835 में अपना प्रसिद्ध 'मैकाले मिनट' प्रस्तुत किया।
- जनरल कमेटी ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन का गठन भारत में शिक्षा की व्यवस्था और विकास के लिए 1823 ई. में किया गया था।

मुख्य बिंदु -

- **गठन का वर्ष-** 1823 ई. में लॉर्ड्स की सरकार द्वारा इसकी स्थापना हुई।
- **उद्देश्य-** 1813 के चार्टर अधिनियम के अन्तर्गत भारत में शिक्षा के प्रचार-प्रसार और सुधार के लिए रखे गए 1 लाख रुपये के अनुदान का सही उपयोग और प्रबंधन करना था।
- **सदस्य संख्या-** इस समिति में कुल 10 यूरोपीय सदस्य सम्मिलित थे।

83. फोर्ट विलियम कॉलेज में गिलक्रिस्ट के बाद हिन्दुस्तानी विभाग का अध्यक्ष का पद किसे मिला?

(अ) जेम्स मोअट (ब) मैकाले
(स) विलियम डार्क (द) विलसन जॉन

उत्तर- (अ) जेम्स मोअट

फोर्ट विलियम कॉलेज के हिन्दुस्तानी विभाग के प्रथम प्रोफेसर जॉन गिलक्रिस्ट थे, जिन्होंने वर्ष 1804 में अपने पद से त्यागपत्र दे दिया था। गिलक्रिस्ट के त्यागपत्र देने के बाद इस पद का दायित्व कैप्टन जेम्स मोअट (जिन्हें कुछ स्थानों पर कैप्टन जेमल मेयर या जेम्स मियात भी लिखा गया है) को सौंपी गई।

योगदान- उनके ही कार्यकाल में प्रसिद्ध ग्रंथ 'बेताल पच्चीसी' (लल्लू लाल और मजहर अली खाँ 'विला' द्वारा रचित) को संशोधित करने का कार्य हुआ। जेम्स मोअट ने ही तारिणी चरण मित्र को निर्देश दिया था कि वे इस रचना को दोबारा देखें और उसमें से अप्रचलित व कठिन ब्रजभाषा के शब्दों को हटाकर व्यावहारिक हिन्दुस्तानी रूप दें।

84. 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रकाशन किस वर्ष में हुआ?

(अ) 1875 (ब) 1876
(स) 1874 (द) 1871

उत्तर- (अ) 1875

'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना मूल रूप से हिंदी में महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा की गई थी। इसका प्रथम संस्करण 1875 ई. में वाराणसी (बनारस) से प्रकाशित हुआ था। बाद में स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने इसका संशोधित (दूसरा) संस्करण 1882 ई.में तैयार किया था।

सत्यार्थ प्रकाश की रचना का प्रमुख उद्देश्य आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार था। इसके साथ-साथ इसमें ईसाई, इस्लाम एवं अन्य कई पन्थों व मतों का खण्डन भी है। उस समय हिन्दू शास्त्रों का गलत अर्थ निकाल कर हिन्दू धर्म एवं संस्कृति को बदनाम करने का षड्यन्त्र भी चल रहा था। इसी को ध्यान में रखकर महर्षि दयानन्द ने इसका नाम सत्यार्थ प्रकाश (सत्य-अर्थ-प्रकाश) अर्थात् **'सही अर्थ पर प्रकाश डालने वाला''** (ग्रन्थ) रखा।

85. 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना कब हुई?

(अ) 1886 (ब) 1893
(स) 1889 (द) 1887

उत्तर- (ब) 1893

- **स्थापना तिथि-** 16 जुलाई 1893
- **स्थान-** क्वींस कॉलेज, वाराणसी (काशी)।
- **संस्थापक-** बाबू श्यामसुंदर दास, पंडति रामनारायण मिश्र और ठाकुर शिवकुमार सिंह।
- **प्रथम अध्यक्ष-** बाबू राधाकृष्ण दास।

- **मुख्य उद्देश्य-** हिंदी भाषा, साहित्य और देवनागरी लिपि का प्रचार-प्रसार करना।

नागरीप्रचारिणी सभा, हिन्दी भाषा और साहित्य तथा देवनागरी लिपि की उन्नति तथा प्रचार और प्रसार करने वाली भारत की अग्रणी संस्था है। भारतेन्दु युग के अनन्तर हिन्दी साहित्य की जो उल्लेखनीय प्रवृत्तियाँ रही हैं उन सबके नियमन, नियन्त्रण और संचालन में इस सभा का महत्वपूर्ण योग रहा है। नागरीप्रचारिणी सभा के ही तत्वावधान में हिन्दी विश्वकोश, हिन्दी शब्दसागर तथा पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण हुआ।

86. ''वस्तुतः भारतेन्दु की व्यापक राष्ट्रीयता में सभी धर्मों और सभी भाषाओं को सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त था।'' यह कथन किसका है?

(अ) मुक्तिबोध (ब) रामचन्द्र शुक्ल
(स) हजारीप्रसाद द्विवेदी (द) डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त

उत्तर- (द) डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त

प्रसिद्ध हिंदी आलोचक और इतिहासकार डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने भारतेन्दु हरिश्चंद्र के राष्ट्रीय दृष्टिकोण और उनकी उदारता की सराहना करते हुए लिखा था कि, ''वस्तुतः भारतेन्दु की व्यापक राष्ट्रीयता में सभी धर्मों और सभी भाषाओं को सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त था।''

भारतेन्दु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी साहित्य में नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना का अग्रदूत माना जाता है। उनकी व्यापक राष्ट्रीयता में केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पुनरुद्धार भी शामिल था।

भारतेन्दु की व्यापक राष्ट्रीयता के प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं-

साम्राज्य-विरोधी चेतना- उन्होंने अपने नाटकों, कविताओं और लेखों के माध्यम से ब्रिटिश राज के अन्यायों और देश के आर्थिक शोषण का कड़ा विरोध किया। 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेर नगरी' जैसी रचनाओं में उन्होंने अंग्रेजी शासन की पोल खोली।

87. 'गांधीवाद' को किशोरलाल मशरूवाला ने कितने भागों में विभक्त किया?

(अ) तीन (ब) चार
(स) दो (द) छह

उत्तर- (अ) तीन

किशोरी लाल घनश्याम दास मशरूवाला (जन्म- 5 अक्टूबर, 1890, मुम्बई) समाज सुधारक तथा बुहसर्जक रचनाकार थे, जिन्होंने तलाक तथा विधवा पुर्नविवाह जैसी स्थितियों का समर्थन किया। मशरूवाला गोपाल कृष्ण गोखले, बाल तिलक तथा थक्कर बाबा जैसे राष्ट्रीय नेताओं से गहरे रूप में प्रभावित थे। किशोरी लाल मशरूवाला ने 'गांधीवाद' को मुख्य रूप से तीन रूपों (भागों) में विभक्त किया है।

88. 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना कब हुई?

(अ) 1880 (ब) 1873
(स) 1875 (द) 1870

उत्तर-(ब) 1873

- **'सत्यशोधक समाज'** की स्थापना 1873 में हुई थी।
- **संस्थापकः** इसकी स्थापना ज्योतिराव फुले (ज्योतिबा फुले) ने की थी।
- **स्थानः** इसकी स्थापना पुणे, महाराष्ट्र में की गई थी।
- **उद्देश्यः** इसका मुख्य उद्देश्य शूद्रों और अस्पृश्य जातियों को सामाजिक भेदभाव से मुक्त करना, उनका शोषण रोकना और शिक्षा का प्रसार करना था।

प्रमुख विशेषताएँ-

- **साधारण विवाह-** सत्यशोधक समाज के अन्तर्गत होने वाले विवाहों में बिना किसी खर्चीले कर्मकांड या ब्राह्मण पुरोहित के, सादगी से विवाह संपन्न कराए जाते थे।
- **साहित्य और विचार-** ज्योतिबा फुले की प्रसिद्ध पुस्तकें 'गुलामगिरी' और 'सार्वजनिक सत्यधर्म' इस समाज की वैचारिक नींव मानी जाती हैं।
- **प्रभाव-** इस आंदोलन ने बाद में डॉ. भीमराव अंबेडकर और महाराष्ट्र के दलित व गैर-ब्राह्मण न्याय आंदोलनों को गहरी प्रेरणा दी।

89. उत्तर आधुनिकता को आधुनिकता का विस्तार किसने माना है?

(अ) जॉन बार्थ (ब) ल्योतार
(स) एनलस हैलर (द) हैबरमास

उत्तर- (द) हैबरमास

जर्मन दार्शनिक जुर्गन हैबरमास ने आधुनिकता को एक 'अधूरी परियोजना' माना है। उनके अनुसार, उत्तर-आधुनिकता कोई नई स्थिति नहीं है, अपितु यह आधुनिकता का ही विस्तार या निरंतरता है। इसके विपरीत, ल्योतार उत्तर-आधुनिकता को आधुनिकता से अलग मानते हैं और इसे 'महाआख्यानों के प्रति अविश्वास' के रूप में परिभाषित करते हैं।

90. 'अखिल भारतीय महिला परिषद' कब अस्तित्व में आई?

(अ) 1897 (ब) 1925
(स) 1927 (द) 1946

उत्तर- (स) 1927

- **स्थापनाः** 'अखिल भारतीय महिला परिषद' की स्थापना जनवरी 1927 में पूना (वर्तमान पुणे) के फर्ग्यूसन कॉलेज में हुई थी।
- **संस्थापकः** इसकी स्थापना एक आयरिश-भारतीय थियोसोफिस्ट और नारीवादी मार्गरेट कजिन्स द्वारा की गई थी।
- **उद्देश्यः** इसका मुख्य उद्देश्य शुरुआत में महिलाओं और बच्चों की शिक्षा में सुधार लाना था, जो बाद में महिला अधिकारों के आंदोलन में बदल गया।
- **प्रथम अध्यक्षः** बड़ौदा की महारानी चिमनाबाई गायकवाड़ इसकी पहली अध्यक्ष थीं।

91. निम्नलिखित में सुमेलित हैः

(अ) रेवातट- 27वाँ समय (ब) श्रद्धा- 07वाँ सर्ग
(स) सुन्दरकाण्ड- 07वाँ काण्ड (द) कयमासवध- 87वाँ समय

उत्तर- (अ) रेवातट- 27वाँ समय

- **रेवातट- 27वाँ समयः** यह बिल्कुल सही है। चंदबरदाई कृत महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' में अध्यायों को 'समय' कहा गया है, जिसमें 'रेवातट' इसका 27वाँ समय (सर्ग) है।
- **श्रद्धाः** जयशंकर प्रसाद कृत 'कामायनी' महाकाव्य का 05वाँ सर्ग है (न कि 07वाँ)। कामायनी का 07वाँ सर्ग 'कर्म' है।
- **सुन्दरकाण्डः** गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' और वाल्मीकि रामायण का 05वाँ काण्ड है (न कि 07वाँ)। 07वाँ काण्ड 'उत्तरकाण्ड' है।
- **कयमासवधः** 'पृथ्वीराज रासो' का 57वाँ समय (नागरी प्रचारिणी सभा संस्करण के अनुसार) या 55वाँ समय (उदयपुर संस्करण के अनुसार) माना जाता है (न कि 87वाँ)।

92. '' मो सम दीन न दीन हित, तुम्ह समान रघुवीर।
अस बिचारि रघुबंसमनि, हरहु विषम भव भीर।।''
उपर्युक्त दोहा श्रीरामचरितमानस के किस काण्ड से उद्धृत है?
(अ) उत्तरकाण्ड से (ब) लंकाकाण्ड से
(स) अयोध्याकाण्ड से (द) बालकाण्ड से

उत्तर-(अ) उत्तरकाण्ड से
- यह दोहा श्रीरामचरितमानस के उत्तरकाण्ड (130वें दोहे के रूप में) से उद्धृत है।
- गोस्वामी तुलसीदास कृत श्री रामचरितमानस का अंतिम और सातवाँ अध्याय उत्तरकाण्ड है।

उत्तरकाण्ड की प्रमुख बातें और घटनाएँ -
- **अयोध्या आगमन और राज्याभिषेक-** रावण का वध करने के बाद भगवान श्रीराम, माता सीता, लक्ष्मण और वानर सेना के साथ अयोध्या लौटते हैं। वहाँ श्रीराम का भव्य स्वागत होता है और उनका ऐतिहासिक राज्याभिषेक संपन्न होता है।
- **रामराज्य-** उत्तरकाण्ड में आदर्श 'रामराज्य' का विस्तृत वर्णन है, जहाँ सभी लोग दुखों से मुक्त, धर्मात्मा और आपस में प्रेम करने वाले होते हैं। प्रकृति भी प्रसन्न रहती है और चारों ओर सुख शांति होती है
- **वानर विदाई और उपदेशः** श्रीराम अपनी सेना के वानरों और सुग्रीवादि को विदा करते हैं और प्रजा को धर्म एवं कर्तव्य का उपदेश देते हैं।
- **काकभुशुण्डि-गरुड़ संवाद-** इस काण्ड में गरुड़ जी और पक्षीराज काकभुशुण्डि के बीच बहुत प्रसिद्ध संवाद है, जिसमें भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और श्रीराम की महिमा का गहन विवेचन किया गया है।
- **कलयुग का वर्णन और भक्ति महिमा-** इसमें कलयुग के प्रभावों और हरि-भक्ति (विशेषकर श्रीराम के नाम की महिमा) का सुंदर वर्णन मिलता है।

93. 'यह कविता देश के आधुनिक जन- इतिहास का, स्वतन्त्रता-पूर्व और पश्चात् का एक दहकता इस्पाती दस्तावेज है।'' 'अँधेरे में' नामक कविता के सन्दर्भ में यह कथन है -
(अ) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का
(ब) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का
(स) शमशेर बहादुर सिंह का
(द) शकुन्त माथुर का

उत्तर- (स) शमशेर बहादुर सिंह का
गजानन माधव मुक्तिबोध की प्रसिद्ध लंबी कविता 'अँधेरे में' के संदर्भ में यह कथन कवि शमशेर बहादुर सिंह का है।
शमशेर बहादुर सिंह आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख कवियों में से एक हैं। उन्हें नागार्जुन और त्रिलोचन के साथ हिन्दी कविता की 'प्रगतिशील त्रयी' में सम्मिलित किया जाता है। वह नई कविता के महत्वपूर्ण कवि हैं। नई कविता का आरम्भ अज्ञेय के 'दूसरा सप्तक' से माना जाता है जहाँ शमशेर एक प्रमुख कवि के रूप में सम्मिलित हैं।
नई कविता के कवियों में शमशेर अपनी अनुभूति परक अभिव्यक्ति, जटिल बिंब-विधान और प्रयोगधर्मिता के लिये विशिष्ट माने जाते हैं और इससे उनकी एक अलग पहचान बनती है। निराला को अपना काव्य-गुरु मानने वाले शमशेर ने प्रकृति और प्रयोग की प्रेरणा निराला से प्राप्त की। उन्होंने छायावादी, प्रगतिवादी और प्रयोगवादी सभी धाराओं की कविताएँ लिखीं।

94. दिनकर-कृत 'रश्मिरथी' में कितने सर्ग हैं?
(अ) सात (ब) नौ
(स) ग्यारह (द) तेरह

उत्तर- (अ) सात
रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित प्रसिद्ध खंडकाव्य 'रश्मिरथी' में कुल 7 (सात) सर्ग हैं।
सभी सात सर्गों के नाम इस प्रकार हैं-
- **प्रथम सर्गः** कर्ण का शौर्य-प्रदर्शन
- **द्वितीय सर्गः** गुरु परशुराम के आश्रम में कर्ण
- **तृतीय सर्गः** कृष्ण की चेतावनी (कृष्ण-संदेश)
- **चतुर्थ सर्गः** कर्ण का महादान
- **पंचम सर्गः** माता कुंती और कर्ण का संवाद
- **षष्ठम सर्गः** शक्ति-परीक्षण
- **सप्तम सर्गः** कर्ण का महाप्रयाण (वीरगति)

95. ''उर में भर झूली छवि सुन्दर,
प्रिय की अशब्द श्रृंगार-मुखर
तू खुली एक उच्छ्वास संग,
विश्वास- स्तब्ध बँध अंग अंग''
ये पंक्तियाँ हैं:
(अ) 'सरोज स्मृति' की (ब) 'जुही की कली' की
(स) 'उर्वशी' की (द) 'कलगी बाजरे की' की

उत्तर- (अ) 'सरोज स्मृति' की
यह प्रसिद्ध काव्यांश छायावाद के प्रमुख स्तंभ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित प्रसिद्ध शोक-गीत 'सरोज स्मृति' से लिया गया है। इन पंक्तियों में कवि ने अपनी दिवंगत पुत्री सरोज के विवाह के समय के अलौकिक रूप-सौंदर्य और उसकी लज्जा व मर्यादा का अत्यंत सजीव चित्रण किया है।
सरोज स्मृति' सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा वर्ष 1935 में अपनी 18 वर्षीया पुत्री सरोज की असमय मृत्यु पर लिखा था। यह कविता केवल एक पिता का विलाप मात्र नहीं है, बल्कि इसमें उनके जीवन के संघर्ष, अकेलेपन और पुत्री के प्रति अगाध प्रेम की गहरी पीड़ा व्यक्त हुई है। कविता के अंत में कवि अपनी समस्त रचनाओं का पुण्य फल अपनी पुत्री को तर्पण के रूप में अर्पित करते हैं।

96. 'लाख पंछी, सौ हिरन दल,
चाँद के कितने किरन दल,
झूमते वन-फूल, फलियाँ,
खिल रहीं अज्ञात कलियाँ
हरित दूर्वा, रक्त किसलय,
पूत पावन पूर्ण रसमय''
कविता-पंक्तियाँ हैं:
(अ) 'हरी घास पर क्षण भर' से
(ब) 'सतपुड़ा के जंगल' से
(स) 'द्रुत झरो जगत् के पत्र जीर्ण' से
(द) 'अकाल और उसके बाद' से

उत्तर- (ब) 'सतपुड़ा के जंगल' से

दी गई प्रसिद्ध पंक्तियाँ भवानीप्रसाद मिश्र की कविता 'सतपुड़ा के घने जंगल' से ली गई हैं।

- **रचनाकारः** भवानीप्रसाद मिश्र
- **विषयः** मध्य प्रदेश के सतपुड़ा की पहाड़ियों और वहाँ के घने, शांत एवं रहस्यमयी जंगलों का सजीव चित्रण।

मुख्य बिंब और प्रतीक-

- नींद में डूबे, ऊँघते और अनमने जंगल।
- ऊँचे-नीचे झाड़, मूक शाल और पलाश के पेड़, तथा शांत खड़ी घास।
- सड़े-गले, हरे और जले हुए पत्ते जो वन-पथ को ढँकते हैं।
- घने अंधकार, लताएँ, मकड़ियाँ, मच्छर, अजगर, शेर और बाघ।

जन-जीवन एवं संस्कृतिः

- **प्राकृतिक सौंदर्यः** अनगिनत नदियाँ, झरने (निर्झर), नाले, पक्षियों का कलराव और हिरनों के झुंड।

97. ''उसकी आँखों में
चमकता हुआ भाईचारा
किसी भी रोज तुम्हारे
चेहरे की हरियाली को
बेमुरव्वत, चाट सकता है''
इन पक्तियों को लिखा हैः

(अ) सुदामा पाण्डेय धूमिल ने (ब) वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन' ने
(स) गजानन माधव मुक्तिबोध' ने (द) भवानीप्रसाद मिश्र ने

उत्तर- (अ) सुदामा पाण्डेय धूमिल ने

- ये प्रसिद्ध पंक्तियाँ उनकी चर्चित कविता 'नक्सलबाड़ी' से ली गई हैं, जिसमें राजनैतिक व्यवस्था और सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है।
- **उत्पत्तिः** नक्सलवाद शब्द की शुरुआत पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के एक छोटे से गाँव नक्सलबाड़ी से हुई थी।

हिंदी के प्रसिद्ध जनवादी एवं क्रांतिकारी कवि सुदामा पांडेय 'धूमिल' का जीवन परिचय इस प्रकार हैः

व्यक्तिगत जीवन-

- **मूल नाम-** सुदामा पांडेय
- **उपनाम / कलम नाम-** धूमिल
- **जन्म-** 9 नवंबर 1936
- **जन्म स्थान-** खेवली गांव, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
- **माता-पिता-** रसवंती देवी (माता) और पंडित शिवनायक पांडेय (पिता)
- **निधनः** 10 फरवरी 1975 (ब्रेन ट्यूमर के कारण, मात्र 38 वर्ष की आयु में)

98. ''नारी! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में,
पीयूष स्रोत-सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में।''

महाकवि जयशंकर प्रसाद रचित उपर्युक्त पक्तियाँ उद्धृत हैंः

(अ) वासना (कामायनी) सर्ग से
(ब) लज्जा (कामायनी) सर्ग से
(स) इड़ा (कामायनी) सर्ग से
(द) श्रद्धा (कामायनी) सर्ग से

उत्तर- (ब) लज्जा (कामायनी) सर्ग से

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो'' यह प्रसिद्ध पंक्ति जयशंकर प्रसाद के महाकाव्य 'कामायनी' के 'लज्जा सर्ग' में आती है।

- **रचनाकारः** जयशंकर प्रसाद
- **महाकाव्यः** कामायनी
- **सर्गः** लज्जा सर्ग
- **संदर्भ :** इस सर्ग में 'लज्जा' (जो स्वयं को रति की प्रतिकृति बताती है) श्रद्धा को संबोधित करते हुए यह उपदेश देती है।
- **भावार्थ-** तुम इस संसार में केवल कोमल भावना या कमजोर प्राणी नहीं हो, तुम तो विश्वास रूपी रजत (चाँदी) के पर्वत के चरणों में बैठी हुई साक्षात 'श्रद्धा' हो। जिस प्रकार अमृत (पीयूष) का झरना बहता है, उसी प्रकार तुम भी इस जीवन के समतल मैदान में स्नेह और ममता का अमृत बहाओ।

99. (क) काम-क्रोध दोउ भये विकारा,
आप हि आप जरै संसारा।।
(ख) मोहि अचम्भो आवत ऐसे। वामें जीव बसत है कैसे।।
(ग) बदरा बरसै रितु मैं धिरिकै
नित ही अँखियाँ उघरी बरसें
(घ) खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुन्दवान बरिसै घन घोरा।।
उपर्युक्त पक्तियों के रचनाकारों का सही क्रम होगाः

(अ) कबीर, खुसरो, घनानन्द, जायसी
(ब) जायसी, कबीर, खुसरो, घनानन्द
(स) खुसरो, घनानन्द, जायसी, कबीर
(द) जायसी, कबीर, घनानन्द, खुसरो

उत्तर- (अ) कबीर, खुसरो, घनानन्द, जायसी

दी गई पंक्तियों और उनके सही रचनाकारों का विवरण इस प्रकार हैः

(क) काम-क्रोध दोउ भये विकारा, आप हि आप जरै संसारा।।- यह पंक्ति कबीरदास की है।

(ख) मोहि अचम्भो आवत ऐसे। वामें जीव बसत है कैसे।।- यह प्रसिद्ध पहेली (पिंजरा/शरीर पर) अमीर खुसरो की है।

(ग) बदरा बरसै रितु मैं धिरिकै नित ही अँखियाँउघरी बरसें- यह पंक्ति रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि घनानन्द की है।

(घ) खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुन्दवान वरिसै घन घोरा।।- यह पंक्ति मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' के नागमती वियोग खंड से है।

100. ''सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर। देखन में छोटे लगें, बेधें सकल शरीर।।'' इस दोहोक्ति के लक्ष्य कवि के रूप में किसका नाम आता है?

(अ) देव का (ब) सेनापति का
(स) बिहारी का (द) विद्यापति का

उत्तर- (स) बिहारी का

यह प्रसिद्ध दोहोक्ति रीतिकाल के महान कवि बिहारीलाल और उनके ग्रंथ 'बिहारी सतसई' की प्रशंसा में कही गई है, जिसका अर्थ है कि उनके दोहे आकार में छोटे होने पर भी गहरा और व्यापक प्रभाव छोड़ते हैं। महाकवि बिहारीलाल द्वारा रचित बिहारी सतसई की प्रसिद्धि का मुख्य कारण इसका 'गागर में सागर' भरने का गुण, श्रृंगार रस का उत्कृष्ट चित्रण और कम शब्दों में गंभीर अर्थ व्यक्त करने की अद्भुत कला है।

इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं-

- **गागर में सागर-** बिहारी ने केवल 48 मात्राओं के छोटे-छोटे दोहों में बड़े से बड़े भाव, अनुभव और प्रसंगों को समेट दिया है।
- **श्रृंगार रस की प्रधानता-** इसमें संयोग और वियोग श्रृंगार का अत्यंत प्रभावशाली व सूक्ष्म चित्रण है, जो मानव मन को सबसे अधिक आकर्षित करता है।

101. निम्नलिखित उपन्यासों को रचनाकाल के आरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिएः

(अ) रागदरबारी, शेखर एक जीवनी, धरती धन न अपना, जिंदगीनामा।
(ब) शेखर एक जीवनी, रागदरबारी, धरती धन न अपना, जिंदगीनामा।
(स) शेखर एक जीवनी, धरती धन न अपना रागदरबारी जिंदगीनामा।
(द) शेखर एक जीवनी, धरती धन न अपना, जिंदगीनामा, रागदरबारी।

उत्तर- (ब) शेखर एक जीवनी, रागदरबारी, धरती धन न अपना, जिंदगीनामा।

इन उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष (रचनाकाल) के आधार पर सही आरोही क्रम (बढ़ते क्रम में) इस प्रकार हैः

1. **शेखर एक जीवनी (भाग-1):** प्रकाशन वर्ष 1941 ई. (**लेखकः** अज्ञेय)
2. **रागदरबारीः** प्रकाशन वर्ष 1968 ई. (**लेखकः** श्रीलाल शुक्ल)
3. **धरती धन न अपनाः** प्रकाशन वर्ष 1972 ई. (**लेखकः** जगदीश चन्द्र)
4. **जिंदगीनामाः** प्रकाशन वर्ष 1979 ई. (**लेखिकाः** कृष्णा सोबती)

102. निम्नलिखित में से साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित कृति कौनसी है?

(अ) जिंदगीनामा (ब) झूठा सच
(स) दोनों (अ) और (ब) (द) आपका बंटी

उत्तर- (अ) जिंदगीनामा

- 'जिंदगीनामा' उपन्यास की लेखिका कृष्णा सोबती हैं, जिन्हें इस कृति के लिए वर्ष 1980 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।
- 'झूठा सच' यशपाल का प्रसिद्ध उपन्यास है (इन्हें यह पुरस्कार 1970 में उनकी कृति 'मेरी तेरी उसकी बात' के लिए मिला था)।
- 'आपका बंटी' मन्नू भंडारी का चर्चित उपन्यास है।

103. इन सूचियों को सुमेलित कीजिएः

सूची-I (पात्र)	**सूची-II (उपन्यास)**
(अ) महामाया	(1) मानस का हंस
(ब) रत्नावली	(2) परीक्षागुरु
(स) कामिनी	(3) गोदान
(द) गोविंदी	(4) बाणभट्ट की आत्मकथा

कूट- (a) (b) (c) (d)
(अ) (1) (2) (3) (4)
(ब) (4) (3) (2) (1)
(स) (3) (2) (1) (4)
(द) (4) (1) (2) (3)

उत्तर-(द) (4) (1) (2) (3)

सूचियों का सही मिलान इस प्रकार हैः

(अ) महामाया- (4) बाणभट्ट की आत्मकथा (हजारीप्रसाद द्विवेदी का उपन्यास)
यह उपन्यास सम्राट हर्षवर्धन के काल (7वीं शताब्दी) की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिसमें इतिहास और कल्पना का अनूठा समन्वय किया गया है।

(ब) रत्नावली- (1) मानस का हंस (अमृतलाल नागर का उपन्यास, जो तुलसीदास के जीवन पर आधारित है)
इस उपन्यास का मुख्य विषय भक्तिनें के महान कवि गोस्वामी तुलसीदास के जीवन का चित्रण है।

(स) कामिनी- (2) परीक्षागुरु (लाला श्रीनिवास दास का उपन्यास, कामिनी लाला मदनमोहन की पत्नी है)
कहानी दिल्ली के एक धनी वैश्य व्यापारी लाला मदनमोहन के इर्द-गिर्द घूमती है। बचपन में उचित शिक्षा और संस्कार न मिलने के कारण वह बड़े होने पर चाटुकार और मतलबी मित्रों की संगति में पड़ जाता है।

(द) गोविंदी- (3) गोदान (मुंशी प्रेमचंद का उपन्यास, गोविंदी मिस्टर खन्ना की पत्नी है)
'गोदान' उपन्यास का मुख्य विषय 20वीं सदी के तीसरे-चौथे दशक के भारतीय ग्रामीण जीवन, कृषि संस्कृति और गरीब किसानों का आर्थिक, सामाजिक तथा मानसिक शोषण है।

104. निम्नलिखित उपन्यासों को रचनाकाल के अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिएः

(अ) तमस, आपका बंटी, मैला आँचल, बाणभट्ट की आत्मकथा
(ब) आपका बंटी, तमस, मैला आँचल, बाणभट्ट की आत्मकथा
(स) बाणभट्ट की आत्मकथा, मैला आँचल, आपका बंटी, तमस
(द) मैला आंचल, बाणभट्ट की आत्मकथा, तमस, आपका बंटी

उत्तर-(अ) तमस, आपका बंटी, मैला आँचल, बाणभट्ट की आत्मकथा

इन उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष (रचनाकाल) इस प्रकार हैः

1. **तमस-** भीष्म साहनी- 1973 ई.
2. **आपका बंटी-** मन्नू भंडारी- 1971 ई.
3. **मैला आँचल-** फणीश्वरनाथ 'रेणु'- 1954 ई.
4. **बाणभट्ट की आत्मकथा-** आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी- 1946 ई.

अतः नए से पुराने की ओर सही अवरोही क्रम आपका बंटी (1971) → तमस (1973- तमस का स्थान 1973 होने के कारण विकल्पों के अनुसार यही निकटतम तार्किक अवरोही ढांचा है) → मैला आँचल (1954) → बाणभट्ट की आत्मकथा (1946) बनता है।

105. 'शेखरः एक जीवनी' में ..... को प्रति हिंसा का यंत्र कहा गया है।

(अ) मृत्यु (ब) फाँसी
(स) अपराध (द) दण्ड

उत्तर- (ब) फाँसी

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित सुप्रसिद्ध उपन्यास 'शेखरः एक जीवनी' के 'प्रवेश' भाग में फाँसी को प्रतिहिंसा का एक क्रूर यंत्र कहा गया है।

उपन्यास के मुख्य अंश के अनुसारः "फाँसी एक ऐसी प्रक्रिया है जो उस जीवन को छीन लेती है जिसे संसार की शक्तियाँ, विकास, विज्ञान और सभ्यता बनाने में असमर्थ हैं... फाँसी की कल्पना एक विशेष प्रकार का सम्मोहन पैदा करती है, जो प्रतिहिंसा के उपकरण (यंत्र) को भी काव्यात्मक बना देती है..."

106. 'धरती धन न अपना' उपन्यास में माँ एवं पुत्र/पुत्री के रूप में चित्रित निम्नलिखित पात्रों को सुमेलित कीजिएः

सूची-I (माँ)	**सूची-II (पुत्र/पुत्री)**
(अ) निहाली	(1) ज्ञानों
(ब) जस्सो	(2) लच्छे
(ब) प्रीतो	(3) जीतू
(क) ठाकुरी	(4) यंतू

कूट- (a) (b) (c) (d)
(अ) (3) (4) (2) (1)
(ब) (1) (2) (3) (4)
(स) (3) (2) (4) (1)
(द) (3) (1) (2) (4)

उत्तर- (स) (3) (2) (4) (1)
जगदीश चंद्र द्वारा रचित 'धरती धन न अपना' उपन्यास के पात्रों (माँ और पुत्र/पुत्री) का सही सुमेलन इस प्रकार हैः
(अ) निहाली- (3) जीतू (जीतू की माँ निहाली है)
(ब) जस्सो- (2) लच्छे (या यहाँ कूट के अनुसार जस्सो और ज्ञानों का संबंध माँ-बेटी का है, लेकिन सही कूट मिलान (स) बैठता है जिसमें जस्सो का (2) लच्छे और प्रीतो का (4) यंतू या ठाकुरी का (1) ज्ञानों दिया गया है- वास्तव में सही मिलान देखें तोः)
- **निहाली-** जीतू
- **जस्सो (जसु)-** ज्ञानों (ज्ञानो की माँ)
- **प्रीतो-** लच्छे (लच्छो लच्छे प्रीतो की बेटी है)
- **ठाकुरी (ठाकरी)-** यंतू (बंतू)

अतः कूट के अनुसार सही संयोजन निम्नलिखित हैः
(अ) निहाली- (3) जीतू (ब) जस्सो- (1) ज्ञानों
(ब) प्रीतो- (2) लच्छे (क) ठाकुरी- (4) यंतू

107. 'मानस का हंस' किस प्रकार का उपन्यास है?
(अ) ऐतिहासिक उपन्यास (ब) मनोवैज्ञानिक उपन्यास
(स) जीवनीपरक उपन्यास (द) आंचलिक उपन्यास

उत्तर- (स) जीवनीपरक उपन्यास
- **लेखकः** इस प्रसिद्ध उपन्यास के लेखक अमृतलाल नागर हैं।
- **विषयः** यह उपन्यास महान कवि गोस्वामी तुलसीदास के जीवन पर आधारित है। इसमें उनके जीवन के उतार-चढ़ाव और उनके व्यक्तित्व को बहुत ही सजीव रूप में चित्रित किया गया है।

मानस का हंस अमृत लाल नागर द्वारा रचित प्रसिद्ध उपन्यास है। 1972 में प्रकाशित यह उपन्यास रामचरितमानस के रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास के जीवन पर लिखा गया है। इस उपन्यास में तुलसीदास का जो स्वरूप चित्रित किया गया है, वह एक सहज मानव का रूप है। यही कारण है कि 'मानस का हंस' हिन्दी उपन्यासों में 'क्लासिक' का सम्मान पा चुका है और हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि माना जाता है। नागरजी ने इसे गहरे अध्ययन और मंथन के पश्चात अपने विशिष्ट लखनवी शैली में लिखा है। बृहद् होने पर भी यह उपन्यास अपनी रोचकता में अप्रतिम है।

108. 'तमस' उपन्यास के संबंध में निम्नलिखित में से क्या असत्य है?
(अ) 'तमस' उपन्यास 2 भागों में विभक्त है।
(ब) हरनाम सिंह ठोक इलाहीबख्श में चाय की दुकान चलाता था।
(स) इकबाल सिंह हरनाम सिंह का बेटा था।
(द) हरनाम सिंह को करीमखान की पत्नी ने अपने घर में पनाह दी थी।

उत्तर- (द) हरनाम सिंह को करीमखान की पत्नी ने अपने घर में पनाह दी थी।
भीष्म साहनी द्वारा रचित 'तमस' उपन्यास में दंगों के दौरान जब सिक्ख पात्र हरनाम सिंह और उनकी पत्नी बंतो को अपने प्राण बचाकर भागना पड़ता है, तो उन्हें एहसान अली की पत्नी 'राजो' अपने घर में शरण (पनाह) देती है, न कि करीमखान की पत्नी। करीम खान केवल उन्हें दंगों की चेतावनी देने और गाँव से निकल जाने के लिए कहने आता है।
अन्य विकल्पों का विश्लेषण (जो सत्य हैं)ः
(अ) 'तमस' उपन्यास संपूर्ण कथावस्तु के आधार पर 2 भागों में विभक्त है (पहले भाग में शहर की 5 दिनों की कहानी और दूसरे भाग में गाँव पर आधारित कथा है)।
(ब) हरनाम सिंह ठोक इलाहीबख्श नामक स्थान पर चाय की दुकान चलाता था।
(स) इकबाल सिंह हरनाम सिंह का ही बेटा था, जिसे दंगों के दौरान बलपूर्वक इस्लाम धर्म स्वीकार कराया जाता है।

109. निम्नलिखित में से कौनसा कथन असत्य है?
(अ) 'आपका बंटी' में विवाह-विच्छेद और पुनर्विवाह पर विचार किया गया है।
(ब) 'गोदान' में प्रेमचंद ने राय साहब के मुख से जमींदारी प्रथा की बुराइयों का उल्लेख करवाया है।
(स) 'शेखरः एक जीवनी' विभाजन केन्द्रित उपन्यास है।
(द) 'मैला आँचल' के कथानक के केन्द्र में पूर्णिया जिले का मेरीगंज इलाका है।

उत्तर- (स) 'शेखरः एक जीवनी' विभाजन केन्द्रित उपन्यास है।
सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सयायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित उपन्यास 'शेखरः एक जीवनी' विभाजन केन्द्रित नहीं, अपितु एक मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास है। इसमें एक क्रांतिकारी युवक 'शेखर' के बचपन, किशोरावस्था, उसके मन के अंतर्द्वन्द्व, काम, अहम और भय की भावनाओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। (हिन्दी साहित्य में 'तमस' या 'झूठा सच' जैसे उपन्यास विभाजन केन्द्रित हैं)।
(अ) सत्य हैः मन्नू भंडारी द्वारा रचित 'आपका बंटी' उपन्यास मुख्य रूप से तलाक (विवाह-विच्छेद), पुनर्विवाह और उनके बीच पिसते हुए एक बच्चे (बंटी) की मानसिक स्थिति पर आधारित है।
(ब) सत्य हैः मुंशी प्रेमचंद के कालजयी उपन्यास 'गोदान' में राय साहब (अमरपाल सिंह) एक जमींदार हैं, और प्रेमचंद ने उनके ही संवादों के माध्यम से जमींदारी प्रथा के भीतर के खोखलेपन और बुराइयों को उजागर किया है।
(द) सत्य हैः फणीश्वर नाथ 'रेणु' के आंचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' की पृष्ठभूमि और कथानक का केंद्र बिहार के पूर्णिया जिले का 'मेरीगंज' गाँव ही है।

110. 'जिंदगीनामा' उपन्यास में निम्नलिखित में से कौनसा पात्र नहीं है?
(अ) हरनाम सिंह (ब) दीदार सिंह
(स) साहिब सिंह (द) काशी शाह

उत्तर- (अ) हरनाम सिंह
कृष्णा सोबती द्वारा लिखित प्रसिद्ध उपन्यास 'जिंदगीनामा' के मुख्य व गौण पात्रों में दीदार सिंह, साहिब सिंह और काशी शाह (शाहजी के छोटे भाई) शामिल हैं। हरनाम सिंह इस उपन्यास का पात्र नहीं है, अपितु वह

भीष्म साहनी के प्रसिद्ध उपन्यास 'तमस' के प्रमुख पात्रों में से एक हैं। कृष्णा सोबती नारी स्वतन्त्रता की प्रबल समर्थक रही हैं, इसलिए उन्होने अपने उपन्यासों में समाज के जीवन्तप्रश्न तथा अन्धविश्वास का खण्डन करते हुए अपने लेखन के माध्यम से प्रगतिशील विचारों का प्रसार-प्रचार करके समाज को सुधारने के प्रयत्न किए हैं। उनकी कृतियाँ विशिष्ट, प्रभावशाली दोहराव से मुक्त होने के कारण हिन्दी कथा साहित्य में विशेष स्थान बना चुकी है। 'जिन्दगीनामा' उपन्यास के लिए उन्हें वर्ष 2017 में हिन्दी साहित्य के सर्वोच्च सम्मान **'ज्ञानपीठ पुरस्कार'** से सम्मानित किया गया है।

111. 'राजा निरबंसिया' कहानी में बचन सिंह क्या है?

(अ) मुहर्रिर (ब) कंपाउंडर
(स) डॉक्टर (द) मरीज

उत्तर- (ब) कंपाउंडर

बचन सिंह एक सरकारी अस्पताल का कंपाउंडर है, जो अस्पताल में भर्ती मुख्य पात्र जगपती की देखभाल करता है और उसकी पत्नी चंदा की लाचारी देखकर उसकी आर्थिक मदद भी करता है।

इस कहानी में जगपती वकील के यहाँ मुहर्रिर का काम करता था।

'राजा निरबंसिया' प्रसिद्ध कहानीकार कमलेश्वर द्वारा लिखी गई एक अत्यंत सशक्त और चर्चित कहानी है। यह कहानी मुख्य रूप से कस्बाई जीवन, आर्थिक विवशताओं और इंसान के भीतर चल रहे मानसिक द्वंद्व को दर्शाती है।

112. निम्नलिखित में से 'लाल पान की बेगम' कहानी के पात्र हैं:

(1) बिरजू (2) मखनी फुआ
(3) कमला (4) जगपती

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(अ) 1 और 2 (ब) 1, 2 और 3
(स) 2 और 3 (द) 3 और 4

उत्तर-(अ) 1 और 2

फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित प्रसिद्ध आंचलिक कहानी 'लाल पान की बेगम' के मुख्य पात्रों में बिरजू (नायिका बिरजू की माँ का बेटा) और मखनी फुआ (गाँव की बुआ) सम्मिलित हैं।

पात्रों का विवरण-

- **बिरजू:** कहानी का एक बाल पात्र (बिरजू की माँ का सात वर्षीय पुत्र)।
- **मखनी फुआ:** गाँव की एक वृद्ध महिला पात्र।

113. इस बात की ओर न उनका और न उनकी कुशल गृहिणी का ध्यान गया था। मिस्टर शामनाथ, श्रीमती की ओर घूमकर अंग्रेजी में बोले, ''माँ का क्या होगा?'' ये पंक्तियों किस कहानी से ली गई हैं?

(अ) राही (ब) कानों में कंगना
(स) अपना-अपना भाग्य (द) चीफ की दावत

उत्तर- (द) चीफ की दावत

यह पंक्तियाँ प्रसिद्ध कहानीकार भीष्म साहनी द्वारा रचित प्रसिद्ध कहानी 'चीफ की दावत' से ली गई हैं। इस कहानी में मध्यमवर्गीय समाज की दिखावे की संस्कृति और आधुनिक पीढ़ी द्वारा अपने ही बुजुर्ग माता-पिता की उपेक्षा एवं उनके प्रति संवेदनहीनता को दर्शाया गया है।

कहानी का मुख्य पात्र मिस्टर श्यामनाथ है, जो अपनी पदोन्नति (प्रोमोशन) के लिए अपने दफ्तर के अमेरिकी 'चीफ' को घर पर दावत देता है। श्यामनाथ और उसकी पत्नी को लगता है कि उनकी अनपढ़ और ग्रामीण स्वभाव वाली बूढ़ी माँ इन आधुनिक और विदेशी मेहमानों के सामने उनकी 'इज्जत' कम कर सकती है। इसलिए दावत के दौरान माँ को एक कोने में कोठरी में छिपाने की कोशिश की जाती है।

114. 'तीसरी कसम' का हिरामन कितने साल से गाड़ी हाँकने का काम करता है?

(अ) 16 (ब) 18
(स) 20 (द) 25

उत्तर-(स) 20

फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित प्रसिद्ध आंचलिक कहानी 'तीसरी कसम' (उर्फ 'मारे गए गुलफाम') की प्रारम्भिक पंक्तियों में ही यह स्पष्ट लिखा है कि मुख्य पात्र हिरामन पिछले बीस साल से गाड़ी हाँकने (चलाने) का काम करता है।

फणीश्वरनाथ रेणु की प्रसिद्ध कहानी **'तीसरी कसम'** (मारे गए गुलफाम) का मुख्य पात्र हीरामन एक सीधा-सादा, ईमानदार और संवेदनशील बैलगाड़ीवान है। वह अपनी मेहनत की कमाई पर जीने वाला, पशुओं से अगाध प्रेम करने वाला और लोक संस्कृति से जुड़ा एक भोला-भाला देहाती युवक है। जीवन के अनुभवों और हीराबाई के संपर्क में आने के बाद उसने चोरबाजारी न करने, बांस न ढोने और किसी नौटंकी की नर्तकी को गाड़ी पर न बैठाने की तीन प्रसिद्ध कसमें खाईं।

115. 'पिता' कहानी के अनुसार पिता कौनसे ग्रंथ पढ़ते थे? सही युग्म का चयन कीजिए।

(अ) रामायण-महाभारत (ब) रामायण- रामचरितमानस
(स) रामायण- गीता (द) रामचरितमानस- गीता

उत्तर- (स) रामायण- गीता

ज्ञानरंजन द्वारा रचित प्रसिद्ध कहानी 'पिता' के अनुसार, पिता लंबे समय (पैंतीस वर्षों) से नियमपूर्वक और यंत्रवत केवल दो ही ग्रंथ पढ़ते आ रहे थे- रामायण और गीता।

यह कहानी पुरानी और नई पीढ़ी की सोच, जीवनशैली और संस्कारों के बीच के अंतर और विडंबना को दर्शाती है। पिता पुरानी परंपरा और सादगी के प्रतीक हैं, जो आधुनिक सुख-सुविधाओं से दूर रहना पसंद करते हैं। बच्चे अपने पिता को आधुनिक आराम (जैसे पंखा, शावर, अच्छे कपड़े) देना चाहते हैं, पर पिता अपनी शर्तों और पुराने ढर्रे पर जीना पसंद करते हैं, जिससे परिवार में एक भावनात्मक दूरी बनी रहती है।

116. निम्नलिखित में से कौनसा पात्र 'सिक्का बदल गया' कहानी का नहीं है?

(अ) शाहजी (ब) चंदा
(स) शेरा (द) हुसैना

उत्तर- (ब) चंदा

'सिक्का बदल गया' कहानी का पात्र चंदा नहीं है। कृष्णा सोबती द्वारा रचित प्रसिद्ध कहानी 'सिक्का बदल गया' भारत-विभाजन की पृष्ठभूमि पर आधारित है।

कहानी की शुरुआत शाहनी के सुबह के रूटीन से होती है। वह रोज की तरह भोर में उठकर, खद्दर की चादर ओढ़े और हाथ में माला लेकर चेनाव नदी (चनाब) के किनारे स्नान करने जाती है। वह पिछले 50 वर्षों

से इस भूमि पर रह रही है और उसने कभी किसी से बुरा नहीं चाहा। राजनीतिक और सामाजिक बदलाव के चलते शाहनी को अपनी पुश्तैनी हवेली और वह गाँव छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ता है, जिसे उसने अपनी पूरी जिंदगी दी थी।

इस कहानी के प्रमुख पात्रों का वर्गीकरण इस प्रकार हैः

कहानी के मुख्य पात्रः शाहजी, शाहनी, शेरा, हुसैना और रसूल अली।

117. 'गैंग्रीन' कहानी की मालती बचपन में कैसी लड़की थी?

(1) पुस्तकें पढ़ने की शौकीन लड़की थी।
(2) सरल और शांत लड़की थी।
(3) उद्धत और चंचल लड़की थी।
(4) चोरी से क्लास से भागने वाली लड़की थी।

निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिएः

(अ) 1, 3 और 4 (ब) 1 और 2
(स) 3 और 4 (द) केवल 1

उत्तर- (स) 3 और 4 है।

अज्ञेय की कहानी 'गैंग्रीन' (रोज) में मालती बचपन में उद्धत, चंचल और चोरी से क्लास से भागने वाली लड़की थी।

उसे पढ़ाई-लिखाई में बिल्कुल रुचि नहीं थी। उसके पिता रोज उसे 20 पन्ने पढ़ने के लिए देते थे, लेकिन वह रोज उसमें से 10-20 पन्ने फाड़कर फेंक देती थी। वह स्कूल से भागकर आम खाती थी और जीवन का भरपूर आनंद लेती थी।

118. ''मेरे लिए सब भूमि मिट्टी है, सब जल तरल है, सब पवन शीतल है। कोई विशेष आकांक्षा हृदय में अग्नि के समान प्रज्वलित नहीं। सब मिलाकर मेरे लिए एक शून्य है।'' यह कथन 'आकाशदीप' कहानी के किस पात्र का है?

(अ) बुधगुप्त (ब) जया
(स) मणिभद्र (द) चंपा

उत्तर- (द) चंपा

जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध कहानी 'आकाशदीप' में यह कथन नायिका चंपा का है, जो बुद्धगुप्त से कहती है कि वह उसके साथ स्वदेश न जाकर इसी द्वीप पर रहकर वहाँ के निरीह और भोले-भाले लोगों की सेवा करेगी।

चंपा बचपन से ही समुद्र की लहरों और नावों के बीच रही है। व्यापारी मणिभद्र के बंदीगृह में होने और कठिन परिस्थितियों का सामना करने के बावजूद वह घबराती नहीं है, बल्कि बुधगुप्त के साथ मिलकर संघर्ष का मार्ग चुनती है। वह पूरी तरह स्वाभिमानी नारी है। मणिभद्र के घृणित और लालची प्रस्तावों को वह पूरी दृढ़ता से अस्वीकार कर देती है।

119. 'उसने कहा था' कहानी के इन वाक्यों को, कहानी में आने के अनुसार, पहले से बाद के क्रम में लगाइएः

(1) हट जा पुत्त प्यारिए
(2) हट जा करमावालिए
(3) बच जा, लम्बी उमराँवालिए !
(4) हट जा जीणे जोगिए

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिएः

(अ) 4, 2, 1, 3 (ब) 3, 1, 2, 4
(स) 1, 2, 3, 4 (द) 2, 3, 4, 1

उत्तर- (अ) 4, 2, 1, 3

चंद्रधर शर्मा गुलेरी की प्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' के प्रारम्भ में अमृतसर के बंबूकाट (इक्के-गाड़ी) वालों की बोली का वर्णन करते हुए लेखक ने इन वाक्यों को निम्नलिखित क्रम में लिखा हैः

1.हट जा जीणे जोगिए (4) 2.हट जा करमाँवालिए (2)
3.हट जा पुत्तां प्यारिए (1) 4.बच जा लंबी उमराँवालिए! (3)

120. 'ईदगाह' कहानी के आधार पर सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिएः

सूची-I (चरित्र)	**सूची- II (खिलौने)**
(a) महमूद	(I) धोबिन
(b) मोहसिन	(II) वकील
(c) नूरे	(III) भिश्ती
(d) सम्मी	(IV) सिपाही

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिएः

(अ) (a)- III, (b)- IV, (c)- I, (d)- II
(ब) (a)-I, (b)-III, (c)- II, (d)- IV
(स) (a)- IV, (b)- III, (c)- II, (d)-I
(द) (a)- II, (b)-I, (c)- IV (d)-III

उत्तर -(अ) (a)- III, (b)- IV, (c)- I, (d)- II

सही मिलान इस प्रकार हैः

(अ) महमूद- (III) भिश्ती

(ब) मोहसिन- (IV) सिपाही (या मोहसिन ने भिश्ती और महमूद ने सिपाही खरीदा- विकल्प के अनुसार सही मेल)

(ब) नूरे- (I) वकील

(क) सम्मी- (II) धोबिन

ईदगाह हामिद नाम के एक चार साल के अनाथ की कहानी है जो अपनी दादी अमीना के साथ रहता है। कहानी के नायक हामिद ने हाल ही में अपने माता-पिता को खो दिया है, परंतु उसकी दादी उसे बताती है कि उसके पिता पैसे कमाने के लिए चले गए हैं, और उसकी माँ उसके लिए सुंदर उपहार लाने के लिए अल्लाह के पास गई है। यह हामिद को आशा से भर देता है। अमीना की गरीबी और उसके पोते की भलाई के बारे में चिंता के बाद भी हामिद एक खुश और सकारात्मक सोच वाला बच्चा है।

121. नारायणदास और गोवर्धनदास किस हिंदी नाटक के प्रमुख पात्र हैं?

(अ) महाभोज (ब) अंजो दीदी
(स) अंधेर नगरी (द) एक और द्रोणाचार्य

उत्तर- (स) अंधेर नगरी

नारायणदास और गोवर्धनदास भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा सन् 1881 में रचित प्रसिद्ध हिंदी नाटक 'अंधेर नगरी' के प्रमुख पात्र हैं। इस नाटक में ये दोनों महंत जी के शिष्य (चेले) हैं।

गोवर्धनदास-

- **स्वभाव-** गोवर्धनदास एक लोभी, स्वार्थी और खाने-पीने का शौकीन शिष्य है।
- **भूमिका व विशेषता-** जब महंत जी दोनों शिष्यों को भिक्षा मांगने भेजते हैं, तो गोवर्धनदास ऐसे नगर ('अंधेर नगरी') में पहुँच जाता है जहाँ सब चीजें 'टके सेर' (एक ही दाम पर) मिलती हैं। वह सस्ते और भरपेट खाने (मिठाइयों और खाजा) के लालच में आकर गुरु की चेतावनी के बाद भी वहीं रुक जाता है।

नारायणदास-

- **स्वभाव-** नारायणदास एक संयमी, आज्ञाकारी और समझदार शिष्य है।
- **भूमिका व विशेषता-** वह महंत जी का दूसरा शिष्य है जो गुरु के आदेशों और उनकी दूरदर्शिता का पालन करता है।

122. भवानी व नरोत्तम निम्नलिखित में से किस नाटक के पात्र हैं?

(अ) महाभोज (ब) अंजो दीदी
(स) आधे-अधूरे (द) सिंदूर की होली

उत्तर- (अ) महाभोज

मन्नू भंडारी द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक 'महाभोज' (नाट्य रूपांतरण 1983) में भवानी और नरोत्तम दोनों महत्वपूर्ण पात्र हैं:

नरोत्तम-नरोत्तम एक ईमानदार, संवेदनशील और कर्तव्यनिष्ठ रिपोर्टर है। वह सरोहा गाँव की घटनाओं (जैसे विशु की हत्या और हरिजनों पर हुए अत्याचार) की सही और सच्ची रिपोर्ट जुटाकर 'मशाल' के कार्यालय तक लाता है। वह चाहता है कि समाचार पत्र के जरिए समाज की वास्तविक और दर्दनाक सच्चाइयाँ लोगों के सामने आएं और पीड़ितों को न्याय मिले। जब संपादक दत्ता बाबू मामले में नरमी बरतते हैं या लापरवाही दिखाते हैं, तो नरोत्तम को गहरा रोष होता है और वह विरोधस्वरूप 'मशाल' छोड़ने तक की बात करता है।

भवानी-भवानी समझौतावादी और व्यवसायिक सोच का प्रतीक है। वह जमीनी सच्चाई या न्याय से अधिक इस बात पर ध्यान देता है कि अखबार की बिक्री कैसे बढ़े और राजनीतिक दबावों से किस तरह बचा जाए। जब सरोहा में हत्या या आगजनी जैसी गंभीर घटनाएँ होती हैं, तो भवानी का उत्साह ठंडा पड़ जाता है या वह संभलकर चलने की सलाह देता है, जिससे उसकी संवेदनहीनता और व्यवस्था के प्रति झुकाव उजागर होता है।

123. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में रामगुप्त किसे 'नीतिशास्त्र का बृहस्पति' कहकर संबोधित करता है?

(अ) शिखर स्वामी ब) शकराज
(स) ध्रुवस्वामिनी (द) चंद्रगुप्त

उत्तर- (अ) शिखर स्वामी

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' के प्रथम अंक में, जब अमात्य शिखरस्वामी राष्ट्र की रक्षा के नाम पर अपनी ही पत्नी ध्रुवस्वामिनी को शकराज के पास भेजने का कुतर्कपूर्ण परामर्श देता है, तब राजा रामगुप्त प्रसन्न होकर उससे कहता है- ''तभी तो लोग तुम्हें नीतिशास्त्र का बृहस्पति समझते हैं।''

जयशंकर प्रसाद के नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' में शिखर स्वामी मगध साम्राज्य का महामंत्री (अमात्य) है। उसकी चरित्र-विशेषताएँ और भूमिका निम्नलिखित हैं

- **कुटिल और अवसरवादी राजनीतिज्ञ-** शिखर स्वामी राज्य की सुरक्षा या नैतिकता से अधिक अपनी सत्ता और स्वार्थ को प्राथमिकता देता है।
- **षड्यंत्रकारी-** सम्राट समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद, बड़े पुत्र के उत्तराधिकार के नियम की आड़ में उसने छल और षड्यंत्र से कायर तथा विलासी रामगुप्त को मगध की गद्दी पर बैठाया।

124. 'कविता करना अनंत पुण्य का फल है' यह कथन किसका है?

(अ) मातृगुप्त (ब) पर्णदत्त
(स) धातुसेन (द) स्कंदगुप्त

उत्तर- (अ) मातृगुप्त

यह कथन जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध नाटक 'स्कंदगुप्त' (1928) से लिया गया है। नाटक में यह संवाद पात्र मातृगुप्त का है।

यह नाटक 5 अंकों में विभाजित है, जिनमें कुल 33 दृश्य और 17 गीत हैं (प्रथम, द्वितीय तथा चतुर्थ अंक में 7-7 दृश्य तथा तृतीय व पंचम अंक में 6-6 दृश्य हैं)।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि- यह नाटक गुप्त वंश के सम्राट स्कंदगुप्त (विक्रमादित्य) के जीवन, उनके शासनकाल (455 ईस्वी से 466 ईस्वी तक के 11 वर्षों), आंतरिक षड्यंत्रों और विदेशी आक्रमणकारियों (हूणों) के विरुद्ध राष्ट्र की रक्षा के संघर्ष पर आधारित है।

125. 'कालिदास आपके किसी भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं है', यह कथन किसका है?

(अ) कालिदास (ब) मल्लिका
(स) विलोम (द) दंतुल

उत्तर- (ब) मल्लिका

मोहन राकेश द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' के प्रथम अंक में जब राजपुरुष दंतुल और विलोम, कालिदास से हरिण-शावक को लेकर सवाल करते हैं, तब कालिदास के पक्ष में बोलते हुए मल्लिका कहती है- ''कालिदास आपके किसी भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं है।''

संस्कृत के महान कवि कालिदास और पहाड़ी गाँव की एक संवेदनशील युवती मल्लिका के सहज प्रेम, उनकी आत्मलिप्तता, अभावों और कालिदास के उज्जैन तथा काश्मीर जाने के बाद उत्पन्न होने वाले मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वन्द्व का चित्रण।

126. चंद्रगुप्त की माता का नाम है:

(अ) मालविका (ब) कार्नेलिया
(स) अलका (द) मौर्यपत्नी

उत्तर- (द) मौर्यपत्नी

कुछ ग्रंथों के अनुसार मुरा है। दिए गए विकल्पों में से मौर्यपत्नी ही सबसे उपयुक्त विकल्प है।

विकल्पों का संक्षिप्त परिचय-

- **मालविका:** कालिदास के नाटक 'मालविकाग्निमित्रम्' की मुख्य नायिका हैं।
- **कार्नेलिया:** चंद्रगुप्त मौर्य की पत्नी (सेल्युकस निकेटर की पुत्री) थीं।
- **अलका:** जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चंद्रगुप्त' का एक पात्र हैं।

127. बकरी पर भाषण देने विदेश जाने की बात कौन करता है?

(अ) दुर्जन (ब) कर्मवीर
(स) सत्यवीर (द) भिश्ती

उत्तर- (द) भिश्ती

बकरी पर भाषण देने विदेश जाने की बात भिश्ती करता है। प्रसिद्ध नाटककार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा रचित 'बकरी' एक राजनैतिक और सामाजिक व्यंग्य नाटक है, जो स्वतंत्रता के पश्चात् के राजनीतिक छल-कपट और आम जनता केशोषण को उजागर करता है। यह नाटक दो अंकों में विभाजित है।

128. ''इस कृति का पूरा जटिल वितान जब मेरे अंतर में उभरा तो मैं असमंजस में पड़ गया। थोड़ा डर भी लगा। लगा कि इस अभिशप्त भूमि पर एक कदम भी रखा कि फिर बचकर नहीं लौटूंगा।'' उक्त वाक्यांश धर्मवीर भारती जी ने अपनी किस कृति के लिए कहा है?

(अ) गुनाहों का देवता (ब) सात गीत वर्ष
(स) अंधायुग (द) ठंडा लोहा

उत्तर- (स) अंधायुग

धर्मवीर भारती ने यह प्रसिद्ध कथन अपने चर्चित गीतिनाट्य 'अंधायुग' की भूमिका में कहा है।

धर्मवीर भारती का काव्य नाटक अंधा युग भारतीय रंगमंच का एक महत्वपूर्ण नाटक है। महाभारत युद्ध के अंतिम दिन पर आधारित यह नाटक चार दशक से भारत की प्रत्येक भाषा में मन्चित हो रहा है। इब्राहीम अलकाजी, रतन थियम, अरविन्द गौड़, राम गोपाल बजाज, मोहन महर्षि, एम के रैना और कई अन्य भारतीय रंगमंच निर्देशकों ने इसका मंचन किया है।

प्रमुख पात्र-

- **धृतराष्ट्र और गांधारी-** अंधी मनोवृत्ति और अंधे मोह के प्रतीक।
- **अश्वत्थामा-** कुंठा, हिंसा और 'नरपशु' का प्रतीक।
- **संजय**- विवेकशील और तटस्थ दृष्टा।
- **विदुर**- नीति और विवेक के प्रतीक।
- **युयुत्सु-** एकमात्र कौरव जो पांडवों के पक्ष में रहा (विवेक का प्रतीक)।
- **प्रहरी (1 और 2)-** युद्ध से त्रस्त और भ्रमित सामान्य जन।
- **श्रीकृष्ण-** नाटक के नैतिक केंद्र और अनासक्त शक्ति।
- **अन्य पात्र-** व्यास, कृपाचार्य, कृतवर्मा, वृद्ध याचक, गूँगा भिखारी, बलराम आदि।

129. 'बकरी' नाटक का प्रकाशन वर्ष हैः

(अ) 1968 (ब) 1974
(स) 1978 (द) 1981

उत्तर- (ब) 1974

- **नाटककारः** 'बकरी' नाटक के रचयिता सुप्रसिद्ध कवि और नाटककार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना हैं।
- **विधाः** यह हिंदी साहित्य का एक अत्यंत लोकप्रिय राजनीतिक व्यंग्य नाटक है, जिसे उत्तर प्रदेश की लोक-नाट्य (नौटंकी) शैली में लिखा गया है।
- **प्रथम मंचनः** इसका पहला सफल मंचन 'जन नाट्य मंच' द्वारा 13 जुलाई, 1974 को नई दिल्ली में किया गया था।
- **कहानी का प्रारम्भ-** नाटक की कथा एक गरीब ग्रामीण महिला विपत्ति की एक साधारण बकरी के इर्द-गिर्द घूमती है।
- **षड्यंत्र-** नाटक में दुर्जन सिंह, कर्मवीर और सत्यवीर नामक स्वार्थी और अवसरवादी लोग (जो बाद में नेता या डाकू की भूमिका में दिखते हैं) एक सिपाही के साथ मिलकर विपत्ति की बकरी को जबरन छीन लेते हैं।
- **गांधी जी के नाम का दुरुपयोग-** वे इस सामान्य बकरी को महात्मा गांधी की 'गांधी जी की बकरी' घोषित कर देते हैं। भोली-भाली और अनपढ़ ग्रामीण जनता की धार्मिक और गांधीवादी श्रद्धा का फायदा उठाकर वे उसे एक पवित्र और दैवीय रूप दे देते हैं।

130. 'आषाढ़ का एक दिन' में कालिदास किस प्रदेश का शासन सँभालते हैं?

(अ) कश्मीर (ब) उज्जयिनी
(स) कांची (द) मगध

उत्तर- (अ) कश्मीर

मोहन राकेश द्वारा रचित नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में कालिदास कश्मीर का शासन सँभालते हैं। उन्हें वहाँ का शासक (मातृगुप्त के नाम से) नियुक्त किया जाता है।

मुख्य पात्र-

- **कालिदास**- नाटक के नायक, एक महान कवि और नाटककार (जो 'ऋतुसंहार', 'कुमारसंभव', 'मेघदूत' आदि की रचना करते हैं)।
- **मल्लिका**- नाटक की नायिका, एक संवेदनशील ग्रामीण युवती और कालिदास की प्रेमिका।
- **अम्बिका-**मल्लिका की माँ (एक व्यवहारिक और रूखी स्वभाव की वृद्धा)।

131. 'कैसा ही विषय हो, वे उसमें विनोद और मनोरंजन की सामग्री ढूँढ़ लेते थे।' रामचंद्र शुक्ल का यह कथन किस निबंधकार के बारे में है?

(अ) भारतेंदु हरिश्चन्द्र (ब) प्रतापनारायण मिश्र
(स) बालकृष्ण भट्ट (द) बालमुकुन्द गुप्त

उत्तर- (ब) प्रतापनारायण मिश्र

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में यह कथन पंडित प्रतापनारायण मिश्र के निबंधों और उनकी लेखन शैली के संबंध में कहा है आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' हिंदी का प्रथम व्यवस्थित और वैज्ञानिक इतिहास ग्रंथ है। इसे मूल रूप से 1929 ई. में 'हिंदी शब्दसागर' की भूमिका (विशेष विवरण) के रूप में प्रकाशित किया गया था और छह महीने बाद यह स्वतंत्र पुस्तक के रूप में आया।

प्रमुख विशेषताएँ और काल-विभाजन- आचार्य शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास को चार मुख्य कालों में विभाजित किया हैः

- **आदिकाल (वीरगाथा काल)-** संवत् 1050 से 1375 (अपभ्रंश और देशभाषा की रचनाएँ, पृथ्वीराज रासो को हिंदी का प्रथम महाकाव्य माना गया)।
- **पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)**- संवत् 1375 से 1700 (निर्गुण और सगुण- रामभक्ति व कृष्णभक्ति धाराएँ)।
- **उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)-** संवत् 1700 से 1900 (रीतिबद्ध लक्षण-ग्रंथ और श्रृंगारी काव्य)।
- **आधुनिक काल (गद्य काल)**- संवत् 1900 से 1980 (गद्य साहित्य का विकास और खड़ी बोली का प्रसार)।

132. रामचंद्र शुक्ल का निबंध 'कविता क्या है'- किस प्रकार का निबंध है?

(अ) मनोवैज्ञानिक (ब) दार्शनिक
(स) व्यावहारिक समीक्षा संबंधी (द) सैद्धांतिक समीक्षा संबंधी

उत्तर- (द) सैद्धांतिक समीक्षा संबंधी

यह निबंध आचार्य रामचंद्र शुक्ल का एक प्रमुख काव्यशास्त्रीय एवं आलोचनात्मक निबंध है, जिसमें उन्होंने कविता के स्वरूप, परिभाषा, उसके मूल तत्वों (जैसे रस दशा, साधारणीकरण) तथा उसके उद्देश्यों का सैद्धांतिक विवेचन प्रस्तुत किया है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का निबंध 'कविता क्या है?' उनके निबंध-संग्रह **'चिंतामणि'** के पहले भाग में संकलित है. इस भाग में कुल पंद्रह निबंध हैं, जिनमें से दस मनुष्य के भावों पर केंद्रित हैं। इन निबंधों के शीर्षक बड़े रोचक हैं- 'भाव या मनोविकार', 'उत्साह', 'श्रद्धा-भक्ति', 'करुणा', 'लज्जा और ग्लानि', 'लोभ और प्रीति', 'घृणा', 'ईर्ष्या', 'भय' और 'क्रोध'। बाकी पाँच निबंध कवियों, कविताओं और काव्य-चिंतन पर एकाग्र हैं। इनमें 'कविता क्या है ?' सबसे लंबा- 46 पृष्ठों का है।

133. 'कुबेरनाथ राय ने परंपरागत भारतीय जीवन और संस्कृति को आधुनिक दृष्टि से देखने-समझने की चेष्टा की है।' यह कथन किस आलोचक का है?

(अ) रामविलास शर्मा (ब) नामवर सिंह
(स) रामचंद्र तिवारी (द) विश्वनाथ त्रिपाठी

उत्तर- (स) रामचंद्र तिवारी

यह कथन सुप्रसिद्ध आलोचक रामचंद्र तिवारी का है। उन्होंने अपनी सुप्रसिद्ध साहित्यिक कृति 'हिंदी का गद्य साहित्य' में ललित निबंधकार कुबेरनाथ राय की लेखन दृष्टि का मूल्यांकन करते हुए यह बात कही है।

पुस्तक की मुख्य विशेषताएँ-

- **विषय-वस्तु-** इसमें हिंदी गद्य के स्वरूप, उसके ऐतिहासिक विकास, विभिन्न विधाओं (उपन्यास, नाटक, निबंध, एकांकी, आलोचना आदि) और उनके मूल्यांकन का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।
- **ऐतिहासिक क्रम-** इसमें राजस्थानी, ब्रज और खड़ीबोली के ऐतिहासिक प्रयोग से लेकर आधुनिक काल (भारतेन्दु युग से लेकर आगे के विकास) तक के गद्य का क्रमिक विश्लेषण मिलता है।

134. विद्यानिवास मिश्र के निबंध संग्रह 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' का प्रकाशन वर्ष क्या है?

(अ) 1954 ई. (ब) 1964 ई.
(स) 1974 ई. (द) 1984 ई.

उत्तर- (स) 1974 ई.

पंडित विद्यानिवास मिश्र द्वारा रचित ललित निबंध 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' (प्रकाशन वर्ष:1974) के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:

- **निबंध की विधा-** यह एक आत्मीय और भावप्रधान ललित निबंध है, जिसमें व्यक्तिगत अनुभवों को पौराणिक संदर्भों और लोक-संस्कृति से जोड़ा गया है।
- **निजी चिंता और मातृ-संवेदना-** रात के 3 बजे तक अपने बच्चों और एक मेहमान लड़की के संगीत कार्यक्रम से न लौटने पर लेखक का चिंतित होना और बारिश में उनकी सुरक्षा को लेकर आशंका जताना इस निबंध का आधार है।
- **लोकगीत का संदर्भ-** बच्चों की प्रतीक्षा में लेखक के मन में पारंपरिक लोकगीत की पंक्तियाँ गूंजने लगती हैं- ''मोरे राम के भीजे मुकुटवा, लक्ष्मण के पटुकवा, मोरी सीता के भीजे सैनुरवा''।

135. 'प्रतापनारायण मिश्र के निबंधों में मननशीलता का अभाव है।' यह कथन किसका है?

(अ) लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय (ब) रामचंद्र तिवारी
(स) नामवर सिंह (द) विश्वनाथ त्रिपाठी

उत्तर- (अ) लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

प्रसिद्ध हिंदी आलोचक और इतिहासकार डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने भारतेंदु युग के निबंधकारों की आलोचना करते हुए यह मत व्यक्त किया था कि पं. बालकृष्ण भट्ट के निबंधों में जहाँ मननशीलता तथा विवेचन की प्रधानता है, वहीं प्रतापनारायण मिश्र के निबंधों में मननशीलता (गहन चिंतन) का अभाव है और वे मनोरंजन या छोटे-छोटे विषयों पर हास्य-व्यंग्य के लिए अधिक लिखे गए हैं।

136. ''वे गाँवों की अदम्य जिजीविषा के मूर्त रूप हैं।'' रामचंद्र तिवारी का यह कथन किस निबंधकार के बारे में है?

(अ) विवेकी राय (ब) प्रतापनारायण मिश्र
(स) भारतेंदु (द) हजारीप्रसाद द्विवेदी

उत्तर- (अ) विवेकी राय

- डॉ. रामचंद्र तिवारी ने हिंदी के प्रसिद्ध ललित निबंधकार विवेकी राय के बारे में यह कथन कहा है कि वे गाँवों की अदम्य जिजीविषा (जीने की तीव्र इच्छा) के मूर्त रूप हैं।
- विवेकी राय (19 नवंबर 1924- 22 नवंबर 2016) हिंदी और भोजपुरी भाषा के एक शीर्षस्थ और प्रसिद्ध साहित्यकार तथा ललित निबंधकार थे। उन्हें आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र और कुबेरनाथ राय की परंपरा का प्रमुख ललित निबंधकार माना जाता है।

137. निम्नलिखित में से कौनसा निबंधकार निबंध को व्यक्ति की स्वाधीन चिंता की उपज मानता है?

(अ) रामचंद्र शुक्ल (ब) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(स) रामविलास शर्मा (द) नामवर सिंह

उत्तर- (ब) हजारीप्रसाद द्विवेदी

हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार नए युग के निबंध व्यक्ति की स्वाधीन चिंता की उपज हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रसिद्ध विचार मानवतावाद, संस्कृति, साहित्य और जीवन-दर्शन पर केंद्रित हैं। उनके कुछ प्रमुख विचार और उद्धरण इस प्रकार हैं:

प्रमुख विचार और उद्धरण-

- **साहित्य और कला-** साहित्य वह है जो जनता में आत्मविश्वास और अधिकार चेतना का संचार करे, और जो आत्मा व हृदय को संवेदनशील बनाए। जीना भी एक कला और तपस्या है।
- **मानव और संस्कृति-** सभ्यता बाह्य और चंचल है, जबकि संस्कृति आंतरिक और स्थायी विकास का नाम है। उनके अनुसार ''मनुष्य बड़ी चीज है''।
- **संकल्प और सत्य-** महान संकल्प ही महान फल का जनक होता है। सत्य सार्वदेशिक होता है और सत्य के लिए किसी से भी नहीं डरना चाहिए।
- **प्रकृति और समाज-** उनके प्रसिद्ध निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' में प्रकृति और मनुष्य के संबंधों को गहराई से रेखांकित किया गया है।

138. 'शिवशंभु के चिट्ठे' द्वारा बालमुकुन्द गुप्त ने किस पर आघात किए हैं?

(अ) लॉर्ड क्लाइव (ब) लॉर्ड डलहौजी
(स) लॉर्ड विलियम बेटिंक (द) लॉर्ड कर्जन

उत्तर- (द) लॉर्ड कर्जन

'शिवशंभु के चिट्ठे' निबंध संग्रह के माध्यम से बालमुकुन्द गुप्त ने लॉर्ड कर्जन पर तीखे व्यंग्यात्मक आघात किए हैं। यह रचना लॉर्ड कर्जन के शासनकाल (1899-1905) में उनके द्वारा भारत विरोधी और दमनकारी नीतियों (जैसे बंगाल का विभाजन) पर केंद्रित है।

लेखक ने 'शिवशंभु' नामक एक काल्पनिक और भंगड़ (भांग पीने वाले) पात्र के माध्यम से ब्रिटिश सरकार की क्रूरता और तानाशाही का विरोध किया था। यह श्रृंखला मुख्य रूप से सन 1903 से 1905 के बीच कलकत्ता से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'भारतमित्र' में 'शिवशंभु शर्मा' के छद्म नाम से छपी थी।

139. ''मनुष्य और आगे बढ़ा। उसने धातु के हथियार बनाए। जिनके पास लोहे के शस्त्र और अस्त्र थे, वे विजयी हुए।'' ये पंक्तियाँ किस निबंध से ली गई हैं?

(अ) शिवमूर्ति (ब) उठ जाग मुसाफिर
(स) नाखून क्यों बढ़ते हैं? (द) संस्कृति और सौंदर्य

उत्तर- (स) नाखून क्यों बढ़ते हैं?

यह प्रसिद्ध पंक्तियाँ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' से ली गई हैं।

साहित्यिक और दार्शनिक दृष्टिकोण-

- **पशुता का अवशेष-** लेखक के अनुसार, नाखून बढ़ना मनुष्य के प्राचीन जंगली (आदिमानव) जीवन का एक सहजात अवशेष है। जब मनुष्य वनमानुष की तरह था, तब नाखून उसकी रक्षा और शिकार के मुख्य अस्त्र हुआ करते थे।
- **प्रकृति की अंधी वृत्ति-** आज मनुष्य को नाखूनों की आवश्यकता नहीं है, फिर भी वे बढ़ते हैं क्योंकि शरीर की पुरानी आदतें या प्रवृत्तियाँ जल्दी समाप्त नहीं होतीं।
- **संस्कृति बनाम पशुता-** लेखक मानते हैं कि नाखून बढ़ना मनुष्य के भीतर छिपी 'पशुता' और हिंसक प्रवृत्ति का प्रतीक है, जबकि उन्हें काटना मनुष्य की संस्कृति, आत्मसंयम और इंसानियत की निशानी है

140. 'यात्रा के लिए निकलती रही है बुद्धि, पर हृदय को भी साथ लेकर।' अपनी निबंध- रचना के संदर्भ में यह कथन किस निबंधकार का है?

(अ) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ब) रामचंद्र शुक्ल
(स) नामवर सिंह (द) मुक्तिबोध

उत्तर- (ब) रामचंद्र शुक्ल

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने प्रसिद्ध निबंध संग्रह 'चिंतामणि' के निबंध 'कविता क्या है?' (या अपने निबंधों के सैद्धांतिक पक्ष) में बुद्धि और हृदय के समन्वय की बात की है। उनका मानना था कि सच्ची आलोचना या निबंध लेखन में केवल बौद्धिक ऊहापोह ही काफी नहीं है, अपितु उसमें हृदय (रागात्मकता) का साथ होना भी उतना ही आवश्यक है।

'चिंतामणि' के चार भाग और प्रकाशन वर्ष-

- **भाग 1-** प्रकाशन वर्ष 1939 (संपादकः स्वयं आचार्य रामचंद्र शुक्ल)
- **प्रमुख निबंध-** भाव या मनोविकार, उत्साह, श्रद्धा और भक्ति, करुणा, लज्जा और ग्लानि, घृणा, ईर्ष्या, भय, क्रोध, लोभ और प्रीति, कविता क्या है, काव्य में लोक मंगल की साधनावस्था, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, 'मानस' की धर्म-भूमि, रसात्मक बोध के विविध रूप, साधारणीकरण और व्यक्ति-वैचित्र्यवाद, तुलसी का भक्ति-मार्ग।
  (यह भाग पहले 'विचार विधि' नाम से भी प्रकाशित हुआ था)।
- **भाग 2-** प्रकाशन वर्ष 1945 (संपादकः विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)
- **प्रमुख निबंध-** काव्य में अभिव्यंजनावाद, काव्य में प्राकृतिक दृश्य, काव्य में रहस्यवाद।
- **भाग 3-** प्रकाशन वर्ष 1983 (संपादकः नामवर सिंह)
- **भाग 4-** प्रकाशन वर्ष 2002 (संपादकः कुसुम चतुर्वेदी व ओमप्रकाश सिंह- इसमें कुल 47 निबंध संकलित हैं)

141. 'ठकुरी बाबा' रेखाचित्र महादेवी वर्मा की किस कृति में संकलित है?

(अ) अतीत के चलचित्र (ब) स्मृति की रेखाएँ
(स) पथ के साथी (द) मेरा परिवार

उत्तर- (ब) स्मृति की रेखाएँ

महादेवी वर्मा का प्रसिद्ध रेखाचित्र 'ठकुरी बाबा' उनके संस्मरण व रेखाचित्र संग्रह 'स्मृति की रेखाएँ' (**प्रकाशित-** 1943 ई.) में संकलित है। इसमें लेखिका ने प्रयाग के कल्पवास और वहाँ के ग्रामीण पात्रों का सजीव और मर्मस्पर्शी चित्रण किया है।

- **संकलन में स्थान-** यह इस संग्रह का पाँचवाँ रेखाचित्र है।
- **विषय-वस्तु-** इसमें ग्रामीण जीवन के यथार्थ, सहजता, आतिथ्य भाव और नगरीय-ग्रामीण संस्कृति के अंतर का बहुत संवेदनशील चित्रण किया गया है।
- **प्रमुख पात्र-** ठकुरी बाबा (भाट वंश के लोक कवि व गायक), उनकी बेटी बेला (और अंधे दामाद), बूढ़ी मौसी, भक्तिन आदि।

142. प्रेमचंद की माताजी का क्या नाम था?

(अ) अवन्तीबाई (ब) आनंदी देवी (स) ललिता (द) सुशीला देवी

उत्तर- (ब) आनंदी देवी

मुंशी प्रेमचंद का जन्म वाराणसी के पास लमही गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम आनंदी देवी और पिता का नाम मुंशी अजायब राय था।

143. ''यह सच है कि मैं किसी पंथ से न तब जुड़ी थी, न बाद में-..... ''मेरा जुड़ाव अगर रहा है तो अपने देश से- .....।'' यह किसका कथन है?

(अ) ममता कालिया (ब) शिवरानी देवी
(स) महादेवी वर्मा (द) मन्नू भंडारी

उत्तर- (द) मन्नू भंडारी

यह कथन मन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' से लिया गया है। मन्नू भंडारी की कहानियाँ हों या उपन्यास उनमें भाव और शिल्प की सादगी तथा प्रामाणिक अनुभूति मिलती है। उनकी रचनाओं में स्त्री-मन से जुड़ी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति भी देखी जा सकती है।

मुख्य विशेषताएँ एवं बिंदु-

- **जन्म एवं बचपन-** मन्नू भंडारी का जन्म मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में हुआ था, लेकिन उनका बचपन अजमेर (राजस्थान) के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के एक दो-मंजिला मकान में बीता।

  माता-पिता का प्रभाव
- उनके पिता बहुत बुद्धिजीवी, कोमल स्वभाव के पर अहंकारी और शक्की मिजाज के थे, जो आर्थिक उतार-चढ़ाव और गुस्से के दौर से गुजरे। उन्होंने रसोई को 'भटियारखाना' कहा था ताकि लड़कियाँ वहाँ अपनी प्रतिभा नष्ट न करें। उनकी माता अत्यंत सहनशील और त्यागी प्रवृत्ति की थीं।
- **शिक्षा और साहित्य में प्रवेश-** अजमेर में कॉलेज के दौरान उनकी हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने उनमें साहित्य के प्रति गहरी रुचि जगाई और उन्हें शरदचंद्र, प्रेमचंद, जैनेंद्र और यशपाल को पढ़ने के लिए प्रेरित किया।

144. 'आवारा मसीहा' का प्रकाशन वर्ष है

(अ) 1974 (ब) 1964 (स) 1954 (द) 1976

उत्तर- (अ) 1974

'आवारा मसीहा' महान हिंदी लेखक विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित एक अत्यंत प्रसिद्ध जीवनी है, जिसका प्रथम संस्करण मार्च 1974 में प्रकाशित हुआ था।

महत्वपूर्ण तथ्य-

- **नायक-** यह प्रसिद्ध बांग्ला कथाकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के जीवन पर आधारित है।
- **लेखन अवधि-** इस जीवनी को लिखने में विष्णु प्रभाकर को 14 वर्ष (1959 से 1973) का लंबा समय लगा था।
- **विभाजन-** यह कृति तीन पर्वों ('दिशाहारा', 'दिशा की खोज' और 'दिशांत') में विभाजित है।

145. ''जहाँ जनता जातियों में बँटी हो वहाँ पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष, अपने गुण और दूसरों के दोष देखने की प्रवृत्ति बड़ी स्वाभाविक है।'' उक्त पंक्ति हरिवंश राय बच्चन की किस आत्मकथा से उद्धृत है?

(अ) बसेरे से दूर (ब) नीड़ का निर्माण फिर
(स) क्या भूलूँ क्या याद करूँ (द) दशद्वार से सोपान तक

उत्तर- (स) क्या भूलूँ क्या याद करूँ

उक्त पंक्तियाँ 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' (1969) से ली गई है। डॉ.

हरिवंश राय 'बच्चन' साहित्य के युग पुरुष तो थे ही, एक श्रेष्ठ आत्मकथाकार भी थे। बच्चन द्वारा लिखित 'क्या भूलूं क्या याद करूँ विवेकपूर्वक योजनाबद्ध रीति से लिखा गया प्रथम आत्मकथा खण्ड है 'क्या भूलूं क्या याद करूं' आत्मकथा खण्ड उनकी पूरी योजना का एक तिहाई भाग है। इस खण्ड में लेखक ने अपने यौवन ज्वार के क्षणों का व्यापक वर्णन इस विशदता से किया है कि उनके साहस और सत्यकथन की प्रशंसा करनी पड़ती है।

146. हरिशंकर परसाई के व्यंग्य 'भोलाराम का जीव' में भोलाराम किस शहर से संबंधित है?

(अ) जबलपुर (ब) नासिक
(स) भोपाल (द) इंदौर

उत्तर- (अ) जबलपुर

हरिशंकर परसाई के प्रसिद्ध व्यंग्य 'भोलाराम का जीव' में चित्रगुप्त यमराज को भोलाराम का विवरण देते हुए बताते हैं कि वह जबलपुर शहर के 'घमापुर' (या धमापुर) मुहल्ले में नाले के किनारे एक डेढ़ कमरे के टूटे-फूटे मकान में अपने परिवार के साथ रहता था।

147. 'जामुन का पेड़ कृष्णचंदर की किस विधा की रचना है?

(अ) रिपोर्ताज (ब) रेखाचित्र
(स) संस्मरण (द) हास्य-व्यंग्य कथा

उत्तर- (द) हास्य-व्यंग्य कथा

'जामुन का पेड़' कृष्णचंदर की हास्य-व्यंग्य कथा विधा की रचना है। यह कहानी हमारे सरकारी कार्यालयों की संवेदनहीनता, लालफीताशाही और कछुआ चाल वाली कार्यप्रणाली पर एक करारा व्यंग्य करती है।
'जामुन का पेड़' प्रसिद्ध लेखक कृष्णचंदर द्वारा लिखी गई एक उत्कृष्ट हास्य-व्यंग्य कथा है। यह कहानी सरकारी दफ्तरों की संवेदनहीनता, अमानवीय कार्यप्रणाली और लंबी लालफीताशाही पर करारा व्यंग्य करती है।

कहानी का सार-

- **घटना का प्रारम्भ-** एक रात तेज आंधी-तूफान के कारण सचिवालय के लॉन में जामुन का एक पुराना पेड़ गिर जाता है। सुबह जब माली देखता है, तो उसे पता चलता है कि उस पेड़ के नीचे एक आदमी दबा हुआ है।
- **विभागों की आपसी उलझन-** आदमी को बाहर निकालने के बजाय सरकारी अधिकारी यह तय करने में लग जाते हैं कि यह पेड़ किस विभाग के अधिकार क्षेत्र में आता है।

148. ''अत्यंत प्राचीन काल में आर्य, द्रविड़, आदिवासी और मंगोल इन चार जातियों को लेकर भारतीय जनता की रचना हुई थी।'' यह पंक्ति किस पुस्तक से उद्धृत है?

(अ) मेरी तिब्बत यात्रा (ब) अरे यायावर रहेगा याद
(स) संस्कृति के चार अध्याय (द) एक साहित्यिक की डायरी

उत्तर- (स) संस्कृति के चार अध्याय

यह प्रसिद्ध पंक्ति राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की बहुचर्चित एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' से उद्धृत है।

चार अध्याय (चार क्रांतियाँ)-

- **प्रथम अध्यायः** भारतीय जनता की रचना और हिंदू संस्कृति का आविर्भाव
  इसमें आर्यों के भारत आगमन और यहाँ की मूल (आर्येतर/द्रविड़) जातियों के साथ उनके संपर्क व मिश्रण को पहली क्रांति माना गया है। इसी मेल-जोल से भारत की बुनियादी संस्कृति का निर्माण हुआ।
- **द्वितीय अध्यायः** प्राचीन हिंदुत्व से विरोध (बौद्ध एवं जैन क्रांति)
  यह अध्याय भगवान महावीर और गौतम बुद्ध के विद्रोह व उपदेशों पर आधारित है। उन्होंने स्थापित वैदिक कर्मकांड और जातिगत व्यवस्था के खिलाफ एक नई नैतिक और आध्यात्मिक चेतना जगाई।
- **तृतीय अध्यायः** हिंदू संस्कृति और इस्लाम
  इसमें भारत में इस्लाम के आगमन और हिंदू-मुश्लिम संस्कृतियों के आपसी संपर्क, सामासिक (मिली-जुली) संस्कृति, तथा सूफी-भक्ति परंपराओं के प्रभाव को तीसरी क्रांति के रूप में रेखांकित किया गया है।
- **चौथा अध्यायः** भारतीय संस्कृति और यूरोप
  इसमें भारत में यूरोपीय (अंग्रेजों) के आगमन, आधुनिक शिक्षा, विज्ञान, और पश्चिमी विचारों के प्रभाव के साथ-साथ भारतीय पुनर्जागरण (हिंदू और इस्लाम दोनों के पुनरुत्थान) की चर्चा की गई है।

149. ''संसार के दुख को वह हर वक्त इतना अनुभव करता था कि उसके लिए हँसना हराम था।'' किस यात्रा वृत्तांत की पंक्ति है?

(अ) मेरी तिब्बत यात्रा (ब) मेरी लद्दाख यात्रा
(स) अरे यायावर रहेगा याद! (द) रूस में पच्चीस मास

उत्तर- (अ) मेरी तिब्बत यात्रा है।

- **रचनाकारः** महापंडित राहुल सांकृत्यायन
- **यात्रा वृत्तांतः** 'मेरी तिब्बत यात्रा' (प्रकाशन वर्षः1937 ई.)
- **संदर्भः** यह पंक्ति राहुल सांकृत्यायन द्वारा रचित यात्रा वृत्तांत मेरी तिब्बत यात्रा से ली गई है।
  महापंडित राहुल सांकृत्यायन की प्रसिद्ध रचना 'मेरी तिब्बत यात्रा' उनका एक ऐतिहासिक और रोमांचक यात्रा-वृत्तांत (डायरी शैली में) है, जिसका प्रकाशन 1937 ईस्वी में हुआ था।

मुख्य विवरण-

- **रचनाकार-** राहुल सांकृत्यायन (मूल नामः केदारनाथ पांडेय जन्मः 9 अप्रैल 1893, आजमगढ़)
- **प्रकाशन वर्ष-** 1937 (छात्र हितकारी पुस्तकमाला, प्रयाग द्वारा)
- **यात्रा का उद्देश्य-** तिब्बत में बौद्ध धर्म से जुड़े प्राचीन संस्कृत और पाली ग्रंथों, पांडुलिपियों तथा ऐतिहासिक सामग्री की खोज करना।
- **ल्हासा प्रवासः** उन्होंने ल्हासा में 2 महीने 11 दिन का प्रवास किया था।
- **प्रमुख कार्य एवं खोजें-** इस यात्रा के दौरान उन्होंने 'विनयपिटक' का अनुवाद किया और कई दुर्लभ तालपत्र ग्रंथों (जैसे 'अभिसमय अलंकार टीका' और 'वाद न्याय टीका') की खोज की।

150. 'सब ठाठ धरा रह जाता; धन बस दूर क्षितिज का तारा !' उक्त पंक्ति किस पुस्तक से उद्धृत है?

(अ) एक साहित्यिक की डायरी (ब) मेरी तिब्बत यात्रा
(स) अरे यायावर रहेगा याद! (द) एक बूँद सहसा उछली

उत्तर- (स) अरे यायावर रहेगा याद!

यह पंक्ति सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित प्रसिद्ध यात्रा-वृत्तांत 'अरे यायावर रहेगा याद!' (1953 ई.) से ली गई है।
इस पुस्तक में लेखक ने भारत के विभिन्न अंचलों और अपनी यात्राओं के अनुभवों, दर्शन और संस्कृति का सुंदर चित्रण किया है।

प्रमुख विशेषताएँ-

- **घुम्मकड़ प्रवृत्ति-** राहुल सांकृत्यायन के बाद हिंदी साहित्य में अज्ञेय जी को उनकी घुम्मकड़ प्रवृत्ति और यायावरी जीवन के लिए जाना जाता है। वे स्वयं को 'अटवी' (जंगल) का प्राणी मानते थे।
- **प्रकृति और संस्कृति का मेल-** उन्होंने केवल बाहरी दृश्यों का वर्णन नहीं किया है, बल्कि वहाँ के इतिहास, स्थानीय संस्कृति, जन-जीवन, भाषा और प्रकृति के साथ अपने आंतरिक संस्मरणों को भी जोड़ा है।

TM
पुणेकर